मुद्रक —

विश्वमित्र प्रेस

१७।१ ए, सम्भू चटर्जी स्ट्रीट,

कलकत्ता ।

शंकरदानजी नाहटा

(ग्रन्थ प्रकाशक)

परम सहृदय, उदार एवं धर्मनिष्ठ

पूज्य ज्येष्ठ भ्राताजी

श्रीमान् दानमलजी नाहटा

की

स्वर्गस्थ आत्माको

सादर समर्पित ।

—शङ्करदान नाहटा

(ग्रन्थ प्रकाशक)

प्राक्कथन
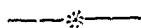
जैनोंका प्राचीन इतिहास अस्तव्यस्त बिखरा हुआ है। ताम्र-पत्र और शिलालेखोंके अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत और लोकभाषाके काव्योंमें भी प्रचुर इतिहाससामग्री उपलब्ध होती है, उन सबको संग्रहकर प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। आर्य्यसंस्कृतिमें गुरुका पद बहुत ऊंचा माना गया है उनकी भक्तिका महात्म्य अति विशाल है। धर्माचार्य्योंका इतिवृत्ति या जीवनचरित्र उनके भक्त शिष्यगुणानुवादरूप काव्योंमें लिखा करते हैं, ऐसे काव्य जैन-साहित्यमें हजारोंकी संख्यामें हैं परन्तु खेद है कि शोधके अभावसे अधिकांश (अमुद्रित काव्य) प्राचीन ज्ञानभण्डारोंमें पड़े-पड़े नष्ट हो रहे हैं और अद्यावधि जैसा चाहिए वैसा इस दिशामें प्रयत्न हुआ ज्ञात नहीं होता।

अद्यावधि प्रकाशित ऐ० काव्यसंग्रह

ऐतिहासिक भाषा काव्योंके संग्रहरूपसे अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थ हमारे समक्ष केवल ७ ही हैं। जिनमें "ऐतिहासिक राससंग्रह" नामक ४ भाग और "ऐतिहासिक सज्झायमाला भा॰ १" श्रीविजय-धर्मसूरिजी और उनके शिष्य श्री विद्याविजयजी सम्पादित एवं श्री जिनविजयजी सम्पादित "जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संचय" और मोहनलाल दलीचंद देसाई B. A. L. L. B. संशोधित "जैन ऐतिहासिक रासमाला" नामसे प्रकाशित हुए हैं।

इनके अतिरिक्त कई ऐतिहासिक काव्य स्वतन्त्र-ग्रन्थ[1] रूपमें [2] मासिकपत्रोंमें और कतिपय [3] रास-संग्रहोंमें भी प्रकाशित हुए हैं।

ऐसे रास अभी तक बहुत अधिक प्रमाणमें अप्रकाशित हैं उन्हें शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक है जिससे ऐतिहासिक क्षेत्रमें नया प्रकाश पड़े। आचार्यों एवं विद्वानोंके अतिरिक्त कतिपय सुश्रावकोंके ऐ० काव्य भी उपरोक्त संग्रहोंमें प्रकाशित हुए हैं। तीर्थोंके सम्बन्धमें भी ऐसे अनेकों काव्य उपलब्ध हैं जिनका संग्रह भी मुनिराज श्रीविद्या-विजयजी सम्पादित *"प्राचीन तीर्थमाला"* और *"पाटणचैत्य परि-पाटी"* आदि पुस्तकोंमें छपा है एवं "जैनयुग" के अंकोंमें भी कई स्थानोंकी चैत्यपरिपाटियाँ और तीर्थमालाएं प्रकाशित हुई हैं। हमारे संग्रहमें भी ऐसे अप्रकाशित अनेकों ऐतिहासिक काव्य हैं जिन्हें यथावकाश प्रकाशित किया जायगा।

आवश्यकीय स्पष्टीकरण

प्रस्तुत संग्रहमें अधिकांश काव्य खरतरगच्छीय ही हैं, इससे कोई यह समझनेकी भूल न कर बैठे कि सम्पादकोंको अन्यगच्छीय काव्य प्रकाशित करना इष्ट नहीं था। हमने तपागच्छीय खोज-शोधप्रेमी विद्वान् मुनिवर्योंको तपागच्छीय अप्रकाशित काव्य भेजनेको विज्ञप्ति भी की थी, पर खेद है कि किसीकी ओरसे कोई *सामग्री नहीं मिली।* तब यथोपलब्ध सामग्रीको ही प्रकाशित करना पड़ा।

---

१ यशोविजयरास, कल्याणसागरसूरिरास, देवविलास। २ जैनयुगके अङ्कोंमें। ३ प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रहमें, रास संग्रहमें।

राजपूताना प्रान्त वीकानेरमें विशेपकर खरतरगच्छका ही प्रचार और प्रभाव रहा है। अतएव हमें अधिकांश काव्य इसी गच्छके प्राप्त हुए हैं। तपागच्छीय काव्य एकमात्र "श्रीविजय सिंह सूरि विजयप्रकाश रास" उपलब्ध हुआ था वह और तत्पश्चात् उपाध्यायजी श्रीसुखसागरजी महाराजने पालीतानेसे "शिवचूला गणिनी विज्ञप्तिगीत" भेजा था उन दोनोंको भी प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित कर दिया है। हमारे संग्रहमें कतिपय पार्श्वचंदगच्छीय ऐ० काव्य हैं, जिन्हें प्रकाशनार्थ मुनिवर्य्य जगत्चंद्रजी कनकचंद्रजीने नकल करली है अतः हमने इस संग्रहमें देना अनावश्यक समझा।

प्रस्तुत ग्रन्थमें अधिकांश खरतरगच्छीय भिन्न-भिन्न शाखाओंके काव्योंका संग्रह है, एकही ग्रन्थमें एक विपयकी प्रचुर सामग्री मिलनेसे इतिहास लेखकको सामग्री जुटानेमें समय और परिश्रमकी वड़ी भारी वचत होती है। इस विशेपताकी ओर लक्ष्य देकर हमने अद्यावधि उपलब्ध सारे खरतरगच्छीय ऐ० काव्य प्रस्तुत संग्रहमें प्रकाशित कर दिये हैं, जिससे प्रत्युत विपयमें यह ग्रन्थ पूर्ण सहायक हो गया है। मूल पुस्तक छप जानेके पश्चात् श्रीजिनकुशलसूरि कृत श्रीजिनचन्द्रसूरि चतुःसप्ततिका और श्रीसूरचन्द्रगणि कृत श्रीजिन-सिंहसूरिरास उपलब्ध हुए हैं, ग्रन्थके वड़े हो जानेके कारण उनको मूल प्रकाशित न करके ऐतिहासिकसार यथास्थान दे दिया है। संग्रहकी दृष्टिसे और शुद्ध प्रतियें मिल जानेसे पाठान्तर भेद सहित कतिपय अन्यत्र प्रकाशित काव्य भी इस ग्रन्थमें प्रकाशित किये हैं।*

* देखें प्रति-परिचय।

कई महत्त्वपूर्ण त्रुटक और अपूर्ण कृतिए १ भी जो हमें उपलब्ध हुई प्रकाशित कर दी गई हैं, यदि किसी सज्जनको उनकी पूर्ण प्रतिया मिलें तो हमे अवश्य सूचित करें।

ऐ० काव्योंकी प्रचुरता

जैसलमेर भण्डारकी सूची २ से ज्ञात होता है कि वहा भी एक त्रु० प्रति ३ में श्रीजिनपतिसूरि, जिनवल्लभसूरिके अपभ्रंश गाहामे वर्णन, जिनप्रबोध मुनिवर्णन, जिनकुशलसूरि वर्णन (प्रति नं० ५२२ मे) शेष श्रीजिनपतिसूरि स्तूपकलश (नं० ३५८ के अन्तमें) और श्रीजिनलब्धिसूरि गुरुगीत (पत्र ७ नं० १५८६ में) विद्यमान हैं, परन्तु अद्यावधि हमे ये उपलब्ध नहीं हुए, सम्भव है कि कुछ कृतिए वही हो जो इस ग्रन्थमे प्रकाशित हैं४।

खरतरगच्छका काव्य—साहित्य बहुत विशाल है। अपनी-अपनी शाखाका साहित्य उनके श्रीपूज्योंके पास है आचार्यीय

१ श्रीजिनराजसूरिरास आदिकी गा० ९ (पृ० १६०), श्रीजिनदत्तसूरि छप्पय आदि अन्त विहीन (पृ० ३०३), श्रीकीर्तिरत्नसूरिफाग आदिकी गा० २० (पृ० ४०१), श्रीजिनचन्द्रसूरिगीत अपूर्ण (पृ० १०१), विद्यासिद्धिगीत आदि त्रुटक (पृ० २१४)।

२ जैसलमेरके यतिवर्य लक्ष्मीचन्दजी लिखित।

३ खरतरगच्छके आचार्योंके ऐतिहासिक—गुण वर्णनात्मक काव्योंकी अन्य एक महत्त्वपूर्ण प्रति अजीमगंजके भंडारमें थी, पर खेद है कि बहुत खोजनेपर भी वह उपलब्ध नहीं हुई।

४ देखें—"जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास" पृ० ६३७ से ६४६।

(पाली), लघु आचार्य, भावहर्ष और लखनऊ वालोंके पास खर-तरगच्छका बहुतसा ऐतिहासिक साहित्य प्राप्त होनेकी सम्भावना है।

हमारे संग्रहमें इधरमें और भी कई ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध हुए हैं जो यथावकाश प्रकट किये जायँगे।

प्रस्तुत ग्रन्थकी उपयोगिता

यह ग्रन्थ दृष्टिकोणद्वयसे विशेष उपयोगी है। एक तो ऐतिहासिक और दूसरा भाषासाहित्य। कतिपय साधारण काव्योंके अतिरिक्त प्रायः सभी काव्य ऐतिहासिक दृष्टिसे संग्रह किये हैं, गुण वर्ण-नात्मक अनेक गीत, गहूंलियें, अष्टक प्रभृति हमारे संग्रहमें हैं, परन्तु उनमेंसे ऐतिहासिक काव्योंको ही चुन चुनकर प्रस्तुत संग्रहमें स्थान दिया गया है। अद्यावधि प्रकाशित संग्रहोंसे भाषा साहित्य-की दृष्टिसे यह संग्रह सर्वाधिक उपयोगी है; क्योंकि इसमें बारहवीं शताब्दीसे लेकर बीसवीं शताब्दी तक लगभग ८०० वर्षोंके, प्रत्येक शताब्दीके थोड़े बहुत काव्य अवश्य संग्रहीत हैं।* जिनसे भाषा-विज्ञानके अभ्यासियोंको शताब्दीवार भाषाओंके अतिरिक्त कई प्रान्तीय भाषाओंका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। कतिपय काव्य हिन्दी, कई राजस्थानी और कुछ गुजराती प्रभृति हैं। अपभ्रंश भाषाके लिये तो यह संग्रह विशेष महत्वका ही है, किन्तु नमूनेके तौरपर कुछ संस्कृत और प्राकृतके काव्य भी दे दिये गये हैं।

काव्यकी दृष्टिसे जिनेश्वरसूरि, जिनोदयसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनपतिसूरि, जिनराजसूरि, विजयसिंहसूरि आदिके रास, विवाहला

---

* शताब्दीवार काव्योंका संक्षिप्त वर्गीकरण अन्य स्थानमें मुद्रित है।

बड़े सुन्दर और अलङ्कारिक भाषामें है। जिनको पढ़नेसे प्राचीन काव्योंके यमक, सौष्ठव, सुन्दर शब्द-विन्यास और ध्वनी हुई उपमाओंके साथ साथ अनेक शब्दोंका अनुभव होता है।

इस संग्रहमें प्रकाशित प्राय सभी काव्य समसामयिक लिपिबद्ध प्रतियोंसे ही सम्पादित किये गये हैं। इसका विशेष स्पष्टीकरण प्रति-परिचयमें कर दिया गया है।

शृङ्खलामें अव्यवस्थाका कारण

लगभग ७॥ वर्ष पूर्व जब इस ग्रन्थको छपाना प्रारम्भ किया था तब जितने काव्य हमारे पास थे, सबको रचनाकालकी शृङ्खलानुसार ही प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था, परन्तु उसके पश्चात् ज्यों-ज्यों नवीन सामग्री मिलती गई त्यों-त्यों इसमें शामिल करते गये। अत जैसा चाहिये काव्योंका अनुक्रम ठीक न रह सका। फिर भी हमने पीछेसे ग्रन्थको चार विभागोंमें विभक्त कर चतुर्थ विभागमे अवशेष प्राचीन काव्योंको दे दिया है। रचना समयकी अपेक्षासे काव्य जिस शृङ्खलामें सम्पादन होने चाहिये उनकी स्वतन्त्र तालिका दे दी है, ताकि पाठकोंको शताब्दीवार भाषाओंका अभ्यास करनेमें सुगमता और अनुकूलता मिले। ऐतिहासिक सार-ऐसन (शाखा वार) क्रमिक पद्धतिसे ही हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थको सर्वाङ्ग सुन्दर और विशेष उपयोगी बनानेका भरसक प्रयत्न किया गया है। जो लोग प्राचीन राजस्थानी और अपभ्रंश भाषासे अनभिज्ञ हों उनके लिये "कठिन शब्दकोश" और शृङ्खलाबद्ध ऐतिहासिकसार दे दिया है। इसके अतिरिक्त स्थान-

स्थानपर प्राचीन सुन्दर चित्र, विशेप नाम सूची, अनेक आवश्यक बातोंका स्पष्टीकरण (प्रति परिचय, कवि परिचय, चित्र परिचय आदि) कर दिया गया है।

अशुद्धियोंका आधिक्य

काव्योंको यथाशक्ति संशोधन पूर्वक प्रकाशित करनेपर भी इस ग्रन्थमें अशुद्धियोंका आधिक्य है। इसका प्रधान कारण अधिकांश काव्योंकी एक-एक प्रतिका ही उपलब्ध होना है। जिनकी एकसे अधिक प्रतियें प्राप्त हुई हैं वे पाठान्तर भेदोंके साथ-साथ प्रायः शुद्ध ही छपे हैं। खेद है कि कतिपय अशुद्धियां प्रेस दोप और दृष्टि दोपसे भी रह गयी हैं। शुद्धिपत्र पीछे दे दिया गया है, पाठकोंसे अनुरोध है कि उससे सुधारकर पढ़ें। अधिकांश शुद्धिपत्र जालोरसे पुरातत्त्व-वेत्ता मुनिराज श्री कल्याणविजयजीने बनाकर भेजा था। अतएव हम पूज्यश्रीके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

रास-सार

काव्योंका ऐतिहासिक सार अति संक्षिप्त और सारगर्भित लिखा गया है। पहले हमारा यह विचार था कि काव्योंके अतिरिक्त इतर सामग्रीका सम्पूर्ण उपयोग कर सार-परिचय विस्तृत लिखा जाय, परन्तु ग्रन्थ बहुत बड़ा हो जानेके कारण ऐसा न करके संक्षेपसे ही लिखना पड़ा।

अयोग्यता

यह ग्रन्थ किसी विद्वानके सम्पादकत्वमें प्रकट होता तो विशेप

सुन्दर होता, क्योंकि हमलोगोंमें एतद् विषयक ज्ञान और अनुभवका अभाव है, परन्तु अनुभवी विद्वानका सहयोग प्राप्त न होनेपर हमने अपनी अत्यधिक मानसिकशक्ति और अदम्य उत्साहसे प्रेरित हो यथासाध्य सम्पादन किया है। इस कार्यमें हमें कहां तक सफलता मिली है, यह निर्णय विद्वान पाठकों पर ही निर्भर है। हम विद्वान नहीं हैं, अभ्यासी हैं, अतः भूलोंका होना अनिवार्य है। अतएव अनुभवी विद्वानोंसे योग्य सूचना चाहते हुए क्षमा प्रार्थना करते हैं।

प्रकाशनमें विलम्ब

प्रस्तुत ग्रंथका "युगप्रधान जिनचंद्रसूरि" ग्रंथके साथ ही मुद्रण प्रारम्भ हुआ था परन्तु हमारे व्यापारिक कार्यों में व्यस्त रहने व अन्यान्य असुविधाओंके कारण प्रकाशनमें विलम्ब हुआ है। अपने व्यवसायिक कार्यों में समय कम मिलनेसे हम इसका सम्पादन मनोज्ञ और सुचारु नहीं कर सके। यदि इसको द्वितीयावृत्तिका अवसर मिला तो ग्रंथकी सुसम्पादित व्यवस्थित आवृत्ति की जायगी।

आभार प्रदर्शन

इसकी प्रस्तावना श्रीयुक्त हीरालालजी जैन M A.LL.B (प्रोफेसर एडवर्ड कालेज, अमरावती) महोदयने लिख भेजनेकी कृपा की है, अतएव हम आपके विशेष आभारी हैं।

इस ग्रन्थके "कठिन शब्द कोष" का निर्माण करनेमें माननीय ठाकुर साहब रामसिंहजी M A विशारद और स्वामी नरोत्तमदासजी M A. विशारदसे पूर्ण सहायता मिली है। सोलहवीं शताब्दीके पहलेके काव्योंका अन्तिम प्रूफ संशोधन श्रीमान् प० हरगोविन्द

दासजी सेठ "न्याय व्याकरणतीर्थ" ने कर देनेकी कृपा की है। श्रीयुक्त मिश्रीलालजी पालरेचा महोदयसे भी हमें संशोधनमें पूर्ण सहायता मिली है। श्रीयुक्त मोहनलाल दलीचन्द देसाई B.A.L.L.B. (वकील हाईकोर्ट, बम्बई) ने भी समय समयपर सत्परामर्श द्वारा सहायता पहुंचाई है। इसी प्रकार कतिपय काव्य उ० सुखसागरजी, मुनिवर्य रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी एवं जैसलमेरवाले यतिवर्य लक्ष्मीचन्दजीने और कतिपय चित्र-ब्लाक विजयसिंहजी नाहर, साराभाइ नवाब, मुनि पुण्यविजयजी आदिकी कृपासे प्राप्त हुए हैं, एतदर्थ उन सभी, जिनके द्वारा यत्किञ्चित भी सहायता मिली हो, सहायक पूज्यों व मित्रोंके चिर कृतज्ञ हैं।

निवेदक—

अगरचन्द नाहटा,

भंवरलाल नाहटा।

काव्यरचनाकालका संक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम*

१२ वीं का उत्तरार्द्ध।

कवि पल्ह कृत खरतर पट्टावली (पृष्ठ ३६५ से ३६८)।

१३ वीं का उत्तरार्द्ध।

जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६६ से ३७०),
जिनपतिसूरिधवल गीतादि (पृष्ठ ६ से १०)।

१४ वीं का पूर्वार्द्ध।

जिनेश्वरसूरिरास (पृष्ठ ३७७ से ३८३), गुरुगुणषट्पद (पृष्ठ १ से ३)।

उत्तरार्द्ध —

जिनकुशलसूरिरास (पृष्ठ १५ से १८), जिनपद्मसूरिरास (पृष्ठ .. से २३), जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरिगीत (पृष्ठ ११ से १४)।

१५ वीं का पूर्वार्द्ध।

जिनोदयसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६ से ४०), जिनोदयसूरि रासद्वय (पृ० ३८४ से ३८६), जिनप्रभसूरि गुर्वावली (पृ० ४१ ५०)।

उत्तरार्द्ध —

खरतरगुरुगुणछप्पय (पृ० २. से ३.), खरतरगच्छगुर्वावली (पृ० ४३ से ४.), कीर्तिरत्नसूरि फाग (पृ० ४०१-२), भाव-

* कई कृतियोंका रचनाकाल अनुमानिक है।

प्रभसूरिगीत (पृ० ४६-५०), शिवचूला विज्ञप्ति (पृ० ३३६),
वेगड़पट्टावली (पृ० ३१२) ।

१६ वींका पूर्वार्द्ध ।

क्षेमराजगीत (पृ० १३४) ।

१६ वीं का शेषार्द्ध—

जिनदत्त स्तुति (पृ० ४), जिनचंद्र अष्टक (पृ० ५), कीर्त्तिरत्नसूरि चौ० (पृ० ५१), जिनहंससूरि गीत (पृ० ५३), क्षेमहंस कृत गुर्वावली (पृ० २१५ से २१७)

१७ वीं का पूर्वार्द्ध—

देवतिलकोपाध्याय चौ० (पृ० ५५), भावहर्ष गीत (पृ० १३५), पुण्यसागर गीत (पृ० ६७), पृज्यवाहण गीतादि (पृ० ८६, ६४. ११० से ११७), जयतपद्‌वेलि आदि साधुकीर्त्ति गीत (पृ० ३७ से ४५), खरतर गुर्वावलि (पृ० २१८ से २२७), कीर्त्तिरत्न सूरि गीत (पृ० ४०३), दयातिलक (पृ० ४१६), यशकुशल, करमसी गीतादि (पृ० १४६, २०४), आदि ।

शेषार्द्ध—

जिनचंद्रसूरि, जिनसिंह, जिनराज, जिनसागर सूरि गीत रासादि (पृ० ५८ से १३२, १५० से २३०, ३३४, ४१७), खरतर गुर्वावलि (पृ० २२८), पि० खर० पट्टावली (पृ० ३१६), गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध (पृ० ४२३), विजयसिंह सूरि रास (पृ० ३४१), पद्महेम (पृ० ४२), समयसुन्द गीत (पृ० १४६), छप्पय (पृ० ३७३ आदि ।

१८ वीं का पूर्वार्द्ध—

जिनरंग (पृ० २३१), जिनरत्नसूरि (२३४ से २४४, ४१८), जिनचन्द्रसूरि गीत (पृ० २४५), जिनेश्वर सूरि (पृ० ३१४), कीर्त्तिरत्न सूरि छन्द (पृ० ४०७), जिनचद्र (पृ० ४३०), जिनधर्म (पृ० ३३५), भाग्यप्रमोद (पृ० २५८), सुखसागर (पृ० २५३), समयसुन्दर गीत (पृ० १४८) आदि।

शेषार्द्ध—

जिनसुख-जिनहर्षसूरि (पृ० २६१ से २६३), शिवचद्रसूरि रास (पृ० ३२१), जिनचद्र (पृ० ३३७), कीर्त्तिरत्न सूरि (पृ० ४१३) आदि।

१६ वीं का पूर्वार्द्ध—

दवविलास (पृ० २६४ से २९२), जिनलाभ जिनचद्र (पृ० २९३ से २६६ तथा ४१४ से ४१६) जयमाणिक्य छद (पृ० ३१०) आदि।

शेषार्द्ध—

जिनहर्ष, जिनसौभाग्य, जिनमहेन्द्रसूरि गीत (पृ० ३०० से ३०४), ज्ञानसार (पृ० ४३३) आदि।

ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह

—की—

प्रस्तावना

———※※———
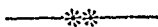
जैन-धर्म भारतवर्षका एक प्राचीनतम धर्म है। इस धर्मके अनुयायियोंने देशके ज्ञान-विज्ञान, समाज, कला-कौशल आदि वैशिष्ट्यके विकासमें बड़ा भाग लिया है। मनुष्यमात्र, नहीं-नहीं प्राणीमात्र में परमात्मत्वकी योग्यता रखनेवाला जीव विद्यमान है। और प्रत्येक प्राणी, गिरते-उठते उसी परमात्मत्वकी ओर अग्रसर हो रहा है। इस उदार सिद्धान्तपर इस धर्मका विश्वप्रेम और विश्वबन्धुत्व स्थिर है। भिन्न-भिन्न धर्मों के विरोधी मतों और सिद्धांतोंके बीच यह धर्म अपने स्याद्वाद नयके द्वारा सामञ्जस्य उपस्थित कर देता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक उन्नतिमें सब जीवोंके समान अधिकारका पक्षपाती है तथा सांसारिक लाभोंके लिये कलह और विद्वेषको उसने पारलौकिक सुखकी श्रेष्ठता द्वारा मिटानेका प्रयत्न किया है।

जैन-धर्मकी यह विशेषता केवल सिद्धान्तोंमें ही सीमित नहीं रही। जैन आचार्योंने उच्च-नीच, जाति-पांतका भेद न करके अपना उदार उपदेश सब मनुष्योंको सुनाया और 'अहिंसा परमो

धर्म' के मन्त्र द्वारा उन्हें इतर प्राणियोंकी भी रक्षाके लिये तत्पर बना दिया। स्याद्वाद नयकी उदारता द्वारा जैनियोंने सभीकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। अनेक राजाओं और सम्राटोंने इस धर्मको स्वीकार किया और उसकी उदार नीतिको व्यवहारमें उतारकर चरितार्थ कर दिखाया। इन्हीं कारणोंसे अनेक संकट आनेपर भी यह धर्म आज भी प्रतिष्ठित है।

किन्तु दुखकी बात है कि धार्मिक विचारोंमें उदारता और धर्म प्रचारमें तत्परताके लिये जैनी कभी इतने प्रसिद्ध थे, वे ही आज इन बातोंमें सबसे अधिक पिछड़े हुए हैं। विश्वभरमें बन्धुत्व और प्रेम स्थापित करनेका दावा रखनेवाले जैनी आज अपने ही समाजके भीतर प्रेम और मेल नहीं रख सकते। मनुष्यमात्रको अपनेमें मिलाकर मोक्षका मार्ग दिखानेवाले जैनी आज जात-पातकी तग कोठरियोंमें अलग-अलग बैठ गये हैं, एक दूसरेको अपनाना पाप समझते हैं। अन्य धर्मों के विरोधोंको भी दूर कर उनमें सामञ्जस्य उपस्थित करनेवाले आज एक ही सिद्धान्तको मानते हुए भी छोटी छोटी-सी बातोंमें परस्पर लड़-भिड़कर अपनी अपरिमित हानि करा रहे हैं।

ऐसी परिस्थितिमें यह स्वाभाविक है कि जैन-धर्मकी कुछ अनुपम निधियां भी दृष्टिसे ओझल हो जावें और उनपर किसीका ध्यान न जावे। जैनियोंका प्राचीन साहित्य बहुत विशाल, अनेकांगपूर्ण और उत्तम है। दर्शन और सदाचारके अतिरिक्त, इतिहासकी दृष्टिसे भी जैन साहित्य कम महत्वका नहीं है। भारतमें न जाने

कितने अन्धकारपूर्ण ऐतिहासिक कालोंपर जैन-कथा साहित्य, पट्टावलियों आदि द्वारा प्रकाश पड़ता है। लोक-प्रचारकी दृष्टिसे जैन-साहित्य कभी किसी एक ही भाषामें सीमित नहीं रहा। भिन्न-भिन्न समयकी, भिन्न-भिन्न प्रान्तकी भिन्न-भिन्न भाषाओंमें यह साहित्य खूब प्रचुर प्रमाणमें मिलता है। अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत भाषाओंका जैसा सजीव और विशाल रूप जैन-साहित्यमें मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं। किन्तु आज स्वयं जैनी भी इस बातको अच्छी तरह नहीं जानते कि उनका साहित्य कितना महत्वपूर्ण है। उसका पठन-पाठन व परिशीलन उतना नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिये। इस अज्ञान और उपेक्षाके फलस्वरूप उसका अधिकांश भाग अभीतक प्रकाशमें ही नहीं आया।

वर्तमान संग्रह जैन-गीति काव्यका है। इसमें सैकड़ों गीत-संग्रह हैं, जो किसी समय कहीं-कहीं अवश्य लोकप्रिय रहे हैं और शायद घर-घरमें या तीर्थ-यात्राओंके समय गाये जाते रहे हैं। विशेषता यह है कि इन गीतोंका विषय-शृङ्गार नहीं, भक्ति है; प्रिय-प्रेयसी-चिन्तन नहीं, महापुरुष-कीर्ति-स्मरण है और इसलिये पाप-बन्धका कारण नहीं, पुण्य-निबन्ध हेतु है। ये गीत भिन्न-भिन्न सरस मनोहर राग-रागणियोंके रसास्वादके साथ-साथ परमार्थ और सदाचारमें मनकी गतिको ले जानेवाले हैं। इस संग्रहको सम्पादकोंने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह' नाम दिया है, जो सर्वथा सार्थक है, क्योंकि इन गीतोंमें जिन सत्पुरुषोंका स्मरण किया गया

हैं, वे सब ऐतिहासिक हैं। जो घटनायें वर्णन की गयी हैं, वे सत्य हैं और हमारी ऐतिहासिक दृष्टिके भीतरकी हैं। जैन गुरुओं और मुनियोंने समय-समयपर जो धर्म प्रभावना की, राजाओं-महाराजाओं और सम्राटोंपर अपने धर्मकी उत्तमताकी धाक बैठायी और समाजके लिये अनेक धार्मिक अधिकार प्राप्त किये उनके उल्लेख इन गीतोंमें पद-पदपर मिलते हैं। विशेष ध्यान देने योग्य वे उल्लेख हैं जिनमें मुसलमानी बादशाहोंपर प्रभाव पडनेकी बात कही गयी है। उदाहरणार्थ—

जिनप्रभसूरिके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अश्वपति (असपति) कुतुबुद्दीनके चित्तको प्रसन्न किया था। कुतुबुद्दीनने उनसे जन-शासनके विषयमें अनेक प्रश्न किये थे और फिर सन्तुष्ट होकर सुल्तानने गाव और हाथियोंकी भेंट देकर उनका सम्मान करना चाहा था, पर सूरिजीने इन्हें स्वीकार नहीं किया। (पृष्ट १२, पद्य ४, ५)।

इन्हीं सूरीश्वरने सवत् १३८५ (ईस्वी सन् १३२८) की पौष सुदी ८ शनिवारको दिल्लीमें अश्वपति मुहम्मद शाहसे भेंट की थी। सुल्तानने इन्हें अपने समीप आसन दिया और नमस्कार किया। इन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा सुल्तानका मन मोह लिया। सुल्तानने भी ग्राम, हाथी घोडे व धन तथा यथेच्छ वस्तु देकर सूरीश्वरका सम्मान करना चाहा, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सुल्तानने उनकी बडी भक्ति की, फरमान निकाला और जलूस निकाला तथा 'वसति' निर्माण कराई। (पृ० १३, पद्य २-६) ऐसे ही उल्लेख पृ० १४ पद्य २, व पृ० १६ पद्य ६, ७ में भी हैं।

उपर्युक्त दोनों बादशाह खिजली वंशका कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह और तुगलक वंशका मुहम्मद तुगलक होना चाहिये। जो क्रमशः सन् १३१६ और १३२५ ईस्वीमें गद्दीपर बैठे थे। इसी समयके बीच खिलजी वंशका पतन और तुगलक वंशका उत्थान हुआ था। सूरीश्वरके प्रभावसे दोनों राजवंशोंमें जैन-धर्मकी प्रभावना रही।

एक दूसरे गीतमें उल्लेख है कि जिनदत्तसूरिने बादशाह सिकन्दरशाहको अपनी करामात दिखाई और ५०० बन्दियोंको मुक्त कराया (पृ० ५४, पद्य ११ आदि)। ये सम्भवतः बहलोल लोधीके उत्तराधिकारी पुत्र सिकन्दरशाह लोधी थे, जो सन् १४८६ ईस्वीमें दिल्लीके तख्तपर बैठे और जिन्होंने पहले-पहल आगराको राजधानी बनाया।

श्री जिनचंद्रसूरिके दर्शनकी सुप्रसिद्ध मुगल-सम्राट् अकबरको बड़ी अभिलाषा हुई। उन्होंने सूरीश्वरको गुजरातसे बड़े आग्रह और सन्मानसे बुलवाया। सूरिजीने आकर उन्हें उपदेश दिया और सम्राट्ने उनकी बड़ी आव-भगत की। (पृ० ५८) यह रास संवत १६२८ में अहमदाबादमें लिखा गया।

बादशाह सलेमशाह 'दरसणिया' दीवानपर बहुत कुपित हो गये थे, तब फिर इन्हीं सूरीश्वरने गुजरातसे आकर बादशाहका क्रोध शान्त कराया और धर्मकी महिमा बढ़ाई। (पृ० ८१-८२) ये सूरीश्वर मुलतान भी गये और वहांके खान मलिकने उनका बड़ा सत्कार किया (पृ० ६६, पद्य ४)

इस प्रकारके अनेक उल्लेख इन गीतोंमें पाये जाते हैं, जो इतिहासके लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

पर इससे भी अधिक महत्त्व इस संग्रहका भाषाकी दृष्टिसे है। इन कविताओंसे हिन्दीकी उत्पत्ति और क्रमविकासके इतिहासमें बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है। इसमें बारहवीं-तेरहवीं शताब्दिसे लगाकर उन्नीसवीं सदीतक अर्थात् सात-आठ सौ वर्ष की रचनायें हैं, जो भिन्न-भिन्न समयके व्याकरणके रूपोंपर प्रकाश डालती हैं। प्राचीन हिन्दी साहित्य अभीतक बहुत कम प्रकाशित हुआ है। हिन्दीकी उत्पत्ति अपभ्रंश भाषासे मानी जाती है। इस अपभ्रंश भाषाका अबसे बीस वर्ष पूर्व कोई साहित्य ही उपलब्ध नहीं था। जब सन् १९१४ में जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हर्मन याकोबी इस देशमें आये, तब उन्होंने इस भाषाके ग्रंथ प्राप्त करनेका बहुत प्रयत्न किया। सुदैवसे उन्हें एक पूर्ण स्वतन्त्र ग्रन्थ मिल गया। वह था 'भविसत्तकहा' (भविष्यदत्त कथा), जिसको उन्होंने बड़े परिश्रमसे सम्पादित करके १९१८ में जर्मनीमें ही छपाया। उसके पठन-पाठनसे हिन्दी और गुजराती आदि प्रचलित भाषाओंके पूर्व इतिहासपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा। यही एक स्वतन्त्र और पूर्ण ग्रन्थ इस भाषाके प्रचारमें आ सका था। सन १९२४ में मुझे मध्यप्रान्तीय संस्कृत प्राकृत और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची तैयार करनेके सम्बन्धमें बरार प्रांतान्तर्गत कारंजाके दिगम्बर जैनशास्त्र भण्डारोंको देखनेका अवसर मिला। यहां मुझे अपभ्रंश भाषा के लगभग एक दर्जन ग्रंथ बड़े और छोटे देखने

को मिले, जिनका सविस्तर वर्णन अवतरणों सहित मैंने उस सूची में दिया जो Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS. in C. P. & Berar के नाम से सन् १९२६ में मध्य प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुई। उस परिचय से विद्वन् संसार की दृष्टि इस साहित्य की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुई। इससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस साहित्यको प्रकाशित करने तथा और साहित्यकी खोज लगानेका खूब प्रयत्न किया। हर्षका विषय है कि उस प्रयत्नके फलस्वरूप कारंजा जैन सीरीज द्वारा इस साहित्यके अब तक पांच ग्रंथ दशवीं ग्यारहवीं शताब्दिके बने हुए उत्तम रीतिसे प्रकाशित हो चुके हैं। तथा जयपुर, दिल्ली, आगरा, जसवंतनगर आदि स्थानोंके शास्त्र-भण्डारोंसे इसी अपभ्रंश भाषाके कोई ४०-५० अन्य ग्रंथोंका पता चल गया है। यह साहित्य उसकी धार्मिक व ऐतिहासिक सामग्रीके अतिरिक्त भाषाकी दृष्टिसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह भाषा प्रचीन मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी आदि प्राकृतों तथा आधुनिक हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि प्रांतीय भाषाओंके बीचकी कड़ी है। यह साहित्य जैनियोंके शास्त्र-भण्डारोंमें बहुत संगृहीत है। यथार्थमें यह जैनियोंकी एक अनुपम निधि है, क्योंकि जैन साहित्यके अतिरिक्त अन्यत्र इस भाषाके ग्रंथ बहुत ही कम पाये जाते हैं। भाषा विज्ञानके अध्येताओंको इन ग्रन्थोंका अवलोकन अनिवार्य है। पर जैनियोंका इस ओर अभी तक भी दुर्लक्ष्य है। यह साहित्य गुजरात, राज-

पूताना और मालवामें विशेष रूपसे पाया जाता है। इसमें हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओंका पूर्वरूप गुथा हुआ है। इस भाषाके अध्ययनसे पता चल जाता है कि ये दोनों भाषायें तो मूलत एक ही हैं।

प्रस्तुत सग्रहमें अपभ्रशका और भी विकसित रूप पाया जाता है और उसका सिलसिला प्राय वर्तमान कालकी भाषासे आ जुड़ता है। ये उदाहरण डिंगल भाषाके विकास पर बहुत प्रकाश डालते हैं। भाषाकी दृष्टिसे इन अवतरणोंका सशोधन और भी अधिक सावधानीसे हो सकता तो अच्छा था। किन्तु अधिकाश सग्रह शायद एक-एक ही मूल प्रति परसे किये गये हैं। अब इस ग्रथकी ऐतिहासिक व भाषा सम्बन्धी सामग्रीका विशेष रूपसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। आशा है नाहटाजीका यह सग्रह एक नये पथ प्रदर्शकका काम देगा। ऐसे ऐसे अनेक सग्रह अब प्रकाशमें आवेंगे और उनके द्वारा देशके इतिहास और भाषा विकासका मुख उज्ज्वल होगा। यह प्रयत्न अत्यन्त स्तुत्य है।

किंग एडवर्ड कालेज,	हीरालाल जैन
अमरावती।	एम० ए०, एल० एल० बी०,
२१-४-३७	प्रोफेसर आफ़ सस्कृत।

प्रति परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित काव्योंकी मूल प्रतियां कबकी लिखी हुई और कहांपर हैं ? इसका उल्लेख कई कृतियोंके अन्तमें यथा स्थान मुद्रित हो चुका है। अवशेष काव्योंके प्रतियोंका परिचय इस प्रकार है :—

(अ) १ गुरुगुण षट्पद, २ जिनपति सूरि धवलगीत, ३ जिनपतिसूरि स्तूप कलश, ४ जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेकरास, ५ जिनपद्मसूरिपट्टाभिषेकरास, ६ खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय, ७ जिनेश्वरसूरि विवाहलो, ८ जिनोदयसूरि विवाहलो, ९ जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रास, १० जिनोदयसूरि गुण वर्णन छप्पय, ये कृतियां हमारे संग्रहकी सं० १४९३ लि० शिवकुञ्जरके स्वाध्याय पुस्तक* (पत्र ५२१) की प्रतिसे नकल की गयी है।

(आ) १ जिनपति सूरिणाम् गीतम् , २ भावप्रभसूरि गीत, ये दो कृतियें हमारे संग्रहकी १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धकी लिखित प्रतिसे नकल की गयी हैं।

(इ) जिनप्रभसूरि गीत नं० १, २, ३, जिनदेवसूरि गीत और

---

* ॥९०॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख मासे प्रथम पक्षे ८ दिने सोमे श्री वृहत् खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि गुरौ विजयमाने श्रीकीर्तिरत्नसूरीणां शिष्येण शिवकुंजर मुनिना निज पुण्यार्थं स्वाध्याय पुस्तिका लिखिता चिरंनन्दतात् ॥ श्री योगिनीपुरे ॥ श्री ॥

जिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वावलीकी मूल प्रति बीकानेर वृहत् ज्ञानभण्डारमे (१५ वीं शताब्दीके पूर्वार्धकी लि०) है।

(ई) खरतर-गुरु-गुण-वर्णन-छप्पयकी द्वितीय प्रति, १७ वीं शताब्दी लि० हमारे सग्रहमे है।

(उ) पृ० ४३ म मुद्रित खरतरगच्छ पट्टावलीकी मूल प्रति तत्कालीन लि०, पत्र १ हमारे सग्रहमे है। यह पत्र कहीं कहीं उदेइ भक्षित है, अत कहीं कहीं पाठ त्रुटक था, उसे जिनकृपाचन्द्र-सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे पूर्ण किया गया है। हमारे सग्रहका पत्र, सुन्दर और शुद्ध लिखा हुआ है।

(ऊ) देवतिलकोपाध्याय चौ०, क्षेमराजगीत, राजसोम, अमृत धर्म क्षमाकल्याण अष्टक स्तव, जिनरगसूरि युगप्रधान पद प्राप्ति गीतकी प्रतियें तत्कालीन लि० बीकानेर वृहत् ज्ञानभण्डारमें विद्यमान है।

(ए) अकबर प्रतिबोध रासकी प्रति जयचन्द्रजीके भण्डारमे सुरक्षित है।

(ऐ) कीर्तिरत्नसूरि गीत न० २ से ६, कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डा-रस्थ गुटकाकार प्रतिसे नकल किये गये हैं।

(ओ) अन्य प्रेषित प्रतियोंकी नकलें —

(a) गुणप्रभसूरि प्रबन्ध, जिनचन्द्रसूरि, जिनसमुद्रसूरि गीत (४२३ से ४३२), जैसलमेरके भण्डारसे नकल कर यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने भेजी है।

(b) जिनहससूरिगीत, समयसुन्दर कृत ३६ रागिणी गर्भित

जिनचन्द्रसूरिगीत, जिनमहेन्द्रसूरि और गणिनी शिव-चूला विज्ञप्तिगीतकी नकल पालीताणेसे उ० सुमतसागर जीने भेजी थी।

(c) जिनवल्लभसूरि गुणवर्णनकी नकल रत्नमुनिजी, शिवचंन्द्र सूरिरासकी प्रति लब्धि मुनिजी (यह प्रति अभी हमारे संग्रहमें है), रत्ननिधान कृत जिनचन्द्र-सूरि गीतकी नकल (पृ० १०२), सूरत भण्डारसे पं० केशर मुनिजीने भेजी है।

(d) जिनहर्ष गीतद्वय, पाटणसे साहित्य प्रेमी मुनि यश-विजयजीसे प्राप्त हुए हैं।

औ) नीचे लिखी हुई कृतियोंके सम्पादनमें मुद्रित ग्रन्थोंकी सहा-यता ली गयी है।

(a) देवविलास तो अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डलकी ओर से प्रकाशित ग्रन्थसे ही सम्पादन किया गया है।

(b) पल्ह कृत जिनदत्तसूरि स्तुति, अपभ्रंश काव्यत्रयी और गणधर सार्द्धशतक भाषान्तर ग्रन्थ द्वयसे पाठा-न्तर नोंधकर प्रकाशित की गई है।

(c) वेगड़ गुर्वावली आदि (पृ० ३१२ से ३१८) की जैन श्वेताम्बर कॉन्फरेन्स हेरल्डसे नकल की गई है।

(d) पिप्पलक खरतर पट्टावली, जै० गु० क० भा० २ और देवकुल पाटक दोनों ग्रन्थोंसे मिलान कर प्रकाशित की गई है।

(अ) 'श्रीजिनोदयसूरि वीवाहलउ की ४ प्रतिया प्राप्त हुई हैं। जिनके समस्त पाठान्तर नीचे लिखे सकेतासे लिखे गये हैं।

(a) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० ?३३)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (स० १४६३ लि० शिवकुन्दर स्वाध्याय पुस्तकात्) हमारे सग्रहमें।

(c) प्रति—बीकानेर स्टेट लाइब्रेरी न० ?६८७ पत्र ३, प्राचीन प्रति

(d) प्रति—ऐतिहासिक रास सग्रह भा० ३ + (पृ० ७६)

(e) प्रति—के अन्तम निम्नोक्त श्लोक लिखा है —

वर्षे बाण मुनि त्रिचन्द्र गणिते येषा प्रभूणा जनि,
पक्षाब्दे प्रमिते व्रत गुरुपद पचैक वेदैकव
स्वर्गं श्री चरण१ च नेत्र शिवहक सरये वभूवादमुन।
ते श्री सूरि जिनोदया सुगुरव कुर्वंतु म मङ्गलम् ॥१॥

श्रीजिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रासकी ? प्रतिया—

(a) प्रति—उपरोक्त (स० १४६३ लि०)

(b) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ०?२/)

श्रीजिनेश्वरसूरि वीवाहलउ की ३ प्रतें—

(a) प्रति—उपरोक्त (स० १४६३ लि०)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (हमारे सग्रहमें)

(c) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० ?२४)

(अ) इनके अतिरिक्त और सभी काव्याकी प्रतिया जिनके अन्तम अन्य स्थानका उल्लेख नहीं है वे सब प्रतिया हमारे सग्रहमें (तत्कालीन लिखित) हैं।

चित्र परिचय

१—ग्रन्थ प्रकाशक श्री शंकरदानजी नाहटा—सम्पादकके पितामह हैं।

२—खरतरपट्टावली:—इसी संग्रहमें पृ० ३६५से ६८में सं० ११७०-७१ के लि० प्रतिसे मुद्रित की गई है। इसमें सं० ११७१ लि० प्रतिके फोटु वड़ोदेसे उ० सुखसागरजीने भिजवाये थे उसमें खरतर विरुद प्राप्ति सम्बन्धी उल्लेखवाले पत्रका व्लोक वनवाकर प्रस्तुत संग्रहमें दिया गया है। खरतर विरुद प्राप्तिके प्रश्नपर यह पट्टावली बहुत महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

३-४-जिन वल्लभसूरी और जिनदत्तसूरीजीके प्रस्तुत चित्र, जैसलमेर भंडारके प्राचीन ताड़पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित थे, उसके व्लाक वनवाकर (अपभ्रंश काव्यत्रयीमें मुद्रित) दिये गये हैं।

५—जिनेश्वरसूरिजीका चित्र खंभातके शांतिनाथ भंडारकी ताड़पत्रीय पर्युसणाकल्प (पत्र ८७) की प्रति, जोकि लिपि आदिके देखनेसे १३ वीं शताब्दी लि० प्रतीत होती है, के आधारसे जैन चित्र कल्पद्रुम (चित्र नं० १०४) में मुद्रित हुआ है। श्री साराभाई नवावके सौजन्यसे हमें इसको प्रकाशित करनेका सुअवसर मिला एतदर्थ उनके आभारी हैं। उक्त ग्रंथमें इस चित्रका परिचय पृ० १४३ में इस प्रकार दिया है :—

"प्रस्तुत चित्रमें थीजा जिनधरमूरिय भीओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तओनो होय एम लाग छे। श्रीजिनधरमूरि सिंहासन उपर बठेलाछे तओना जमणा हाथ मा मुहपति छे अने डावो हाथ अभय मुद्राए छे। जमणी बाजुनो तओश्रीनो खभो खुलो छे। ऊपरना छतना भागमा चद्रवो बाधेलो छे सिंहासन नी पाछल एक शिष्य उभो छे अन तओनी सन्मुख एक शिष्य वाचना लतो बठो छ। चित्रनी जमणीबाजूए एक भक्त श्रावक य हाथनी अजलि जोड़ीने गुरुमहाराजनो उपदेश साभलतो होय एम लागे छे।

६—योगविधि पत्र १३ की प्रति (स० १४११ लि०)क अन्तिम पत्रस श्लाक बनाया गया है। प्रशस्ति इस प्रकार है —'स वत् १४११ वर्ष अषाढ वदी १४ चतु र्दश्या बुधे श्री खरतर गच्छेश श्री श्री जिनभद्र सूरिभिर्लिखितमिद ॥१॥ वा० साधुतिलक गणि भ्यो वाचनाय प्रमादी कृत्य प्रति।

७ जिनचन्द्रसूरि मूर्ति —बीकानेरके ऋषभ जिनालयम युगप्रधान आचार्यश्रीकी स० १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह ब्लोक है, लख नकल देखें—युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७।५८।

८—जिनचद्रसूरि हस्तालपि —स्व० बाबू पूरणचन्द्रजी नाहरक सग्रह (गुलाब कुमारी लाइब्रे री) की न ११८ कर्मस्तववृत्तिकी प्रतिस ब्लाक बनवाया गया है पुस्तिका लख इस प्रकार है —

सवत् १६११ वर्षे श्री जसलमेरु महादुग। राउल श्री

मालदेवे विजयिनि । श्री बृहत् खरतर गच्छे। श्रीजिनमाणिक्य सूरि पुरंदराणां विनेय सुमतिधीरेण* लेखि स्ववाचनाय ।। श्रावण सुदि त्रयोदश्यां । शनिवारे ।।श्रीस्तात्।। ।।कल्याणंवोभोतु ।। छ० ।।

९—जिनराज सूरि-जिनरंग सूरिः—यतिवर्य्य श्री सूर्यमलजीके संग्रह (कलकत्ते)में शालिभद्र चोपई पत्र ९४ की सचित्र प्रतिके अन्तिम पत्रमें यह चित्र है । लिपि लेखककी प्रशस्ति इस प्रकार है—

सं० १८५२ मि० फाल्गुण कृष्ण १२ रविवारे श्री बृहत्खरतर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुख्य वा० मति कुमार ग० । शिष्य लि । पं० किस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभी इसकी मूल आधार भूत प्रतिका समकालीन होना विशेष संभव है ।

१०--जिनहर्ष हस्तलिपिः—पाटण भंडारमें कविवरके रचित एवं स्वयं लि० स्तवनादिकी पत्र ८० की प्रतिके फोटु मुनिवर्य पुण्य विजयजीने भेजे थे उसीसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित की गई है । मुनिश्रीने हमें उक्त प्रतिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है ।

११--ज्ञानसार हस्तलिपिः—हमारे संग्रहके एक पत्रका ब्लोक बनवाकर दिया गया है ।

खरतर गच्छके आचार्यों एवं विद्वानोंके और भी बहुत चित्र उपलब्ध हैं, जिन्हें हो सका तो खरतरगच्छ इतिहासमें प्रकट करनेकी इच्छा है ।

---

* आचार्य पद प्राप्तिके पूर्व मुनि अवस्थाका नाम । देखे यु० जिन-

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

रास सार सूची ।

चित्र सूची ।

चित्र-सूचीमें परिवर्तन

चित्रोंको प्रथम रास-सारमें देनेका विचार था, पर फिर मूलमें देना उचित समझ वैसा किया गया है, तथा चित्रोंकी संख्या पूर्व १२ थी पर फिर कई अन्य आवश्यक चित्र प्राप्त हो जानेसे ६ और बढ़ा दिये गये हैं। कुल १८ चित्रोंकी सूची इस प्रकार है :—

छ चित्रोंके बढ़ जानेसे मूल्यमें भी १।) के स्थानमें १॥) करना पड़ा पुस्तकके अन्तमें भी दो नीचे लिखी बातें और जोड़ दी गई हैं:—

मूल काव्य-अनुक्रमणिका ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (द्वितीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (तृतीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (चतुर्थ विभाग)

परिशिष्ट

खरतरगच्छ पट्टावली

(जैसलमेर भाण्डागारीय सं० ११७१
लि० ताड़पत्रीय प्रतिका द्वितीय पृष्ठ)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

काव्योंका ऐतिहासिक सार

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित (पृ० १२८ से २२९ में) खरतर गच्छ गुर्वावलियोंमें भगवान महावीरसे पट्ट—परम्परा इस प्रकार दी गयी है :—

गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५	गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५
÷	१ वर्द्धमान १	आर्यशान्ति	११ सुस्थित
गौतम	२ गौतम	हरिभद्र	१२ इंद्र दिन्न
सुधर्म्मा	३ सुधर्म्मा	श्यामाचार्य	१३ दिन्न सूरि
जम्बू	४ जम्बू	आर्य संडिल्ल	१४ सिंहगिरि
प्रभव	५ प्रभव	रेवती मित्र	१५ वयर स्वामी
शय्यम्भव	६ शय्यम्भव	आर्य धर्म	१६ वज्रसेन
यशोभद्र	७ यशोभद्र	आर्य गुप्त	१७ चंद्र सूरि
संभूति विजय	८ संभूतिविजय	आर्य समुद्र	१८ समंतभद्रसूरि
भद्रवाहु	÷	आर्यमंगु	१९ वृद्धदेव सूरि
स्थूलिभद्र	९ स्थूलिभद्र	आर्य सोहम	२० प्रद्योतन सूरि
आर्यमहागिरी	÷	हरिबल	२१ मानदेवसूरि
आर्यसुहस्ति*	१० आर्यसुहस्ति	भद्रगुप्त	२२ देवेन्द्र सूरि

* यहांतक दोनों गुर्वावलियोंके नामोंमें साम्य है। नं०२में भद्रबाहु और आर्यमहागिरिके नाम अधिक है, इसका कारण नं० २ युगप्रधान परम्परा और नं० ५ गुरु शिष्य परम्पराकी दृष्टिसे रचित है। इससे आगेका क्रम दोनोंमें भिन्न २ है, इसका कारण सम्भवतः नं० २ के प्राचीन अव्यवस्थित पट्टावलियोंका अनुकरण, और नं० ५ के संशोधित होनेका है।

सिंहगिरि	२३	मानतुंग	नागार्जुन	३३	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४	वीर सूरि	गोविन्दवाचक	३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५	जयदेव सूरि	संभूतिदिन्न	३५	जिनभद्र
दुर्बलिकापुष्य	२६	देवानन्द	लोकहित	३६	हरिभद्र
आर्य नंदि	२७	विक्रमसूरि	दूष्यगणि	३७	देवचन्द
नागहस्ति	२८	नरसिंह सूरि	उमास्वाति	३८	नेमिचंद्र
रेवत	२९	समुद्र सूरि	जिनभद्र	३९	उद्योतन
ब्रह्मदीपी	३०	मानदेव	हरिभद्र		
संडिल्ल	३१	विबुधप्रभ	देवाचार्य *		
हेमवन्त	३२	जयानन्द	नेमिचन्द्र		
			उद्योतन —		

* यहांतकका क्रम भिन्न २ पट्टावलियोंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इनके पश्चात्‌का क्रम सभी खरतर गच्छकी पट्टावलियोंमें एक समान है। नं० ५ की पट्टावलीका (संशोधित) क्रम वज्रसेन तकका नंदिसूत्र स्थिरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है पुरातत्वविद विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते है।

× यहां तकके आचार्योंका गुर्वावलियोंमें नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ऐ० विशेषण दिये गये है, वे ये हैं —जम्बू —९९ कोटि द्रव्य त्याग, संयम ग्रहण। स्थुलिभद्र -कोश्या प्रतिबोधक, महागिरी -- जिन कल्प तुलना कारक, सुहस्ति -सम्प्रति नृपके गुरु, श्यामाचार्य —पन्नवणा कर्त्ता, वज्रसेन —१६वर्षायु व्रत ग्रहण, वृद्धदेव — कुमदचन्द्र विजेता, मानदेव —शान्ति स्तव कर्त्ता,मानतुंग -भक्तामर, भयहर स्तोत्रकर्त्ता, वयर स्वामी —१०पूर्वधर, उमास्वाति--५०० प्रकरणकर्त्ता।

वर्द्धमान सूरि

(पृ० ४४)

उपरोक्त उद्योतन सूरिजीके आप मुख्य शिष्य थे। आपने आबू गिरिपर छः महीनेतक तपस्या करके सूरि मन्त्रकी साधना (शुद्धि) की, पातालवासी धरणेन्द्रदेव प्रगट हुआ, उसके सूचनानुसार वहाँ आदि-जिनकी वज्रमय प्रतिमा प्रगट हुई। इससे मंत्रीश्वर विमल दण्ड नायकको अतिशय आनन्द हुआ और गुरुश्रीके उपदेशसे उन्होंने वहां नंदीश्वर प्रसादके समान, चिरस्मरणीय यशःपुञ्ज स्वरूप 'विमल वसही' बनाई। पूज्य श्रीके अतिशय प्रभावसे मिथ्यात्वीयोगी आदि हतप्रभाव हुए और जैन शासनका जयवाद फैला, आपका विशेष परिचय गणधर सार्द्धशतक बृहद् वृत्ति, पट्टावलियों और युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० ६) में देखना चाहिये।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ४४)

श्री वर्द्धमान सूरिजीके आप सुशिष्य थे। आपने गुजरातके अणहिल्लपाटणके भूपति दुर्लभराजके सभामें ८४ मठपति (चैत्यवासी) आचार्योंको, जो कि मन्दिरोंमें रहा करते थे, परास्त कर चैत्य-वासका उत्थापन और वसतिवास-सुविहित मुनिमार्ग का स्थापन किया था। नृपति दुर्लभराज आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर कहने लगे कि:— इस कलिकालमें कठिन और खरे चारित्रधारक साधु आप ही हैं। नृपतिके वचनानुसार तभीसे खरतर विरुदकी प्रसिद्धि हुई।

विशेष चरित्र सामग्री और ग्रन्थ निर्माणकी सूचि देखें :—युग प्रधान जिनचन्द्र —, पृ० १०

अभय देवसूरि

(पृष्ठ ४१)

आप श्री जिनेश्वर सूरिजीके शिष्य थे। आपने ६ अंग-सूत्रों पर वृत्ति बनाई और जयतिहुअण स्तोत्रकी रचना कर स्तम्भन-पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा प्रकट की। श्रीमंधर स्वामीने आपके गुणोंकी प्रशंसा की और धरणेन्द्र, पद्मावती आपकी सेवा करते थे। विशेष देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १२

जिनवल्लभसूरि

पृ० १,४६

आप अभयदेवसूरजीके पट्टधर थे। पिन्डविशुद्ध प्रकरणकी आपने रचना की थी एवं बागड़ देशमें धर्म प्रचार कर १० हजार (नये) जनश्रावक बनाये थे। चितौड़में चमुंडा देवीको आपने प्रतिबोध दिया था। सं० ११६७ के आषाढ़ शुक्ला षष्ठीको चित्तौड़के महावीर चैत्यमें आपको देवभद्र सूरिजीने आचार्य पद प्रदान कर श्रीजिन अभयदेव सूरिके पट्टपर स्थापित किया।

विशेष चरित्र लिये गण० शा० वृत्ति और कृतियोंके लिये युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि पृष्ट १२ देखना चाहिये।

जिनदत्त सूरि

(पृ० १४, ४६, ३७३)

वाछिग मन्त्री (धुन्धुका वास्तव्य) की धर्मपत्नी बाहड़ देवीकी कुक्षीसे सं० ११३२ में आपका जन्म हुआ। सं० ११४१ में दीक्षा ग्रहण की। सं ११६९ वै० कृ० ६ चित्तौड़के वीर जिनालयमें

जिनवल्लभ सूरिजीके पदपर देवभद्राचार्यने (पद) स्थापना की। उज्जयन्त पर अम्बिका देवीने अंबड़ (नाग देव) श्रावकके आराधन करनेपर उसके हाथमें स्वर्णाक्षर लिख दिये और कहा कि जो इन्हें पढ़ सकेंगे उन्हींको युगप्रधान जानना। अंबड़ सर्वत्र घूमा, पर उन अक्षरोंको कोई भी आचार्य न पढ़ सके। आखिर पाटणमें जिनदत्त सूरिजीने अंबड़के हाथपर वासक्षेपका प्रक्षेपन कर उन अक्षरोंको शिष्य द्वारा पढ़ सुनाये, तभीसे आप युगप्रधान विरुदसे प्रसिद्ध हुए।

आपने चौसठ योगिनी और बावन वीरों (क्षेत्रपाल) को जीता था और भूत-प्रेत आदि तो आपके नामस्मरण मात्रसे पास नहीं आ सकते, सूरि मन्त्रके प्रभावसे धरणेन्द्रको साधन किया था और एक लाख श्रावक श्राविकाओंको प्रतिबोध दिया था। विक्रमपुरमें सर्व संघको मारि रोग निवारण कर अभय दान दिया और ऋषभ जिनालयकी प्रतिष्ठा की। त्रिभुवन गिरिके नृपति कुमारपालको प्रतिबोध दिया।५०० व्यक्तियोंको जैनमुनियोंकी दीक्षा दी। उज्जैनीमें योगिनी (६४) चक्रको ध्यानबलसे प्रतिबोधा। आज भी आपके चमत्कार प्रत्यक्ष है और स्मरण मात्रसे मन-वांच्छित फल प्रदान करते हैं। सांभर (अजमेर) नरेश (अर्णोराज) को जैन-धर्मका प्रतिबोध दिया था। आपके हस्त दीक्षित साधुओंकी संख्या १५०० थी (पृ: ४६)। इस प्रकार आप-अपने महान व्यक्तित्वसे यशस्वी जीवन द्वारा चिरस्मीरणीय होकर सं: १२११ के आषाढ़ शुक्ला ११ को अजमेर नगरमें स्वर्ग सिधारे।

पृ० ३७३ से ३७८ में प्रकाशित अवदात छप्पयोंके अपूर्ण× (आदि अंत त्रु०) होनेके कारण वर्णित विषयका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। अत अन्य साधनोंके आधारसे इस विषयमें जो कुछ जाना गया है, उसका अति संक्षिप्त सार यहा दिया जाता है —

कनौजमें सीहोजी+ नामक भूपति राजा राज्य करते थे, एक बार उन्होंने यात्रार्थ द्वारिका जानेका विचार कर राज्यभार अपने छोटे भाईको देकर कुअर आसथान (जो कि उनके यदुवंशी राणीके पुत्र थे) एव ५०० सैनिकोंके साथ प्रस्थान किया। सिहोजी जब मारवाड पधारे तो राणीने एक स्वप्न देखा। × × ×

इधर मारवाड प्रान्तके पाली शहरमें ब्राह्मण यशोधर राज्य करते थे। उस समय खेड नगरके गुहलवंशी राजा महेशने पालीपर चढाई कर दी, इससे भयभ्रान्त हो यशोधर नगर रक्षणका उपाय सोचने लगे कि किसी सिद्ध पुरुषकी शरण ली जाय। परामर्श करनेपर ज्ञात हुआ कि खरतर गच्छ नायक श्री जिनदत्त सूरिजीका यहा चतुर्मास है और ये बडे ही चमत्कारी हैं। उनके मुख्य साथ कलाप ये हैं —

×छप्पयोंकी पूर्ण प्रति किसी सज्जनको कहीं प्राप्त होतो हमें भेजनेकी कृपा करें। छप्पयोंकी आदि अकुकी सख्या, सम्बन्ध व प्रतिक पद्यसख्याके हिसाबसे यह वर्णन बहुत बडा होना सम्भव है।

+आधुनिक इतिहासकारोंके मतसे सीहोजीका जन्म स० १२०१ कनौजसे आना १२६८ और स्वर्ग स० १३३० है। अत जिनदत्तसूरिका उनके साथ सम्बन्ध होना कहातक ठीक है, नहीं कहा जा सकता।

१ :—मुलतानमें पांच नदीके पांचो पीर आपके सेवक बने। माणिभद्र यक्ष एवं बावन वीर भी आपकी सेवामें हाजिर रहा करते थे।

२ :—मुल्तानमें प्रवेशोत्सव समय (भीड़में कुचलकर) मूगलपुत्र मर गया था, उसे आपने पुनः जीवित कर सबको आश्चर्यान्वित कर दिया।

३ :—चोसठ योगलियोंके स्त्री रूप धारण कर व्याख्यानमें छलनेको आने पर उन्हें मन्त्रित पाटों पर बैठाकर, कीलित कर दिया। आखिर वे गुरुजीसे प्रार्थना कर मुक्त हो, जाते समय ७ वरदान दे गई, जो इस प्रकार हैं :—

(१) प्रत्येक ग्राम और नगरमें एक श्रावक ऋद्धिवंत होगा।

(१) आपके नाम लेनेवालेपर बिजली नहीं गिरेगी।

(३) सिन्धु देशमें आपके श्रावकोंको विशेष लाभ होगा।

(४) आपके नाम स्मरणसे भूत-प्रेत एवं चौरादिका भय, ज्वरादि रोग दूर होंगे। एवं शाकिनी नहीं छल सकेगी।

(५) खरतर श्रावक प्रायः निर्धन न होगा और कुमरणसे नहीं मरेगा।

(६) आपके स्मरणसे जलसे पार उतर जायगा, पानीमें नहीं डूबेगा।

(७) बालब्रह्मचारिणी साध्वीको ऋतुधर्म नहीं आयगा।

४ —उज्जैनीके स्तम्भमेंसे ध्यानबलसे विद्यामन्त्रकी पुस्तक ग्रहण की, उसमेंसे स्वर्णसिद्धि आदि विद्यायें ग्रहण कर चित्तौड़के भंडारमें स्थापित की। उस पुस्तकको हेमचन्द्राचार्यके कथनसे कुमारपाल नृपतिने मगाई, पर उसे खोलनेका (ग्रन्थके उपर) निषेध लिखा हुआ होनेपर भी हेमचन्द्राचार्यकी बहिन साध्वीके पुस्तकके बन्डलको खोलनेपर वे नेत्रहीन हो गयीं और पुस्तक उड़कर जेसलमेरके भण्डारमें आ गिरी। वहा चोसठ योगनिया उनकी रक्षा करती हैं।

५ —प्रतिक्रमणके समय पड़ती हुई बिजलीको रोक दी।

६ —विक्रमपुरमें मृगीके उपद्रव होनेपर 'तजयउ' स्तोत्र रचकर शांति की। वहा महेश्वरी, डागा, लुणिया आदि १५०० श्रावकोंको प्रतिबोध दिया।

इस प्रकार गुरुजीकी प्रशंसा सुनकर उनसे यशोधरने राज्य रक्षण की प्रार्थना की। गुरुजीने उपरोक्त सिद्धीओंको वहाका राज्य दिलाकर उस राज्यकी रक्षा की, तभीसे राठोड़, खरतर आचार्यों को अपना गुरु मानने लगे।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० ५)

स० ११९७ भाद्र शुक्ल ८ को रासलकी पत्नी देल्हणदेकी कुक्षिसे आप जन्मे थे। स० १२०३ फाल्गुन शुक्ल ९ को ६ वर्षकी लघुवयमें ही जिनदत्त सूरिके समीप दीक्षा ग्रहण की। स० १२०५ वैशाख शुक्ल षष्ठीको विक्रमपुरमें श्री जिनदत्त सूरिजीने अपने पट्ट-

पर स्थापित किया था। कहा जाता है कि आपके भालस्थलपर मणि थी। अतः नरमणिमण्डित (भाल स्थल) नाम (संज्ञा) से आपकी सर्वत्र प्रसिद्धि है।

सं० १२२३ भाद्र कृष्ण चतुर्दसीको दिल्लीमें आपका स्वर्गवास हुआ।

जिनपति सूरि

(पृ० ६ से १०)

मरुस्थलके विक्रमपुर निवासी माल्हू यशोवर्द्धनकी भार्या सूहवदेकी कुक्षिसे सं० १२१० चैत्र कृष्ण अष्टमीके दिन आपका जन्म हुआ था। आपका जन्मका शुभ नाम 'नरपति' रखा गया। सं० १२१८ फाल्गुन कृष्ण १० को जिनचन्द्र सूरिजीके पास भीमपल्लीमें आपने दीक्षा ग्रहण कर सर्व सिद्धान्तोंका अध्ययन किया।

सं० १२२३ कार्तिक शुक्ला १३ वब्बेरकपुरमें जयदेवाचार्यने श्री जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापन कर आपका नाम जिनपति सूरि रखा, इसके पश्चात आपने अपनी अद्वितीय मेधा व प्रतिभासे ३६ वादोंमें अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज एवं जयसिंह आदिके राज्यसभामें विजय प्राप्त की। वादी रूपी हस्तियोंके विदीर्णार्थ आप सिंहके समान थे। आपने बहुतसे शिष्योंको दीक्षा दी। अनेकों जिन बिम्बों आदिकी प्रतिष्ठायें की। शासन देवी आपके पादपद्मोंकी सेवा करती थी और जालन्धरा देवीको आपने रञ्जित किया था। खरतर गच्छकी मर्यादा (विधि) आपने ही सुव्यवस्थित की थी।

मरुकोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रजी (षष्टि शतककर्त्ता) सद्गुरुके शोधमें १२ वर्ष तक पर्यटन करते हुए पाटण पधारे और आपके सद्गुणोंसे प्रतिबोधको प्राप्त हुए। इतना ही नहीं भण्डारीजीके पुत्रने आपके पास दीक्षा ग्रहण की थी। वास्तवमें आप युग प्रधान आचार्य थे।

इस प्रकार स्वपर कल्याण करते हुए सं० १२७७ आषाढ़ शुक्ला १० को पाल्हणपुरमें स्वर्ग सिधारे। वहाँ संघने स्तूप बनवाया।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ३७७)

मरुस्थलके शिरोमणि मरोट कोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रकी भार्या लक्ष्मणीकी कुक्षिसे सं० १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को आपका जन्म हुआ था। अम्बिका देवीके स्वप्नानुसार आपका जन्म नाम अम्बड रखा गया।

श्री जिनपतिसूरिजीके सदुपदेशसे वैराग्य वासित होकर आपने अपने माता पिताके प्रव्रज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा मांगी मातापिताने संयमकी दुष्करता बतलाई पर उनके वैराग्यवानको वह असार ज्ञात हुई क्योंकि आपका ज्ञान गर्भित वैराग्य सम्यक् एवम् विरक्त होनेके लिये ही हुआ था।

सं० १२५५ चैत्र कृष्णा २ खेड़ नगरके शान्ति जिनालयमें श्री जिनपति सूरजीने दीक्षित कर आपका नाम वीरप्रभ रखा आप सकलसिद्धान्तोंका अवगाहन कर श्री जिनपति सूरिके पदपर सुशोभित हुए। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात आप जिनेश्वर सूरि नामसे

प्रसिद्ध हुए। आपने अनेक देशोंमें विहार कर बहुतसे भव्यात्माओं-को प्रतिबोध दिया। इस प्रकार धर्म प्रचार करते हुए आप जालोर पधारे और अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर अपने सुशिष्य वाचनाचार्य प्रबोध मूर्तिको अपने पदपर स्थापित कर जिनप्रबोध सूरि नाम स्थापना की और वहीं अनशन आराधना कर सं० १३३१ के आश्विन कृष्णा ६ को स्वर्ग सिधारे।

जिन प्रबोध सूरि उल्लेख :—गुर्वावलियोंमें

जिनचन्द्र सूरि " "

श्री जिन कुशलसूरिजी विरचित 'जिनचन्द्र सूरि चतुःसप्ततिका' प्राप्त हुई है। ग्रन्थ विस्तार भयसे उसे प्रगट नहीं की गयी, मात्र उसका सार नीचे दिया जाता है।

मारवाड़ प्रान्तमें समीयाणा (सम्माणथणि) नगरके मन्त्री देवराजकी पत्नी कोमल देवीकी रत्नगर्भा कुक्षिसे सं० १३२४ मार्ग-शीर्ष शुक्ला ४ को आपका जन्म हुआ था। आपका जन्म नाम खंभराय रखा गया। खंभराय क्रमशः वयके साथ-साथ गुणोंसे भी बढ़ते हुए जब ६ वर्षके हुए तब श्री जिनप्रबोध सूरिकी देशना श्रवणका सुअवसर मिला। उनके उपदेशसे प्रतिबोध कर सं० १३३२ के जेठ शुक्ला ३ को गुरुश्रीके समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। पूज्य श्रीने आपका नाम "क्षेमकीर्त्ति" रखा। दीक्षाके अनन्तर आपने व्याकरण, छंद, नाटक, सिद्धान्त आदिका अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

विक्रमपुर स्थित महावीर प्रतिमाके ध्यान वश्में अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर श्री जिनप्रबोधसूरिजी जालोरपुर पधारे और वहां क्षेमकीर्त्तिजीको स्वहस्त कमलसे सं० १३४१ वै० शु० ३ अक्षय तृतीयाको वीर चैत्यमें बड़े महोत्सवपूर्वक आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सोंपकर जिनप्रबोधसूरिजी स्वर्ग सिधारे। आचार्य पदके अनन्तर आपका शुभ नाम जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध किया गया। आपके रूप लावण्य और गुण सचमुच सराहनीय थे। श्रीकर्णदेव जैत्रसिंह, और समरसिंहजी भूपति त्रय आपकी सेवा करनेमें अपना अहोभाग्य समझते थे। आपने किन्न प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पद प्रदानादि कर अनेकानेक धर्मप्रभावनाकी। शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंकी यात्रा की। एवं गुजरात, सिन्ध, मारवाड, मालप्रदेश, वागड, दिल्ली आदि देशोंमें विहार कर धर्म प्रचार किया। सं० १३७६ के आषाढ शुक्ल ६ को राजेन्द्रचन्द्र सूरिजीको अपने पट्टपर कुशल कीर्त्तिको स्थापन करने आदिकी शिक्षा देकर अनशन आराधना-पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

जिनकुशल सूरि

(पृ० १५ से १६)

अणहिल पटणाधीश दुर्लभराज (की सभामें चैत्यवासियोंको परास्त कर) के समय वसतिमार्गप्रकाशक जिनेश्वर सूरि (प्रथम) के पट्टपर संवेगरंगशालाके कर्त्ता जिनचन्द्र सूरि, नवांगीवृत्तिकर्त्ता अभयदेव सूरि कि जिन्होंने (स्तम्भन) पार्श्वनाथके प्रसादसे धरणेन्द्र पद्मावती आदि देवोंको साधित किये, उनके पट्टपर संवेगीशिरोमणि

और चितोडस्थ चामुण्डा देवीको प्रतिबोध देनेवाले जिनवल्लभसूरि और उनके पट्टधर योगिराज जिनदत्त सूरि हुए कि जिन्होंने ज्ञानध्यानके प्रभावसे योगिनियां आदि दुष्ट देवोंको किंकर बना लिये थे। उनके पदपर सकल कला-सम्पन्न जिनचन्द्र सूरि और उनके पट्टधर-वादियों रूप गजोंके विदारणमें सिंह सादृश (वादी मानमर्दन) जिन-पति सूरिजी हुए।

जिनपति सूरिके जिनेश्वर सूरि उनके पट्टधर जिनप्रबोध सूरि और उनके पट्टधर जिनचन्द्र सूरि हुए, जिन्होंने बहुत देशोंमें सुविहित विहारकर त्रिभुवनमें प्रसिद्धी प्राप्त की एवं सुरताण (सम्राट्) कुत-बुद्दीनको रंजित किया था, उनके पट्टधर जिनकुशल सूरि हुए, जिनके पदस्थापनाका वृतान्त इस प्रकार है:—

दीनोद्धारक कल्पतरु और महान् राज्य प्रसादप्राप्त मन्त्री देव-राजके पुत्र जेल्हेकी पत्नि जयत श्रीके पुत्ररत्न कि जिनका दीक्षित नाम वाचनाचार्य कुशलकीर्त्ति था, को राजेन्द्रचन्द्र सूरिने पाटणमें जिन-चन्द्र सूरिके पदपर स्थापित किया। उस समय दिल्ली वास्तव्य महत्ती-याण ठक्कुर विजय सिंह एवं पाटणके ओसवाल तेजपाल व उनका लघुभ्राता रुद्रपालने श्रीराजेन्द्रचन्द्र सूरि और विवेकसमुद्रोपाध्यायसे पद महोत्सव करनेका आदेश मांगा और उनकी आज्ञा प्राप्तकर सर्वत्र कुंकुम-पत्रीकाएं प्रेषित कर बड़ा महोत्सव प्रारम्भ किया। सं० १३७७ के ज्येष्ठ कृष्णा एकादशीके दिन जिनालयको देवविमानके सादृश सुशोभित कर जिनेश्वर प्रभुके समक्ष राजेन्द्रचन्द्र सूरिने वा० कुशलकीर्त्तिको जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापित कर 'जिनकुशल

सूरि' नाम स्थापना की, उस समय अनेक दर्शक सब आये थे, वाजिन्त्रोंके नादसे आकाशमण्डल व्याप्त हो गया था। महत्तीयाण विजय सिंहने सूर गुरुभक्ति की, देश-विदेश विख्यात सामन्तशी वीरदत्त स्वधर्मीवात्सल्य किया। उस समय ७०० साधु, २४०० साध्वीयोंको तेजपाल, रुद्रपालने अपने घर आमंत्रित कर वस्त्र परिधापन किया। अणहिल पाटणकी शोभा उस समय बडी दर्शनीय और चित्ताकर्षक थी। महोत्सव करनेवाले तेजपालको सभी लोग बडी उत्सुकतासे देख रहे थे। इस प्रकार युगप्रधान पद महोत्सव कर सचमुच तेजपालने बडी ख्याति प्राप्त की।

आपका विशेष परिचय खरतरगच्छ गुर्वावली और पट्टावलियोंमें पाया जाता है। उक्त गुर्वावली यथावसर हमारी ओरसे सानुवाद प्रकाशित होगी। आपकी रचित "चैत्यवंदन कुलक वृत्ति" प्रकाशित हो चुकी है।

जिनपद्मसूरि

(पृ० २० स २३)

उपरोक्त श्री जिनकुशल सूरिजी महिमंडलमें विचरते हुए देरावर पधारे। वहां व्रत ग्रहण, मालाग्रहण, पदस्थापन आदि अनेक धर्मकृत्य हुए। सूरिजीने अपना आयुष्यका अन्त निकट ज्ञातकर (तरुणप्रभ) आचार्यको अपने पद (स्थापन) आदि की समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। इसी समय सिन्धु देशके राणु नगर वास्तव्य रीहड श्रावक पुनचन्द्रके पुत्र हरिपाल देरावर पधारे और युगप्रधान पद महोत्सव करनेकी आज्ञाके लिये तरुणप्रभाचार्यसे विनीत प्रार्थना की और आज्ञा प्राप्त

कर दशोंदिशाओंके संघोंको कुंकुम-पत्रीयों द्वारा आमंत्रित किये, संघ आये।

प्रसिद्ध खीमड कुलके लक्ष्मीधरके पुत्र आंबाशाहकी पत्नीकी कुक्षि सरोवरसे उत्पन्न राजहंसके सादृश पद्मसूरिजी को सं०१३८९ ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी सोमवारको ध्वजा पताका, तोरण वंदनमालादिसे अलंकृत आदीश्वर जिनालयमें नांन्दिस्थापन विधिसह श्री सरस्वती कंठाभरण तरुणप्रभाचार्य (षडावश्यक बालावबोधकर्त्ता) ने जिन-कुशल सूरिजीके पदपर स्थापित कर जिनपद्म सूरि नाम प्रसिद्ध किया। उस समय चारों ओर जयजय शब्द हो रहा था। रमणियां हर्षसे नृत्य कर रहीं थीं। लोगोंके हृदयमें हर्षका पार न था। शाह हरिपालने संघभक्ति (स्वामिवात्सल्यादि) एवं गुरुभक्ति (वस्त्रदानादि) के साथ युगप्रधान पद महोत्सव बड़े समारोहके साथ किया।

पाटण संघने आपको (बालधवल) कुर्चाल सरस्वती विरुद दिया। (पृ० ४७)

जिनचन्द्र सूरि (उ० गुर्वावलिमें)

जिनोदय सूरि (पृ० ३८४से ३९४)

चन्द्रगच्छ और वज्रशाखामें श्री अभयदेवसूरिजी हुए.उनके पट्टानु-क्रममें सरस्वती कण्ठाभरण जिनवल्लभ सूरि, विधिमार्ग प्रकाशक जिनदत्तसूरि, कामदेव सादृश रूपवान् जिनचन्द्रसूरि, वादिगज केशरी जिनपत्ति सूरि, भक्तजन कल्पवृक्ष जिनेश्वर सूरि, सकलकला सम्पन्न जिनप्रबोध सूरि, भवोदधिपोत जिनचन्द्र सूरि, सिन्धुदेशमें विहित

विहार कर जिनधर्म प्रचारक जिनकुशल सूरि, सुगुरु अवतार जिनपद्म सूरि, शासन शृङ्गार जिनलब्धि सूरिके पट्ट प्रभाकर तेजस्वी जिनचन्द्रसूरि ज्ञाननीर वर्षाते हुए स्तम्भतीर्थ पधारे और (आयुष्यका अन्त ज्ञान, तरुण प्रभ) आचार्य को गच्छ और पद स्थापनादिकी समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे।

इसी समय दिल्ली वास्तव्य श्रीमाल रुद्रपाल, नींबा सधरांके पुत्र सङ्घवी रतना पूनिग सद्गुरुवर्यको वन्दनार्थ संभात आये और उन्होंने श्रीतरुणप्रभाचार्यको वन्दनकर पद महोत्सवकी आज्ञा ले ली। सं० १४१५ के आषाढ कृष्ण १३ को हजारों लोगोंके समक्ष अजित-जिनालयमें आचार्यश्रीने वाचनाचार्य सोमप्रभको गच्छनायक पद देकर जिनोदय सूरि नाम स्थापनाकी। संघवी रतना, पूनाने उस समय बड़ा भारी उत्सव किया। लोगोंके जयजयारवसे गगन मण्डल व्याप्त हो गया। वाजित्र बजने लगे, याचक लोग कलरव (शोर) करने लगे, कहीं सुन्दर रास (खेल) हो रहे थे, कहीं मृदुभाषिणी कुलाङ्गनायें मङ्गल गीत गा रही थीं। इस प्रकार वह उत्सव अतिशय नयनाभिराम था। सघवी रतना पूना और शाह वस्तपालने याचकोंको वाछित दान दिया, चतुर्विध संघकी बड़ी भक्ति और विनयसे पूजाकी, साधर्मी वात्सल्यादि सत्कार्यों में अपनी चपला लक्ष्मीको खुले हाथ व्ययकर जीवनको सार्थक बनाया, उस समय साल्हिग और गुणराजने भी याचकोंको बहुत दान दिये। उपरोक्त वर्णन ज्ञानकलश कृत रासके अनुसार लिखा गया है।

मेरुसदन कृत विवाहलेके अनुसार श्रीजिनोदयसूरिका विशेप परिचय इस प्रकार है—

गूर्जरधरा रूपी सुन्दरीके हृदयपर रत्नोंके हारके भांति पाल्हणपुर नगर है। उसमें व्यापारी मुख्य माल्हू शाखाके (शाह रतनिग कुल मण्डल) रुद्रपाल श्रेष्ठि निवास करते थे। सं० १३७५ में उनकी भार्या धारल देवीके कुक्षि सरोवरसे राजहंसके सदृश पुत्र उत्पन्न हुआ। माता पिताने उसका शुभ नाम समरा रखा। चन्द्रकलाके भांति समरा कुमर दिनोदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा।

इधर पाल्हणपुरमें किसी समय श्री जिनकुशलसूरिजी का शुभागमन हुआ। धर्म-प्रेमी रुद्रपालने सपरिवार गुरुजीको वन्दन कर धर्म श्रवण किया। सूरिजीने समरा कुमरके शुभ लक्षणोंको देख (आश्चर्यान्वित होकर) रुद्रपालको उसे दीक्षित करनेका उपदेश देकर आप भीमपल्ली पधारे। इधर माताके खोलेमें बैठे कुमरने सूरिजीके पास दिक्षा कुमारीसे विवाह करानेकी प्रार्थना की। माताने संयम पालनकी दुष्करता, उसकी लघु अवस्था आदि वतलाकर वहुत समझाया, पर वैरागी समराने अपना दृढ़ निश्चय प्रगट किया। अतः इच्छा नहीं होते हुए भी पुत्रके अत्याग्रहसे रुद्रपालने सपरिवार भीमपल्ली जाकर वीर जिनालयमें नांदिस्थापन कर जिनकुशलसूरिके हस्तकमलसे समरा कुमरको सं० १३८२ में दीक्षा दिलाई। कालिकाचार्यके साथ सरस्वती वहनने दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार समराकुमरके साथ उसकी वहिन कील्हूने दीक्षा ग्रहण की। गुरुने समरेकुमरका नाम 'सोमप्रभ' रखा। सोमप्रभ मुनि अव वड़े

मनोयोगमें विद्याध्ययन करने लगे और समस्त शास्त्रोंके पारगत बने। सोमप्रभकी योग्यतासे प्रसन्न हो गुरुश्रीने स० १४०६ में जेसलमेरमें 'वाचनाचार्य' पद प्रदान किया। वाचनाचार्यजी सुविहित विहार करते हुए धर्म प्रचार करने लगे।

इस प्रकार धर्मोन्नति करते हुए सोमप्रभजीको स० १४१५ आषाढ कृष्ण त्रयोदशीको खभातमें श्री तरुणप्रभाचार्यने जिन चन्द्र-सूरिके पदपर स्थापित किये। पदस्थापनका विशेष वर्णन ऊपर आ ही चुका है।

आचार्यपद प्राप्तके अनन्तर श्री जिनोदय सूरिजीने सिंध, गुजरात, मेवाड आदि देशोंमें विहार कर सुविहित मार्गका प्रचार किया। पांच स्थानोंमें बडी प्रतिष्ठायें की, २४ शिष्यों १४ शिष्यणियोंको दीक्षित किये, अनेकोंको मपदी, आचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य महत्तरा आदि पदसे अलङ्कृत किये। इस प्रकार धर्म प्रभावना करते हुए स० १४३२ के भाद्र कृष्णा एकादशीको पाटणमें लोकहिताचार्यको शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। संघने आपके अन्तक्रिया स्थलपर सुन्दर स्तूप बनाकर भक्ति प्रदर्शित की।

जिनराज सूरि उ० गुर्वावलियोंमें

जिनभद्र सूरि "

जिनचन्द्र सूरि पृ० ४८

साहु शाखाके वच्छराजकी भार्या स्याणीके कुक्षिसे आप जन्मे थे।

जिन समुद्रसूरि उ० गुर्वावलियोंमें

खरतर गुरुगुण छप्पय और गुरुगुण षट्पदका सार

प० १ से ३ एवं २४ से ४०

नाम पट्टस्थापनासंवत मिती स्थान जिनालय पट्टदाता

जिनवल्लभः—सं० ११६७ आषाढ़ शुक्ला ६ चित्तौड़, महावीर, देवभद्रसूरि

जिनदत्तः—सं० ११६९ वैशाख कृष्णा ६ ,, ,, ,,

जिनचन्द्रः—सं० १२०५ वैशाख शुक्ला ६ विक्रमपुर, ,, जिनदत्तसूरि

जिनपतिः—सं०१२२३ कार्तिक शुक्ला १३ बब्बेरपुर, जयदेवसूरि

जिनेश्वरः—सं० १२७८ माह शुक्ला ६ जालौर, ,, सर्वदेवसूरि

जिनप्रबोध—सं० १३३१ आश्विन (कृष्णा) ५ ,,

जिनचन्द्रः—सं० १३४१ वैशाख शुक्ला ३ ,,

जिनकुशलः—सं० १३७७ ज्येष्ठ कृष्णा ११ पाटण,

जिनपद्मसूरिः—सं० १३९० ज्येष्ठ शु० ६ देरावर,

जिनलब्धिः—सं० १४०० आषाढ़ कृष्णा १

जिनचन्द्रः—सं० १४०६ माह शुक्ला १० जैसलमेर,

जिनोदयः—सं० १४१५ आषाढ़ कृष्णा १३ खंभात, अजित,

जिनराजः—१४३३ फाल्गुण कृष्णा ६ पाटण, शांति, लोकहिताचार्य

जिनभद्र—सं० १४७५ माह (शु० १५)भाणशालि,

अजित, सागरचंद्राचार्य

अन्य महत्वके उल्लेखः—(गा २०) सं० १०८० पाटण दुर्लभ सभा चैत्यवासी विजय, जिनेश्वर सूरिको खरतर विरुद प्राप्ति,(गा० २१) गौतमके १५०० तापसोंका प्रतिबोध, (छ०गा २२)कालिकाचार्यका चतुर्थीको पर्यूषण करना,(गा २३)में जिनदत्त सूरिका युगप्रधानपद,(गा० ३०)में दशारणभद्रका

जिनहंससूरि

पृ० ७३

जिनहंस सूरिजीका सूरिपद मन्त्रीश्वर कर्मसिंहने एक हजार पीरोजी खरचकर बड़े समारोहसे किया। आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर अनेक देशोंमें विहार करते हुए आप आगरे पधारे। श्रीमाल डुंगरसी और उनके भ्राता पासदत्तने अतिशय हर्षोत्साहसे प्रवेशोत्सव बड़े धूमधामसे किया, सजावट बड़ी दर्शनीय की गई, लोगोंकी भीड़से मार्ग संकीर्ण हो गये, पातशाह स्वयं हाथीके हौदे उम्बर खान, वजीर इत्यादि राज्यके अमलदारोंके साथ सामने आये, वादित्र बज रहे थे। आविकायें मंगलकलश मस्तकपर धारण कर गुरुश्रीको मोतियोंसे बधा रही थीं। रजत मुद्रा (रुपये) के साथ पान (ताम्बूल) दिये गये, इससे बड़ा यश फैला और दिल्लीपति सिकन्दर पातशाहको यह जान बड़ा आश्चर्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने सूरिजीको राजसभा (दीवानखाना) में आमंत्रित कर करामात दिखाने को कहा क्योंकि सम्राट्ने खरतर जिनप्रभसूरिजीके करामात (चमत्कार) की बात, पहिले लोगोंसे सुनी हुई थी। पूज्यश्रीने तपस्याके साथ ध्यान करना प्रारम्भ किया, यथासमय जिनदत्तसूरिजीके प्रसाद एवं ६४ योगिनीयोंके सानिध्यसे किसी चमत्कार विशेषसे सिकन्दर

वीर वन्दन (गा० २३) पीठकी १ गाथामें सं० १५१२ का० व १४ अभय तिलकके रचनाका उल्लेख है (द्वि० गा० २३) में जिनहंस सूरिको लक्ष्य गोत्रीय धर्मसिंहके भार्या सेवाइके कुक्षिसे उत्पन्न होना और बाल्यवयमें व्रत लेना, लिखा है।

पातशाहका चित्त चमत्कृत कर ५०० वन्दीजनोंको कारावास (वाखरमी) से छुड़ाकर महान सुयश प्राप्त किया।

कवि भक्तिलाभने गुरुभक्तिसे प्रेरित होकर इस यशगीतकी रचना की। वि० आपके रचित आचाराङ्गदीपिका (सं० १५८२ वीकानेर) उपलब्ध है।

जिनमाणिक्य सूरि (उ० गुर्वावलियोंमें)

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि (पृ० ५८ से १२४)

जिनसिंह सूरि (पृ० १२५ से १३३)

श्री जिनचन्द्र सूरिजी एवं जिनसिंह सूरिजीके सम्बन्धी गीत, रास आदि काव्योंका सर्व सारांश "युगप्रधान जिनचन्द सूरि" में दिया है। अतः यहां दुहराकर ग्रन्थके कलेवरको वढ़ाना उचित नहीं समझा गया।

जिनचन्द्र सूरि सम्बन्धी दो वड़े रास हैं, उनमेंसे "अकवर-प्रतिवोध रासका सार उक्त ग्रन्थके छठें, सातवें प्रकरणमें एवं निर्वाण रासका सार ११, १२ वें प्रकरणमें दे दिया गया है।

श्री जिनसिंह सूरिजीका ऐतिहासिक परिचय उक्त ग्रन्थके पृ० १७४ से १८२ तकमें लिखा गया है। आपके सम्बन्धमें हमें सूरचन्द कृत एक रास अभी और नया उपलब्ध हुआ है, पर उसमें हमारे लि० चरित्रके अतिरिक्त कोई विशेष नवीनता नहीं, और ग्रन्थ वहुत वढ़ा हो जानेके कारण उसे प्रकाशित नहीं किया गया।

सूरचन्द्र कृत रासमें नवीन वातें ये हैं :—

(१) जिनसिंह सूरिजीके पिताका निवास स्थान 'खेतासर' लिखा है।

(२) पाटणमें धर्मसागर कृत ग्रन्थको अप्रमाणित सिद्ध किया। संघवी सोमजीके संघ सह शत्रुंजय यात्रा की।

(३) इनके पदमहोत्सवपर श्रीमाल-टाक गोत्रीय राजपालने १८०० घोड़े दान किये थे।

(४) अकबर सभामें ब्राह्मणोंको गंगा नदीके जलकी पवित्रता एवं सूर्यकी मान्यतापर प्रत्युत्तर देकर, विजय किया था।

जिनराज सूरि

(पृ० १५० से १५७, ४१७)

राजस्थानमें बीकानेर एक सुसमृद्ध नगर है, वहां राजा रायसिंह जी राज्य करते थे, उनके मन्त्री करमचन्दजी बच्छावत थे। जिन्होंने सं० १६३५ के दुष्कालमें सत्रूकार (दानशाला) स्थापित कर टोलती हुई पृथ्वीको (दान देकर) स्थिर कर दी थी एवं लाहौरमें जिनचन्द सूरिजीके युग प्रधान पद एवं जिनसिंह सूरिजीके आचार्य पदके महोत्सवपर क्रोड़ द्रव्य और नव ग्राम, नव हाथी आदिका महान दान किया था।

उस समय बीकानेरमें बोथरा कुलोत्पन्न धर्मसी शाह निवास करते थे उनकी धर्मपत्नीका शुभ नाम धारल देवी था। सामारिक भोगोंको भोगते हुए दम्पत्ति सुखसे काल निर्गमन करते थे।

हमारे संग्रहके प्रबन्धमें आपके ७ भाइयोंके नाम इस प्रकार हैं — १ राम, २ नेहा, ३ रतनसी ४ भैरव ५ केशव, ६ कपूर, ७ सातड.

इस प्रकार विषय भोगोंको भोगते हुए धारल देवीकी कुक्षिमें सिंह स्वप्न सूचित एक पुण्यवान जीव अवतरित हुआ।

ज्योतिषियोंको स्वप्न फल पूछनेपर उन्होंने सौभाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होनेकी सूचना दी। यथा समय (गर्भ वृद्धि होनेके साथ-साथ अच्छे-अच्छे दोहद उत्पन्न होने लगे, अनुक्रमसे गर्भ स्थिति परिपूर्ण होनेसे) सं० १६४७ वैसाख सुदी ७ बुधवार, छत्र योग श्रवण नक्षत्रमें धारलदेवीने पुत्र जन्मा।

दशूठण उत्सवके अनन्तर नवजात शिशुका नाम खेतसी रखा गया, वृद्धिमान होते हुए खेतसी * कलाभ्यास करने लगा अनुक्रमसे ६ भाषा, १८ लिपि, १४ विद्या, ७२ कला, ३६ राग और चाणक्यादि शास्त्रोंका अध्ययन कर प्रवीण हो गया। इसी समय अकबर बादशाह प्रशंसित जिन सिंह सूरिजी बीकानेर पधारे। लोक बड़े हर्षित हुए और सूरिजीका धर्मोपदेश श्रवणार्थ सभी लोग आने लगे, (अपने पिताके साथ) खेतसी कुमार भी व्याख्यानमें पधारे। और धर्म श्रवणकर वैराग्यवासित होकर घर आकर अपनी माताजी से दीक्षा की अनुमति मांगी। पर पुत्रका स्नेह सहज कैसे छूट सकता था। माताने अनेक प्रकारसे समझाया पर खेतसी कुमार अपने दृढ़ निश्चयसे विचलित नहीं हुए और सं० १६५६ मार्गशीर्ष शुक्ला १३ को जिनसिंह सूरीजीके समीप दीक्षा ग्रहण की। इस समय धर्मसी शाहने दीक्षाका बड़ा उत्सव किया, नव दीक्षित मुनि अब गुरुश्री के प्रदत्त राजसिंहके नामसे परिचित होने लगे।

---

* एक पट्टावलीमें लिखा है कि आपके लघु भ्राता भैरवने भी आपके साथ दीक्षा ली।

ईश्वरके अनन्तर सूरिजी श्रीत ही अन्यत्र विहार कर गये। राज सिन्ध मरोट्ठपद अन्त कर कुमार मानसिंह फगर श्री जिनचन्द्र सूरिजीने उन्हें वहीं दीक्षा (उपाध्यायनीय) दी और नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया।

राजसमुद्र थोड़े ही समयमें कुशाग्र बुद्धिपनसे सूत्रोंके पढ़कर गीतार्थ हो गये। श्री जिन सिंह सूरिजी स्वयं आपको विद्या दान थे, श्री जिनचन्द्र सूरजीने आपको वाचनाचार्य * पदसे अलंकृत किया। आपमें प्रकर पुन्योदयसे अनिर्वाच्यवी प्रभाव हुई। जिसके प्रभाव फलस्वरूप घघाणीक (प्राचीन) तीर्थोंको आपने प्रकट किये। जसलमेरमें राउल भीमके समक्ष आपने मतवादीयोंको पराजित किये थे।

इधर सम्राट जहांगीरने मान सिंह (जिन सिंह सूरि) से प्रेम होनेसे उन्हें निमन्त्रणार्थ अपने वजीरोंको फरमान पत्रके साथ बीकानेर भेजा। वे बीकानेर आये और फरमान पत्र सूरिजीको सादर दिया। सुनकर पढ़ा तो सूरिजीको सम्राटने आमन्त्रित किया जानकर सभा प्रसन्न हुए।

सम्राटके आमन्त्रणसे सूरिजीने विहार कर मेड़ते पधारे। वहां एक महीनेकी अवस्थिति की फिर वहांसे एक प्रयाण किया पर आयुष्य अन्त निकट हो आ चुका था अतः मेड़ते पधारे और वहीं

* हमारे संग्रहके प्रत्यमें जन्मका वार बुधको आद शुद्ध और दीक्षा सं० १६५७ मीगसर सुदी ९ बीकानेर लिखा है। वणारसपद सं० १६६८ आसाउमें लिखा है।

स्वयं संथारा उच्चारण कर सं० १६७४ पौष शुक्ला १३ को प्रथम देवलोक सिधारे।

संघने एकत्र हो पट्टधरके योग्य कौन है, इसका विचारकर राज-समुद्रजीको योग्य विदित कर उन्हें गच्छनायक और सूरिजीके अन्य शिष्य सिद्धसेन मुनिको आचार्य पदसे विभूषित किये। ये दोनों जिनराज सूरि और जिनसागर सूरिजीके नामसे प्रसिद्ध हुए। पदमहोत्सवपर संघवी आसकरण चोपड़ेने बहुत द्रव्य व्यय किया। १६७४ फाल्गुन शुक्ला ७* को पदस्थापना बड़े समारोहसे हुई।

गच्छनायक पद प्राप्तिके अनन्तर आपने अनेक जगह विहारकर अनेकानेक धर्म प्रभावनायें की, जिनमेंसे कुछ ये हैं:—(सं० १६७५ मिगसर सुदी १२ को) जेसलमेर (लोद्रवे) गढ़में (भणसाली थाहरु-कारित) सहस्त्रफणापार्श्वनाथकी प्रतिष्ठा की। (सं० १६७५ चै० शु० १३ क) शत्रुंजय पर (सोमजी पुत्र रूपजीकारित) अष्टमोद्धारके ७०० प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा की। भाणवटमें बाफणा चांपशी कारित अमीझरा पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठाकी, मेड़तेमें चोपड़ा अमकरण कारित शान्ति जिनालयकी (सं० १६७७ जे० कृ० ५) प्रतिष्ठाकी। अम्बिका देवी एवं ५२ वीर आपके प्रत्यक्ष थे, सिन्धमें विहारकर (पांच नदीके) पाँच पीरोंको आपने साधित किये। ठाणांग सूत्रकी विषम पदार्थ वृत्ति बनाई।

---

* प्रबन्धमें उपाध्याय सोमविजयका नाम भी है।

+ प्रबन्धमें द्वितीया लिखा है। सूरिमन्त्र पुनमीया हेमाचार्यने दिया लिखा है।

इस प्रकार शासनका उद्योत करनेवाले गच्छ नायकके गुण-कीर्तन रूप यह रास श्रीसार कविने सं० १६८१ असाढ कृष्ण १३ को सत्यपुर (?) रचा। क्षेमशाखाके रत्नहर्षके शिष्य हेमकीर्तिने यह प्रबन्ध बनवाया। गच्छ नायकके गुणगान करते समय (वर्षा) भी अच्छी हुई। उपरोक्त रास रचनाके पश्चात् (सं० १६८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ४ रविवारको आगरेमें सम्राट् शाहजहाँसे आप मिले थे और वहां ब्राह्मणोंसे वादमें परास्त किये एवं दर्शनी लोगोंके विहारका जहां कहीं प्रतिषेध था वह खुला करवा कर शासनोन्नति की। राजा गजसिंहजी, सूरसिंहजी असरफखान, आलमदीवान आदिने आपकी बड़ी प्रशंसा की।

यह सवैये (पृ० १७३) से स्पष्ट है। गीत नं० ५ में लिखा है कि सुकरबखान ने आपके शुद्ध और कठिन साध्वाचारकी बड़ी प्रशंसा की।

आपके रचित १ शालिभद्र चौ० २ गजसुकमाल चौ० ३ चोवीसी ४ वीसी ५ प्रश्नोत्तर रत्नमाला वीशी ६ कर्म बत्तीसी ७ शील बत्तीसी बालावबोध ८ गुणस्थानस्त और अनेक पद उपलब्ध हैं। नैषध काव्य पर भी आपके ३६ हजारी वृत्ति बनानेका उल्लेख है। लेकिन कालक्रम इसकी दो प्रतियां विद्यमान हैं।—

---

* हमारे संग्रहके जिनराज सूरि प्रबन्धमें विशेष बात यह है —

आपने ६ मुनियोंको उपाध्याय ४१ को वाचक पद और १ साध्वीजी को प्रवर्तनी पद दिया ८ बार शत्रुञ्जयकी यात्रा की पाटणके संघके साथ गौड़ीपार्श्वनाथ गिरनार आबू राणकपुरकी यात्रा की, नवानगरके

जिनरतन सूरि

(पृ० २३४ से २४७)

मरुधर देशके सेरुणा ग्राममें ओशवाल लुणिया गोत्रीय तिलोकसी शाहकी पत्नी तारा देवीकी* कुक्षिसे (सं० १६७०) में आपका जन्म हुआ था। आठ वर्षकी लघुवयमें ही आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और जिनराज सूरिके पास अपने वान्धव और माताके साथ (सं० १६८४) में† दीक्षा ग्रहण की। थोड़े दिनोंमें ही शास्त्रोंका अध्ययन कर देश-विदेशोंमें विहार कर भव्य जनोंको प्रतिवोध देने लगे। ×आपके गुणोंसे योग्यताका निर्णय कर जिनराज सूरिजीने अहमदावाद बुलाकर आपको उपाध्याय पदसे अलंकित किया। इस समय जयमल, तेजसीने वहुत-सा द्रव्य व्यय कर उत्सव किया था।

सं० १७०० में जिनराजसूरिजीका चतुर्मास पाटण था। उन्होंने स्वहस्तसे जिनरतन सूरिजीकी पद स्थापना की, और अषाढ़ शुक्ला ६ को वे स्वर्ग सिधारे।

चतुर्मासके समयमें दोसी माधवादि ने ३६००० जमसाइ व्यय की, आगरेमें १६ वर्षकी अवस्थामें चिन्तामणि शास्त्रका पूर्ण अध्ययन किया, पालीमें प्रतिष्ठा की, राउल कल्याणदास और राय कुंवर मनोहरदासके आमन्त्रणसे जैसलमेर पधारे, संघवी थाहरूने प्रवेशोत्सव किया। आपके शिष्य-प्रशिष्यों की संख्या ४१ थी।

*× १ नाहटा थे (देखो पृ० २४६ में)

× गीत नं० ९ में तेजस हैं। देखो पृ० २४७ × गीत नीः ४ में सदामी लिखा है।

पाटणसे विहार कर जिनरत्न सूरिजी पाल्हणपुर पधारे वहां सघने हर्षित हो उत्सव किया। वहांसे स्वर्णगिरि संघके आग्रहसे वहां पधारे। श्रेष्ठिवीयेन प्रवेशोत्सव किया, वहांसे मरुस्थलमें विहार करते सघके आग्रहसे बीकानेर पधारे, नयमल वेगेने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर (प्रवेश-) उत्सव किया, वहांसे क्रम विहार विचरते वीरमपुरमें (स० १७०१) में सघाग्रहसे चतुर्मास किया।

चतुर्मास समाप्त होते ही बाडमेर (स० १७०२) में आये, सघके आग्रहसे चतुर्मास वहीं किया। वहांसे विहार कर कोटडेमें(स०१७०३) चोमासा किया। चौमासा समाप्त होनेपर वहांसे जैसलमेरके श्रावकोंके आग्रहसे जैसलमेर पधारे, साह गोपाने प्रवेशोत्सव किया एव याचकों को दान दे अपनी चचल लक्ष्मीको सार्थक की। जैसलमेरके सघका धर्मानुराग और आग्रह सविशेष देख आचार्य श्रीने चार चतुर्मास (स० १७०४ से १७०७ तक) वहीं किये। इसके पश्चात् आगरा सघके अत्याग्रहसे वहां पधारे। सघ बडा हर्षित हुआ, मानसिंहने बगसकी आज्ञा प्राप्त कर प्रवेशोत्सव बडे समारोहसे किया। व्रतग्रहणादि धर्मध्यान अधिकाधिक होने लगा। तीन चौमासा (स० १७०८ से १७१०) करनेके पश्चात् चौथे चतुर्मासको (सं० १७११) भी सघके आग्रह कर वहीं रहे। वहां अशुभ कर्मोदयसे असमाधि उत्पन्न हुई। अषाढ शुक्ला १० से तो वेदना क्रमश वृद्धि होनेसे औषधोपचार कराया गया पर निष्फल देख आपने अपना आयुष्यका अन्त ज्ञात कर अपने मुखसे अनशनोच्चार एवं ८४ लाख जीवयोनियोंसे क्षमत क्षमणा कर समाधिपूर्वक श्रावण वदी ७ सोमवारको

हर्षलाभको पदस्थापन कर स्वर्गवासी हुए। संघमें शोक छा गया, पर भावीपर जोर भी नहीं चल सकता। आखिर अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी धूमसे कर. दाहस्थलपर सुन्दर स्तूप निर्माण कर श्रावक संघने गुरुभक्तिका आदर्श परिचय दिया, भक्ति स्मृतिको चीरंजीवत की (जिनराज सूरि शि०) मानविजयके शिष्य कमलहर्षने भी सं० १७११ श्रावण शुक्ला ११ शनिवारको आगरेमें यह निर्वाण रास रचकर गुरु-भक्ति द्वारा कवित्व सफल किया।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २४५ से २४८)

बीकानेर निवासी गणधर-चोपड़ा गोत्रीय सहसमल (सहसकरण) की पत्नी राजल दे (सुपीयार दे) के आप पुत्ररत्न थे। आपने १२ वर्षकी लघुवयमें वैराग्यवासित होकर जिनरत्न सूरिके हाथसे जेसलमेरमें दीक्षा ग्रहण की। श्रीसंघने उत्सव किया, १८ वर्षकी अग्रमें (सं० १७११) जिनरत्न सूरिजी आगरेमें थे और आप राजनगरमें थे, वहां) जिनरत्न सूरिके वचनानुसार पद प्राप्त हुआ और नाहटा जयमल, तेजसी (जिनरत्नपद महोत्सवकर्त्ता) की माता कस्तूरांने पदोत्सव किया। (गीत नं० २)

नं० ५ कवित्तसे ज्ञात होता है कि आपने पंचनदी साधन की थी। आपके रचित कई स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं। सं० १७३५ आषाढ़ शुक्ला ८ खम्भातमें आपने २० स्थानक तप करना प्रारम्भ किया था। तत्कालीन गच्छके यतियोंमें प्रविष्ट शिथि-

एनाको निर्वाणार्थ स० १७१८ आसू सुदी १० सोमवार बीकानेरमें (१४ बोलोंकी) व्यवस्था की थी, प्रस्तुत व्यवस्थापत्र हमारे संग्रहमें है।

जिनसुख सूरि

(पृ० २४६ से २५१)

बोहरा गोत्रीय (पीचानरा) रूपचन्द शाहकी भार्या रतनादे (सरूपदे) की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने लघुवयमें दीक्षा ग्रहण की थी। स० १७६२ आषाढ़ शुक्ला ११ को सूरतमे जिनचन्द सूरिने आपको स्वहस्तसे श्री सघ समक्ष गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय पारख सामीदास, सूरदासने पद महोत्सव बड़े धूमसे किया था। रात्रिजागरण श्रावकस्वामीवात्सल्य यति वस्त्र परिधापनादिमें उन्होंने बहुत-सा द्रव्य व्ययकर भक्ति प्रदर्शित की।

स० १७८० के ज्येष्ठ कृष्णाको अनशन आराधन कर रिणीमें जिनभक्ति सूरजीको अपने हाथसे गच्छनायक पद प्रदानकर स्वर्ग सिधारे। श्री सघने अन्त्येष्टि क्रियाके स्थानपर स्तूप बनाया और उसकी माघ शुक्ला पष्ठीको जिनभक्तिसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। आपके रचित जेसलमेर-चैत्यपरिपाटी स्तवनादि एव गद्य (भाषा) में (स० १७६७ में पाटणमें रचित) जेसलमेर श्रावकोंके प्रश्नोंके उत्तरमय सिद्धान्तीय विचार (पत्र ३५ जय० भ०) नामक ग्रन्थ उपलब्ध है।

जिनभक्तिसूरि

(पृ० २५२)

सेठिया हरचन्दकी पत्नी हरखुखदे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने छोटी उम्रमें ही चारित्र लेकर सद्गुरुको प्रसन्न किया था। जिनसुख सूरिजीने आपको सं० १७७९ ज्येष्ठ कृष्णा तृतीयाको रिणीमें स्वहस्तसे गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय रिणी संघने पद-महोत्सव किया। आपके रचित कई स्तवनादि प्राप्त हैं।

जिनलाभसूरि

(पृ० २६३ से २६६ एवं ४१४ से ४१६)

विक्रमपुरनिवासी बोथरे पंचाननकी धर्मपत्नी पदमा दे ने आपको जन्म दिया। आपने लघु वयमें जिनभक्ति सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सूरिजीने मांडवी बंदरमें आपको अपने पदपर स्थापन किया था।

सं० १८०४ भुज, वहांसे गुढ़ होकर १८०५ में जैसलमेर पधारे, वहां १८०८।१० तक रहे। उसके पीछे बीकानेरमें (१८१० से १८१५ तक) ५ वर्ष रहकर सं० १८१५ को वहांसे विहारकर गारबदेसर शहरमें (१८१५) चोमासा किया। वहां ८ महीने विराजनेके पश्चात् (मि० वि० ३) विहारकर थली प्रदेशको वंदाते हुए जैसलमेरमें प्रवेश किया। वहां (१८१६-१७-१८-१९) ४ वर्ष अवस्थितीकर लोद्रवे तीर्थमें सहस्त्रफणा पार्श्वनाथजीकी यात्रा की। वहांसे पश्चिमकी ओर विहारकर गोडीपार्श्वनाथकी यात्रा कर

गुढ (सं० १८००) में चौमासा किया। चतुर्मासके अनन्तर शत्रु विहारकर महेवा पन्धारे वहांसे महेवस नाकोडे पार्श्वनाथकी यात्रा की, वहांसे विहारकर जलोरमें (सं० १८०१) में चतुर्मास किया। वहांसे रामदेव, खारिया रह कर रोहठ, मंडोवर, जोधपुर, तिमरी होकर मेड़ता (१८०२) पधारे। वहां ८ महान शहर जैपुर शहर पधारे, वह शहर क्या था मानो स्वर्ग ही पृथ्वीपर उतर आया हो, वहां रात्रिका भांति और दिन घड़ीकी भांति व्यतीत होते थे। जैपुरके संघका अत्याग्रह होनेपर भी पूज्यश्री वहां नहीं ठहरे और मरुधरकी ओर विहारकर यात्रा प्रारम्भ किया। उदयपुरसे १८ कोसपर स्थित धूलेवाम ऋषभदेवकी यात्राकर उदयपुर (१८०४) पधारे और विशेष विनतीसे पालडी (१८०५) पाट विराजे नागौर (का संघ) वीचमें अवश्य आयेगा यह जानते हुए भी साचौर (अपने मनकी तात्र इच्छासे (१८२६) पधारे। इस समय सूरतके धनाढ्यों योग्य अवसर जानकर विनती पत्र भेजा और पूज्यश्री भी उस ओर विहार करके अधिक लाभ जान (१८०७) सूरत पधारे।

सूरत श्रावकोंको प्रसन्न कर आप पैदल विचरते हुए (१८२८) राजनगर पधारे। वहां तत्पश्चात् बहुत ठहर दिये और २ वर्ष तक रात दिन सेवा की। वहांसे श्रावक संघके साथ शत्रुंजय गिरनारकी यात्रा कर (१८३०) बंगाउलके संघको बढ़ाया। वहांसे माण्डवी (१८३१) पधारे। वहां उनका कामदार और लक्ष्मीपति व्यापारी निवास करते थे। समुद्रसे उनका व्यापार चलता

मार्गनीय महिनेमें आबूगिरिकी यात्रा कर चतुर्मास बीकाड़े (१८२३) रहे।

था। उन्होंने १ वर्ष तक खूब द्रव्य किया। वहांसे अच्छे महूर्तमें विहार कर भुंज (१८३२) आये। वहांके संघने भी श्रेष्ट भक्ति की। इस प्रकार १८ वर्ष नवीन नवीन देशोंमें विचरे। कवि कहता है कि अब तो बीकानेर शीघ्र पधारिये। अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है, कि भुजसे विहार कर १८३३ का चौमासा मनरा-चन्दर कर सं० १८३४ का चौमासा गुढ़ा किया और वहीं स्वर्ग सिधारे (गीत नं० ४)।

गहुंली नं० १ में पूज्यश्रीके पधारनेपर बीकानेरमें उत्सव हुआ, उसका वर्णन है।

गहुंली नं० २ में कवि कहता है कि कच्छसे आप यहां पधारते थे, पर जैसलमेरी संघने बीचमें ही रोक लिया। वहांके लोग बड़े मुंह मीठे होते हैं, अतः पूज्यश्रीको लुभा लिया। पर बीकानेर अब शीघ्र आवें।

आत्म-प्रबोध ग्रन्थ आपका रचित कहा जाता है। आपके रचित कइ स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं, और दो चोवीशीयें प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २६७ से २६९)

रूपचन्दकी भार्या केशरदेके आप पुत्र थे। आपने मरुस्थलमें लघु वयमें ही दीक्षा ली थी और गुढ़ेमें जिनलाभ सूरिजीने स्वहस्तसे आपको गच्छनायक पद प्रदान किया था, उस समय श्रीसंघने उत्सव किया था।

गहुली न० १ सिन्धु दश—हाला नगर स्थित कनकधर्मने स० १८३४ माधव मासमे बनाई है।

गहुली न० २ चारित्रनन्दनने स० १८५० वैशाखबदी ८ गुरुवारको बीकानरमे बनाई है। उस समय पूज्यश्री अजीमगञ्जमे थे गहुलीमे उसके पूर्व उनके सम्मेतशिखर, पावापुरीकी यात्रा करनेका उल्लेख कियागया है, एव बीकानेर पधारनेके लिये विज्ञप्ति की गयी है।

जिनहर्ष सूरि

(पृ० ३००)

बोहरा गोत्रीय श्रेष्ठि तिलोकचन्दजी भार्या तारादेके कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। कवि महिमाहसने आपके बीकानेर पधारनेके समयके उत्सव वर्णनात्मक यह गहुली रची है। गहुलीमें बीकानरके प्रसिद्ध देवालय चिन्तामणि और आदीश्वरजीके दर्शन करनेको कहा गया है।

जिनसौभाग्य सूरि

(पृ० ३०१)

आप कोठारी करमचन्दकी पत्नी करणदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। स० १८९२ मार्गशीर्ष शुक्ला ७ गुरुवारको जिनहर्षसूरिजीके पद पर नृपवर्य रतनसिंहजी आदिके प्रयत्नसे विराजमान हुए थे। उस समय खजानची लालचन्दने पद स्थापनाका उत्सव किया था और याचकोंको दान दिया था।

हमारे सग्रहके एक पत्रमें लिखा है कि जिनहर्षसूरिजीके स्वर्ग सिधारनेके पश्चात् पद किसको दिया जाय इसपर विवाद हुआ। जिन सौभाग्य सूरिजी उनके दीक्षित शिष्य थे और

महेन्द्र सूरिजी अन्य यतीके शिष्य थे, पर जिनहर्षसूरिजीने उन्हें अपने पास रख लिया था। अतः अन्तमें यह निर्णय किया गया कि दोनोंके नामकी चिट्ठियां डाल दी जाँय, जिसके नामसे चिट्ठी उठे उसे ही पद दिया जाय। यह बात निश्चित होने-पर सौभाग्य सूरिजी वयोवृद्ध और गच्छके मुख्य यतियोंको लेनेके लिये बीकानेर आये। पीछेसे चिट्ठी डालनेके निश्चित दिनके पूर्व ही कुछ यतीओं और श्रावकोंके पक्षपातसे जिनमहेन्द्र सूरिजीको पद दे दिया गया। इधर आप मुख्य यतियोंके साथ मंडोवर पहुंचे और वहांका वृतान्त ज्ञात कर बीकानेर वापिस पधारे। यहांके यतियों श्रावकों और राजा रत्नसिंहजीका पहलेसे ही इन्हें पद देनेका पक्ष था, अतः दे दिया गया। इन्हीं बातोंके संकेत इस गहूंलीमें पाये जाते हैं।

इनके पश्चात् पट्टधरोंका क्रम इस प्रकार है :—

जिनहंससूरि—जिनचंद्रसूरि—जिनकीर्त्तिसूरि, इनके पट्टधर जिनचारित्रसूरिजी अभी विद्यमान हैं।

भूल सुधार

जिनेश्वरसूरि (प्रथम) के शि० जिनचंद्रसूरिजीका नाम छूट गया है। उनका रचित 'संवेग-रंगशाला' ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

मंडलाचार्य और विद्वद् मुनि मंडल

भावप्रभसूरि

(पृ० ४६)

मालहू शाखाके लूणिग पुत्र मंत्र शाहकी भार्या राजलदेके आप पुत्र रत्न थे। श्री जिनराज सूरि (प्रथम) के आप (दीक्षित) सुशिष्य तथा सागरचन्द्रसूरिजीके पट्टधर थे, आप आचारके प्रशंसनीय पालन करते थे और अनेक सद्गुणोंके निवासस्थान थे।

कीर्त्तिरत्न सूरि

(पृ० ५१-५७, पृ० ४०१ ४१३)

ओसवंश सरवाल गोत्रम शाह कोचर बड़े प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं, उनके सन्तानीय (वंशज) आपमल्ल और देपा हुए। इनमें देपाके देवलदे नामक धर्मपत्नी थी, जिसकी कुक्षिसे लखमा, भादा, वल्हा, देल्हा ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें देल्हा कुंवरका जन्म सं० १४४६ में हुआ था, १४ वर्षकी लघु वयस (सं० १४६३ आषाढ़ वदी ११) में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। श्री जिनवर्द्धन सूरिजीने आपका शुभ नाम 'कीर्त्तिराज' रखा और शास्त्रोंका अध्ययन भी स्वयं आचार्यश्रीने कराया। विद्वान होनेके पश्चात् सं० १४७० में वाचनाचार्य पद (जिनवर्द्धन सूरिजीने) और सं० १४८० में उपाध्याय पद महेवेमें जिनभद्र सूरिजीने प्रदान किया, अतः माता देवलदेको बड़ा हर्ष हुआ। सिन्धु और पूर्व देशकी तरफ विहार करते

ए आप जैसलमेर पधारें। वहां गच्छनायक जिनभद्र सूरिजीने योग्य जानकर सं० १४९७ माघ शुक्ला १० को आचार्य पद प्रदान किया और "कीर्तिरत्न सूरि" के नामसे प्रसिद्धि की। उस समय आपके भ्राता लक्खा और केल्हाने विस्तारसे पद महोत्सव किया।

सं० १५२५ वैशाख वदी ५ को २५ दिनकी अनशन आराधना कर समाधि पूर्वक वीरमपुरमें आप स्वर्ग सिधारे। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ, आपके अतिशयसे वहांके वीर जिनालयमें देवोंने दीपक किये और मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये। वहां पूर्व दिशामें संघने स्तूप बनवाया जो अब भी विद्यमान है। वीरमपुर, महेवेके अतिरिक्त जोधपुर, आबू आदि स्थानोंमें भी आपकी चरणपादुकाएं स्थापित की गयीं। जयकीर्त्ति और अभैविलास कृत गीत नं० ७-८ से ज्ञात होता है कि सं० १८७९ वैशाख (आषाढ़) कृष्णा १० को गड़ाले (नाल-बीकानेरसे ४ कोस) में आपका प्रासाद बनवाया गया था।

गीत नं० ५ (सुमतिरंग कृत छंद) और नं० ८ में कुछ नवीन बातोंके साथ विस्तारसे वर्णन हैं जिनका सार यह है:—

जालंधर देशके संखवाली नगरीमें कोचर शाह निवास करते थे, उनके दो भार्यायें थीं, जिनमें लघु पत्नीके रोलू नामक पुत्र हुआ, उसे एक दिन अर्द्ध रात्रिके समय काले सर्पने डंक मारा। विषसे अचेतन होनेसे कुटम्बीजन उसे दहनार्थ, स्मशान ले गये, इसी समय खरतर गच्छनायक जिनेश्वरसूरिजी वहीं थे उन्होंने अपने आत्मबलसे उसे निर्विष कर दिया। रोलू सचेत हो

घर आया, कुटुम्बमे आनन्द छा गया और कोचर शाह तभीसे (स० १३१३) खरतर गच्छानुयायी* श्रावक हो गये और उन्होंने जिनेश्वरसूरिजीके हस्तकमलसे जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके बाद कोचर शाह कोरटेमें जा बसे, वहा उनके कुलगुरु (पूर्वके गुरु, अन्य गच्छीय) के पुन अपने गच्छमे आनेके लिये बहुत अनुरोध करनेपर भी आप विचलित न हुए।

वहा सत्कार-दानादि शुभ कृत्य करते हुए आनन्दपूर्वक रहने लगे। रोलूके आपमल्ल और देपमल्ल नामक दो पुत्र हुए। इनमे देपमल्लकी भार्या देवलदेकी कुक्षिसे १ लखमा, २ भादा, ३ केल्हो, ४ दल्हा ये ४ पुत्र उत्पन्न हुए। इनमे लखमोको लक्ष्मीने प्रसन्न हो ७ पीढियोतक रहनेका वरदान दिया और वे बीसलपुरमे रहने लगे भादा जैसलमेर, केल्हा महेवा रहने लगा और चौथे लघु पुत्र देल्हेका वृत्तान्त यह है — स० १४४६ म आपका जन्म हुआ, १२ वर्षकी अवस्थामे विवाह करनेके लिये आप बरात लेकर राडद्रह जाने लगे। मार्गमे खीमजथलके समीप जान (बरात) ठहरी वहा एक खेजडीका वृक्ष था उसे देखकर एक राजपूतने कहा कि इस वृक्षके ऊपरसे जो बरछी निकाल देगा मैं उससे अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण करा दूगा। दल्ह कुमारके इशारेसे उनके सेवक (नाई) ने राजपूतके कथनानुसार कर दिखाया पर इस कार्यको करनेमें अधिक परिश्रम लगनेसे उसका प्राणान्त हो गया, इस घटनासे

*अन्य प्रमाणोंमें इसका कारण और ही पाया जाता है पर उन सबका विचार स्वतन्त्र निबंधमें करेंगे।

देल्ह-कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया और (खरतर) श्री क्षेम-कीर्तिजीको वंदनाकर (अपने) दीक्षा ग्रहण करनेके भाव प्रकट किये। एवं उनके कथनानुसार जिनवर्द्धन सूरिजीके पास सं० १४६३ में दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करनेके अनन्तर आपने शास्त्रोंका अध्ययन कर गीतार्थता प्राप्त की। सं० १४७० में आपकी योग्यता देखकर जिनवर्द्धनसूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया।

इधर जैसलमेरके जिनालयसे क्षेत्रपालके स्थानान्तर करनेके कारण जिनवर्द्धनसूरिजीसे गच्छभेद हुआ और उनकी शाखा पींपलिया नामसे प्रसिद्ध हुई, नाल्हेने जिनभद्र सूरिजीको स्थापित किया जिनवर्द्धन सूरिजीने कीर्तिराजजी (देल्हकुमार) को अपने पास बुलाया, पर आपको अर्द्धरात्रिके समय वीर (देवता) ने कहा कि उनका आयुष्य तो मात्र ६ महीनेका ही है और जिनभद्र सूरिजीकी भावी उन्नति होने वाली है। इससे आपने जिनवर्द्धन सूरिजीके पास न जाकर चार चतुर्मास महेवेमें ही किये। इसके पश्चात् जिनभद्र सूरिजीके बुलानेपर आप उनके पास पधारे। उन्होंने सं० १४८० में आपको पाठक पद प्रदान किया। शाह लक्खा और केल्हा महेवेसे जैसलमेर आये और गच्छनायकको आमंत्रित कर उन्होंने सं० १४९७ में कीर्तिराजजीको सूरि पद दिलवाया। लक्खा और केल्हाने प्रचुर द्रव्य व्यय कर, महोत्सव किया। लक्खे केल्हेने शंखेश्वर, गिरनार, गौडी-पार्श्वनाथ और सोरठ (शत्रुंजय आदि) के चैत्यालयोंकी यात्रा की, सर्वत्र लाहिण की एवं आचार्य श्रीको चातर्मास कराया। कीर्ति-

रत्न सूरिजीके ५१ शिष्य थे, स० १५२५ बै० शु० ५ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपने अपने कुटम्बियाको ७ शिक्षायें दी जो इस प्रकार हैं —१ मालवा, थट्टा, सिंध और सखवाली नगरी म जाना, २ गच्छभेदम शामिल न होना, ३ पाटभक्त होना, ४ दीक्षा न लेना, ५ कोरटे और जैसलमेरमें देहरे बनवाना, ६ जहा बसो, नगरके चोराहेसे दाहिनी ओर बसना ७ · ।
आपके रचित 'नेमिनाथ काव्य' प्रकाशित हैं एव और भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं। आपकी शाखाम अभी जिनकृपाचन्द्र सूरिजी एव कई यतिगण विद्यमान हैं।

उ० जयसागर

(पृ० ४००)

उज्जयत शिखर पर नरपाल संघपतिने 'लक्ष्मी तिलक' नामक विहार बनाना प्रारम्भ किया, तब अम्बा देवी, श्री देवी आपके प्रत्यक्ष हुई और सरसा पार्श्व जिनालयमे श्रीशेष, पद्मावती सह प्रत्यक्ष हुआ था। मेदपाट-देशवर्ती नागद्रहके नवखण्डा पार्श्वचैत्यालय में श्री सरस्वती देवी आप पर प्रसन्न हुई थी। श्री जिनकुशल सूरि जी आदि देवता भी आप पर प्रसन्न थे, आपने पूर्वम राजगृह नगर (उद्ड) विहारादि, उत्तरमें नगरकोट्टादि, पश्चिमम नागद्रह आदि की राज सभाआमें वादिवृन्दोंको परास्त कर विजय प्राप्त की थी आपने सदेहदोलावली वृत्ति, पृथ्वीचन्द्र चरित्र, पर्वरत्नावली, ऋषभ स्तव, भावारिवारण वृत्ति गत्र सस्कृत प्राकृतक हजारों

स्तवनादि बनाये। अनेकों श्रावकोंको संघपति बनाये और अनेक शिष्योंको पढ़ाकर विद्वान बनाये।

वि० आपके शिक्षागुरु श्री जिनराज सूरिजी और विद्यागुरु जिनवर्द्धन सूरिजी थे। सं० १४७५ के लगभग जिनभद्र सूरजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। आपने अनेकों देशोंमें विहार किया और अनेकों कृतियां रची थीं, जिनमें मुख्य ये हैं:—

(१) पर्वरत्नावली कथा (१४७८ पाटण, गा० ३२१) (२) विज्ञप्ति त्रिवेणी (सं० १४८४ सिन्धु देश मल्लिकवाहणपुरसे पाटण सूरिजीको प्रेषित), (३) पृथ्वीचन्द्र चरित्र (सं० १५०३ प्रल्हादनपुर शि० सत्यरुचिकी प्रार्थनासे रचित), (४) संदेहदोलावली लघुवृत्ति सं० १४९५, (५-६-७) गुरुपारतन्त्र् वृत्ति, उपसर्गहर, भावारिवारणवृत्ति (८) भाषामें—वयरस्वामी रास (गा० ३६ सं० १४९०) (९), कुशल सूरि चौ० (१४८१ मल्लिकवाहणपुर) और संस्कृत भाषाके स्तवनादि (सं० १५०३ लि० पत्र १२ जय० भं०) भी अनेकों उपलब्ध हैं। आपके शिष्य परम्परादिके लिये देखें:—विज्ञप्ति त्रिवेणी, जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास और युगप्रधान—जिनचन्द्र सूरि (पृ० २०३), जैनस्तोत्रसन्दोह भा० २। प्रस्तुत ग्रन्थके पृ० ७३ में मुद्रित खरतर पट्टावली भी आपके आदेशसे रचित है।

क्षेमराजोपाध्याय

(पृ० १३४)

सं० १५१६ में गच्छ नायक जिनचन्द्र सूरिजीने आपको दिक्षा दी थी। वा० सोमध्वजके आप सुशिष्य थे और उन्होने ही आपको विद्याध्ययन कराया था। आपके रचित साहित्यकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है —

(१) उपदेश सप्ततिका (सं० १५४७ हिसारकोट वास्तव्य श्रीमाली पटु पर्पट दोदाके आग्रहसे रचित, जैनधर्म प्रसारक सभासे प्रकाशित)।

(२) इक्षुकार चौ० गा० ५० (६१) हमारे संग्रहमें नं० २५०

(३) श्रावक विधि चौ० गा० ७० (सं० १५४६) हमारे संग्रहमें नं० ७६४।

(४) पार्श्वनाथ रास (गा० ..१) ५ श्रीमंधरस्तवन, जीरावलास्त०, पार्श्व १०८ नाम स्तोत्र, वरकाणास्त० ज्ञानपचमीस्त०, वीरस्त०, समवसरण स्तवन, उत्तराध्ययन सज्झायादि उपलब्ध हैं।

सं० १५६६ आश्विन सु० २ को इनके पास कोटडा वास्तव्य सं० लोला श्रावकने व्रत ग्रहण किये थे, जिसकी नोंघ १ गुटकेमें है। अन्य साधनोंसे आपकी परम्परा इस प्रकार ज्ञात होती है —

(१) जिनकुशल सूरि, (२) विनयप्रभ (३) विजय तिलक (४) क्षेमकीर्त्ति (इन्होंने जीरावला पार्श्वनाथके प्रसाद ११० शिष्य किये) इनके नामसे क्षेम शाखा प्रसिद्ध हुई (५) क्षेमहंस, (६) सोमध्वजजीके (७) आप शिष्य थे। आपके मुख्य २ शिष्य थे, जिनमेंसे प्रमोदमाणिक्य शि० जयसोम और उनके शि० गुणविनयके लिये देखें युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० १९७)

देवतिलकोपाध्याय

[पृ० ५५]

भरतक्षेत्रके अयोध्या-वाहड़ गिरि नामक प्रसिद्ध स्थानमें ओशवाल वंशीय भणशाली गोत्रके शाह करमचन्द निवास करते थे और उनकी सुहाणादे नामक पत्नीसे आपका जन्म हुआ था। ज्योतिषीने आपका जन्म नाम 'देदो' रखा। देदा कुमर अनुक्रमसे बड़े होने लगे और ८ वर्षकी वयमें सं० १५४१ में दीक्षा ग्रहण की एवं सिद्धान्तोंका अध्ययन कर सं० १५६२ में उपाध्याय पदसे विभूषित हुए।

सं० १६०३ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को जैसलमेरमें अनशन आराधनापूर्वक आपकी सद्गति हुई। अग्नि-संस्कारके स्थलपर आपका स्तूप बनाया गया, जो कि बड़ा प्रभावशाली और रोगादि दुःखोंको विनाश करनेवाला है।

सं० १५८३-८५ में आपने दो शिलालेख-प्रशस्तियें रची थी, देखें जै० ले० सं० नं० २१५४।५५

आपके लिखित एवं संशोधित अनेकों प्रतियां बीकानेरके कई भण्डारोंमें विद्यमान हैं। आपके हस्ताक्षर बड़े सुन्दर और सुवाच्य थे।

आपके सुशिष्य हर्षप्रभ शि० हीरकलशकृत कृतियोंके लिये देखें यु० जिनचन्द्र सूरि चरित्र पृ० २०६ एवं आपके शि० विजयराज शि० पद्ममन्दिरकृत प्रवचनसारोद्धार बालावबोध (सं० १६५१) श्री पूज्यजीके संग्रहमें उपलब्ध है।

श्री देवतिलकोपाध्यायजीकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी। सागर चन्द्र सूरि (१५ वीं) शि० महिमराज शि० दयासागरजी के शि० ज्ञान-मन्दिरजीके आप सुशिष्य थे। महिमराजके शि० सोमसुन्दरकी परम्परामें सुगनिधान हुए, जिनका परिचय आगे लिखा जायगा।

दयातिलकजी

[पृ० ४१६]

आप उपरोक्त क्षेमराजोपाध्यायजीके शिष्य थे। आपके पिताका नाम धन्नाशाह और माताका माल्हादेवी था। आप नव-विध परि-ग्रहके त्यागी और निर्मल पंचमहाव्रतोंके पालनेमें शूरवीर थे।

महोपाध्याय पुण्यसागर

[पृ० ५७]

उदयसिंहजीकी भार्या उत्तम दे ने आपको जन्म दिया था। श्रीजिनहंस सूरिजीने स्वहस्तकमलसे आपको दीक्षा दी थी।

आप समर्थ विद्वान और गीतार्थ थे। आपके एवं आपके शिष्य पद्मराज कृत कृतियों आदि का परिचय युगप्रधान जिनचंद्र सूरि ग्रन्थके पृष्ट १८९ में दिया गया है।

उपाध्याय साधुकीर्त्तिजी

[पृ० १३७]

ओसवाल वंशीय सचिती गोत्रके शाह वस्तिगकी पत्नी खेमलदेके आप पुत्र थे। दयाकलशजीके शिष्य अमरमाणिक्यजीके आप

सुशिष्य थे। आप बड़े विद्वान थे। सं० १६२५ मि० व० १२ आगरेमें अकबर सभामें तपागच्छवालोंको पोषहकी चर्चामें निरुत्तर किया था और विद्वानोंने आपकी बड़ी प्रशंसाकी थी, संस्कृतमें आपका भाषण बड़ा मनोहर होता था।

सं० १६३२ माधव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचन्द्र सूरिजीने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानोंमें विहार कर अनेक भव्यात्माओंको आपने सन्मार्गगामी बनाया था।

सं० १६४६ में आपका शुभागमन जालोर हुआ, वहां माह कृष्ण पक्षमें आयुष्यकी अल्पताको ज्ञातकर अनशन उच्चारण पूर्वक आराधना की और चतुर्दशीको स्वर्ग सिधारे। आपके पुनीत गुणों-की स्मृतिमें वहां स्तूप निर्माण कराया गया उसे अनेकानेक जन समुदाय वन्दन करता है।

सं० १६२५ के शास्त्रार्थ विजयका विशेप वृतांत आपके सतीर्थ कनक सोम कृत जयतपदवेलिमें विस्तारसे है। सरल और विरोधी होनेसे इसका सार यहां नहीं दिया गया, जिज्ञासुओंको मूल वेलि पढ़ लेनी चाहिये।

आपके एवं आपके शिष्य प्रशिष्योंके कृतियोंकी सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १९२ में दी गयी है। आपकी परम्परामे कविवर धर्मवर्धन अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका परिचय "राज-स्थान" पत्र (वर्ष २ अंक २) में विस्तारसे दिया गया है।

महोपाध्याय समयसुन्दर

(पृ० १४६ से १४८)

पोरवाड़ ज्ञातीय रूपसी शाहकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे

मारवाड़में आपका जन्म हुआ था। नवयौवनावस्थामें यु० जिनचन्द्र सूरिजीके हस्तकमलसे आप दीक्षित हुए थे। श्री सकलचन्द्रजीके आप शिष्य थे और तर्क व्याकरण एवं जैनागमोंका उत्तम अभ्यास कर (गीतार्थता-)पांडित्य प्राप्त किया था। सम्राट अकबरको एक पद (राजा नो ददते सौख्यम्) चमत्कृत ८ लाख अर्थ बनाकर के (रञ्जित) किया था। विद्वत् समाज और श्री संघमें आपकी असाधारण ख्याति थी। लाहोरमें जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया था। आपके महत्वपूर्ण कार्यकलाप ये हैं —

(१) जैसलमेरके रावल भीमको प्रसन्न कर मयणा द्वारा मारे जानेवाले साढ़ा जीवोंको छुड़ाया था।

(२) शीतपुर (सिद्धपुर) में मखनूम महमद शेखको प्रतिबोध देकर पांच नदीके (जलचर) जीवों—विशेषतया गायोंकी रक्षाका पटह बजवानेका प्रशंसनीय कार्य किया था।

(३) मंडोवराधिपतिको रञ्जित कर मेड़तेमें बाजे बजवाने द्वारा शासन प्रभावना की थी।

(४) परोपकारार्थ अनेकों ग्रन्थों—भाषा काव्योंकी (वृत्तियें, गीत, छन्द) प्रचुर प्रमाणमें रचना की थी।

(५) गच्छके सभी मुनियोंको (गच्छ) परिहारमणी की थी।

(६) सं० १६९१ में क्रिया उद्धारकर कठिन साध्वाचार पालनका आदर्श उपस्थित किया था।

(७) आपका शिष्य-परिवार बड़ा विशाल और विद्वान् था। वादी हर्ष नन्दन जैसे आपके उद्भट विद्वान् शिष्य थे। श्री जिनसिंह

सूरिजीने लवेरमें आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था। सं० १७०२ के चैत्र शुक्ला त्रयोदशीको अहमदाबादमें अनशन आराधना-पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। आपके विस्तृत कृति-कलापकी संक्षिप्त सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १६८ में दी गयी है।

यश कुशल

(पृ० १२६)

श्री कनकसोमजीके आप शिष्य थे। हमारे संग्रहके (अन्य) गीत द्वयसे ज्ञात होता है कि हाजीखानडेरे (सिंध) में आपका स्वर्गवास हुआ था। वहां आपका स्मृति मंदिर है आपके शिष्य भुवनसोम शि० राजसागरके गीतानुसार आप बड़े चमत्कारी थे और आपके परचे (चमत्कार) प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध हैं। राजसागरने सं० १७०६ फाल्गुन शुक्ला ११ को वहांकी यात्रा की। आपके गुरु कनकसोम-जीका परिचय देखें:—युग० जिनचन्द सूरि पृ० १६४।

करमसी

(पृ० २०४)

आपकी जन्मभूमि जेसलमेर है। आपके पिताका नाम चांपा शाह, माताका चांपल दे और गोत्र चोपड़ा था। आप बड़े तपस्वी थे। २५० बेले (छट्ठ भक्त याने २ उपवास) और निवी आम्बि-लादि तो अनेकों किये थे। वैशाख शुक्ला ७ को आपने संथारा किया था और आपका गच्छ खरतर था।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप तुरड गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतियां हमारे संग्रहमें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं—(१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोमसुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समयकलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमें हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमें दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोल्हशाहकी पत्नी चापादेकी कुक्षिसे अवतरित हुए थे। आपको लघुवयमें युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री० तिलककमलजीके शिष्य बनाए। २४ वर्ष पर्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ में बल्लभीपुर पधार, चातुर्मास वहींपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्चपरमेष्ठिका ध्यान करते हुए ११ प्रहरका अनशन व्रत पालकर मिती भाद्रव कृष्णा १४ को मध्याह्न समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लब्धिकल्लोल

(पृ० २०६)

श्रीकीर्तिरत्नसूरि शाखाके विमलरंगजीके आप शिष्य थे। आप श्रीमाली लाडणशाहकी पत्नी लाडिमदेके पुत्र थे। सं० १६८१ में गच्छपतिके आदेशसे आप भुज पधारे। वहां कार्तिक कृष्णा षष्ठीको अनशन आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ। शाह पीथा-हाथी-रामसिंह मांडण आदि भुज नगरके भक्तिवान श्रावकोंके उद्यमसे पूर्व दिशाकी ओर आपकी चरणपादुकाएं मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को स्थापित की गयी।

आपका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०९में दिया गया है।

विमलकीर्ति

(पृ० २०८)

हुवड़ गोत्रीय श्रीचन्दशाहको पत्नी गवरादेवी आपकी जन्मदातृ थी। आपने सं० १६५४ माह शुक्ला ७ को साधुसुन्दरोपाध्यायके पास दीक्षा ग्रहण की। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको वाचक पदसे अलंकृत किया था।

सं० १६९२ में (मुलताण चतुर्मास आये) किरहोर-सिन्धमें आप स्वर्ग सिधारे।

आपकी कृतियोंकी सूची युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १९३ में दी गई है। सं० १६७६ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीके उपदेशसे वा० विमलकीर्तिजीके पास श्राविका पेमाने १२ व्रत ग्रहण किये।

वाचनाचार्य सुरसागर

(पृ० ८५३)

वाचनाचार्यजी साध्वाचारकी कठिन क्रियाओंको पालन करनेमें बड़ा यत्न करते थे। सं० १८०५ में गच्छनायकके आदेशसे और स्वम्भ तीर्थकी यात्राके लिये खम्भातमें चतुर्मास किया। चतुर्मास सानन्द पूर्ण हुआ। सभी नर-नारी आपके वचनकलासे प्रसन्न थे। चतुर्मासके अनन्तर ज्ञानबलसे अपना आयुष्य अल्प ज्ञातकर अनशन आराधना पूर्वक मार्गशीर्ष कृष्णा १४ सोमवारको स्वर्ग सिधारे। उस समय आप साधवोंके साथ उत्तराध्ययन सूत्रका श्रवण कर रहे थे, श्रावक समुदाय आपके सन्मुख बैठा था। स्वर्गप्राप्तिके पश्चात् वहां आपकी पादुकाएं स्थापित की गई।

वा० हीरकीर्त्ति

(पृ० ३५६)

युग० श्रीजिनचन्द्रसूरिके शिष्य वा० तिलककमल शि०पद्महेमके शिष्य दानराज, नित्यसुन्दर, हर्षराजादि थे। इनमें दानराजजीके शिष्य हीरकीर्त्ति गोलछा गोत्रीय थे। सं० १६९९में जोधपुरमें आपका चतुर्मास था। वहीं आषाढ़ शुक्ला १४ को ८४ लाख जीवायोनियोंसे क्षमतक्षामणाकी, दो प्रहरका अणशण आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी स्मृतिमें इसी सवतमें माघ कृष्णा १३ सोमवारको (१) पद्महेम, (२) दानराज, (३) नित्यसुन्दर, (४) हर्षराजकी पादुकाओंके साथ आपकी पादुकाए भी स्थापित की गई।

आपकी परम्परादिके विषयमें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ पृ० १७३) देखना चाहिये।

उ० भावप्रमोद

(पृ० २५८)

श्रीजिनराजसूरि (द्वितीय) के शि० भावविजयके शिष्य भावविनयजीके आप सुशिष्य थे। बाल्यावस्थामें ही आपने चारित्रका ग्रहण किया था। श्रीजिनरत्नसूरिजीने आपके विमलमतिकी प्रशंसा की थी और उनके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तो आपको (विद्वतादि गुणोंके कारण) अपने साथ ही रखते थे। आप बड़े प्रभावशाली और उपाध्याय पदसे अलंकृत थे। सं० १७४४ माघ कृष्णा ५ गुरुवारके पिछले प्रहर, अनशन (भवचरिम-पच्चक्खाण) द्वारा समाधिपूर्वक आप स्वर्ग सिधारे।

आपके शि० भावसागर रचित सप्तपदार्थी वृत्ति (१७३० भा० सु० वेनातट, पत्र ३७) कृपाचन्द्र सूरि भं० (वं० नं० ४६ नं० ६११) में उपलब्ध है।

चंद्रकीर्ति

(पृ० ४२१)

सं० १७०७ पोष कृष्ण १ को बिलाड़ेमें आपका अनशन आराधन सह स्वर्गवास हुआ। यह कवित्त आपके शि० सुमतिरंगने रचा है, जो कि अच्छे कवि थे। देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६, ३१५

कविवर जिनहर्ष

(पृ० २६१)

खरतर गच्छीय शान्तिहर्षजीके शिष्य कविवर जिनहर्ष अट्ठा-

रहवीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध कवि थे। आपने मंद-बुद्धियोंके लाभार्थ शत्रुंजय-महात्म्य जैसे अनेको विशाल ग्रंथोंकी भाषा चौपाई रचकर बहुत उपगार किया। आप साध्वाचार पालनेमे सदा उद्यम करते रहते थे, और आपके व्रत नियम अन्तिम अवस्था तक अखंडित थे। आपके अनेकानेक सद्गुणोंमे १ गच्छममत्वका त्याग (जिसके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्यास रास प्रकाशित ही है) २ जन समुदाय अनुवृत्तिका त्याग ३ ऋजुता ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य है। आप रास चौपाई आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमे अप्रमत्त रह, ज्ञानका बडा विस्तार करते रहते थे।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्गुणसे तपागच्छीय वृद्धि-विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे बडी सेवा-भक्ति और वैयावच्चकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराइ थी। पाटणमे आप बहुत वर्षों तक रहे थे, आपका स्वर्गवास भी वहीं हुआ, श्रावकोंने अन्त-क्रिया (मांडवी रचनादि) बडी भक्तिसे की। आपके विशाल कृतियो नोंध जै० गु० क० भा० २ में देखनी चाहिये। उसके अतिरिक्त और भी कइ रास आदि हमें उपलब्ध हैं, उनमें मुख्य ये हैं —१ मृगापुत्रचौ०(१७१५ मा० व० १० सत्यपुर) (२) कुसुम श्री रास (१७१७ मि० १३) (३) यशोधर रास (१७४० वै० सु० ८ पाटण) (४) कनकावती रास (अपूर्ण) ५ श्रीमतीरास (१७६१ मा० सु० १० पाटण, ढाल १४, रामलालजी यतिका संग्रह) और स्तवन सज्झायादि अनेक उपलब्ध हैं।

कवि अमरविजय

(पृ० २४८)

आप वाचक उदय तिलक (जिनचंद्रसूरिशि०) के शिष्य थे। आप अच्छे विद्वान और सुकवि थे, आपके रचित कृतियोंकी संक्षिप्त नोंध इस प्रकार है :

१ रात्रि भोजन चौ० (सं० १७८७ द्वि० भा० सु० १ बु० नापासर, शांतिविजय आग्रह)

२ सुमंगलारास (प्रमाद विपये) सं० १७७१ ऋतुराय पूर्णतिथि।

३ कालाशवेली चौ० (१७९७ आखातीज, राजपुर

४ धर्मदत्त चौ० (१८०३ धनतेरस राहसर, पत्र ६६)

५ सुदर्शनसेठ चौ० (१७९८ मा० सु० ५ नापासर)

६ मेताराज चौ० (१७८६ आ० सु० १३ सरसा) जय० भं०

७ सुकमाल चौ० (वृहत् ज्ञानभंडार-बीकानेर)

८ सम्यक्त्व ६७ बोलसज्झाय (सं० १८००) जय० भं०

९ अरिहंत १२ गुणस्तवन (१७९५) गा० १३ जय० भं०

१० सिद्धाचल स्तवन (१७९९) गा० १५ जय० भं०

११ सुप्रतिष्ठ चौ० (१७९४ मि० मरोट) जै० गु० कविओ भा० २ पृ० ५८२

१२ केशी चौ० (१८०६ विजयदशमी गारवदेसर) रामलालजी संग्रह।

१३ मुंच्छ माखड कथा पत्र ६ (सं० १७७५ विजयदशमी) हमारे संग्रहमें नं० २२८ ।

श्री अमर विजयजीके शि० लक्ष्मीचन्द्र कृत सुबोधिनीवैद्यकादि ग्रन्थ उपलब्ध हैं और द्वि० शि० उ० ज्ञानवर्द्धन शि० कुशलकल्याण शि० दयामरत्न ब्रह्मसेन चौ० (सं० १८८० जेठ सु० १ बु० भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामें यतिवर्य जयचंदजी अभी विद्यमान है।

सुगुरुवंशावली

(पृ० २०७)

जिनभद्र-जिनचन्द्र, जिनसमुद्र-जिनहंससूरिजीके पट्टधर जिन-माणिक्यसूरिजी थे। उनके पारखवंशीय वा० कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणशाली गोत्रीय वा० कल्याण लाभ और कल्याणलाभके उ० कुशललाभ नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६४ में देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ० २६४)

बीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था, वहा लुणिया शाह तुलसीदासजी निवास करते थे, उनके धनबाइ नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा० राजसागरजी वहा पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हे वंदना की और धनबाइने जो कि उस समय गर्भवती थी, कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको वहरा दूंगी। गर्भ दिना-दिन बढ़ने लगा उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण स्वप्न और उत्तम दोहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहा जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन बाईके एक पुत्र तो विद्यमान

था और गर्भवती थी। लक्षणोंसे गुरुश्रीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और "इस द्वितीय पुत्रको हमें देना" कहा, पर धनबाई वाचकश्रीको इससे पूर्व ही वचन दे चुकी थी।

सं० १७४६ में पुत्र उत्पन्न हुआ, गर्भके समय स्वप्नमें इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नात्र महोत्सव किये जानेका दृश्य देखा था। उसीके स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम 'देवचन्द्र' रखा। अनुक्रमसे वृद्धि पाते हुए जब वह बालक ८ वर्षका हुआ, उस समय वा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पत्ति (धनबाइ) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीके समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख सं० १७५६ में लघु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीके पास बड़ी दीक्षा दिलाई गई, सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम 'राजविमल' रखा। राजसागरजीने प्रसन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया, श्रीदेवचन्द्रजीने वेनातट (बिलाड़ा) ग्रामके भूमिग्रहमें रहकर उस का साधन किया, देवी सरस्वती आपपर प्रसन्न हुई जिसके फल स्वरूप थोड़े ही समयमें आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतके सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढ़ाकर आपके प्रतिभामें अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोंमें उल्लेखनीय ये हैं—षडावश्यकादि जैन आगम, व्याकरण, पञ्चकल्प, नैषध, नाटक, ज्योतिष, १८ कोष, कौमुदीमहाभाष्य, मनोरमा, पिङ्गल, स्वरोदय, तत्वार्थ, आवश्यक वृहद्वृत्ति, हेमचन्द्रसूरि, हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी कृत ग्रन्थ समूह, ६ कर्म ग्रन्थ, कर्म प्रकृति इत्यादि।

स० १७७४ में वाचक राजसागर और १७७५ में उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्द्रजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

स० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधारे, वहा तत्वज्ञानमय स्यादवाद् युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेको लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय श्रावक थे, अपने गुरु श्रीभावप्रभसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था, और अनेको शिष्य पढते थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक बार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठजीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १०००— जिनोंके नाम आपने अपने गुरुओंसे श्रवण किये होंगे ? पूछा। श्रेष्ठिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन् ! नहीं सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्ठिने उन्हे वन्दन कर सहस्त्रकूटके १००० नाम पूछे। उन्होने नाम व उल्लेख स्थान फिर कभी बतलानेका कहकर श्रेष्ठिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण माहीपोलके चौमुख वाडी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमें सतरह भेदी पूजा पढाई गई उसमें श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ भी दर्शनार्थ वहा पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जाग्रत हुई अत सूरिजीसे सहस्त्र-कूट जिन के नामोकी पृच्छा की, उन्होने उत्तरमे 'प्राय सहस्त्रकूट जिन नामोकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमें हो, कहा'। इन वचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अयथार्थ कैसे कहते हैं, और ऐसे वचनोंसे श्रावकोको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तड़ककर बोले:—तुम मरुस्थलके वासी हो, शास्त्रके रहस्यको क्या जानो! जिसने शास्त्रोंका अभ्यास किया है, वही जान सकता है। इसी समय श्रेष्ठिने कहा, सूरिजी मुझे इस बातका निर्णय करना है। तब सूरिजीने देवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्यर्थका विवाद पसन्द ज्ञात होता है। (मारवाड़ी कहावत "वेवती लड़ाइ मोल लेवे") अन्यथा यदि तुम्हें सहस्त्रकूटके नाम ज्ञात हो तो बतलाओ। देवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा, तब विनयी शिष्य मनरुपजीने रजोहरणसे सहस्त्रकूटके नामोंका पत्र निकालकर गुरुश्रीके हाथमें दिया। ज्ञान-विमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो देवचन्द्रजीसे पूछा कि आपके गुरुश्रीका नाम शुभ नाम क्या है? उत्तर:—उपाध्याय—राजसागरजी। तब सूरिजीने कहा, आपकी परम्परा (घराना) तो विद्वद् परम्परा है, तब भला आप विद्वान कैसे नहीं होंगे, इत्यादि मृदुवाक्यों द्वारा बहुमान किया। श्रेष्ठि तेजसीका मनोरथ पूर्ण हुआ, सहस्त्रकूट नामोंकी देवचन्द्रजीने प्रसिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसके बाद देवचन्द्रजीने परिग्रहका सर्वथा परित्याग कर क्रिया-उद्धार किया। सं० १७७७ में आप अहमदाबाद पधारे, नागोरी सरायमें अवस्थिति की। आपकी अध्यात्म रसमय देशना श्रवण कर श्रोताओंको अपूर्व आल्हाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचंद्रजी

की प्रशंसा की, कि मरुस्थलीके ज्ञानी साधु पधारे हैं। उनके वचनोंसे रत्नसिंह भी आपको वंदनार्थ पधारे और गुरुश्रीसे ज्ञान सुधाका सेवन कर बड़े प्रसन्न हुए। देवचन्द्रजीके उपदेशसे रत्न भंडारी नित्य जिन पूजनादि करने लगे, एवं वहां बिम्ब प्रतिष्ठा, १७ भेदी पूजा आदि अनेकानेक धर्मकृत्य हुआ करते, उनमें भी भंडारीजी सम्मिलित होने लगे।

एक बार राजनगरमें मृगीका उपद्रव हुआ, तब भंडारीजीने उसे निवारणार्थ गुरुश्रीसे विनयपूर्वक विज्ञप्ति की। आपने शासन प्रभावनादि लाभ जानकर जैन मंत्राम्नायसे उसे निवारण कर मनुष्यों का कष्ट दूर किया। इससे जिन-शासन और देवचन्द्रजीकी सर्वत्र सविशेष प्रशंसा होने लगी।

इसी समय रणकुजी बहुत सेना लेकर रत्नभंडारीसे युद्ध करने आये। भंडारीजी तत्काल गुरुजीके पास आये, क्योंकि उन्हें गुरुश्रीका पूरा विश्वास था, वे अपने सहायक और सर्वस्व एकमात्र आपको ही मानते थे। अतः गुरुश्रीसे निवेदन किया कि सैन्य बहुत आया है, युद्धमें विजय अब आपके ही हाथ है। गुरुश्रीने आश्वासन देकर जैनमन्त्राम्नायका प्रयोग किया, अतः युद्धमें रणकुजी हारे और भंडारीजीकी विजय हुई।

धोलका वास्तव्य श्रेष्ठि जयचंदने पुरुषोतम योगीको गुरुश्रीके चरण कमलोंमें नमन कराया। गुरुश्रीने योगीके मिथ्यात्व शल्यको निवारणकर उसे जैनशासनानुरागी बनाया। सं० १७९५ पालीताने और १७९६-९७ में नवानगरमें चतुर्मास किया। वहां आपने ढुंढकोंके

टोलोंको विजय कर नवानगरके चैत्योंकी पूजा, जिसे ढुढकोंने बन्ध करा दी थी पुन मञ्चालित की। परधरी ग्राममें ठाकुरको आपने प्रतिबोध दिया और वे गुरु आज्ञामें चलने लगे। फिर पाली-ताना और पुन नवानगर चतुर्मास कर १८०२-३ मे राणावावमे पधारे। वहाके अधिपतिके मगदर रोगको नष्ट किया, अत व भी आपका भक्त हो गया।

म० १८०४ मे भावनगर पधारे, वहा मेन्ना ठाकुरसी कट्टर ढुढकानुयायी थे, उन्हें प्रतिबोध दिया एवं वहाके ठाकुरको भी जैन-मतानुरागी बनाया। म० १८०५ में पालीतानेके मृगी उपद्रवको भी आपने नष्ट किया। म० १८०६ मे लींबडी पधारे और वहाके श्रावक डोमो वोहरा, शाह धारसी, शाह जयचन्द, जेठा, रहीक-दासी आदिको विद्याध्ययन कराया। लींबडी, ध्रागद्रा, चूडा इन तीन गावोमे ३ प्रतिष्ठाऍ की। ध्रागध्रामे प्रतिष्ठाके समय सुखानन्दजी आपसे मिले थे।

आपके उपदेशसे म० १८०८ मे गुजरातसे शत्रुजय सङ्घ निकला। गिरिराजपर बड़े उत्सव हुए। चतुर्मास द्रव्यका सद्व्यय हुआ। म० १८०८-९ का चतुर्मास गुजरातमे किया।

१८१० मे कचराशाहने शत्रुञ्जयका सङ्घ निकाला, श्रीदेवचन्द्रजी भी इसके साथ पधारे थे। शाह मोतीशा और लालचन्द जैन धर्म मे प्रवीण और ज्ञानधरी थे। शत्रुञ्जयपर गुरु श्रीने प्रतिष्ठाये की। शाह कचरा, कीकाने ६० हजार रुपये व्यय किये।

म० १८११ में लींबडीमें प्रतिष्ठा की। वहाके ढुढक श्रावक

को प्रतिबोध देकर मूर्तिपूजक बनाये। उन्होंने सुन्दर चैत्य निर्माण कराये और उनमें अनेकानेक पूजायें होने लगीं।

श्री देवचन्द्रजीके पास विचक्षण शिष्य मनरूपजी, वादी-विजेता विजयचन्द्रजी (एवं अन्य गच्छीय साधु भी आपके पास विद्याध्ययन करते थे) एवं मनरूपजीके वक्तुजी और रायचंदजी नामक शिष्यद्वय रहते थे, एवं गुरु आज्ञामें रहकर गुरुश्रीकी सेवाभक्ति किया करते थे।

सं० १८१२ में श्रीमद देवचन्द्रजी राजनगर पधारे, वहां गच्छ-नायक श्रीपूज्यजीको आमन्त्रित कर उनके द्वारा श्रावक समुदायने बड़े उत्सवसे आपको वाचक पदसे अलंकृत किया।

वा० श्री देवचन्दजीकी देशना अमृतके समान थी। आप हरि-भद्रसूरि, यशोविजयजीके एवं दिगम्बर गोमट्टसारादि तत्व-ज्ञानके ग्रन्थोंका उपदेश देते थे, श्रोताओंकी उपस्थित दिनोंदिन बढ़ने लगी। श्रीमद्ने मुलताण, बीकानेर आदि स्थानोंमें चतुर्मास किये एवं अनेकों नये ग्रन्थोंकी रचना की, जिनमें देशनासार, नयचक्र, ज्ञानसार अष्टक-टीका कर्मग्रन्थ टीका, आदि मख्य हैं।

इस प्रकार शासन उद्योत करते हुए राजनगरके दोसी वाड़ेमें आप विराज रहे थे, उस समय अकस्मात् वायु कोपसे वमनादिकी व्याधि उत्पन्न हुई। श्रीमद्ने अपना आयुष्य निकट ज्ञातकर विनयी शिष्य मनरूपजी और उनके विद्यमान सुशिष्य श्री रायचन्द्रजी (रूपचन्दजी) एवं द्वितीय शिष्य वादी विजयचन्दजी उनके शिष्य द्वय सभाचंद और विवेकचंद्रको योग्य शिक्षा देके उत्तराध्ययन, दशवे-

कालिकादि सूत्र श्रवण करते हुए आत्माराधना कर सं० १८१? भाद्र कृष्ण अमावस्याको एक प्रहर रात्रि जानेपर स्वर्गवासी हुए। सभी गच्छके श्रावकोंने मिलकर बड़े उत्सवके साथ आपके पवित्र देहका अग्नि संस्कार किया, गुरुभक्तिमें बहुत द्रव्य व्यय किया गया। श्रीमद्‌के कार्य और आत्म-जागृतिको देखकर कवि कहता है कि आपको मोक्ष सन्निकट है। ७-८ भवोंके पश्चात् तो अवश्य ही सिद्धिगतिको प्राप्त करेंगे। आपके स्वर्गगमनके समाचारों से देश विदेशमें शोक छा गया। कविके कथनानुसार आपके मस्तक में मणि थी, वह दहन समय उछल कर पृथ्वीमें समा गई। किसी के हाथ नहीं आई। श्रावक संघने स्तूप बनाकर आपकी पादुओंकी स्थापना की।

आपके शिष्य मनरूपजी भी गुरु विरहसे आकुल हो थोड़े ही दिनोंमें आपसे स्वर्गमें जा मिले। अभी (रासरचनाके समयमें) भी रायचन्द्रजी योग्यतानुसार व्याख्यानादि देकर धर्म प्रचार करते हैं। उन्होंने अपने गुरुकी प्रशंसा स्वयं करने से अतिशयोक्ति आदिकी सम्भव देख प्रस्तुत रास रचनेके लिये कविसे कहा और कविने सं० १८२५ के आश्विन शुक्ला ८ रविवारको यह 'देवविलास रास' बनाया।

आपकी कृतियां श्रीमद् देवचन्द्र भा० १-२ में प्रकाशित हैं। उनके अतिरिक्त लिये देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८६ और ३११।

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणजीके आप विद्यागुरु थे, अतः उन्होंने आपके गुण-गर्भित यह अष्टक बनाया है। प्रस्तुत अष्टकमें गुणोंकी प्रशंसाके अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा सं० (२) सिद्धाचलस्तवन सं० १७६७ फा० व० ७ (३) नवकरवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपके लि० कई प्रतियें भी प्राप्त हैं।

आप क्षेमकीर्ति शाखाके विद्वान थे, परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है :—

(१) जिन कुशल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ० विजय तिलक (४) उ० क्षेमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० भुवनकीर्ति (८) हर्ष कुंजर (६) वा० लब्धिमंडण (१०) उ० लक्ष्मीकीर्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता, प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीके १४ शि० आप थे। आपकी परम्परामें (१५) वा० तत्त्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) पं० धर्म सुन्दर (१८) वा० लाभ समुद्र (१६) मुनिसिंह (२०) अमृत रंग (अबीरचन्द) हुए, जोकि सं० १६७१ में स्वर्ग सिधारे।

वा० अमृत धर्म

(पृ० ३०७)

उपाध्याय क्षमाकल्याणजीके आप गुरुवर्य थे, अतः पाठकजीने

अपने गुरुजीकी भक्ति सूचक इस अष्टककी रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है —

कच्छ देशमें उपकेश वंशकी वृद्ध शाखामें आपका जन्म हुआ था, श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थों की यात्रा की एवं सिद्धांतोंका योगोद्वहन किया था। संवेगरससे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे, और वहीं सं० १८५१ माघ शुक्ला ८ को समाधिसे आपकी मृत्यु हुई। स्थानांग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गत होनेके कारण, आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप आप वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेष परिचय उ० क्षमा-कल्याणजीके स्वतन्त्र चरित्रमें दिया जायगा।

उ० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुरुभक्त शिष्यने आपके परलोकवासी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवकी रचा है। स्तवका ऐति-हासिक सार यही है, कि सं० १८७३ पौष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधारे थे।

१६ वीं शताब्दीके खरतर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थे। आपका उ० चरित्र हम स्वतन्त्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले हैं, अत यहां विशेष नहीं लिखा गया।

उ० जयमाणिक्य
(पृ० ३१०)

यति हरखचन्दजीके शिष्य जीवणदासजीके आप सुशिष्य थे। १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें आपकी अच्छी ख्याति थो। सेवक स्वरूपचन्दने छंदमें सं० १८२५ वैसाखके शुक्ला ६ को आपने (!) जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई, उसका उल्लेख किया है। आपके सुन्दरदास, वस्तपाल, दोपचन्द अरजुनादि कई शिष्य थे, आपका बाल्यावस्थाका नाम 'बमडा' था। आप कीर्त्तिरत्न सूरि शाखाके थे।

हमारे संग्रहमें आपके (सं० १८५५ मिगसर वदी ३ बीकानेरमें) जीवराशि क्षमापनाको टीप है। अतः यथा संभव इसके कुछ दिनों बाद ही बीकानेरमें आपका स्वर्गवास हुआ होगा। आपको दिये हुए आदेशपत्र ओर अन्य यतियोंके दिये हुए अनेकों पत्र हमारे संग्रहमें हैं।

श्रीमद् ज्ञानसार जी
(पृ० ४३३)

जँगलेवास वास्तव्य सांड ज्ञातीय उदैचन्दजीकी पत्नी जीवणदेने सं० १८०१ में आपको जन्म दिया था, सं० १८१२ बीकानेरमें श्री जिनलाभ सूरिजीके शिष्य रायचन्द (रत्नराज) जीके आप शिष्य हुए। बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी आपके परम भक्त थे। राजा रत्न-सिंहजी भी आपको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। आपके सदा-सुखजी नामक सुशिष्य थे।

आप मस्तयोगी, उत्तमकवि और राजमान्य महापुरुष थे। आपके रचित समस्त ग्रन्थोंकी हमने नकलें कर ली हैं जिसे विस्तृत ऐतिहासिक जीवन चरित्रके साथ यथावकाश प्रकाशित करेंगे।

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

बीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थीं। पट्टतणी रत्नसिद्धिकी आप पट्टधर थीं, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप बीकानेर पधारी और वहीं अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहां आपके स्मृतिम थुभ (स्तूप) बनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत बनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिंघादेकी आप पुत्री थी, आपका जन्म नाम 'संगारी' था, यौवनावस्था आनेपर पिताश्रीने बोथरा जेठाशाहके पुत्र राजसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और श्वसुर-श्वसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया, आपने आर्या लावन्यसिद्धिके समीप सूत्र सिद्धान्तोंका अध्ययन किया था और उनने आपको अपने पदपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थोंकी आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ बृहस्पतिवारको अनशनकर [illegible]

सिधारी। पहुत्तणी (संभवतः आपकी पदस्थ) हेमसिद्धिने आपकी स्मृतिमें यह गीत बनाया।

गुरुणी विमलसिद्धि

(पृ० ४२२)

आप मुल्तान निवासी माल्हू गोत्रीय शाह जयतसीकी पत्नी जुगतादे की पुत्री-रत्न थीं। लघुवयमें ब्रह्मचर्य व्रतके धारक अपने पितृव्य गोपाशाहके प्रयत्नसे प्रतिबोध पाकर आपने साध्वी श्री लावण्यसिद्धिके समीप प्रव्रज्या स्वीकार की थी। निर्मल चारित्रको पालन कर अनशन करते हुए बीकानेरमें स्वर्ग सिधारी। उपाध्याय श्रीललितकीर्त्तिजीने स्तूपके अन्दर आपके सुन्दर चरणोंकी स्थापना कर प्रतिष्ठा की। साध्वी विवेकसिद्धिने यह गीत रचा।

गुरुणी गीत

(पृ० २१४)

आदिकी १॥ गाथा नहीं मिलनेसे आर्याश्रीका नाम अज्ञात है।

साउंसुखा गोत्रीय कर्मचन्दकी ये पुत्री थीं। श्री जिनसिंह सूरिजीने आपको पहुतणी पद दिया था और सं० १६९६ भाद्रकृष्ण २ को विद्यासिद्धि साध्वीने यह गुरुणीगीत बनाया है।

खरतरगच्छ आर्यामण्डल

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

बीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थीं। पट्टतणी रत्नसिद्धिकी आप पट्टधर थीं, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप बीकानेर पधारी और वहीं अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहां आपके स्मृतिमें थुभ (स्तूप) बनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत बनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिंघादेकी आप पुत्री थी, आपका जन्म नाम 'सगारी' था, यौवनावस्था आनपर पिताश्रीने बोथरा जेठाशाहके पुत्र राजसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म-उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और श्वास-श्वसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया, आपने आर्या लावन्यसिद्धिके समीप सूत्र सिद्धान्तोंका अध्ययन किया था और उनने आपको अपने पट्टपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थों की आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ बृहस्पतिवारको अनशनकर आप स्वर्ग

शनिवारको मिले थे, सुरत्राणने आदरसहित नमनकर आपको अपने पास बिठाया, और उनके मृदु भाषणोंसे प्रसन्न होकर हाथी, घोड़े, राज, धन, देश ग्रामादि जो कुछ इच्छा हो, लेनेके लिये विनती करने लगा। पर साध्वाचारके विपरीत होनेसे आपने किसी भी वस्तुके लेनेसे इनकार कर दिया।

आपके निरीहताकी सुलतानने बड़ी प्रशंसाकी और वस्त्रादिसे पूजा की। अपने हाथकी निशानी (मोहर छाप) वाला फरमान देकर नवीन वसति-उपाश्रय बनवा दिया और अपने पट्टहस्ति (जिसपर बादशाह स्वयं बैठता है) पर आरोहन कराके मीर मालिकोंसे साथ पोषध-शाला बड़े उत्सवके साथ पहुंचाया। वाजित्र बाजते और युवतियोंके नृत्य करते हुए बड़े उत्सवसे पूज्यश्री वसतीमें पधारे। पद्मावती देवीके सानिध्यसे आपकी धवल कीर्ति दशोदिश व्याप्त हो गई।

आप बड़े चमत्कारी और प्रभावक आचार्य थे। आपके चमत्कारों में १ आकाशसे कुल्ह (टोपी-घड़ा) को ओघे (रजोहरण) के द्वारा नीचे लाना २ महिष (भैंस) के मुखसे वाद करना ३ पतिशाहके साथ वड़ (वट) वृक्षको चलाना ४ शत्रुंजयके रायण वृक्षसे दुग्ध वरसाना ५ दोरड़ेसे मुद्रिका प्रगट करना ६ जिन प्रतिमासे वचन बुलवाने आदि मुख्य हैं।

आपके विषयमें स्वतन्त्र निबन्ध (ला० म० गांधी लिखित) प्रकाशित होनेवाला है उसे, और जैनस्तोत्र सन्दोह भा० २प्रस्तावना पृ० ४४ से ५२ एवं ही० रसिक० सम्पादित ग्रन्थ देखना चाहिये।

खरतर गच्छ शाखायें

जिनप्रभसूरि परम्परा

(पृ० ११, १३, १४, ४१, ४२,)

वीर—सुधर्म-जम्बू प्रभव शय्यभद्र यशोभद्र आर्यसंभूति भद्रबाहु स्थूलिभद्र आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती शांतिसूरि हरिभद्रसूरि संडिल्लसूरि-आर्यसमुद्र,-आर्यमगू-आर्यधर्म भद्रगुप्त-वज्रस्वामी आर्यरक्षित-आर्यनन्दि-आर्यनागहस्ति रवत-खण्डिल-हिमवन्त नागार्जुन गोविन्द-भूतदिन्न लोहदित्य-दूष्यसूरि-उमास्वातिवाचक जिनभद्रसूरि हरिभद्रसूरि-देवसूरि-नेमिचन्द्रसूरि—उद्योतनसूरि-वर्द्धमानसूरि-जिनेश्वरसूरि जिनचन्द्रसूरि-अभयदेवसूरि-जिनवल्लभसूरि जिनदत्तसूरि- जिनचन्द्रसूरि-जिनपतिसूरि-जिनेश्वरसूरि-यहा तक तो अनुक्रम सादृश ही है।

इसके पश्चात् जिनेश्वरसूरिके पट्टधर जिनसिंहसूरि-जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि-जिनमेरुसूरि (पृ० ११) अनुक्रमसे उनर पट्टधर जिनहितसूरि तकका नाम आता है (पृ० ४२) इनमे जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिका विशेष परिचय गीतोमे इस प्रकार है —

जिनप्रभसूरि

जिनप्रभसूरिजीने महम्मद पतिशाहको दिल्लीमे अपने गुण समूहसे रंजित किया।

अष्टाही, अष्टमी चतुर्दशीको सम्राट उन्हे सभामे आमन्त्रित करते थे, कुतुबुद्दीन भी आपके दर्शनसे बडे प्रसन्न हुए थे।

पतिशाह महम्मद शाह आपसे दिल्लीमे स० १३८५ पौष शुक्ला ८

वेगड़ खरतरशाखा
(पृ० ३१२ से ३१८)

गुर्वावलीमें जिनलब्धिसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि तक क्रम एक समान ही है, जिनचन्द्रसूरिके पट्टापर भट्टारक शाखाकी ओर जिनराजसूरि पट्टधर हुए। वे माल्हू गोत्रीय थे, इसीसे वेगड़ गच्छवाले उनकी परम्पराको माल्हूशाखा कहते है। उधर द्वितीय पट्टधर जिनेश्वरसूरि हुए, जो इस शाखाके आदि पुरुष हैं। जिनेश्वरसूरिजी आदिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है :—

जिनेश्वरसूरिजी

छाजहड़ गोत्रीय झांझणके आप पुत्र थे, आपकी माताका नाम झबकु था, और वेगड़ विरुद्धसे आपकी प्रसिद्ध थी। माल्हू गोत्रीय गुरु भ्राताके मानको चूर्ण कर अपने गुरु श्री जिनचन्द्रसूरिका पाट आपने लिया। आपने वाराही त्रिरायको आराधना किया था और धरणेन्द्र भी आपके प्रत्यक्ष था, अणहिल्लवाडे (पाटण) में खानका परचा पूर्ण कर महाजन वन्द (वन्दियों) को छुड़ाया था। राजनगरमें विहार कर महम्मद वादशाहको प्रतिबोध दिया था और उसने आपका पदस्थापना महोत्सव किया था। आपके भ्राताने ५०० घोड़ोंका (आपके दर्शनपर) दान किया और १ करोड़ द्रव्य व्यय किया था इससे महम्मद शाहने हर्षित हो "वेगड़ा" विरुद्ध प्रदान किया था, (या उसने कहा आपके श्रावक भी वेगड़ और आप भी वेगड़ हैं)। एक वार आप साचोर पधारे, वेगड़ और थूल्हा दोनों गोत्र परस्पर मिले, (वहां) राडद्रहसे लखमीसिंह मन्त्रीने सङ्घ सहित आकर गुरु श्री को वन्दन किया।

जिनदेवसूरि

(पृ० १४)

जिनप्रभसूरिजीके पट्टपर आप सूर्यके समान तेजस्वी थे। मह मल्ल-निर्झरिणीमें आपके वचनामृतसे महम्मद शाहने कन्नाणापुर (कन्यानीय) मंडण वीरप्रभुको शुभलग्नमें स्थापित किया था। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशलके आप भण्डार थे एवं लक्षण, छन्द, नाटक आदिके आप वेत्ता थे।

कुल्हर (शाह) व कुल्हम वीरणी नामक नारि-रत्नके कुक्षिसे आपका जन्म हुवा था, जिनसिंहसूरिजीके पास आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पीछेके आचार्योंकी नामावलीका पता (१६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्ध तकका) हमारे संग्रहके एक पत्र एवं ग्रन्थ प्रशस्तियों से लगा है। जिसका विवरण इस प्रकार है —

जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरि—पट्टधरद्वय १ जिनमेरुसूरि २ जिनचन्द्रसूरि, इनमें जिनमेरुसूरिके पट्टधर—जिनहितसूरि—जिनसर्व्वसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—जिनतिलकसूरि (सं० १५११)—जिनराजसूरि—जिनचन्द्रसूरि (सं० १५८५)—पट्टधरद्वय १ जिनमेरुसूरि और २ जिनभद्रसूरि—(सं० १६००)—जिनभानुसूरि (सं० १६७१)

दीक्षा दी। दीक्षित होनेके अनन्तर भोजकुमार गुरुश्रीसे विद्याभ्यास करते हुए संयम मार्गमें विशेष रूपसे प्रवृत हुए।

इधर जोधपुरमें राठौर राजा गंगराज राज्य करते थे, वहां छाजहड़ गोत्रीय गांगावत राजसिंह, सत्ता, पत्ता, नेतागर आदि निवास करते थे। सत्ताके पुत्र दुल्हण और सहजपाल थे, सहजपाल के पुत्र मानसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण थे। जिनकी माताका नाम कस्तूरदे था। सुरताणकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे जेत, प्रताप और चांपसिंह तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। उपरोक्त कुटुम्बने विचारकर गंग नरेशसे (नेतागरने) प्रार्थना की, कि हम लोगोंको गुरु महा-राजके पट्टोत्सव करनेके लिए आज्ञा प्रदान करें। नृपवर्य्यका आदेश पाकर देश-विदेशमें चारों तरफ आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई, बहुत जगहका संघ एकत्र हुआ और खूब उत्सवपूर्वक सं० १५८२ फाल्गुन शु० ४ श्रीजिनमेरुसूरिके पट्टपर श्री जिनगुणप्रभ सूरिजीको स्थापित किया गया। उन्हें वड़ गच्छीय श्रीपुण्यप्रभ सूरिने सूरि मंत्र दिया संघने गंगरायको सन्मानित किया और राजाने भी संघ और पूज्यश्रीको बहुमान दिया।

सं० १५८५ में सूरिवर्य्यने संघके साथ तीर्थाधिराज सिद्धाचल जीकी यात्रा की, जोधपुरमें बहुतसे भव्योंको प्रतिबोध दिया। इस प्रकार क्रमशः १२ चतुर्मास होनेके पश्चात जेशलमेरके श्रावक देव-पाल, सदारंग, जीया, वस्ता, रायमल्ल, श्रीरंग, हुटा, भोजा आदि संघने एकत्र होकर गुरु दर्शनकी उत्कंठासे पांच प्रधान पुरुषोंके साथ वीनति-पत्र भेजा, उनके विशेष आग्रहसे सूरिजी विहारकर जैसलमेर

लक्ष्मीसिंहने भरम नामक अपने पुत्रको गुरुश्रीको वहराया और चार चौमास वहीं रक्खे। स० १४३० म सथारा कर शतिपुर (जोधपुर) म आप स्वर्ग पधारे और वहाँ आपका स्तूप (थुम्भ) बनाया गया वह बडा चमत्कारी है, हजारो मनुष्य वहा दर्शनार्थ आते हैं। स्वर्गगमन पश्चात भी आपने तिलोकसा शाहको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की। पौष शुक्ला १३ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत बनाया।

गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रबन्ध और हमारे सग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है —

१—श्री जिनशखरसूरि २—श्री जिनधर्मसूरि ३—श्री जिन चन्द्रसूरि ४—श्री जिनमेरुसूरि ५—श्री गुणप्रभसूरि हुए। इनका विशेष परिचय इस प्रकार है —

स० १५७२ म श्री जिनमेरुसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर मण्डलाचार्य श्री जयसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड गोत्रीय व्यक्तिकी गवेषणा की। अन्तमे जूठिल शाखा के मत्री भोदेवके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गण पति शाहकी पुत्री नागिलदेके पुत्र वच्छराजने धर्मका लाभ जानकर अपने पुत्र भोजको समर्पण किया। उनका जन्म स० १५६१ (शाके १४३१) मिगसर शुक्ला ४ गुरुवारके रात्रिमे उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ऋषियोग कर्क लग्न, गण वर्गमे हुआ, स० १५७५मे सूरिजीने

बीकानेर निवासी बाफणा गोत्रीय रूपजी शाहकी भार्या रूपादे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम बीरजी था, लघु वयमें समता रसमें लयलीन देखकर जैसलमेरमें श्री जिनेश्वर सूरि जीने आपको दीक्षितकर, बीर विजय अभिधान दिया। आपपढ़-लिख खूब विद्वान् और प्रतापी हुए, आपको श्रीजिनेश्वर सूरिजीने स्वयं अपने पट्टपर स्थापित किये। जैन शासनकी प्रभावनाकरके सं० १७१३ पोष मासकी ११ भृगुवारको अनशन पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। महिमा-समुद्रजीने आपके दो गीत रचे, अन्य एक गीतमें समुद्रसूरिजीने आपके साचोर पधारनेपर उत्सव हुआ, उसका संक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि

(पृ० ३१७, ४३२)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादेवीके पुत्र थे, श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टपर स्थापित होनेके पश्चात आप सूरत और सांस नगरमें पधारे, जिनका वर्णन माईदास और महिमाहर्षके गीतमें है। सूरतमें छत्तराज शाहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिके पश्चात पट्टधरोंके नाम ये हैं :—जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेश्वरसूरि (सं० १८६१) इनके पट्टधरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनक्षेमचंद्र सूरि सं० १६०२ में स्वर्ग सिधारे।

पिप्पलक शाखा

(पृ० ३१६)

गुर्वावली* में जिनराजसूरि (प्रथम)तक तो क्रम एक-सा ही

*गुर्वावलीमें नवीन ज्ञातव्य यह है कि:—जिन वर्द्धमान सूरिजीने श्री-

आये, सं० १५८७ आषाढ बदी १३ को समारोहके साथ पुर प्रवेश कर पोषधशालाम पधार। व्याख्यानादि धर्म कृत्य होने लगे। सं० १५६४ म राउल श्री लूणकर्णने जलके अभावमें अपनी प्रजाको महान कष्ट पाते देखकर दुष्कालकी सम्भावनासे गच्छनायकको वर्षा होनेके उपाय करनेकी नम्र विज्ञप्ति की। राउलजीकी प्रार्थना स सूरिजीने उपाश्रयमे अष्टम तप पूर्वक मंत्र साधना प्रारम्भ की, उसके प्रभावसे मेघमाली देवने घनघोर वर्षा वर्षाइ, जिससे भादवा सुदि १ को प्रथम प्रहरसे सारे तालाब-जलाशय भर गए। सुकाल हो जानेसे लोगोंके दिलमें परमानंद छा गया, सूरि महाराजकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई, राउलजीने गुरु महाराजके उपदेशसे वणिक बन्दियोको मुक्त कर दिया और पंच शब्द, वाजित्र आदिके बजवाते हुए बड़े समारोह पूर्वक उपाश्रयम पहुचाये।

इस प्रकार सूरिजीने शासनकी बडी प्रभावनाकी थी, सं० १६५५ म ज्ञानबलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर राधा (वैशाख) कृष्णा ८को तीन आहारके त्यागरूप अनशन ग्रहण किया, एकादशीको सबके समक्ष प्रत्याख्यानादि कर डाभके संथारेपर सलेखना कर दी, शत्रु और मित्रपर समभाव रखते हुए, अर्हन्तादि पदोंका ध्यान करते हुए, १५ दिनकी संलेखना पूर्णकर वैशाख सुदि ६ को ६० वर्ष ५ मास और ५ दिनका आयुष्य पूर्ण कर स्वर्ग सिधारे। श्री जिनेश्वर सूरिजी ने इनका प्रबन्ध बनाया।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ४३०, ३१६)

श्री गुणप्रभसूरिजीके शिष्य श्री जिनेश्वर सूरिजीके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए जिनका परिचय इस प्रकार है।—

बीकानेर निवासी बाफणा गोत्रीय रूपजी शाहकी भार्या रूपादे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम वीरजी था, लघु वयमें समता रसमें लयलीन देखकर जैसलमेरमें श्री जिनेश्वर सूरि जीने आपको दीक्षितकर, वीर विजय अभिधान दिया। आप पढ़-लिख खूब विद्वान् और प्रतापी हुए, आपको श्रीजिनेश्वर सूरिजीने स्वयं अपने पट्टपर स्थापित किये। जैन शासनकी प्रभावनाकरके सं० १७१३ पोप मासकी ११ भृगुवारको अनशन पूर्वक आपस्वर्ग सिधारे। महिमा-समुद्रजीने आपके दो गीत रचे, अन्य एक गीतमें समुद्रसूरिजीने आपके साचोर पधारनेपर उत्सव हुआ, उसका संक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि

(पृ० ३१७, ४३२)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादेवीके पुत्र थे, श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टपर स्थापित होनेके पश्चात आप सूरत और सांस नगरमें पधारे, जिनका वर्णन माईदास और महिमाहर्षके गीतमें है। सूरतमें छत्तराज शाहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिके पश्चात पट्टधरोंके नाम ये हैं :—जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेश्वरसूरि (सं० १८६१) इनके पट्टधरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनक्षेमचंद्र सूरि सं० १९०२ में स्वर्ग सिधारे।

पिप्पलक शाखा

(पृ० ३१९)

गुर्वावली* में जिनराजसूरि (प्रथम)तक तो क्रम एक-सा ही

*गुर्वावलीमें नवीन ज्ञातव्य यह है कि:—जिन वर्द्धमान सूरिजीने श्री-

है। उनके पट्टधर जिनवर्द्धनसूरिजीसे यह शाखा भिन्न हुई थी, उनके पट्टधर आचार्योंका नामानुक्रम इस प्रकार है :—

जिनवर्द्धन सूरि--जिनचन्द्रसूरि—जिन सागर सूरि—(जिन्होंने ८४ प्रतिष्ठायें की थीं और उनका थुंभ अहमदाबादमें प्रसिद्ध है)। जिन सुन्दर सूरि—जिनहर्षसूरि—जिनचन्द्र सूरि—जिनशील सूरि—जिनकीर्तिसूरि—जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (सं० १६६६ विद्यमान) तकका रामसुन्दरने उल्लेख किया है हमारे संग्रह की पट्टावली आदिसे इस शाखाके पश्चानुवर्ती पट्टधरोंका अनुक्रम यह ज्ञात होता है—जिनरत्नसूरि—जिनवर्द्धमानसूरि—जिनधर्म सूरि---जिनचन्द्र सूरि—(अपर नाम शिवचन्द्र सूरि) इनमें जिनरत्न सूरिके पीछेके नाम प्रस्तुत शिवचन्द्र सूरि राससे भी पाये जाते हैं। अत रासके अनुसार जिन (शिव) चन्द्र सूरिजीका विशेष परिचय नीचे दिया जाता है —

जिन शिवचन्द्रसूरि ×

(पृ० ३२१)

मरुधर देशके भिन्नमाल नगरमें अजीतसिंह भूपतिके राज्यमें ओसवाल राका गोत्रीय शाह पदमसी रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम पदमा था। उसके शुभ मुहूर्तमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और

मधर स्वामीसे सूरि मन्त्र संशोधन कराया। श्रीमंधर स्वामीने आचार्यके नामकी आदिमें जिन विशेषण लगानेकी सूचना दी, इसीसे पट्टधर आचार्यों ने नामके आग जिन विशेषण दिया जाता है।

×गृहे १३ साधुपर्याय १३ गच्छ नायक १८ इस प्रकार कुल ४४ वर्ष का आयुष्य पाया।

उसका नाम शिवचन्द रखा गया। कुंवर दिनोंदिन वृद्धि प्राप्त होने लगा और जब उसकी अवस्था १३ वर्षकी हुई, उस समय उसी नगरमें गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। संघने प्रवेशोत्सत्व किया, और अनेक लोग गुरुश्रीके व्याख्यानमें नित्य आने लगे। सूरिजीके व्याख्यान श्रवणार्थ पदमसी और शिवचन्द कुमार भी जाने लगे और संसारकी अनित्यताके उपदेशसे कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया, यावत् माता पिताके पास आग्रह पूर्वक अनुमति लेकर सं० १७६३ में गुरु श्रीकेपास दीक्षा ग्रहण की। मासकल्पके परिपूर्ण हो जानेसे सूरिजी नवदीक्षित शिवचन्द्रके साथ विहार कर गये। ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमसे नवदीक्षित मुनिने व्याकरण, न्याय, तर्क और आगम ग्रन्थोंका शीघ्र अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

जिनधर्म सूरिजी उदयपुर पधारे और वहां शारीरिक वेदना उत्पन्न होनेसे आयुष्यकी पूर्णाहुतिका समय ज्ञातकर सं० १७७६ वैसाख शुक्ला ७ का शिवचन्दजीको गच्छनायक पद देकर (वहीं) स्वर्ग सिधारे। आचार्यपदका नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रखा गया। उस समय (राणा संग्राम राज्ये) उदयपुरके श्रावक दोसी भीखा सुत कुशलेने पद महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोंको दान आदि कार्योंमें बहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुयश प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात आपने, शिष्य हरिसागरके आग्रहसे वहीं चतुर्मास किया, धर्मप्रभावना अच्छी हुई। चौमासा पूर्ण होने पर आपने गुजरातकी ओर विहार कर दिया। सं० १७७८ में (गच्छनायकके) परिग्रहका त्यागकर विशेष वैराग्य भावसे क्रियोद्धार किया और

अन्य गुणोंकी भावना करते हुए भव्योंको उपदेश प्रदान करी द्वारा अपार जिन शासनमें अग्रसर हुए।

गुजरातमें विचरते हुए शत्रुंजय तीर्थ पधारे और वहाँ ४ महीने की अवस्थिति कर ११ उपवास की। वहाँसे गिरनारमें नेमनाथकी यात्राकर जूनागढ़की यात्रा करते हुए सोरठ पधारे, वहाँकी यात्रा कर चतुर्मास भी वहीं किया। वहाँ धर्म-ध्यान अधिक हुआ। तदनन्तर मारवाड़की ओर विचरकर आबू तीर्थकी यात्रा करके मेदपाट-धिराज सम्मेतशिखर पधारे। वहां बीस तीर्थंकरोंके निर्वाण स्थानों की यात्रा करके, विचरते हुए बनारस पार्श्वनाथजी की यात्राकी। राजगृहमें पावापुरी, चम्पापुरी, राजगृही, वैभारगिरिकी भी संघके साथ यात्राकी और हस्तिनापुरमें शान्ति, कुन्थु और अरिनाथप्रभु की यात्रा कर दिल्ली पधारे, वहां चतुर्मास करके विहार करते हुए पुनः गुजरातमें पदार्पण किया। वहां भावसारोंके आग्रहसे एक चतुर्मास किया और पणमाह भगवतीसूत्रका व्याख्यान देने लगे, इति उत्सव पूर्वक गुरुका ग्रन्थ किया। ज्ञान-भक्ति और धर्म प्रभावना अच्छी हुई, शत्रुंजयतीर्थकी यात्राकी यात्राकी भावना पुनः उत्पन्न होनेसे राजनगरसे विचरकर शत्रुंजय और गिरनारतीर्थकी यात्राकर श्रीबंदरमें चौमासे रहे। वहांसे फिर शत्रुंजयकी यात्रा करके घोघा-बंदर, भावनगर आदिकी यात्रा करते हुए सं० १७६४ के माद महीनेमें खम्भात पधारे। वहाँके गुणानुरागी श्रावकोंने आपका अतिशय बहु-मान किया, उनके उपकारार्थ आप भी धर्मदेशना देने लगे।

इसी समय किसी दुष्ट प्रकृति पुरुषने वहाँके यवनाधिपके समक्ष

कोई चुगली खाई, अतः उसने अपने सेवकोंको आचार्यजीके पास भेजे। राज्य सेवकोंने पूज्यश्रीको बुलाकर "आपके पास धन है वह हमें देदें" कहा, पर सूरिजी तो बहुत पहलेही परिग्रहका सर्वथा त्याग कर चुके थे, अतः स्पष्ट शब्दोंमें प्रत्युत्तर दिया कि भाई हमारे पास तो भगवत् नाम स्मरणके अतिरिक्त कोई धन माल नहीं है, पर वे अर्थ लोभी भला कब माननेवाले थे। उन्होंने सूरिजीको तंग करना शुरू किया। इतनाही नहीं राज्यसत्ताके बलपर अंधे होकर यवनाधिपतिने सूरिजीकी खाल उतारनेकी आज्ञा दे दी। सूरिजीने यह सब अपने पूर्व संचित अशुभ कर्मोंके उदयका ही फल है, विचारकर मरणान्त कष्ट देनेवाले दुष्टोंपर तनिक भी क्रोध नहीं किया। धन्य है! ऐसे समभावी उच्च आत्म-साधक महापुरुषोंको !! रात्रिके समय दुष्ट यवनने क्रोधित होकर बड़े दुःख देने आरम्भ किये। मार्मिक स्थानोंमें बड़े जोरोंसे मारने (दंड-प्रहार करने) लगा और उस पापीष्टने इतनेमें ही न रुककर सूरिजीके हाथ पैरके जीवित नखोंको उतार असह्य वेदना उत्पन्न की। वेदना क्रमशः बढ़ने लगी और मरणान्त अवस्था आ पहुंची, पर उन महापुरुषने समभाव के निर्मल सरोवरमें पैठ आत्मरमणतामें तलीन्नता कर दी। अपने पूर्वके खंदग-गजसुकमाल-इवदन्त आदि महापुरुषोंके चरित्रोंका स्मृति चित्र अपने आंखोंके सामने खड़ाकर पुद्गल और आत्माके भिन्नत्व विचाररूप, भेद ज्ञानसे उस असह्य वेदनाका अनुभव करने लगे।

यह वृतांत ज्ञात होते ही प्रातःकाल श्रावकगण सूरिजीके पास आये, तब यवन भी सरिजीका धैर्य देख और अपनी सारी दुष्टवृत्ति

की इनिश्री होनेमें उकता गया। और श्रावकोंको उन्हें अपने स्थान ले जानेको कहा। रूपा वोहरा उन्हें अपने घर लाया। नगरमें सर्वत्र हाहाकार मच गया।

इस समय नाय (न्याय ?) सागरजीने सूरिजीका अन्तिम समय जानकर उत्तराध्ययन आदि सूत्रोंका श्रवण कराके अनशन आराधना कराई। श्रावकोंने यथाशक्ति चतुर्थ व्रत, हरित त्याग, १२ व्रतादि के यथाशक्ति नियम लिये। आचार्यश्रीने गच्छकी शिक्षा अपने शिष्य हीरसागरको देकर, सं० १५६४ वैशाख ६ रविवार सिद्धयोग के प्रथम प्रहरमें जिनेश्वरका ध्यान करते इस नश्वर देहका परित्यागकर (प्राय) देवरे शिष्य रूपको धारण किया। श्रावकोंने उत्सवके साथ अन्त क्रिया की, और रूपा वोहरेने वहां स्तूप कराया। इसी तरह राजनगरके बहिरामपुरमें भी स्तूप बनवाया गया। हीरसागरके आग्रहसे कडुआमती शाह लाधाने सं० १५६५ के आश्विन शुक्ला ५ बृहस्पतिवारको राजनगरमें इस रासकी रचना की।

आद्यपक्षीय शाखा

जिनहर्षसूरि

(पृ० ३३३)

आद्य पक्षीय खरतर शाखा (भेद) सं० १५६६ में जिनदेव सूरिजीसे निर्गत हुई थी। हमें प्राप्त पट्टावलीके अनुसार इन शाखा की पट्ट-परम्परा इस प्रकार है :—

जिनवर्द्धनसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—पट्टधर जिन देवसूरि (इस शाखाके आदि पुरुष) जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (पंचायण भट्टारक) के शिष्य जिनहर्षसूरिजी थे। गीतके अनुसार आप दोसी वंशके भादाजीकी भार्या भगतादेके पुत्र थे।

अन्य साधनोंसे आपका विशेष वृत्तान्त निम्नोक्त ज्ञात हुआ है:— सं० १६६३ में जैतारणमें जिनचन्द्रसूरिका स्वर्गवास हुआ। भंडारी गोत्रीय नारायणने पद महोत्सवकर आपको उनके पट्टपर स्थापित किये, जेतारणमें आपने हाथीको कीलित किया, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है :—सं० १७१२ वर्षे खरतर गच्छ वृद्धाआचार्य क्षेमधाड़ शाखा पंचायण भट्टारक रे पाट सांप्रत विजयमान भ० श्रीजिनहर्षसूरि जी सोजत शहरमें हाथी कील्यो, तपा गच्छ हुंती बोल उपर आण्यों इंण वातरो सोजत शहर सिगलो साक्षीभूत थे। हाथी रे ठिकाने अजे सगिड़ो पूजीजे छे कोटवाली चोतरा कने मांडी चिचमें × × × (इनके शिष्य सुमतिहंसकृत कालिकाचार्य कथा बालावबोध पत्र १४, यतिवर्य सूर्य्यमलजी के संग्रहमें)।

१५२८ चैत्र कृष्णा ११ को जेतारणमें आपका स्वर्गवास हुआ। इनके पश्चात् पट्टधरोंका क्रम यह है —१ जिनलब्धि जिनमाणिक्य जिनचन्द्र जिनोदय जिनसंभव जिनधर्म जिनचन्द्र जिनकीर्ति जिन बुद्धिवल्लभ जिनक्षमारत्नसूरिके पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी पालीमें अभी विद्यमान हैं।

भावहर्षीय शाखा

भावहर्षजी उपाध्याय

(पृ० १३५)

शाह कोडाकी पत्नी कोडमदेके आप पुत्र थे। श्रीकुलतिलकजीके आप सुशिष्य थे। संयमके प्रतिपालनमें आप विशेष सावधान रहा करते थे और सरस्वती देवीने प्रसन्न होकर आपको शुभाशीष दी थी। माह शुक्ला १० को जैसलमेरमें गच्छनायक जिनमाणिक्य सूरिजीने (सं० १५८३ और १६१२ के मध्यमें) आपको उपाध्याय पद दिया था।

अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि शाखाके वा० साधुचन्द्र शिष्य कुलतिलकजीके शिष्य थे। आप स्वयं अच्छे कवि थे। आपके रचित स्तवनादि बहुतसे मिलते हैं। सं० १६०६ में आपने उ० कनकतिलकादिके साथ कठिन क्रिया उद्धार किया था। आपके हेमसार आदि कई विद्वान और कवि शिष्य थे। आपके द्वारा खरतर गच्छमें ७ वां गच्छ भेद हुआ। और आपके नामसे वह शाखा भावहर्षीय कहलाई। बालोतरेमें इस शाखाकी गद्दी अब भी विद्यमान है। आपके शाखाकी पट्ट परम्परा इस प्रकार

है :—भावहर्षसूरि—जिनतिलक—जिनोदय—जिनचन्द्र—जिनसमुद्र—जिनरत्न—जिनप्रमोद—जिनचन्द्र—जिनसुख—जिनक्षमा-जिनपद्म—जिनचन्द्र—जिनफतेन्द्रसूरि हुए, आपकी शाखामें अभी यतिवर्य नेमिचन्द्रजी वालोतरेमें विद्यमान है।—विशेष विचार खरतर गच्छ इतिहासमें करेंगे।

जिनसागर सूरि शाखा [लघु आचार्य]

जिनसागरसूरि

(पृ० १७८-२०३-३३४)

मरुधर जंगल देशके वीकानेर नगरमें राजा रायसिंहजी राज्य करते थे। उस नगरमें वोथरा गोत्रीय शाह वच्छा निवास करते थे, उनकी भार्या मृगादेकी कुक्षिसे सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रविवारको अश्विन नक्षत्रमें आपका. जन्म हुआ था। आप जव गर्भमें अवतरित हुए थे, तव माताको रक्त चोल रत्नावलीका स्वप्न आया था, उसीके अनुसार आपका नाम "चोला" रक्खा गया, पर लाड (अतिशय प्रेम) के नाम सामलसे ही आपकी प्रसिद्धि हुई।

एकवार श्रीजिनसिंहसूरिजीका वहां शुभागमन हुआ और उनके उपदेशसे सामल कुमारको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसने अपनी मातुश्रीसे दीक्षाकी अनुमति मांगी। इसपर माताने भी साथ ही दीक्षा लेनेका निश्चय प्रकट किया। इधर श्री जिनसिंह सूरिजी विहारकर अमरसर पधारे। तव वहां जाकर सामलकुमार ने अपने वड़े भाई विक्रम और माताके साथ सं० १६६१ माह सुदी

७ को सूरिजीसे दीक्षा ग्रहण की*। उस समय अमरसरके श्रीमाली थानसिंहने दीक्षा महोत्सव किया।

नवदीक्षित मुनिके साथ जिनसिंहसूरिजी ग्रामानु-ग्राम विहार करते हुए राजनगर पधारे। वहां युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी को वंदना की, सूरिजीने नवदीक्षित मानसिंह मुनिको (मांडलके तप वहन कर लिये, ज्ञानकर) बड़ी दीक्षा देकर नाम स्थापना "सिद्धसेन" की। इसके पश्चात सिद्धसेन मुनि आगमके उपधान (तपादि) वहन करने लगे और बीकानेरमें छ मासी तप किया। विनय सहित आगमादिका अध्ययन करने लगे। युगप्रधान पूज्यश्री आपके गुणोंसे बड़े प्रसन्न थे। कविवर समयसुन्दरके सुप्रसिद्ध शिष्य वादी हर्षनन्दनने आपको विद्याध्ययन बड़े मनोयोगसे कराया।

इस प्रकार विद्याध्ययन और संयम पालन करते हुए श्री जिनसिंहसूरिजीके साथ संघवी आसकरणके संघ सह शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की। वहांसे विहारकर खंभात, अहमदाबाद, पाटण होते हुए वडलीमें जिनदत्तसूरिजीकी यात्रा की। वहांसे विहारकर सिरोही पधारे। वहांके राजा राजसिंहने बहुत सम्मान किया और संघने प्रवेशोत्सव किया। वहांसे जालोर, खंडप, दूणाडा होते हुए घंघाणी के प्राचीन जिन बिम्बोंके दर्शन कर बीकानेर पधारे। शा० वाघमलने प्रवेशोत्सव किया। जिनसिंहसूरिजीने चतुर्मास यहीं किया। इसी चतुर्मासके समय उन्हें सम्राट् सलेमने मवदे दूत भेजकर आमन्त्रित

* निर्वाण रासमें मृगादेका दीक्षित नाम माणिक्यमाला और बीकेका नाम विवेक कल्याण लिखा।

किये। सम्राट्की विज्ञप्तिके अनुसार वहांसे विहारकर वे मेड़ते पधारे, वहां शारीरिक व्याधि उत्पन्न होनेसे आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

इस प्रकार जिनसिंहसूरिजीकी अचानक मृत्यु होनेसे संघको बड़ा शोक हुआ। पर कालके आगे कर भी क्या सकते थे, आखिर शोक निर्वतन करके संघने राजसी (राज समुद्र) जी को भट्टारक (गच्छ नायक) पद और सिद्धसेन (सामल) जीको *आचार्य पदसे अलंकृत किये।

संघपति (चोपड़ा) आसकरण, अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास और सूरदासने पद महोत्सव बड़े समारोहसे किया। (पूनमीया गच्छीय) हेमसूरिजीने सूरिमंत्र देकर सं०१६७४ फाल्गुन शुक्ला ७को शुभ मुहूर्तमें जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि नाम स्थापना की।

आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर आपने मेड़तेसे विहार कर राणकपुर, वरकाणा, तिमरी (पार्श्वनाथजीको), ओसियां और घंघाणीकी यात्राकर चतुर्मास मेड़ते किया। वहांसे जैसलमेर पधारे। वहां राउल कल्याण और श्रीसंघने वंदन किया और भणसाली जीवराजने (प्रवेश) उत्सव किया। वहां श्रीसंघको ११ अंगोंका श्रवण कराया। शाह कुशलेने मिश्री सहित रुपयोंकी लाहण की। वहांसे संघके साथ लोद्रवा पधारे। (भणसाली) श्रीमल सुत थाहरुशाहने स्वामी—वात्सल्यादिमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया। वहांसे आचार्य जिनसागरसूरि फलवधी पधारे। श्रावक मानेने प्रवेशोत्सव किया और

---

* निर्वाण रास गा० ९ और जयकीर्ति कृत गीतके कथनानुसार आपको आचार्य पद, युग प्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके वचनानुसार मिला था।

याचकोको दान दिया। सबने बडी भक्ति की। वहांसे विहारकर करणुअइ पधारे, वहा सघने भक्तिसे वदना की। इस प्रकार विहार करते हुए बीकानेर पधारे, वहा पामाणीने सघके साथ प्रवेशोत्सव किया एव (मत्रीश्वर कर्मचन्दके पुत्र) भागचन्दके पुत्र मनोहरदास आदि सामहीयेमे पधारे।

बीकानेरसे विहारकर (लूनकरण) सर चतुर्मास कर जाल्यसर पधारे। वहा मत्री भगवानदासने बड़े उत्सवके साथ पूज्यश्रीको वदन किया, वहासे डीडवाणेके सघको वदान हुए सुरपुर एव मालपुर आये, वहा भी धर्म-ध्यान सविशेष हुआ। इस प्रकार विहार करते हुए बीलाडेमे चौमासा किया। वहाके कटारिये श्रावक खरतर गच्छ के अनन्य अनुरागी थे, उन्होने उत्सव किया।

बीलाडेसे विहार कर मेडत आये वहा गोलछा रायमल्लके पुत्र अमीपालके भ्राता नेतसिंह भ्रातृपुत्र-राजसिंहने बडे समारोहसे नान्दि स्थापन कर व्रतोच्चारण किये, श्रीफल नाळेरादिके साथ रुपयाकी लाहण (प्रभावना) की। वहाके रसाउत श्रीमल, बीरदास माडण, तेजा, रीहड दरडाने भी धार्मिक कार्योंमे बहुतसा द्रव्यका सद्व्यय किया। आचार्य श्री वहासे विहारकर राणपुर और कुम्भलमेरके जिनालयोको वदन कर मेवाड प्रदेश होते हुए उदयपुर पधारे। वहाके राजा करणने आपका सम्मान किया। और मत्रीश्वर कर्मचन्द्र पुत्र लक्ष्मीचन्द्रके पुत्र रामचन्द और रघुनाथके साथ अजायबदेने वन्दन किया। वहासे विहार कर स्वर्णगिरि पधारे, वहा सघने बडा उत्सव किया। साचोर सघने एव हाथीशाहने बहुत आग्रह कर चतुर्मास साचोरमे कराया।

इस प्रकार उपरोक्त सारे वर्णनात्मक इस रासको कवि धर्मकीर्ति (यु० जिनचन्द्रसूरि उपाध्याय धर्मनिधानके शि०) ने स० १६८१ के पौष कृष्णा ५ को बनाया ।

उपरोक्त रास रचनेके पश्चात् सं० १६८६ में गच्छ नायक जिनराजसूरि और आचार्य जिनसागरसूरिके किसी अज्ञात कारण विशेषसे मनोमालिन्य या वैमनस्य* उत्पन्न हुआ ।

फलस्वरूप दोनोंकी शाखायें (शिष्यपरिवार आदि) भिन्न २ हो गई। और तभीसे जिनराजसूरिजीकी परम्परा भट्टारकीया एवं जिनसागरसूरिजीकी परम्परा आचारजीया नामसे प्रसिद्ध हुइ, जो आज भी उन्हीं नामोंसे प्रख्यात है ।

शाखा भेद होने पर जिनसागरसूरिजीके पक्षमें कौनसे विद्वान और कहांका संघ आज्ञानुयायी रहा। इसका वर्णन निर्वाण रासमें इस प्रकार है :—

श्रीजिनसागरजीके आज्ञानुवर्ती साधु संघमें उपाध्याय समय-सुन्दरजी (की सम्पूर्ण शिष्य परम्परा), पुण्य-प्रधानादि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके सभी शिष्य, और श्रावक समुदायमें अहमदावाद, बीकानेर, पाटण, खम्भात, मुल्तान, जैसल्मेरके संघ नायक संख-वालादि, मेड़तेके गोल्छे, आगरेके ओशवाल, वीलाड़ेके संघवी कटारिये एवं जयतारण, जालौर, पचियाख, पाल्हनपुर, मुञ्ज, सूरत, दिल्ली, लाहोर, लुणकरणसर, सिन्ध प्रान्तोंमें मरोट, थट्टा, डेरा, मारवाडमें फलोधी, पोकरण आदिके (ओशवाल-अच्छे २

*जयकीर्तिके गीतके अनुसार यह कारण अहमदाबादमें हुआ था ।

पदाधिकारी) थे।* उनमेंसे मुख्य श्रावकोंके धर्मकृत्य इस प्रकार है —

करमसी शाह सबत्सरीको महम्मदी (मुद्रा) देते और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको मघमें श्रीफलोंकी प्रभावना किया करते थे। लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पूठियेके उपर के खण्डकी पीटणीको समराइ (जीर्णोद्धारित की) और उसकी भार्या कपूरदेने जो कि उग्रसेनकी माता थी, धर्मकार्यमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया।

शाह शान्तिदासन भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्णके वेलिये दिये थे, एवं ७॥ हजार रुपयोंका खर्च कर सुयश प्राप्त किया था। उनकी माता मानवाइने उपाश्रयके १ खण्डकी पीरणी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आषाढ चतुर्मासीके पोषधोप वासी श्रावकोंको पोषण करनेका वचन दिया था।

शाहमनजोके दीप्तमान कुटुम्बमें शाह उदयकरण, हाथी, जेठमल और सोमजी मुख्य थे। उनमे हाथीशाहने तो रायवन्दी छोडवा विरुद प्राप्त किया था। उनके सुपुत्र पनजी भी सुयशके पात्र थे। मूलजी, सघजी पुत्र वीरजी एव परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था। आचार्य श्रीकी आज्ञामे परीख चन्द्रभाण, लालू

*समयसुन्दरजी कृत अष्टकमें आपके आज्ञानुयायिओंकी सूची मे इनके अतिरिक्त भटनेर, मेवाड़, जोधपुर, नागौर, बीरमपुर, साचोर, किरहोर, सिद्धपुर, महाजन, रिणी, सागानेर, मालपुर, सरसा, धींगोटक, मरुच, राधनपुर वाराणपुर आदिके सघोंके भी नाम भी आते हैं।

अमरसी शाह, मंत्री कचरमल्ल, परीख अखा, चाछड़ा देवकर्ण, शाह गुणराजके पुत्र रायचन्द गुलालचन्द, इस प्रकार राजनगरका प्रशंसनीय संघ था और धर्मकृत्य करनेमें खंभातके भण्डशाली वधुका पुत्र ऋषभदास भी उल्लेखनीय था।

हर्षनन्दनके गीतानुसार मुकरबखान (नबाब) भी आपको सन्मान देता था। इस प्रकार आचार्य श्रीका परिवार उदयवन्त था, गीतार्थ शिष्योंको आचार्यश्रीने यथायोग्य वाचक उपाध्यायादि पद प्रदान किये थे और अपने पदपर स्वहस्तसे अहमदावादमें जिनधर्मसूरिजीको (प्रथम पछेवड़ी ओढ़ाकर) स्थापन किया। उस समय भणशाली वधूकी भार्या विमलादे, भणशाली सधुआकी पत्नी सहिजलदे (जिसने पूर्व भी शत्रुंजय संघ निकाला और बहुतसे धर्मकृत्य किये थे) और श्रा० देवकीने पदमहोत्सव बड़े समारोहसे किया।

पद स्थापनाके अनन्तर जिनसागरसूरिके रोगोत्पति होनेके कारण आपने वैशाख शुक्ला ३ को शिष्यादिको गच्छकी शिखामण दे, गच्छ भार छोड़ा। वैशाख सुदी ८ को अनशन उच्चारण किया। उस समय आपके पास उपाध्याय राजसोम, राजसार, सुमतिगणि, दयाकुशल वाचक, धर्ममंदिर, समयनिधान, ज्ञानधर्म, सुमतिवल्लभ आदि थे। सं०१७१६ जेष्ठ कृष्णा ३ शुक्रवारको आप स्वर्ग सिधारे और हाथीशाहने अग्नि संस्कारादि अन्त-क्रिया धूमसे की। इसके पश्चात् संघने एकत्र होकर गायें, पाड़े, बकरीयें आदि जीवोंकी २००) रुपये खर्चा कर रक्षा की और शान्ति जिनालयमें देववन्दन कर शोकका परित्याग किया।

पदाधिकारी) थे।* उनमसे मुख्य श्रावकोके धर्मकृत्य इस प्रकार है —

करममी शाह संवत्सरीको महम्मदी (मुद्रा) देते और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको संघमें श्रीफलकी प्रभावना किया करते थे। लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पूठियेके उपर के खण्डकी पीटणीको समराइ (जीर्णोद्धारित की) और उसकी भार्या कपूरदेन जो कि उग्रसनकी माता थी, धर्मकार्योंमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया।

शाह शान्तिदासने भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्गके वलिये दिये थे एवं ७॥ हजार रुपयोका खर्च कर सुयश प्राप्त किया था। उनकी माता मानबाइने उपाश्रयके १ खण्डकी पीटणी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आषाढ चतुर्मासीके पोषधोप वासो श्रावकोको पोषण करनेका वचन दिया था।

शाहमनजोर दीत्रमान कुटुम्बमें शाह उदयकरण, हाथी, जठमल और सोमजी मुख्य थे। उनमें हाथीशाहने तो रायनन्दी छोडका विरुद प्राप्त किया था। उनके सुपुत्र पनजी भी सुयशके पात्र थे। मूलजी, संघजी पुत्र वीरजी एवं परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था। आचार्य श्रीकी आज्ञासे परीख चन्द्रभाण, लालू

---

*समयसुन्दरजी कृत अष्टकमें आपके आज्ञानुयायिओंकी सूची मे इनके अतिरिक्त मटनेर, मेवाड़ जोधपुर, नागौर, बीरमपुर साचोर, किर होर सिद्धपुर, महाजन, रिणी सागानेर, मालपुर, सरसा धींगोटक महव, राधनपुर वाराणपुर आदिके संघोंके भी नाम भी आते हैं।

सूरिजीके पट्टधर जिनउदय-जिनहेम-जिनसिद्धसूरिके चंद्रसूरि अभी विद्यमान हैं। विशेष ज्ञातव्य देखें :— पट्टावलीसंग्रह)।

रंगविजयशाखा

जिनरंगसूरि

(पृ० २३१-३३)

जिनराजसूरि (द्वि०) के आप शिष्य थे। श्रीमाली, सिन्धूड़ सांकरसिंहकी भार्या सिन्दूरदेकी कुक्षिसे आपका जन्म था। सं० १६७८ फाल्गुन कृष्णा ७ को जैसलमेरमें आपने दीक्षा ली थी, दीक्षितावस्थाका नाम रंगविजय रखा गया। श्रीजिन-सूरिजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। ज्ञानकुशलकृत गीत जिनराजसूरि गीत नं० ६ में आपको युवराज पदसे संबोधन किया गया है जोकि महत्वका है।

कमलरत्नके गीतानुसार पातिशाह (शाहजहां !) ने आपकी ... की थी और ७ सूबोंमें (इनका) वचन प्रमाण करनेका ... दिया था। उसके पाटवीपुत्र दारासको सुलताणने आपको ... न' पदका निसाण दिया था। सिन्धुड़ नेमीदास-पंचायणने ... (शाही निसाणके साथ !) बड़े समारोहसे किया, सर्व ... को नालेरकी प्रभावना दी गई। सं० १७१० मालपुरेमें ... य 'युगप्रधान' पद-स्थापन हुआ था।

... अनेकों स्तवनादि उपलब्ध हैं। उनमेंसे कई ... में) यतिरामपालजीने प्रकाशित किये हैं।

आपके रचित कृतियाम १—सौभाग्यपंचमी चौ०, २—नवतत्वबाला० (श्राविका कनकादेवीके लिये रचित श्रीपूज्यजी सं० नं० ४११), ३—स्तुतियां आदि मुख्य हैं। आपके लि० एक प्रति अजीमगज भंडारमें है।

जिनरंगसूरिजीके पट्टधर आचार्योंकी नामावलीका क्रम इस प्रकार है —जिनरंगसूरि जिनचंद्रसूरि जिनविमलसूरि जिनललितसूरि जिनअक्षयसूरि जिनचंद्रसूरि–जिननन्दिवर्द्धनसूरि जिनजयशेखरसूरि जिनकल्याणसूरि जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनरत्नसूरि सं० १९९० चै० ब० १५ को लखनऊमें स्वर्ग सिधारे। इस शाखाकी गद्दी लखनऊमें है।

मंडोवरा शाखा

जिनमहेन्द्रसूरि

(पृ ३०२ से ३०४)

शाह रूपनाथकी पत्नी सुन्दरा देवीकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था श्रीजिनहर्षसूरिजीके आप पट्टधर थे। गौतम कवि राजकरणने पूज्यश्रीके मरुदेश पधारने पर जो हर्ष हुआ और प्रवर्द्धमानकी भक्ति की गई उसका सुन्दर चित्र अंकित किया है। गहुली नं० १में उदयपुर नरेशने आपको वहां पधारनेके लिये विनती स्वरूप परवाना भेजने और मेड़ते, अमरगढ़, बीकानेर जैसलमेर सबकी भी विज्ञप्ति आनेका सूचित किया है। एवं कविने अपनी ओरसे एक बार जोधपुर पधारनेकी विनती की है।

आपके चरित्रके विषयमें विशेष विचार फिर कभी करेंगे। आपके पट्टधर जिनमुक्तिसूरिजीके पट्टधर जिनचंद्रसूरिजी अभी जयपुरमें विद्यमान हैं। उनके पट्टधर युवराज धरणेन्द्रसूरि विचरते हैं।

शिवचूला गणिनी

(पृ० ३३६)

पोरवाड़ गेहाकी पत्नी विल्हणदेकी कुक्षिसे जिनकीर्त्तिसूरि उत्पन्न हुए, उनकी बहिन प्रवर्तिनी राजलक्ष्मी थी।

सं० १४६३ वैशाख कृष्णा १४ को मेवाड़के देवलवाड़ेमें शिवचूला साध्वीको महत्तरा पद दिया गया, उस समय महादेव संघवीने महोत्सव किया, सोमसुन्दरसूरिने वासक्षेप दिया। रत्नशेखरको वाचक पद दिया गया। और भी पन्यास गणीश स्थापित किए एवं दीक्षा महोत्सव हुए। याचकोंको दान दिया गया, पताकाओंसे नगर सजाया गया और वाजिन्त्र बजने लगे।

श्रीविजयसिंहसूरि

(पृ० ३४१ से ३६४)

कवि गुणविजयने सर्व प्रथम सिरोही मण्डण आदिनाथ, ओसवालोंके जिनालयमें श्रीहीरविजयसूरि प्रतिष्ठित श्रीअजितनाथ, शिवपुरीके स्वामी शान्तिनाथ, जीराउला तीर्थपति पार्श्वनाथ, बंभणवाड़ व वीरवाड़के मण्डन श्रीमहावीर एवं सरस्वती और गुरु श्रीकमलविजयके चरणोंमें नमस्कार करके श्रीहीरविजयसूरिके पट्टधर जेसिंघजी (विजयसेनसूरि) के पट्टाधीश विजयदेवसूरिके शिष्य विजयसिंहसूरिके विजयप्रकाश रासकी रचना प्रारम्भकी है, जिन्हें विजयदेवसूरिने अपने पट्टधर स्थापित किया था।

श्रीआदिनाथके पुत्र मरुदेवने बसाया हुआ मरु नामक देश है जहां ईति, भीति, अनीति, चोरी-चकारी और दुष्कालोंका नामो-निशान भी नहीं है, बड़े-बड़े व्यापारी निवास करते हैं और वेरोक-टोक मनचाहा मोज करते हैं। राजा लोग भी धर्मिष्ठ हैं, परमेश्वर की पूजा करते हैं, जीवोंका "अमारि" नियम पलाते हैं एवं शिकार भी नहीं खेलते। यहांके सुभट शूर-वीर, लम्बी मूंछोंवाले हैं उनके हाथमें कृपाणी चमकती है, व्यापारी प्रसन्न वदन रहते हैं और घर-घरमें सुभिक्ष सुकाल है।

जिस प्रकार मारवाड़ मोटा देश है वैसे यहांके लोग भी लम्बे हैं, निवासी भद्र प्रकृतिके हैं मनमें रोष नहीं रखते, कमरमें कटारी बाधते हैं। वणिक लोग भी जबरे योद्धा हैं हथियार धारण किये रहते हैं। रणभूमिमें पैर पीछा नहीं फेरते स्वधर्मियोंको धर्ममें स्थिर करते हैं। निष्कपट वृद्धाएं भी लम्बा घूंघट रखती हैं, सादगी जीवन और रसोईमें रावकी प्रधानता है, विधवाएं भी हाथमें चूड़ियां रखती हैं। वाहनमें ऊंटकी प्रधानता है, पथिक लोग जहां थकते हैं वहीं विश्राम लेते हैं परन्तु चोरीका भय नहीं है। शत्रुओंसे अभेद्य मार-वाड़के ये ६ कोट हैं —१ मण्डोवर (जोधपुर) २ आबू ३ जालोर ४ वाहड़मेर ५ पारकर ६ जैसलमेर ७ कोटड़ा ८ अजमेर ९ पुष्कर या फलौदी।

धन्य है मंडोवर देश जहां मंडोवरा पार्श्वनाथ और फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ है, कवि कहता है कि उनके दर्शनोंसे मैं सफल और सनाथ हो गया।

मरु मंडलमें यशस्वी मेड़ता नगर है इसकी उत्पत्तिके लिये यह लोककथा प्रसिद्ध है कि जैसे जैनशासनमें भरतादि चक्रवर्ती हुए वैसे शिवशासनमें मान्धाता नामक प्रथम चक्री हुआ उसकी माताका देहान्त हो जानेसे वह इन्द्रकी देखरेखमें बड़ा होकर महाप्रतापी चक्रवर्ती हुआ उसका आयुष्य कोड़ा कोड़ी वर्षोंका था। उसके लिये कृत युगमें इन्द्रने राज्य स्थापना करके मेड़ता नगर बसाया।

मेड़ता नगर अति समृद्धिशाली था, सरोवरादिका वर्णन कविने रासमें अच्छा किया है। निकटवर्ती फलवद्धि पार्श्वनाथका तीर्थ महामहिमाशाली है, पोष दसमीको मेलेमें जहां एक लाख जनता एकत्र होती है—दूर-दूर देशोंसे यात्री आते हैं।

उस मेड़तेमें ओसवाल जातिके चोरड़िया गोत्रीय शाह मांडण का पुत्र नथमल निवास करता था, उसकी पत्नीका नाम नायकदे था। उसके घरमें लक्ष्मीका निवास था सामग्री भरपूर थी, (उसकी) दादी फूलां धर्म कार्योंमें धनका अच्छा सदुपयोग किया करती थी। नथमलके १ जेसो २ केसो ३ कर्मचन्द ४ कपूरचन्द और ५ पंचायण नामक पांच पुत्र थे, पांचो पुत्रोंमें तृतीय कर्मचन्द हमारे चरित्र नायक हैं उनका जन्म वि० सं० १६४४ (शक १५०६) फाल्गुन शुक्ला २ रविवारको उत्तरभद्रपदाके चतुर्थ चरण और राजयोगमें हुआ था।

एकबार रात्रिमें सेठ नथमल सुख शय्यापर सोये हुए थे, जागृत होकर संसारके सुखोंके मिलनेका कारण विचार करते हुए वैराग्य वासित होकर सुगुरुका संयोग प्राप्त होनेपर कृत पापोंकी-आलोयणा लेनेका विचार किया। दैवयोगसे तपा-गच्छके श्रीकमलविजयजी म०

५५ ठाणोंसे विचरते हुए मेडना पधारे, उनके समक्ष श्रेष्ठिने आकर आलोयणा लेनेकी इच्छा प्रगट करनेपर मुनिवरने गच्छनायकसे आलोयणा लेनेकी राय दी परन्तु आखिर नथमलजीका अत्याग्रह देखकर २१ अष्टम तप और बहुतसे बेले और उपवासोंकी आलोयणा दी।

आलोयणाके अनन्तर विशेष वैराग्य वासित होकर अपनी स्त्री नायकदे और भ्राता सुरताणको भी महाव्रत लेनेके लिए उपदेश देकर, दीक्षाका परामर्श किया, सबने सादर कर्मचन्द आदिपुत्रोंने भी स्वीकृति दी। सेठने गच्छनायकके मिलनेपर दीक्षा लेना निश्चित किया।

इसी अवसरपर लाहोरमें दो चातुर्मास करके विजयसेनसूरि मेडता पधारे। नाथू शाह पांचो पुत्रोंके साथ गुरुश्रीको वन्दनार्थ आया। शुभ लक्षणवाले कमचन्दको देखकर गच्छनायकने सोचा कि अगर यह चरित्र ले, तो बडा विचक्षण होगा। गुरुश्रीने नाथू शाहसे कहा कि अभी हम हीरविजयसूरिजीके दर्शनार्थ जा रहे हैं तुम यथावसर कर्मचन्द्रादिके साथ आ जाना, ऐसा कहकर मेडतासे सादडी, पर्युषणाके पारणेपर राणकपुर, वरकाणा तीर्थकी यात्रा करते हुए जालोर पधारे वहां कमलविजयजीने उन्हें वन्दना की, वीजोवाका संघ भी आया। वहांसे विहारकर श्री विजयसेनसूरि सिरोही होकर पाटण पधारे और हीरविजयसूरिजीका निर्वाण हुआ जानकर वहीं ठहरे।

इधर मेडतमें कर्मचन्द आदि दीक्षाकी तैयारियां करने लगे, बहुतसे धर्मकृत्योंको करते हुए जेसा और पचायणको गृह भार संभलाकर १ नाथू २ सुरताण ३ कर्मचन्द ४ केसा ५ कपूरचन्द

(६ नायकदे) ६ व्यक्तियोंने सं० १६५२ माघ (शुक्ला) २ को पाटणमें विजयसेनसूरिके पास दीक्षा ग्रहण की। उनके दीक्षाके नाम इस प्रकार रखे गए—नाथू = नेमविजय, सुरताण = सूरविजय, कर्मचन्द्र = कनकविजय, केशा = कीर्तिविजय, कपूरचन्द्र = कुंवर-विजय, इनमें कनकविजयको सुयोग्य समझकर विजयसेनसूरिने स्वशिष्य विजयदेवसूरिको सौंप दिया, उन्होंने इनको विद्याध्ययन कराया, श्रीविजयसेनसूरिने अहमदाबादमें सं० १६७० में पंडितपद से विभूषित किया। वीसा और वदाने महोत्सव किया। खंभातमें श्रीविजयसेनसूरिका स्वर्गवास हो जानेसे उनके पट्टधर विजयदेव-सूरि हुए, उन्होंने सं० १६७३ में पाटणमें चौमासा किया, पोष वदी ६ को लाली श्राविकाने इनके हाथसे प्रतिष्ठा करवाई, इसी समय कनकविजयको उपाध्याय पद भी दिया गया।

सम्राट जहांगीर विजयदेवसूरिसे माण्डवगढ़में मिले और प्रसन्न होकर "महातपा" पद दिया। विजयदेवसूरिने गुर्जर देशमें विहार करते हुए श्री शत्रुंजयकी यात्रा की, उसके पश्चात् दो चौ-मासे दीवमें करके गिरनारकी यात्रा कर नवानगर पधारे, वहां संघने २०००) जामी व्ययकर साम्हेला किया। तत्पश्चात् उन्होंने पुनः शत्रुंजयकी यात्राकर खंभात चातुर्मास किया, वहां तीन प्रतिष्ठाओंमें चौदह हजार खर्च हुए। वहांसे माघ शुक्ला ६ को सावली पधारे। ३ मास तक मौन रहे, वहां सोनी रतनजीने अमारि पालन कराई, उस समय उ० कनकविजयजी ही व्याख्यान देते थे। गुरुने बहुतसे छट्ठ अट्ठमादि किए और वे आंबिल करके पूर्वदिशिकी ओर ध्यान

किया करते थे। सूरि मन्त्रके आराधनसे वैशाखमें स्वप्नमें देवने कनकविजयजीको पद स्थापनका निर्देश किया, उसके बाद पूज्य साचली और ईडर पधारे। वहां दो चौमासे किये, प्रासाद प्रतिष्ठा हुई। उसके बाद राजनगर चातुर्मास करके एक चातुर्मास बीबीपुरमें किया। चातुर्मासके अनन्तर सीरोहीके पजावत तेजपाल और राय अखैराजके पोरवाड़-मन्त्री तेजपालने गुरु वन्दना की, गुरुश्री पुन श्री सिद्धाचलजीकी यात्राकर कमीपुर पधारे। तेजपालने पारस्परिक झगडा मिटाकर मेल कर लेनेकी विज्ञप्ति की उन्होने भी स्वीकार कर समझौतेका पत्र लिखा, आचार्य विजयानन्दसूरि उ० नन्दि-विजय वा० धनविजय, धर्मविजय आदिने विजयदेवसूरिकी पुन आज्ञा शिरोधार्य की, तेजपाल पूज्यश्रीको सिरोही पधारनेकी विज्ञप्तिकर वापिस आ गया। पूज्यश्री राजनगरसे विहारकर ईडर आये, वहा तपागच्छीय सघके आग्रहसे श्री उ० कनकविजयजीको वै० शु० ६ सोमवारको पुष्य नक्षत्रके दिन सूरिपद देकर स्वपट्ट पर स्थापन किया। उस समय ईडर सघ मुख्य सोनपाल, सोमचन्द्र, सूरजीके पुत्र सार्दूल, सहसमल, सुन्दर, महजू, सोमा, धनजी मन-जी, इन्दुजी और अमीचद, राजनगरके सघवी कमलसिंह, अहमद-पुरके पारख बलाके पुत्र चापसी, पारख देवजी, सूरजी, थानसिंह, रायसिंह, सा०भामा, तोला, चतुर्भुज, सिंह, जागा, जसु, जेठा—जो गुरुश्रीके भाई थे, कोठारी वच्छराज, रहीआ, कर्मसिंह, धर्मसी, तेजपाल, अखयराज मंत्री समरथ म० लालू सीमजी, भामा, भोजा, कड़िया मालजी भाणजी लखा चौ[illegible] गाधी वीरजी, सघजी

सा० वीरजी, देवकरण, पारख जस्सू, भाणजी, सूरजी, तेजपाल इत्यादि ईडरका संघ सम्मिलित हुआ इसी प्रकार थ्रावड़ और अहिमनगरका संघ एवं सावलीका संघ पदमसी, चांदसी आदि एकत्र हुए, सा० नाकर पुत्र सहजूने चर्तुविध संघके साथ पद प्रदानके लिये तपागच्छ नायकको एवं उ० धर्मविजय वा० लावण्यविजय वा० चारित्रविजय पं० कुशलविजय इन चारोंको बुलाया गया। पदस्थापनाके अनन्तर कनकविजयका नाम विजयसिंहसूरि रखा गया, पं० कीर्तिविजय, लावण्यविजयको वाचकपद और अन्य ८ साधुओंको पंडित पद दिया गया। इस उत्सवमें सहजूने पांच हजार महम्मदी व्यय किये, ईडर नरेश कल्याणमल प्रसन्न हुए। ज्येष्ठ मासमें विम्ब प्रतिष्ठा हुई, शाह रइयाने उत्सव किया, दूसरे पक्षमें अमराउतने सुयश लिया, पारख देवजीके घर पूज्यश्रीने प्रतिष्ठा की, इस प्रकार सं० १६८१में वड़े ही आनन्दोत्सव हुए। राय कल्याणने दोनों आचार्योंको ईडरमें चौमासेके लिए रखा।

सीरोहीके शाह तेजपालकी विज्ञप्तिसे चैत्र मासमें सूरिजी आबू पधारे, सं० मेहाजल दोसी, जोधा सन्मुख आए। आबूकी यात्राकी। बंभणवाड़के वीर प्रभुकी यात्रा कर चातुर्मासार्थ सीरोही पधारे। सा० तेजपालादिने वहुतसे सुकृत किये। इसी समय विजयादशमी सं० १६८२ को यह विजयप्रकाश रास कमलविजयके शिष्य विद्या-विजयके शिष्य गुणविजयने रचा।

ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १ पृ० २७ (सज्झाय नं० ३४ लालकुशलकृत) में कई वातोंका अन्तर व विशेषताएं हैं।

१ पुत्रोंके नाममें ५ वें पचायणके स्थानमें प्रथम जेठाका नाम है।

२ पच्चहीं श्रावणियोंके दीक्षा लेनेका लिखा है, सुरताण-सूरविजय का उल्लेख नहीं है। नायकदेका दीक्षा नाम नयश्री लिखा है, एवं दीक्षा सं० १६५८ लिखा है।

विशेष—सं० १६८४ पौष शुक्ल ६ बुधवार जालोरके मंत्री जयमल्लने गुणानुभावका नन्दिमहोत्सव कराया, उस समय जससागर के शिष्य जयसागरको और विजयसिंहसूरिके भाई कीर्तिविजयको वाचक पद दिया। आचार्य विजयसिंहसूरिने राणा जगतसिंहको प्रतिबोध दिया, सडतम आगरा निवासी बादशाहके मुख्य व्यवहारी हीराचन्दकी मायो मलीने इनके हाथसे प्रतिष्ठा कराई, इसी प्रकार किसनगढ़के राठौर रूपसिंहके महामन्त्री रायसिंहके आग्रहसे चातुर्मास कर प्रतिष्ठा की। सं० १७०९ असाढ सुदि २ अहमदाबादके नवानपुरमें उनका स्वर्गवास हुआ।

संक्षिप्त कविपरिचय

अक्षरानुक्रमसे कवियोंके नामोंकी सूची

अभयतिलक (३०) जिनपतिसूरि पट्टधर जिनेश्वरसूरिके शिष्य थे, आपके रचित १ सं० १३१२ पालणपुरमें हेमचंद्रसूरिकृत द्व्याश्रय (२० सर्ग) काव्यवृत्ति २ न्यायालङ्कार टिप्पन (पंचप्रस्थ न्यायतर्क व्याख्या) ३ वीररास (सं० १३१७) विशेष परिचय देखें :—जैनयुग वर्ष २ पृ० १५६ ला० भ० का लेख।

१ अभैविलास (४१३) श्रीपालचरित्र कर्ता जयकीर्त्तिजीके शिष्य प्रतापसौभाग्यजीके आप शिष्य थे। आपकी परम्परामें अभी कृपाचंद्रसूरि विद्यमान हैं।

२ आनन्द (१७७)।

३ आनन्दविजय (२०६)।

४ आलम (३३८) कविवर समयसुन्दरकी परम्परामें आसकरणजीके शिष्य थे, आप अच्छे कवि थे, आपके रचित १ मौन एकादशी चौ० (१८१४ मकसूदावाद) २ सम्यक्त्व कौमुदी चौ० ३ जीवविचारस्तवन आदि उपलब्ध हैं।

५ कनक (१३४) आप सम्भवतः उ० क्षेमराजजीके शिष्य थे, आपका पूरा नाम 'कनकतिलक' होगा।

६ कल्याणकमल (१००)—देखें .—युगप्रधान जिनचन्दसूरि पृ० १५७।

७ कल्याणचन्द्र (५२) कीर्तिरत्नसूरिजीके शिष्य थे। सं० १५१७मे सूरिजीसे आपने आचारागकी वाचना ली जिसकी प्रति जे० भं० मे (न० २) अब भी विद्यमान हैं।

८ कल्याणहर्ष (२४७)

९ कविदास (१७४)

१० कवीयण (२६३-२६२)।

११ कनकसिंह (२४३) शिवनिधान शिष्य, देखें यु० जि० सू० पृ० ३१३।

१२ कमलरत्न (२३३) देखें यु० जि० सू० पृ० ३१५।

१३ कमलहर्ष (२४०) श्रीजिनराजसूरि शिष्य मानविजयजी के आप शिष्य थे, आपके रचित .—१ पाडवरास (१७२८ आ० व० २ र० मेडता) २ धना चौ० (१७२५ आ० सु० ६ सोजत) ३ अंजना चौ० (१७३३ भा० सु० २) ४ रात्रि भोजन चौ० (१७५० मि० लूणकरणसर) ५ आदिनाथ चौढा० ६ दशवैकालिक सझाय इत्यादि उपलब्ध हैं।

१४ कनकधर्म (२६६)।

१५ कनकसोम (९०-१४४) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६४

१६ करमसी (२४७)

१७ कीर्तिवर्द्धन (३३३) जिनहर्ष (आद्यपक्षी) सूरिजीके शिष्य दयारत्न (कापरहेडारास कर्त्ता १६६५) के आप शिष्य थे, आपके रचित सदयवछसावलिंगा चौ० (१६९७ विजयदशमी) प्राप्त है।

१८ कुशलधीर (२०७) देखें युगप्रधान जिनचंद्रसूरि पृ० १६४।

१९ कुशललाभ (११७) „ „ „ „ १९६।

२० खड्गपति (१३८)

२१ खेमहंस (२१७) क्षेमकीर्ति (शाखाके आदि पुरुष) जीके शिष्य थे, आपकी रचित मेघदूत दीपिका उपलब्ध है। जयसोम, गुणविनय आपहीकी परम्परामें थे।

२२ खेमहर्ष (२४२-४३) आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं।

२३ गुणविजय (३६४) आपके रचित १ विजयप्रशस्ति काव्यके अन्तिम ५ सर्गमूल और समग्रग्रन्थपर टीका २ कल्प कल्पलता टीका ३ सातसौ वीस जिन स्त० आदि उपलब्ध हैं।

२४ गुणविनय (९३-९९-१००-१२५-१७२-२३०) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २००।

२५ गुणसेन (१३६) सागरचंद्रसूरि शाखाके वा० सुखनिधानजी के आप शिष्य थे आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं। आपके यशोलाभ नामक शिष्य थे जो अच्छे कवि थे।

२६ चारित्रनंदन (२९७)।

२७ चारित्रसिंह (२२५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९७।

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०८।

२९ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११-१२) आप कीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके अमरविमल शि० अमृत सुन्दरजीके शिष्य थे, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूनम व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं।

३१ जयनिधान (१४५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६।

३२ जयसोम (११८) देखें यु० ,, पृ० १९७।

३३ जल्ह (१३८)।

३४ जिनचन्द्रसूरि (४१८) उसी ग्रन्थमें राससार पृ० ९६६

३५ जिनसमुद्रसूरि (३१५-१६) देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० ७५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३०) बगड गुणप्रभसूरि शि०

३७ देवकमल (१३६) इनका नाम जइतपदवेलिमें आता है अत साधुकीर्तिजीके गुरु भ्राता होना सम्भव है।

३८ देवचंद (२६४)।

३९ देवीदास (१४७)।

४० धर्मकलश (१६)।

४१ धर्मकीर्ति (१८६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८३।

४२ धर्मसी (२५०-५२) देखें राजस्थान पत्र वर्ष २ अंक २ में प्र० मेरा लेख।

४३ नयरंग (२२६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९५।

४४ नेमिचंद भंडारी (३७२) षष्टीशतक कर्त्ता, जिनपति शिष्य जिनेश्वरसूरिके पिता।

४५ पुण्यसागर (५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८८।

४६ पुण्य (३३७) यथासम्भव आप समयसुन्दरजीके परम्परामें (कविवर विनयचंद्रके प्रगुरु) होंगे और पूरा नाम (पुण्यचंद शि०) पुण्यविलास होगा।

४७ पद्मराज (६७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६०।

४८ पद्ममन्दिर (५६) आपके रचित १ प्रवचनसारोद्धार बाला० (१५६३) उपलब्ध है।

४६ पहराज (४०)

५० पल्ह (३६८) इनका नामोल्लेख चर्चरी टीका (अपभ्रंश काव्यत्रयी पृ० १२) में आता है, आप दिगम्बर भक्त और (जिन दतसूरिके) अभिनवप्रबुद्ध श्राद्ध थे, लिखा है।

५१ भत्तउ (६)।

५२ भक्तिलाभ (५४) उ० जयसागरजीके शि० रत्नचंद्रजीके आप सुशिष्य थे, आपके रचित १ कल्पांतरवाच्य २ लघुजातक कारिका-टीका (१५७१ विक्रमपुर) ३ जीरावला पार्श्वस्त० संस्कृत स्तोत्र प० ३, ४ सीमंधरस्तवनादि उपलब्ध हैं। आपके शि० चारुचंद्रजी कृत १ उत्तम कुमारचरित्र २ रतिसार चौ० ३ हरिबल चौ० (१५८१ आ० सु० ३) ४ नंदनमणियारसन्धि (१५८७) आदि उपलब्ध हैं आपकी परम्परामें श्रीवल्लभोपाध्याय हो गये हैं, देखें यु० चरित्र पृ० २०३।

५३ महिमा समुद्र (४३१-३२) वेगड़शाखा

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें यु० जिनचद्रसूरि पृ० २०८।

२६ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११-१२) आप कीर्तिरत्नसूरि शाखाके अमरविमल शि० अमृत सुन्दरजीके शिष्य थ, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूनम व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं।

३१ जयनिधान (१४५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६।

३२ जयसोम (११८) देखें यु० „ पृ० १६७।

३३ जल्ह (१३८)।

३४ जिनचन्द्रसूरि (४१८) इसी ग्रन्थमे रासमार पृ० २६६

३५ जिनसमुद्रसूरि(३१५ १६) देखें इसी ग्रन्थमे रासमार पृ०७५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३०) वगड गुणप्रभसूरि शि०

३७ देवकमल (१३६) इनका नाम जइतपदवेलिमे आता है अत साधुकीर्तिजीके गुर-भ्राता होना सम्भव है।

३८ देवचद (२६४)।

३६ देवीदास (१४७)।

४० धर्मकलश (१६)।

४१ धर्मकीर्ति (१८६) देखे यु० जिनचद्रसूरि पृ० १८३।

४२ धर्मसी (२५०-५२) देख राजस्थान पत्र वर्ष २ अक २ मे पृ० मेरा लेख।

४३ नयरग (२२६) देखें यु० जिनचद्रसूरि पृ० १६५।

६९ रूपहर्ष (२४१) आप राजविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८-१२१-१२२)देखें युण्जिनचन्द्रसूरि पृ० २०९

७१ लब्धिशेखर (६८)

७२ ललितकीर्त्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लाधशाह (३२१) कडुआमती (कडुवा-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-रघुजी थोभणशि०) थे। आपके रचित, १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु सोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबाला० (१८०७ मि० सु० ५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२९५) आपके रचित १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ वीशस्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिभोजन सज्झाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध है।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें है।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (२५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०७

८० श्रीसुन्दर (१७१) „ „ पृ० १७२

८१ समयप्रमोद (८६-९६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १९२

८२ समयसुन्दर (८८-१०६-७-८-६-२६-२७-२८-२६-३१-

५४ महिमहर्ष (४३२) बेगड़ शाखा, अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ मण्डराम (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६० रयणसाह (७)

६१ रत्ननिधान (१०३-१२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ रामकरण (३०३-३०४)

६३ राजलब्धी (३४०)

६४ राजलाभ (२५५-२५७) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिनराजसूरि, देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० २२

६६ राजसुन्दर (३७०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिनसिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४६) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन शि० जयकीर्त्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकआराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ श्रा० सु० ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि० जसवीर पठ०) ३ इरियावहियं मिथ्यादुष्कृतस्तवबाला० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध हैं।

६८ राजहंस (२३१)

६९ रूपहर्ष (२४१) आप राजविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८-१२१-१२२)देखें यु०जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७१ लब्धिशेखर (६८)

७२ ललितकीर्त्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लाधशाह (३२१) कडुआमती (कडुवा-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लघुजी थोभणशि०) थे। आपके रचित, १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु सोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबाला० (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त हैं।

७४ वसतो (२९५) आपके रचित् १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ वीशस्थानक स्त० गा० १९, ३ रात्रिभोजन सज्झाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध हैं।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें हैं।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (२५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०७

८० श्रीसुन्दर (१७१) „ „ पृ० १७२

८१ समयप्रमोद (८६-९६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२

८२ समयसुन्दर (८८-१०६-७-८-९-२६-२७-२८-२९-३१-

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

२००-२२७) देखें उपरोक्त पृ० १६७ और रासमार पृ० ४५।

८३ समयहर्ष (२५४)

८४ सहजकीर्ति (१७५-७६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

८५ सारमूर्त्ति (२३)

८६ साधुकीर्त्ति(६२-६७-४०४)देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६२

८७ सुगररत्न (१४६)

८८ सुमतिकल्लोल (६४) „ पृ० १०५

८९ सुमतिवल्लभ (१६८)

९० सुमतिविजय (१७७)

९१ सुमति विमल (२५०)

९२ सुमतिरग (४१०-४२१) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३१५

९३ विवेकसिद्धि (४२२)

९४ सोमकुंजर (४८) आप उ० जयसागरजीके विद्वान शिष्य थे। विज्ञप्तित्रिवेणी पृ० ६१ से ६३) में आपके रचित कई अलंकारिक पद्य भी पाये जाते हैं।

९५ सोममूर्त्ति (३८७) जिनपतिसूरि शि० जिनेश्वरसूरिजीके आप सुशिष्य थे और उ० अभयतिलकजीके आप सतीर्थ थे। देखें जैनयुग वर्ष ? पृ० १६४।

९६ हर्षकुल (५७) महो० पुण्यसागरजीके शिष्य थे, उल्लेख यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६०

९७ हर्षचन्द (२४६) रूपहर्ष शि०, आपके रचित अन्य एक गहुली भी समझमे है।

९८ हर्षनन्दन(१२४-३२-३३-१४६-२०१-२०२)देखें यु०पृ० १५१

९९ हर्षवल्लभ (४१७) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८५

१०० सेवकसुन्दर (४२०)

१०१ हेमसिद्धि (२११-१३)

१०२ क्षमाकल्याण (२६६-३०६-७) देखें इसी ग्रन्थमें रासस़ार पृ० ६४

१०३ ज्ञानकलश (३२६)

१०४ ज्ञानकुशल (२३२)

१०५ ज्ञानहर्ष (३३५-३७८) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३०५

कवियोंके नामके आगे प्रस्तुत संग्रह (मूल) के पृष्ठोंकी संख्या दी गई है। कइ कवि एकही नामसे एकही समयमें कइ हो गये हैं अतः संदिग्ध परिचय देना उचित नहीं ज्ञात हुआ ।

॥ अर्हम् ॥

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

॥ श्री गुरु गुण षट्पद ॥

जिणवल्लह-पमुहाणं, सुगुरूणं जो पढइ वर-कप्पं ।
मंगल-दीवंमि कए, सो पावइ मंगलं विमलं ॥१॥

इग्यारह सइ सट्ठसत्त समहिय संवछरि ।
आसाढइ सिय छट्ठि चित्तकोटंमि पवरपुरि ।
महावीर जिणभवणिट्ठिय संठिउ जिणवल्लह ।
जिणि उज्जोयउ चंदु गछु पंडिय जिणवल्लह ।
गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध धर ।
परिहरवि आवि विहि पयड़ कइ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि ॥१॥

इग्यारह गुणहत्तरइ किसण वैसाख छट्ठि दिणि ।
चित्तउड़ह वर नयरि संघु मिलियउ आणंदिणि ।
वद्धमाण जिणभवणि भयउ तहि घणउ महोछवु ।
देवभदि संठियउ सूरि जिणदत्त सुनिछवु ।
आयस पुणति सूरि भिछ, जिम झाण नाण संतुट्ठ मण ।
जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सक्कइं तुम्ह गुण ॥ २ ॥

अज्जवि जसु जस पसरु महि छहखंड धरत्तिहि ।
अज्जवि जसु गुण नियरु थुणहि पंडिय बहु भत्तिहि ।
अज्जवि सुमरिज्जंतु विग्वंतु अवहरइ पवित्तण ।
नाम ग्रहणि कुगंति जसु अज्जवि भवियण दिण ।

सूरिमंतु सिरि सव्वएवसूरहि जसु दिनउ ।

जालउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव (की) नउ ॥

कंसाल ताल झलरि पडह, वेण वंसु रलियामणउ ।

सुपढंति भट्ट सुंमहि गहिर, जय जय सद्द सुहावणउ ॥७॥

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंदु जु जिणवइ ।

तुय सुव्वइ आसीस दिंति जिणेसरसूरि मुणिवइ ।

उयहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु ।

ताम पयासिउ सूरि धंमु जुगपवरु जिणेसरु ॥

विहि संघु स नंदउ दिणगदिणु, वीर तित्थु थिरु होउ धर ।

पूजन्ति मणोरह सयल तहि, कव्वड्ठ पढंति नारि नर ॥ ८ ॥

[इति षटपदम्]

॥श्री जिणदत्तसूरि स्तुति॥

सिरि सुयदेवि पसाउ करे, गुरु श्रीजिणदत्त सूरि।
वन्निसु खरतर गण गयणि, सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥
संवत इग्यारह वरसि, बत्तीसइ जसु जम्म।
वाछिग मंत्री पिता जणणि, वाह (ड) देवि सुरम्म ॥ २ ॥
इगताल्इ जिणवय गहिय, गुणहुत्तरइ जसु पाट।
वटसाराइ वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुर थाट ॥ ३ ॥
अंबड मावय कर लिहिय, सोवन अखर अंगि।
जुग पहाण जगि पयटियउ ए, सिरि सोहम परिविंब ॥४॥
जिण चोसठि जोगिणी जिणिय, रिखतणाउ बावन्न।
डाइणि साइणि भिमूसीय, पहुवइ नाम न अन्न ॥ ५ ॥
सूरि मंत्र वलि कर सहिय, साहिय जिण धरणिंद।
मावय सविय लख इग, पडिबोहिय जण वृन्द ॥ ६ ॥
अरि करि केसरी दुट्ठदल, चउविह देव निकाय।
आण न लोपि कोइ जगि, जसु पणमइ नरराय ॥ ७ ॥
संवत बारह इग्यार समइ, अजयमेरपुर ठाण।
इग्यारसि आसाढ सुदि, सग्गिपत्त सुह झाणि ॥ ८ ॥
श्री जिणवल्लह सूरि पाट, श्रीजिणदत्त मुणिंदु।
विग्घ हरण मङ्गलकरण, करउ पुण्य आणंदु ॥ ९ ॥

श्री पुण्यसागर कृत

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनदत्त सुरिन्दपय, श्रीजिनचन्द्र मुणिन्द ।
नय (?)र मणि मंडित भाल यस, कुसल कुमुद वणचंद॥१॥
संवत सिव सत्ताणवयं, सदट्ठमि सुदि जम्मु ।
रासल तात सुमातु जसु, देल्हण देवि सुधम्म ॥ २ ॥
संवत वार तिरोत्तरय, फागुण नवमि विशुद्ध ।
पंच महव्वय भरि धरिय, वालत्तणि पडिवुद्ध ॥ ३ ॥
बारह सइ पंचोतरइ ए, वैशाखह सुदि छट्ठि ।
थापिउ विक्कमपुर नयरि, जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥ ४ ॥
तेविसइ भाद्रव कसिणि, चवदसि सुह परिणामि ।
सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर, श्री जोयणिपुर ठामि ॥ ५ ॥
सुह गुरु पूजा जह करइ ए, नासय तासु किलेस ।
रोग सोग आरति टलइ ए, मिलइ लच्छि सुविशेष ॥६॥
नाम मंत्र जे मुख जपइ ए, मणु तणु सुद्धि तिसंझ ।
मनवंछित सवि तसु हुवइ, कज्जारंभ अवंझ ॥ ७ ॥
जासु सुजसु जगि झिगमिगै ए, चंदुज्जल निकलंक ।
प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ, हरइ डमर अरि संक ॥ ८ ॥
इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, संथिणिउ गुणि पुन्न ।
श्री "पुण्यसागर" वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न ॥ ९ ॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरि महाप्रभावीक अष्टकं संपूर्णम् ।
(गुलाबकुमारी लायब्रेरीके गुटका नं० १२५ से उद्धृत)

शाह रयण कृत
श्रीजिनपतिसूरि धवल गीतम्

वीर जिणेसर नमइ सुरनर, तस पह पणमिय पय कमले।
युगवर जिनपति सूरि गुण गाइसो, भत्तिभर हरसिहि मनिरमले ॥१॥
तिहुअण तारण सिव सुग्व कारण, वछिय पूरण कल्पतरो।
विग्घ तिमासण पाव पणासण दुरित तिमिर भर सहम करो ॥२॥
पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिवर, सम दम संयम सिरि तिलउ ए।
इणि कलिकालहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए॥३॥
अत्थि मरुमण्डले नयर विक्रमपुरे, जसोवर्द्धन जगि जाणिइ ए।
तासुघर गहिणी सूहव देविय, जासु बर पुत्त वखाणिइ ए ॥ ४ ॥
विक्र(म) संवच्छरे वार दहोत्तरे, चैत्र धुरि आठमि जो जाईयउ ए।
नयर नर नारि नय(वी)रग भरि गायो, जसोवरधनु वधावियउ ए॥५॥
तिणि सुह दिवसहि निय मणि रंगहि, उच्छव करिय नव नविय परे।
निरुपम "नरपति" नामु तसु किज्जए, क्रमि क्रमि वाधइ तात घरे॥६॥
बार अढार ए वीर जिणालए, फागुण बदि दसमिय परे।
वरीय संजम सिरीय भीमपल्लीपुरे, नन्दि वर ठविय जिणचंदसूरे ॥७॥
अह सयल सार सिद्धांत अवगाहए सजणमण नयण आणंदणउ ए।
नाण गुण चरण गुण पयासए, चउ विह संघ सोहामणउ ए ॥८॥

वार त्रेवीसए नयरि वव्वेरए, कातिय सुदी दिन तेरसीए।
श्री जिणचन्दसूरि पाटि संठाविउ, श्रीजयदेव सूरि आयरीए ॥९॥
गुरुय नामेण जिनपति सूरि उदयउ, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए।
विहरए सयल देसंमि गुण भरिउ,समइ सरोरह (? वर) हंसलउ ए॥१०॥
पेखि किरि रूव लावन्न गुण आयार, जण जण जंपए मनि धरी ए।
सिरि माल्हूय कुले कमल दिवायर, वादीय गय घड केसरी ए ॥११॥
पामीउ जेत्तु छतीस विवादिहि, जयसिह पहविय परपद (इ) ए।
वोहिय पुहविय पमुह नरिन्दह, जासु वयणि जिण आदर(इ)ए ॥१२॥
दीखिय वहु सीस पयट्ठिय वहु बिंव, थापिय रीति खरतर तणी ए।
जासु पय पणमए सासणा देवि, देवि जालंधरा रंजिवी ए ॥१३॥
अह मरुकोटहि नेमुचन्द निवसए,(गुरु)गुरु देखि मनु नवि गम(इ)ए।
जासु मनि निवसए खरउ जिण धम्मु, खरउ आचारि गुरु मनि गम (इ) ए ॥१४॥
तायणु सोपुरि(पुरे) नयरि गामागरे, गुरु र चि(वि?) रिय जोवइ अपारे
भमियउ वारह वरिस भण्डारिय, सुगुरु देखंतउ समय सारे ॥१५॥
अह अवर वासरे पट्टणे पुरवरे, श्रीयजिनपतिसूरि पेखि करे।
तउ मनि मानिय सयणजग आणिय, आदिरीयउ गुरु हरिस भरे।१६।
तासु अंगोल मुनियपय जोगि, जाणिय सयहत्थि दीखि करे।
तयण जिण सासण पभाव पयडंतउ, पहुतउ पाल्हणपुर नयरे ॥१७॥
सुललित वाणि वखाणुं करंतउ, भविय वोहंतउ विविह परे।
साह(?हू)सावय जण जस्स सेवा करइ, सेव सारइ सुर सुपरि परे॥१८॥
अन्ने दिगंतरे वार सतहोतरे, मास असाढि जिण अणसरी ए।
मन्न सुद्ध झाणहि सिय दसमी दिवसहि, पहुतउ सूरि अमरापुरी ए।१९
एहु श्री जिणपति सूरि गुरु जुगपवरु. साह "रयण" इम संथुणइ ए।
समरइ जे नर नारि निरंतर, तहा घर नवनिधि संपज(इ) ए ॥२०॥

कवि भत्तउ कृत
श्रीमज्जिनपतिसूरीणां गीतम्

वीर जिणेसर नमीउ सुरेसर, तस पय पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपतिसूरि गुण गाइस्यो, गुण गण गाइस्यो भत्ति रमले ।१।
तिहुअण तारण सिव सुह कारण, वंछिय पूरण कप्पतरो ।
विग्घ विणासण पाव पणासण, दुरित तिमिर न(?भ)र सहस करो ।२।
काम धेनोत्तम काम कुम्भोपम, पूरण जेम चिन्तामण ।
श्रीय जिण सासणि नव नव रंगिहि, अनुय प्रभाव प्रगटीयकरण ।३।
तिहुअण रंजण भव दुह भंजण, दमण नाण चारित्तजुत्तो ।
सकल जिणागम सोहग सुन्दर, अभिनवउ गोयम उदयवंतो ।४।
पुहवि प्रसिद्धउ सूरि सूरीसर, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए ।
कमल नयण मगल कुल कारण, गङ्गजल नासु जसु निरमलउ ए ।५।
इणि कलिकालिहिं अवर नवि सुणीइए, सिरि मालूय कुले सिर तिलउ ए
सोहम वंसिहि वयरह सारिहिं, जिणवइए सूरि महिमा निलउ ए ।६।
अवर वर वासुरि पुन्य भर भासुरे, मूल नक्षत्रि चउथइ जु सारो ।
थुणइ सुर नमइ नर चरण चूडामणि, जायउ पुनु नरवय कुमारो ।७।
नर वर नारिय घरि घरे गायउ, जमोसरद्धतु वधावीउ ए ।
नस धरणीय माणव मन हरणीय, उछव गरुअ करावीउ ए । ८ ।
देसि मुरमुण्डले नयरि विक्रम पुरे, जसो वरद्धनु जगि जाणीउ ए ।
सूहवदेविहि उयरि उपन्नउ, तिहूयण सयलि वखाणीउ ए । ६ ।
विक्रम संवत्सरे वार दहोत्तरे, चैत्र बहुल आठमि (आठमि !) पवरे ।

सल्हीय जय "नरपति" इणि नामिहि, क्रमिक्रमि वाधइ ए तातघरे ।१०
चार अढ़ारह ए वीर जिणालए, फागुण धुरि दसमीय पवरे ।
वरीय संजमसिरे भीमपल्लीय पुरे, नांदि ठविय जिणचन्दसूरे ।११।
पढय जिणागम पमुह विज्जावलीय, दरसणि त्रिभुवनु मोहीऊ ए।
कमल दलावल देह सुकोमल, गुणमणि मन्दिर सोहीऊ ए।१२।
रूव कला गण गुण रयणायर, तिहूअण नयण आणंदयंतो ।
महीयले सोहइ ए भविक जन मोहइ ए, चालइ ए मोह तिमर हरंतो ।१३
चार तेवीसइ ए नयरि ववेरइ ए, कातिक सुदि दिण तेरसी ए ।
जाणीय जयदेव सूरिहिं थापिय, तिहुअण जण मण उल्हसी ए ।१४।
सिरि जिणचन्दह तणय सुपाटिहिं, उवसम रस भर पूरीयउ ए ।
सुवहीय चारु विहारु करंतउ, अजयमेरे नयरि सम्मोसरिउ ए ।१५।
पामीउ जेतु छत्रीस विवादिहिं, जयसिंह पुहवीय परपदइ ए ।
वोहिय पुहविय पमुह नरिंदह, निसुणीय वयणि जिण ध्रम्मु करइ ए ।१६।
दीखिय वहुशीस पयट्ठिय वहुविह विंव, थापीय रीति खरतर तणीए ।
प्रभ पय वेवइ ए निसि दिन सेवइ ए, देवी जालंधर रंजिवी ए ।१७।
सुललित वाणि वखाण करंतउ, धवल असाढ सतहत्तरइ ए ।
मन सुह झाणिहि दसमिय दिवसिहि, पहुतउ सूरि अमरा पुरी ए ।१८।
चरण कमल नरवर सुर सेवइ, मङ्गल केलि निवास हु ए ।
थूभह रयण पालणपुरे नयरिहिं, तिहुअण पुरइ ए आस हु ए ।१९।
लीणउ कमलेहि भमर जिम "भत्तउ", पाय कमल पणमिय कहइ ।
समरइ ए जे नर नारि निरंतर, तिहां घरे रिद्धि नवनिहि लहइ ए।२०।

इति श्रीमज्जिनपति सूरीणां गीतम् ।

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः

जनितभुवनतोष रम्यसम्यक्त्वपोष,
घटितकलुषमोष स्तात्रमत्यस्तदोषम् ।
प्रभुजिनपतिसूरे प्रीणितप्राज्यसूरे-
र्व्यपगतमलगात्रे सूज्यते पुण्यपात्रे ॥ १ ॥
कनककलशपूरै कान्तिनिर्धूतसूरै
कलकमलपिधानै पुष्पमालाप्रधानै ।
जिनपतियतिमूर्ते मज्जनं सज्जनाना,
जनयति भवनोदं विश्वविश्वप्रमोदम् ॥ २ ॥
श्रीमत्प्रह्लादनपुरवर प्रोन्नतस्तूपरत्ने,
स्फूर्जन्मूर्त्तिं जिनपतिगुरु रत्नसानोर्जनदा ।
क्षीरे नीरे स्नपय सुतरां भव्यलोका अशोका,
प्रेयः श्रेयः श्रियमनुपमा येन रम्या लभध्वे ॥३॥
इति जिनपतिसूरिर्गौतम श्रीसुधर्मा,
प्रमुखगणधरजम्बूस्वामिदत्तप्रताप ।
मथितकुपथदर्पा मज्जितः मज्जितश्री,
मङ्गलकलशराध्या पातु सघाय लक्ष्मी ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणा स्तूपकलश ॥

॥ श्री जिनप्रभसूरि गीतम् ॥

खरतर गच्छि वर्द्धमान-सूरि, जिणेसर सूरि गुरो ।
अभयदेवसूरि जिणवल्लह, सूरि जिणदत्त जुग पवरो ॥१॥
सुगुरु परंपर थुणहु तुम्हि, भवियहु भत्ति भरि ।
सिद्धि रमणि जिम वरइ सयंवर नव नविय परि ॥आंचली
जिणचन्दसूरि जिणपतिसूरि, जिगेस तु (?र) गुणनिधानु ।
तदणुक्रमि उपनले सुगुरु, जिणसिंघ सूरि जुगप्रधानु ॥२॥
तासु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिणप्रभसूरि भाणु ।
भविय कमल पडिवोहणु, मिछत तिमिर हरणु ॥ ३ ॥
राउ महंमद साहि जिणि, निय गुणि रंजियउं ।
मेढमंडलि ढिल्लिय पुरि, जिण धरमु प्रकटु किउं ॥ ४ ॥
तसु गछ धुर धरणु भयलि, जिणदेवसूरि सूरिराउ ।
तिणि थापिउ जिणमेरुसूरि, नमहु जसु मनइ राउ ॥ ५ ॥
गीतु पवीतु जो गायए, सुगुरु परंपरह ।
सयल समीहि सिझहिं, पुहविहिं तसु नरह ॥ ६ ॥

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः

जनितभुवनतोष रम्यमभ्यक्तदोष,
घटितकलुषमोष स्नात्रमत्यस्तदोष्म् ।
प्रभुजिनपतिसूरे प्रीणितप्राज्यसूरे-
र्व्यपगतमलगात्रे सूत्यते पुण्यपात्रे ॥ १ ॥
कनककलशपूर्णे कान्तिनिर्धूतसूर्ये
कलकमलपिधाने पुष्पमालाप्रधाने ।
जिनपतियतिमूर्ते मज्जन सज्जनाना,
जनयति भवनोद विश्वविश्वप्रमोदम् ॥ २ ॥
श्रीमत्प्रह्लादनपुरवर प्रोन्नतस्तूपरत्न,
स्फूर्जन्मूर्त्तिं जिनपतिगुरुं रत्नसानोजनदा ।
क्षीरे नीरे स्नपय सुतरा भव्यलोका अशोका,
प्रेय श्रेय श्रियमनुपमा येन रम्या लभध्ये ॥३॥
इति जिनपतिसूरिर्गौतम श्रीसुधर्मा,
प्रभुयुगवरजम्बूस्वामिवत्सप्रताप ।
मथितकुपथदर्पो मज्जित सज्जितश्री,
सकलकलशराध्या पातु सघाय लक्ष्मी ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणा स्तूपकलश ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरीणां गीतम् ॥

उदय ले खरतर गछ गयणि, अभिनवउ सहस करो ।
सिरी जिणप्रभुसूरि गणहरो, जंगम कल्पतरो ॥ १ ॥
वंदहु भविक जन जिणआशण, वण नव वसंतो ।
छतीस गुण संजूत्तो वाइय मयगल दलण सीहो ।आंचली।
तेर पंचासियइ पोस सुदि आठमि, सणिहि वारो ।
भेटिउ असपते "महमदो", सुगुरि ढीलिय नयरे ॥ २ ॥
आपुणु पास वइसारए, नमिवि आदरि नरिन्दो ।
अभिनव कवितु वखाणिवि, राय रखइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरखितु देइ राय गय तुरय, धण कणय देस गामा ।
भणइ अनेवि जे चाह हो, ते तुह दिउ इमा ॥ ४ ॥
लेइ णहु किंपि जिणप्रभसूरि, मुणिवरो अति निरीहो ।
श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो॥५॥
पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसाणु ।
देइ फुरमाणु अनु कारवाइ, नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाट हथि चाडिवि जुगपवरु, जिणदेव सूरि समेतो ।
मोकलइ राउ पोसाल हं वहु, मलिक परि करीतो ॥७॥
वाजहि पंच सबुद गहिर सरि, नाचहि तरुण नारि ।
इंदु जम गइंदसहि तु, गुरु आवइ वसतिहिं मझारे ॥८॥
धम्म धुर धवल संघवइ सयल, जाचक जन दिंति दानु ।
संघ संजूत बहु भगति भरि, नमहिं गुरु गुणनिधानु ॥९॥
सानिधि पउमिणि देवि इम, जगि जुग जयवन्तो ।
नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु, संजम सिरि तणउ कंतो ॥१०॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

ऐ सल्हउ ढीली नयर हे, ऐ वरनउ वखाणू ए।
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरताणू ॥१॥
चलु सखि वंदण जाइ गुण, गरुवउ जिनप्रभसूरि।
रलियइ तसु गुण गाहिं राय रंजगु पडिय तिलउ। आंचली।
आगमु सिद्धंतु पुराणु वखाणिइ, पडिबोहइ सव्वलोइ ए।
जिणप्रभसूरि गुरु सारिखउ हो, विरला दीसइ कोइ ए ॥२॥
आठाही आठमिहिं चउथी, तेडावइ सुरिताणु ए।
पुन मितु मुख जिणप्रभ सूरि चलियउ, जिमि ससि इंदुविमाणि ए ॥३
'असपति" "कुतुबदीनु" मनि रंजिउ, दीठेलि जिणप्रभ सूरी ए।
एकंति हि मन सासउ पूछइ, राय मणोरह पूरी ए ॥ ४ ॥
गाम भूमि पटोला गज बल, तूठउ देइ सुरिताणू ए।
जिणप्रभसूरि गुरु कपिनई छइ, निहुअणि अमलिय माणू ए ॥५॥
ढोल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए।
इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ, सव मणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥

श्रीधर्मकलशमुनि

कृत

श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास

सयल कुशल कल्लाण वल्ली, घणु संति जिणेसरु ।
पणमेविणु जिणचंदसूरि, गोयमसमु गणहरु ।
नाण म होय हि गुण निहाण, गुरु गुण गाए सु ।
पाट ठवणु जिन कुशलसूरि, वर रासु भणेसु ॥ १ ॥
आसि जिणेसर सूरि पढमु, अणहिलपुर पट्टणि ।
वसहि मग्ग पयडेण, राउ रंजिउ "दुल्लह" जिणि ।
तासु पट्टि जिणचंदसूरि, गुणमणि रोहण सम ।
विहिय जेण संवेग-रंग-साला मालोवम ॥ २ ॥
अभयदेव नव अंग वित्तिकरु, पासु पसायणु ।
पउमएवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु ।
तउ जिणवल्लभसूरि तरणि, संवेगि सिरोमणि ।
संबोहिय चित्तउड़ि तेणि, चामुंडा पउमणि ॥ ३ ॥
जोगिराउ जिणदत्तसूरि, वंदियउ सहसकरु ।
नाण झाण जोइणिय दुट्ठ देविय किंकरु करु ।
रूववंतु पच्चक्खु मयणु, जण नयणाणंदू ।

॥ श्रीजिणदेवसूरि गीतं ॥

निरुपम गुण गण मणि निधानु संजमि प्रधानु ।
सुगुरु जिणप्रभसूरि पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥ १ ॥
वदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लिय वर नयरि देसणउ
अमियरसि बरिसए मुणिवर जणु घणु ऊनविउ ॥ आचली ॥
जेहि कन्नाणापुर मडणु सामिउ वीर जिणु ।
महमद राइ समप्पिउ थापिउ सुभ लगनि सुभ दिवसि ॥ २ ॥
नाणि विन्नाणो कला कुसले विद्या बलि अजेउ ।
लखण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुण अमेउ ॥ ३ ॥
धनु कुल घरु जसु कुलि उपनु इहु मुणि रयणु ।
धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥ ४ ॥
धणु जिणसिंघ सूरि दिखियाउ धनु चद्र गछु ।
धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ ॥५॥
इति सबे घणउ सोहावणिय रलियावणिय ।
दसण जिणदवसूरि मुणिराय हूं जाणउं नितु गुणउ ॥ ६ ॥
मदि मडलि धरमु समुधरण जिण शासणिहिं ।
अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो, अवयरिउ वयरसामि ॥७॥
वादिय मयगल दलण सीहो विमल सील धरु ।
छत्रीस गुणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदव सूरि गुरु ॥८॥
॥ इति श्री आचार्याणा गीत पदानि ॥

श्रीधर्मकलशमुनि
कृत
श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास

सयल कुशल कल्लाण वल्ली, घणु संति जिणेसरु ।
पणमेविणु जिणचंदसूरि, गोयमसमु गणहरु ।
नाण म होय हि गुण निहाण, गुरु गुण गाए सु ।
पाट ठवणु जिन कुशलसूरि, वर रासु भणेसु ॥ १ ॥
आसि जिणेसर सूरि पढमु, अणहिलपुर पट्टणि ।
वसहि मग्ग पयडेण, राउ रंजिउ "दुल्लह" जिणि ।
तासु पट्टि जिणचंदसूरि, गुणमणि रोहण सम ।
विहिय जेण संवेग-रंग-साला मालोवम ॥ २ ॥
अभयदेव नव अंग वित्तिकरु, पासु पसायणु ।
पउमएवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु ।
तउ जिणवल्लभसूरि तरणि, संवेगि सिरोमणि ।
संबोहिय चित्तउड़ि तेणि, चामुंडा पउमणि ॥ ३ ॥
जोगिराउ जिणदत्तसूरि, उदियउ सहसक्करु ।
नाण झाण जोइणिय दुट्ठ देविय किंकरु करु ।
रूववंतु पच्चक्खु मयणु, जण नयणाणंदू ।

मयल कला सपुन्न वदु, जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥
वाइ कराहि ,केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू ।
पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु ।
सयल शुद्ध सिद्धत सलिल, सायर अप्पारु ।
जिणपवोह सूरि भविय कमल, सविया गणधारु ॥५॥
नयण तरु गोयमह सामि, सम रुद्धि समिद्धिउ ।
बहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुअणि सुपसिद्धउ ।
"कुतबदीन" सुरताण राउ, रजिउ स मणोहर ।
जगि पयडउ जिणचदसूरि, सूरिहि सिर सहर ॥ ६ ॥

॥ वात: ॥

चद कुल निहि चद कुल निहि, तवइ जिम भाणु ।
नाण किरण उज्जोय कर, भविय कमल पडिबोह कारणु ।
कुगगह गह मच्छिन पह, कोह लोह तमहर पणासणु ।
महि मडणि अच्छरिय धरो, जिण रजिउ सुरताणु ।
सूरि राउ सो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥
त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचदसूरि गणधारु ।
त जयवल्लह गणि तेडियउ, मतु कियउ सुविचारु ।
त विजयसीह ठक्कर पवरो, महतियाण कुलि सार ।
तउ नामु ठामि (मु)नसु अप्पियउ, लउ गोल्ह(गोयम)सउ गणधार॥८॥
त गुज्जरधर मडणउ अणहिलवाडउ नासु ।
त मिलिय सघु समुदाउ तहि महतियाण अभिरामु ॥ ९ ॥
त उसवाल कुल मंडणउ, तेजपाल तहि साहु ।
त रुद्द बधव रुद्द सहित, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

ता गुरु राजेन्द्रचन्दसूरि, आचारिज वर राउ।

सुय समुद्द मुणिवर रयणु, विवेउसमुद्द उवझाउ ॥ ११ ॥

संघ सयल गुरु विनवए, तेजपालु सुविसेसु।

पाट महोच्छव कारविसु, दियइ सुगुरु आएसु ॥१२॥

त संघ वयणि आणंदियउ, जाल्हण तणउ मल्हारु। ‹

त देस दिसंतर पाठवए, कुंकउती सुविचारु ॥ १३ ॥

सुणिउ उच्छु अणहिल्ल पुरे, सुघनवंत सुह गेह।

त सयल संघ तिक्खणि मिलिय, पावसि जिम घण मेह ॥१४॥

कंठ ठिउ गोलय सहिउं, गुरु आणा संजुत्तु।

वायवंतु वाहड़ तणउ, विजयसीहु संपत्तु ॥ १५ ॥

त पइसारउ संघह कियउ, वज्जहि वज्जंतेहि।

जिम रामहि अवडा नयरि, ढक्क बुक्क पमुहेहि ॥ १६ ॥

दीण दुहिय किरि कप्पतरो, राय पसाय महंतु।

त धम्म महाधर धुरि धवलो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥

त तसु नंदणु जेल्हा वराणि, जयतसिरी वखाणि।

त कुसलकीरति तहि कुलि तिलकु, घण गुण रयणह खाणि ॥१८॥

तेरहसय सतहत्तरइ किन्नंग (?कृष्ण) इगारसि जिट्ठ।

सुर विमाणु किरि मंडियउ, नंदि भुवणि जिणि दिट्ठि ॥१९॥

त राजेन्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।

त कुशलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर वाणारिस ॥ २० ॥

नाम ठवियउ जिणकुशलसूरि, वज्जिय नंदिय तूर।

त संघु सयलु आणंदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

मयल कला संपुन्न वडु, जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥
थाइ करडि ,केसरि किसोर, जिणपत्ति अईमू।
पुणजे जिणेसर सूरि सिद्ध, आरभिय सीमु।
मयल सुद्द सिद्धत सलिल, सायर अप्पारु।
जिणपबोह सूरि भविय कमल, संहिया गणधारु ॥५॥
नयण तरु गोयमह सामि, सम लद्धि समिद्धिउ।
वहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुअणि सुपसिद्धउ।
"कुतवदीन" सुरताण राउ, रजिउ स मणोहर।
जगि पयडउ जिणचदसूरि, सूरिहि सिर सेहरु ॥ ६ ॥

॥ घात: ॥

चन्द कुल तिहि चंद कुल तिहि, तवइ जिम भाणु।
नाण किरण उज्जोय कह, भविय कमल पडिबोह कारणु।
कुमगा गह मच्छिय पड, कोह लोह लमहर पणासणु।
महि मडलि अच्छरिय घरो, जिण रजिउ सुरताणु।
सूरि राउ सो सगहि गयउ, आणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥
त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचदसूरि गणधारु।
त जयवल्लह गणि तेडियउ, मतु कियउ सुविचारु।
त विजयसीह ठक्कर पवरो, महतियाण कुलि सार।
नउ नामु ठाबि (सु)नसु अप्पियउ, लउ गोल्द(गोयम)सउ गणधार॥८॥
त गुज्जरधर मडणउ, अणहिल्लवाडउ नामु।
त मिलिय संघु समुदाउ तहि, महतियाण अभिरामु ॥ ६ ॥
त उसवाल कुल मडणउ, तेजपाल तहि साहु।
त अह बंधव रुदइ सहिउ, गुरु साहम्मि पमाउ ॥ १० ॥

ता गुरु राजेन्द्रचन्दसूरि, आचारिज वर राउ।
सुय समुद्द मुणिवर रयणु, विवेउसमुद्द उवझाउ ॥ ११ ॥
संघ सयल गुरु विनवए, तेजपालु सुविसेसु।
पाट महोच्छव कारविसु, दियइ सुगुरु आएसु ॥१२ ॥
त संघ वयणि आणंदियउ, जाल्हण तणउ मल्हारु।
त देस दिसंतर पाठवए, कुंकउत्री सुविचारु ॥ १३ ॥
सुणिउ उछवु अणहिल्ल पुरे, सुधनवंत सुह गेह।
त सयल संघ तिक्खणि मिलिय, पावसि जिम घण मेह ॥१४॥
कंठ ठिउ गोलय सहिउं, गुरु आणा संजुत्तु।
वायवंतु वाहड़ तणउ, विजयसीहु संपत्तु ॥ १५ ॥
त पइसारउ संघह कियउ, वज्जहि वज्जंतेहि।
जिम रामहि अवझा नयरि, ढक्क बुक्क पमुहेहि ॥ १६ ॥
दीण दुहिय किरि कप्पतरो, राय पसाय महंतु।
त धम्म महाधर धुरि धवलो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥
त तसु नंदणु जेल्हा घरणि, जयतसिरी वखाणि।
त कुसलकीरति तहि कुलि तिलकु, घण गुण रयणह खाणि ॥१८॥
तेरहसय सतहत्तरइ किन्नंग (?कृष्ण) इगारसि जिट्ठ।
सुर विमाणु किरि मंडियउ, नंदि भुवणि जिणि दिट्ठि ॥१६॥
त राजेन्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।
त कुशलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर वाणारिस ॥ २० ॥
नाम ठवियउ जिणकुशलसूरि, वज्जिय नंदिय तूर।
त संघु सयलु आणंदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

धाम:—सयल संघह सयउ संघह केलि आणंदु।
अणहिल्लपुर वर नयर गुजरात धर सुगह मंडणु।
देस दिसंतरि महि मिलिय, सयल संघ वरिसंत जिम घणु।
पाट पुरन्दर संठविउ, मिलिय मिलावइ सूरि।
संघ महोत्सु कारावइ, वरसंतइ घणपूरि॥ २२॥
न आइहिं आदिजिणिंद भवइ, नेमि जिम नारायणु।
पामइ ए जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु।
तिम घरि ए सुह गुरु भत्ति, महंतियाणि घरि सलहिय ए।
पट्टिवनए महि परिपुन, विज्जयसीहु जसि जस लियइ ए॥२३॥
संघवइ ए सामल बंदि, दसि विदेसहि जाणिय ए।
धम जिम ए धणु वरिसतु, वीरदेव वखाणिय ए।
कारइए भीमणधार, भा'मिय वछल वर।
संघइ ए कप्पड़ सार, गुरुयभत्ति गुरु पूज कर॥ २४॥
दोसरई ए आदिनाह धाउ, थाटणि दरिसण संघ हुय।
सूरिहिं एमउ मउ सात साहु, साहुणि चउवीस-सय।
रइई ए सउ तेरणपालि धरि, नहिउ पहिरावियइ।
मइ मई ए दूसमकालि चन्द्रहिं नामउं लिहावियइ॥ २५॥
घर घरि ए मंगउ चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय।
घर घरि ए बदर बाल, घरि घरि गूढी ऊभविय॥ २६॥
वज्जिय ए तूर गंभीर, अयरू वहिरिउ पडिरमण।
नाचहिं ए अयलिय बाल, रजिय सुर धवला रवेहिं॥ २७॥
अणहिल्लि ए पुर मझारि, नर नारी जोवण मिलिय।
किमउ सु तेजउ साहु, असु एवडउ उछव रलिय॥ २८॥

पुणरविए पुणवि सो साहु, संघ सयलि सम्माणिय ए।
आ गई ए उच्छव सारु, सिरि चन्द कुलि जगि जाणिय ए ॥२६॥
इण परि ए तेडवि संघु, पाट महोछवु कारविउ।
जिण गरूए नव नव भंगि, सयल विंव सु समुद्धरिउ ॥३०॥

घात:—धवल मंगल धवल मंगल कलयलारवे।
वज्जत घण तूर वर महुर सद्दि नच्चइ पुरंधिय।
वसुधारहि वर संति नर केवि मेहु जेम मनहि गंजिय।
ठामि ठामि कल्लोल झुणि, महा महोछवु मोय।
जुगपहाण पयसंठवणि, पूरिय मग्गण लोय ॥ ३१ ॥

सयल संघ सुविहाण, जिण सासण उज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक विधंसियरो ॥ ३२ ॥
उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिवोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम उगइ रवि बिंचि वि, हरपुहोइ पंथि अह कुलि।
जण मण नयणाणंदु, तिम दीठइ गुरु मुह कमलि ॥ ३४ ॥
अणहिलपुर मंझारि, अहिणव गुरु देसण करइ।
नाण नीरु वरिसंतु, पाव पंकु जिम घणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुशल मुणिंदु, जिण-सासणि ता चिरु जयउ ॥३६॥
नंदउ विहि समुदाउ, तेजपालु सावय पवरो।
साहंमिय साधारु, दस दिसि पसरिउ किंत्ति भरो ॥ ३७ ॥
गुणि गोयम गुरु एसु, पढहि सुणहि जे संथुणहि।
अमराउर तहि वासु, धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥

कवि सारमूर्ति मुनि कृत

॥श्री जिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास॥

सुरतरु रिसह जिणिंद पाय, अनुसर सुयदेवी ।
सुगुरु राय जिणचन्दसूरि, गुरु चरण नमेवी ॥
अमिय सरिसु जिणपदम सूरि, पय ठवण्ह रासू ।
सवणजल तुम्हि पियउ भविय, लहु सिद्धिहि तासू ॥ १ ॥
वीर तित्थ भर धरण धीर, सोहम्म गणिंदु ।
जम्बूस्वामी तह पभव-सूरि, जिण नयणाणंदु ॥
सिज्जभव जसभद्दु, अज्ज सभूय दिवायरु ।
भद्दबाहु सिरि थूलभद्र, गुणमणि रयणायरु ॥ २ ॥
इणि अनुक्रमि उदयउ वद्धमाणु, पुणु जिणेसर सूरी ।
तासु सीस जिणचन्द सूरि, अजिय गुण भूरी ॥
पासु पयासिउ अभय सूरि, थभणपुरि मडणु ।
जिणवल्लह सूरि पावरोर, दुखाचल खडणु ॥ ३ ॥
तउ जिणदत्त जईसुनामि, उवसग्ग पणासइ ।
रूववतु जिणचन्द सूरि, मावय आसासय ॥
वाई गय कंठीर सरिसु, जिणपत्ति जईसरू ।
सूरि जिणेसर जुग पहाणु, गुरु सिद्धाएसु ॥ ४ ॥
जिणपवोह पडिवोह तरणि, भविया गणधारू ।

निरुवम जिणचन्द सूरि, संघ मण वंछिय कारू ॥
उदयउ तसु पट्टि सयल कला, संपत्तु मयंकू ।
सूरि मउड चूडावयंसु, जिण कुशल मुणिंदु ॥ ५ ॥
महि मण्डल विहरन्तु सुपरि, आयउ देराउरि ।
तत्थ विहिय वय गहण माल, पय ठवण विविह परि ।
नियं आऊ पज्जंतु सुगुरु, जिणकुसलु मुणेइ ।
निय पय सिख समग्ग, सुपरि आयरिह देइ ॥ ६ ॥

॥ घत्ता ॥

जेम दिनमणि जेम दिनमणि, धरणि पयडेय ।
तव तेय दिप्पंत तेम सूरि मउडु, जिणकुशल गणहरू ।
दढ छंद लखण सहिउ, पाव रोर मिछत्त तम हरू ।
चन्द गच्छ उज्जोय करु, महि मंडलि मुणि राउ ।
अणुदिणु सो नर नमउ तुम्हि, जो तिहुपति वखाउ ॥ ७ ॥
सिंधु देसि राणु नयरे, कंचण रयण निहाणु ।
तहि रीहडु सावय हुउं, पुनचन्दु चन्द समाणु ॥ ८ ॥
तसु नंदणु उछव धवलो, विहि संघह संजुत्तु ।
साहु राय हरिपाल वरो, देराउरि संपत्तु ॥ ९ ॥
सिरि तरुणप्पहु आयरिउ, नाण चरण आधारु ।
सु पहुचन्दि पुण विन्नवए, कर जोड़वि हरिपालु ॥१०॥
णुछव जुगवरह, काराविसु वहु रंगि ।
म सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंगि ॥११॥
त्रेय पाट ठवण, दस दिसि मंच हरेसु ।
सयल संघु मिलि आवियउ, वछरि करइ पवेसु ॥१२॥

संघ महिम गुरु पूय, गुरुयाणंदहि कारवए।
साहम्मिय घण रंगि, सम्माणइ नव नविय परे ॥ २२ ॥

वर वत्थाभरणेण, पूरिय मग्गण दीण जण।
धवलइ भुवणु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिडम ॥ २३ ॥

नाचइ अवलीय वाल, पंच सबद वाजहि सुपरे।
घरि घरि मंगलचार, घरि घरि गूडिय ऊभविय ॥ २४ ॥

उदयउ कलि अकलंकु, पाट तिलकु जिणकुशल सूरे।
जिण सासणि मायंडू. जयवन्तउ जिणपद्म सूरे ॥ २५ ॥

जिम तारायणि चन्दु, महस नयण इत्तिसु सुरह।
चिंतामणि रयणाह, तिम मुहगुरु गुरुयउ गुणह ॥ २६ ॥

नवरस देसण वाणि, सवणंजलि जे नर पियहि।
मणुय जम्मु संसारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥२७॥

जाम गयण ससि सूर, धरणि जाम थिरु मेरु गिरि।
तिहि संघह संजुत्तु, नास जयउ जिणपद्म सूरे ॥ २८ ॥

इहु पय ठवणह रासु, भाव भगति जे नर दियहि।
ताह होइ सिव वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥२९॥

॥ इति श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास ॥

पुहवि पयडु सामड कुलहि, छाजमीधर सुविचार ।
तसु नन्दण आयउ पवरो, दीण दुत्थिय माधार ॥ १३ ॥
तासु घरणि कीकी उयर, रायहंसु अवयरिउ ।
स पद्मसूरि कुल कमलु रवे, बहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥
विक्रम जिन संवच्छरिण तरह सइ नऊ पहिं ।
जिट्ठि मासि सिय छट्ठि तहि सुह दिणि ससिवारहिं ॥१५॥
आदि जिणसर वर भुवणि ठविय नन्दि सुविसाल ।
धय पडाग तोरण कलिय, चउदिसि वंदुरवाल ॥ १६ ॥
सिरि तरुणप्पह सूरि वरो सरसइ कण्ठाभरणु ।
सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ पद्मसूरि ति मुणिरयणु ॥१७॥
जुगपहाणु जिणपद्म सूरि नामु ठविउ सुपवित्त ।
आणंदिय सुर नर रमणि जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ धत्ता ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि संघ अपारु ।
देराउरि वर नयरि तुर सदि गज्जति अंबर
नच्चतिय वर रमणि ठामि ठामि पिक्खणय सुन्दर
पय ठवगुडनि जुगवरह विहसिउ मग्गण लोउ
जय जय सद्दु समुच्छलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥
धन्नु सुवासरु आजु धन्नु एसु मुहुत्त वरो ।
अभिनव पुन्नम चन्द, [illegible] ॥ २० ॥

खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय

मो गुरु सुगुरु जु छविह जीव अप्पण सम जाणइ।
मो गुरु सुगुरु जु सयरूव सिद्धंत वखाणइ ।
सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपालइ।
मो गुरु सुगुरु जु दव्व संग विसम सम भणि टालइ।
मो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइगा करइ ।
गुणवंत सुगुरु भो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ ॥ १ ॥
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड़ भणिज्जइ ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु चोरी किज्जइ ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ परत्थी न रमिज्जइ।
सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दान सील तव भाव मउ।
भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलि म नीगमउ ॥२॥
सिरि वद्धमाण तित्थे जुगवर सोहम्म सामि वंसंमि।
सुविहिय चूडामणि मुणिणो, खरतर गुरुणो थुणस्सामि ॥३॥
सिरि उज्जोयण वद्धमाण सिरि सूरि जिणेसर।
मिरि जिनचंद-सुणिंद? निलउ मिरि अभय गणेसर।

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचन्द नमिज्जइ।
जिणवय जिणेसर जिणप्रबोह जिणचंद थुणिज्जइ।
जिणकुशल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचंद गुरु।
जिणउदय पट्टि जिणराजवर, संपय सिरि जिणभद्दगुरु ॥४॥

अग्यारह सइ सतसठइ जिणवल्लह पद दिद्धउ।
इग्यारह गुणहत्तरइ तहइ जिणदत्त पसिद्धउ।
बारह पंचग्गलइ तहवि जिणचन्द मुणीसरु।
बारइ तेवीसइ सहिय जिणपत्ति जईसरु।
जोगीस जिणेसर सूरि गुरु, बारह अठहत्तरि वरसि।
जिणपबोह गच्छह वइ, तेरह इगतीसा वरसि ॥ ५ ॥

तेरह इगताला वरसि पट्ट जिणचन्दहु लद्धउ।
तेरहसय सत्तहत्तरइ सहिय जिणकुशल पसिद्धउ।
तेरह नउया एम जाणि जिणपउम गणीसरु।
लद्ध नाम जिनलद्ध सूरि चहदय सय वच्छरि।
जिणचन्द सूरि गच्छह तिलउ, चउदह सय छडोत्तरइ।
जिणउदयसूरि उदयवंतपहु, सय चौउदह पनरोत्तरइ ॥ ६ ॥

अग्यारह सतसठइ जेण वल्लह पद दिद्धउं।
आसाढ़ सिय छट्ठि चित्तकोटहि सुपसिद्धउ।
किसण छट्ठि वइसाख इग्यारह गुणहत्तरि।
सूरि राउ जिणदत्त ठविय चित्तउड्ढ उप्परि।

---

२ वद्द, ३ लब्धि, ४ सूरि।

जिणचन्दसूरि वडभागियइ, सुद्ध छट्ठि विक्रमपुरहि ।
जयजन हुउ जिण सासणहि, सय बारह पंचत्तरहि ॥ ७ ॥
बत्तरइ जिणपत्तिसूरि पाटह तेवीसइ ।
कत्तिय सिय तेरसिहि पट्ट जयवंतउ दीसइ ।
माह छट्ठि जालउरि सहुतहि ठविय जिणेसर ।
बारह अठहत्तरइ रूप लावन्न मणोहर ॥
जिणपबोह सूरि आसोज पंचमि, जालउरय भयउ ।
इकतीस वरसि अनुवर सइ, पट्ट तह इणि परि लयउ ॥ ८ ॥
तरह सय इगताल सुगुरु जिणचन्द सुणिज्जय ।
वयसाखह सिय तीय नयरि जालउरि थुणिज्जय ॥
तेरह सय सत्तहत्तरइ सूरि जिणकुसल पसिद्धउ ।
जिट्ठ कसिण इग्यारमहि पट्टु अणहिलपुरि दिद्धउ ॥
जिणपदमसूरि तेहर (रह) नवइ. जिट्ठ मासि उच्छव भयउ ।
सह सुद्ध छठि देराउरहि, सयल संघ आणंदयउ ॥ ९ ॥
सत्र चउदह जिण लबधि सूरि पट्टहि सुपसिद्धउ ।
आसाढह वदि पडविं तहवि पट्टागम किद्धउ ॥
तासु पट्टि इहु सुगुरु ठविय चउदह सय छडोत्तरि ।
जेसलमेरह माह दसमि सुद्धह सुह वासरि ॥
नर नारि साह मगल करइ, जिण सासणि उछव भयउ ।
जिणचन्द सूरि परिवार सई, सयल संघ अणुदिणु जयउ ॥१०॥
खंभ नयरि मझारि चउद पनरोतर वरसहि ।
दियइ सतु आयरिय इंद आणंदिय सरसहि ॥

अजितनाथ वर भवण नंदि मंडिय गुरु वत्थिरि ।

सयल संघ बहु परि मिलिय रलिय पूरिय मनभितरि ॥

जिण कुशल सूरि सीसह तिलउ, जिणचन्दह पट्टुद्धरणु ।

जिणचंदसूरि भवियह नमउ, सयल संघ वंछिय करणु ॥११॥

गुण गण वेय मयंक वरसि फग्गुण वदि छट्ठहि ।

अणहिलपुरि वरि नंदि ठविय संतीसर दिट्ठिहि ॥

सिरि लोयआयरिय मंतु अप्पिय सुमुहुत्तहि ।

सिरि जिणउदय मुणिंद पट्ट उद्धरिय धरित्तहि ॥

छतीस गुणावलि परिवरिय, चन्द गच्छ उज्जोय करु ।

जिणराजसूरि गुरु जगि जयउ, सयल संघ आणंदयरु ॥१२॥

पण सग वेय मयंक[1] वरसि माहह छण वासरि ।

भाणुसल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि ॥

नंदि ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचन्द गणहरि ।

सूरि मंतु जसु दिद्ध[2] किद्ध मंगलु विवहु[3] प्परि ॥

जिणराजसूरि पट्टह तिलउ, जिणसासण उज्जोयकरु ।

जा चन्द सूरि ता जगि जयउ, सिरि जिणभद्द मुणिंद वरु ॥१३

मंत मज्झि नवकार सार नाणह धुरि केवल ।

देव मज्झि अरिहन्त सव्व फुल्लह धुरि उप्पलु ॥

रुख मज्झि वर कप्परुख संवह धुरि मुणिवर ।

पखि मज्झि जिम राजहंस पव्वय धुरि मंदिर ॥

जिणराजसूरि पट्टुद्धरण, भविय लोय पडिबोहयर ।

तिम सयल सूरि चूडामणि, जिणभद्दप्पहु जुग पवर ॥१

---

१ पुव्वय २ दिद्ध ३ विवहं

मगल मिरि अरिहन्त देव, मंगल सिरि सिद्धह ।
मगल मिरि जुगपवर सूरि, मगल उवज्झायह ॥
मगल सुविहिय सव्व साहु, मगल जिणधम्मह ।
मङ्गलु विहरइ सव्व सङ्घ, मङ्गल सन्ताणह ॥
सुयणवि होइ मङ्गलु अमल्लु, मङ्गलु जिण सासण सुरह ।
वर सीमइ जिणवय सुह गुरुह, मङ्गल सूरि जिणमरह ॥१५॥
माल्हू सार सिंगार साह रतनिग कुलमंडणु ।
धुदाउन सुल संसि सुदवि धारल्दे नंदणु ॥
चउउह सय पनरोतिरइ फमिण आसाढह तेरसि ।
पट्ट महोच्छव कियउ साह रतनागर वरमि ॥
खरतरह गच्छि उज्जोय कर, जिणचन्द सूरि पट्टु धरणु ।
जिणउदय सूरि नदउ सुपहु, विहिसघह मङ्गल करणु ॥१६॥
जिम जलहरमि मोर जिहा वसतमि कोकिला हुंती ।
सूरउगगमण कमलु तह भविया तुह आगमणे ॥
जिम जलहर आगमणि मोर[1] हरसिय मण नच्चइ ।
जिम दिणियर उग्गमणि कमल वणमिरि सिरि विकसइ ॥
ससिहर मगम जेम सयल सायरू जल विकसइ ।
जिम वसति महियलि हसनि कोयल मड मचइ ॥
तिम सूरि राउ जिनउदय गुरु, पट्टाहिव रसि (रिं) उल्हसिय ।
जिनराजसूरि गुरुदसणहि भविय नयण मण उल्हसिय ॥१७॥

---

१ देहएइ

वासिग उप्परि धरणि धरणि उप्परि जिम गिरिवर।
गिरिवर उप्परि मेह मेहु उप्परि रवि ससिहर ॥
ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर[1] वर।
इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर ॥
सव्वट्ठसिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुक्ख हलि।
तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहि उप्परि इत्थ कलि ॥१८॥

कुसल वड़ो संसार, कुसल सज्जण जण चाहइ।
कुसलइ मइगल वारि लछि कुसलहि घरि आवइ।
कुसलहि घण वरसंति कुसलि धण धन रवन्नउ।
कुसलहि घोड[2]घट्टि कुसलि पहिरिय सुवन्नउ ॥
एरिसउ नाम सुह गुरु तणउ, कुसलहि जग रलियामणउ।
जिण कुसल सूरि नाम ग्रहणि, घरि[3]घरि होइ वधामणउ ॥१९॥

दस सय चउवीसेहि नयरि पट्टणि अणहिलपुरि।
हूयउ वाद सुविहतह चेइवासी सउं वहु परि ॥
दुल्लभ नरवइ सभा समुखि जिण हेलइ जित्तउ।
चित्तवास उत्थप्पिय देस गुज्जरह वदित्तउ।
सुविहित्त गछि खरतर विरुद, दुल्लभ नरवइ तहि दियइ।
सिरि वद्धमाण पट्टह तिलउ, जिणेसर सूरि गुरु गहगहइ ॥२०॥

रवि किरणेहू वलग्गि चडिय अट्ठावय तित्थहि।
निय २ वन्न पमाण विंव वंदिय जिण भत्तिहि।

---

१ सुप्परि २ घोडाघट्ट ३ करि

कद्दम नीर सुरसरीय कद्दम बाहलीय पवित्तिय ।

पद्मराग कद्द गुज्य कद्दम पयरिय रंगिय ॥

जिणपद्म सूरि पट्टु पट्टधर, अमिय धारि देसण वरिस ।

तुडि कर सुजीह किनगलि पढिमि, जिनलब्ध सूरि गणहरमरसु॥२७॥

एते बेरि रायजूरि जतइ मिरिविडि करि मसिय ।

एन अंब अम्बलिय दरव दाडिम जं चरिय ।

एन जव अयूयद मयउ पिप्पल ज असियह ।

बहआरू य उवान एय एय पमर अवसिय ॥

पउम रह नारिग नह सु नयनिमल कोमल मड्डूय ।

जिणरत्ति सूरि नालियर इइ, मरारि फोर बच भजेय तुय ॥२८॥

जिम नमि सोहइ चद जेम कजलु सरलउहि ।

हम जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम रुढिहि ।

कचणु जिम हीरहि जेम कुल मोहइ पुत्तहि ।

रमणि जेम भत्तार राउ सोहइ सामतइ ।

सुर नाह जेम सोहइ सुरह, जगि सोहइ जिणधम्म भर ।

आयरिय मझि सिंहासणहि, तिम सोहइ जिणचन्द गुरु ॥२६॥

दसणभद्द नरनाह वीर आगमि आणदिय ।

पभणइ वदिसु तेम जेम केणावि न वदिय ।

रह सज्जिय गय गुडिय तुरिय पक्खरिय पल्लाणिय ।

सुखासण मय पच वडवि चल्ल धिनिहि राणिय ॥

बहु छत्त चमर परवारि सउं, जाम सपत्त समोसरणि ।

ताम इद तसु मगु मणावि, अयन्मइ आदसइ मणि ॥३०॥

इंद वयणि गय गुडिर सहस चउसट्ठि वेउव्विय ।
वारुत्तर सय पंच तीह इक्कह मुह किय ।
मुहि मुहि किय अड दंत दंतहि दंतहि अड वाविय ।
वावि वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न(?ना)विय ॥
वत्तास वद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नच्चइ रलिय ।
इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ(?य) गलिय ॥३१॥
दसणभद्द चिंतेय अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि संवेगि झत्ति तणि संयमु लिद्धउ ॥
वीरु पासि सु ज जाइ जामि मुणिराउ वइट्ठउ ।
ताम भत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरट्ठिउ ॥
भणय इंदु तय जतु मुणिहु, उहारिय निब्भंत मइ ।
जं करउं विनाण आणग थुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमरु त जिणवरु गिर त मेरु निसियरु तदसासणु,
तरु त अमरतरु धन त धनु महता पंचाणणु ।
गढ त लंक विसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु,
अवल त द्रूयमणि नइ त गंग जल वहुल त सायरु ।
जिणभुवण त नंदीसर भणउ, तुंगत्तणि त्तापरि गयणु,
पुणि राउत जगि जिणपत्ति गुरु सूरि मउड़ चूड़ारयणु ॥१७॥
जिम तरु सुरतरू महि रयण मझिहिं चिंतामणि,
धेणु मझि जिम कामधेणु गह मझि दिवामणि ।

पनरह मत तापस परोह डिखिय जिण सत्तिहि ।
पारावइ इग पत्ति सव्व खीरह चिय खंडहि ॥
अत्थीण महागामि लद्धिनर, गोइम सामिय गुण तिलउ ।
जसु नामिण सिज्झइ कज्ज सवि, सो झायउ तिहुयण तिलउ ॥२१॥
सो जयउ जेण वद्दिय पंचमि (धाउ) चउत्थिपजूसरण ।
पय चउत्थमि जाया सम्मविया कालकाइरियो ॥
कालिकसूरि सुणिंद जयउ तिहुअण मण रंजण ।
उज्जेणी गद्दभिल्ल राय मूलह निकंदण ॥
सरसइ मागुणि कज्जि सिध लद्धण जिणि रक्खिय ।
मोहम्माइवइ सयल आउयउ अक्खिय ॥
मरहट्टमि पइठाणपुरि, सालवाहण अवरोहपर ।
सा कालिगसूरि सयइ जयउ, चउत्थि पजूसरण विहिय धरि ॥२२॥
जिणदत्त नंदउ सुपट्ट सो भारहमि जुगपवरो ।
अज्ञाणवि पमाया, विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥
नागदेव वर सावय्य उज्जिंत[1] चढेविणु ।
पुछिय जुगवर अव एवि उववास करे विणु ॥
तम मन्ति तुट्ठाय तीय, करि अखरि लिखिया ।
भणिउ जवाइय पम्ह मय[2], जुगपवर सुपसिय ॥
अमिअया पढीव अणहिल्लपुरि, जुगपहाण तिणि जाणियउ ।
जिणदत्तसूरि नंदउ सुपट्ट, अम्हाणवि वखाणियउ ॥२३॥
गट सम्मा इउ सिमा पुराण फलताय च (उ)इसी द्विवसे ।
पढिय वमयाणंदो निरुभणिय "अभयतिलएण" ॥ १ ॥

[1] उज्जिन चढविणु [2] साम्‍ [3] खवाइय [4] सेव

पाणि तणइ विवादि रञ्ज जयसिंघ नरिंदह।
उज्जेणी वर नगरि गुवगि पट्ठ संती जिणंदह।
जिणवल्लभ जिणदत्त सूरि जिणचन्द जईसर।
रंजिय जिणवय सूरि धरह सिरि सूरि जिणेसर॥
ता ? उन्हउं सीयलु जयह जन्तु, फासूय धम्पिय विवहप्परि।
निज्जिणिउ विजयाणंद ति(लि:)ति, अभयतिलकि चउपट्टि धरि॥२४॥
रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवगु नट्ठ निसहि
जिणेसर नं दिन डोसा ममय बलि न कव्वरिय विसरइ।
नहु जामणाहि पवट्टरत्ति रहु भमइ नभमणइ।
नहु विद्यारि वखाणु जत्त तुगी भरि समणइ॥
भवियणहु जहिनइ त्तिय अवहि, तह सुयंमि धुयरय करइ।
तह मोहं मूल मूलण गयइ, जिणवल्लह पय अणुसरउ॥२५॥
जिणदत्त सूरि मंगलु मंगलु, जिणचन्द्रसूरि रायस्स।
जिणवय सूरि जिणेसर, मंगलु तह वद्धमाणस्स॥ १॥
वद्धमाण घणगुणनिहाण मंगलु कलि अमिलह।
सुगुरु जिणेसर सूरि वसहि पयडण धुरि धवलह।
मंगलु पहु जिणचन्द अभयदेवह जिणवल्लह।
मंगलु गुरु जिणदत्त सूरि मंगलु जिणचन्दह॥
जिणपत्ति सूरि मंगलु अमलु, जासु सुजस पसरिय धरह।
चउविह सुसंघ संरुल्द करि, मंगल सूरि जिणेसरह॥२६॥
कहस चन्द्र निम्मलइ कहस तारायण निम्मल।
कहस सुपवित्त कहस वगुलउ अय उज्जल॥

कहस नीर सुरसरीय कहस वाह्लोय पवित्तिय ।
पदमराग कह गुरय कहस पयरिय रगिय ॥
जिणपद्म सूरि पट्टु पट्टुधर, अमिय वाणि दसण वरिस ।
तुडि कर सुजीह किनगलि पडिसि, जिनलब्ध सूरि गणहरमरसु॥२७॥
एनै वरि रज्जूरि जवइ सिरिविडि करि भखिय ।
एन अब अम्बलिय दप दाडिम ज चखिय ।
एन जब जयुयह भयल पिप्पल ज असियह ।
खडआरू य उवरन एय एय पसर जनसिय ॥
पउमप्पह नारिग नह मु नयनिमल कोमल महूय ।
जिणपत्ति सूरि नालियर इह, अररि कीर वंच भंजेय तुय ॥२८॥
जिम नसि सोहइ चद जम कज्जलु तरलछहि ।
हंस जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम लछिहि ।
कचणु जिम हीरेहि जेम कुल सोहइ पुत्तहि ।
रमणि जेम भत्तार राउ सोहइ सामतइ ।
सुर नाह जेम सोहइ सुरह, जगि सोहइ जिणधम्म भर ।
आयरिय मझि सिंहासणहि, तिम सोहइ जिणचन्द गुरु ॥२६॥
दसणभद्द नरनाह वीर आगमि आणंदिय ।
पभणइ वंदिसु नेम जेम केणावि न वंदिय ।
रह सज्जिय गय गुडिय तुरिय पक्खरिय पलाणिय ।
सुखासण सय पच वइवि चल विविहिं राणिय ॥
घट्ट छत्त चमर परवारि मउ, जाम सपत्त समोसरणि ।
ताम इह वसु मणु मणति, अयरावइ आदसइ मणि ॥३०॥

इंद वयणि गय गुडिर सहस चउसट्ठि वेउव्विय ।
वारत्तर सय पंच तीह इगइगह मुह किय ।
मुहि मुहि किय अड दंत दंतहि दंतहि अड वाविय ।
वावि वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न(?ना)विय ॥
बत्तीस बद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नचइ रलिय ।
इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ(?य) गलिय ॥३१॥
दसणभद्द चिंतेय अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि संवेगि ख़त्ति तणि संयमु लिद्धउ ॥
वीरु पासि नु ज जाइ जामि मुणिराउ वइट्ठउ ।
ताम भत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरट्ठिउ ॥
भणय इंदु तय जतु मुणिहु, उद्धारिय निव्भंत मइ ।
जं करउं विनाण आणग थुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमरु त जिणवरु गिर त मेरु निसियरु तदसासणु,
तरु त अमरतरु धन त धनु महता पंचाणणु ।
गढ त लंक त्रिसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु,
अवल त द्रूयमणि नइ त गंग जल वहुल त सायरु ।
जिणभुवण त नंदीसर भणउ, तुंगत्तणि त्तापरि गयणु,
पुणि राउत जगि जिणपत्ति गुरु सूरि मउड़ चूड़ारयणु ॥१७॥
जिम तरु सुरतरू महि रयण मझिहिं चिंतामणि,
धेणु मझि जिम कामधेणु गह मझि दिवामणि ।

उडगण सर्वहिं चडु इंदु जिम महिम पसिद्धउ,
गिरवर महिहिं मेरु राउ जिम रह निरवउ ।
तिम पह सूरि सुरिहिं पवर जिणपद्मसूरि सोमकर,
जिणचंदसूरि भवियहु नमहु, पदवि पसिद्धउ सुगपवर ॥१८॥
जिम मासण वर रवि चढ गहिहिं ममरंगनि,
वरण सुरंगनि चडति संनिवसर रयणु गहेविणु ।
जिम आणा सिरिसिरसु सोहि संनाहु सुमजिड,
पव महन्वय राय मवल मुणिपत्ति अगजिउ ।
परसिउ सुहड्ड जिनकुसल सूरि, पिवेविण रहरियवगु ।
अणभिडिउ मुडिउ मुणिपय पडिउ मयगमाणु जिन्हेंवि पुण ॥१६॥
उत्तर दिसि भद्दव मासि जिम गज्जइ जलहरु,
जिम हत्थी गडयडइ जेम किन्नरि सरु मण्हरु ।
सायर जिम कल्लोल करइ जिम सीह गुंजारइ,
जिम कुसिय सहयार सिहरि कोइल टहकारइ ।
सघोस घंट जिम जम्मरमणि, वज्जतिय जिम गहगहइ,
जिणपद्म सूरि सिद्धंत तिम, वखाणवउ गहगहइ ॥ २१ ॥
जिम अन्तर गोदक दुद्धि अतरु मणि सुरमणि,
जिम अतरु सुरतरु पलास जिम जवुय केसरि ।
जिम अंतरु बग रायहम जिम दीवय दिणयर,
जिम अनरू गो कामधेणु जिम अत(र) सुरेसर,
जिणपद्म सूरि तिम (अ)न्नगुरु, एवड अतरू भविय सुणि ।
खरतरह गछि मुणवर तिलउ इयु जीह किम सक्कउ थुणि ॥२२॥

नवलक्ख कुलि धणसोहनंदणु सुप्रसिद्धउ,
खेताहि तिय कुखि जाउ बहु गुणह समिद्धउ।
बालकालि निउ नवि माह संजम सिरि रत्तउ,
गोयम चरिय पयास करणु इणि कालि निरुत्तउ।
जिणपदम सूरि पट्टुद्धरणु, वयरसाह उन्नति करु।
जिनलब्धिसूरि भवियहु नमहु, चंदगछि मुणि जुगपवरु ॥२३॥
उदय वडउ संसारि उदय सुरवर नर नंदय,
उदय कितहु गह गयणि उदय सहसकर वंदय।
उदय लगी सवि कज्ज रज्ज सिद्धंत प्रमाणइ,
उदउ अनुपम अचल उदय वलि वलि वखाणइ।
धग धणय पुत्त परियण सयल, उदय(ल)गो जस वित्थरइ।
जिणउदय सूरि इणि कारणिहिं, उदउ सयल संघइ करइ ॥२४॥
जिम चिंतामणि रयण मज्झि उत्तम सलहिज्जइ,
जिम कणयाचल गिरिह मज्झि किरि धुरहि ठविज्जइ।
जिम गंगाजल जलह मज्झि सुपवित्त भणिज्जइ,
जिम सोह गह वत्थु मज्झि ससहरु वन्निज्जइ।
जिम तरुह मज्झि वंछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ।
जिम सूरि मज्झि जिणभद्दसूरि, जुगपहाण गुरु गहगहइ ॥२७॥
जिणि उम्मूलिय मोहजाल सुविसाल पयंडिहिं,
जिणि सुजाणि किवाणि मयणु किउ खंडो खंडिहि।
जसु अगाइ मइ कोह लोह भड किमिहि न मंडिहि,

गय जिम जिणि भव रुक्ख मग्ग तव सुद्दा दक्खिहि।
सो गच्छनाह जिणभद्दगुरु, थविय पूरण कप्पतरु,
कल्लाण वल्लि नववार घर थमइ मज्झि जयवंत चिरु ॥३०॥
जिणि दिणि दुल्लभ सभा सरसर खरतर ज विण दिणि,
पडिबोहिय चामुण्ड फुड्डवि खरतर ज निणि दिणि।
जिणीय वाद छद्मस्थ मामि फुड खरतर तिणिदिणि,

..

रंजिय नरवम नरिंद जिहिं, धारनयर स्यु नरवरा।
जिणभद्रसूरि ते तुझ मवि अखिल खोणि खरतर खरा ॥३१॥
वशारिच (प्रि) का मदारि सांख्य सौगत नैयायक,
मीमांसक सुरु सुखरवादि गुरु गर्व निवारक
उत्सूत्राविधि मार्ग वर्गा देशक यति प्रजा,
करि धम्मगुरा कुल विशाल सौधोक्त सुध्वज।
जन नयन सुधाकर रुचिरकर मदन महीधर कुलिशधर,
जय सूरि मुकुट गत कपट भट, गुर जिणभद्द युगपवर ॥३२॥
सयल गरुय गुण गण गणिंद गण सीस मउड मणि
निय वयणिहिं पर वादि निद्दलइ सुतक्कजणि।
सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ
भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ।
पुरि नयरि देसि गामागरहिं विहरंतउ सो होइ सुगुरु।
सो जयउ जिणसर सासणिहिं, श्रीजिणभद्द मुणिंदवरु ॥३३॥

शासन प्रभावक श्री जिनभद्र सूरि जीकी हस्तलिपि

(सं० १५११ लि० योगविधिका अन्तिम पत्र)

ताम तिमिर धरि फुरइ जाम दिणयरु नहु उग्गइ ।
तां मयगल मयमत्त जाम केसरीय न लग्गइ ।
ताम चिडां चिगचिगं जां न सिचांणउ दुग्गुइ ।
तां गज्जइ घणु गयणि जांम नहु पवण फुरफइ ।
तिम सयल वादि निय निय घरिहिं, तांम गव्व पव्वइ चडइं ।
जिनभद्र सूरि सुह गुरु तणीय, हत्थु न जां कन्निहिं पडइं ॥३४॥
घर पुर नयर निवासि जेय निय गव्व पयासइं ।
वोलावंता वहुय विरुद नहु किंपि विमासइं ।
पहुवि पयड पमाण लखण घर वखाणइं ।
वादि विवाद विनोदि संक निय चित्त न याणइं ।
एरिस जि केवि भुवणिहिं भलइं, वादी मयंगल गउयडइं ।
जिनभद्र सूरि केसरि डरिहिं त धुज्जवि धरणिहिं पडइं ॥३५॥
नाग कुमर नरनाह सुरनाहा जेण तिहुयणि जिन्ना ।
तिहुयण सल्लविरुद्दो विव खाउ एस भूवलए १
भूवलयंमि पसिद्ध सिद्ध जो संकरु भणियउ ।
गोरी पयतलि रुलिय सोय इणि वाणिहि हणियउ ।
दानव मानव असुर मरि हेलइ जो लिद्धउ ।
सो नारायण सोल सहस गोपी वसि किद्धउ ।
हिव एह अधिक भडि वाउलउ, न मुणिलोयहं कलिहिं ।
जिणभद्रसूरि इणि कारणिहि, मयण मल्लु जित्तउ वलिहिं ।३६

दुर्घट घटना घटित कुटिल कपटागम सूत्कट ।
वावाटोत्कट करटि करट पाटन सिंहोद्भट ।
न विट लंपट मुक्त विकट विन तारि भट स्फट,
हाटक सुघट किरीट कोटि घृस्ट क्रम नरा तर जट,
विस्दप वाछित कामघट विघडित दुष्ट घट प्रकट
जिनभद्र सूरि गुरुवर किकट, सितपटसिरोमुकुट ॥३७॥

॥ इति समस्तदेव गुरु पट्पदानि ॥

॥ पद्दराज कवि कृत ॥

॥ जिनोदयसूरि गुण वर्णन ॥

किणि गुणि सोववितवगं, सिद्धिहिका भंति तुम्ह हो मुणिगं ।
संसार फेरि डहणं, दिखा वालाणए गहणं ॥१॥
वालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर संभालियउ ।
अट्ठ कम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गड़ टालियउ ॥
उग्गु तवगु जिण तवउ वितु संमतहि रहिउ ।
संजम फरिसु पहाणु मयण समरंगणि वहिउ ।
जिणउदय सूरि पुय पय नमहि, ति नर मुक्ति रमणी रमइ ।
"पहराज" भणइ तुइ विन्नउं, अजउं भवणु किणि गुणि तवहि॥१॥
लीलयति सिद्धि पावहि जे नर पणमंति एरिसा सुगुरु ।
मुणिवरह वित्त कलिउ नहु मन्नइ अन्न तियस्स ॥१॥
मुणिवर मनुमय कलिउ भत्ति जिणवरह मनावइ
अवर तरुणि नहु गमइ सिद्धिरमणि इह भावइ ।
करइ तवणि वहु भंगि रंगि आगम वखाणइ ।
अवुह जीव वोहंत लेत सुमत्थह नाणय ॥
जिणउदय सूरि गच्छाहवइ, मुख मग्गि धोरि सुपह ।
"पहराज" भणइ सुपसाउ करि, सिव मारग दिखाल महु ॥२॥
सुगुरु शिव मग्ग जूय क्रिय कला विसारह
मंस भखण परिहरउ सुरा सिउं भेउ निवारइ ।
वेसन रव कउ पंथ पाउ पारत्तहि [illegible] ।

चोरी म करि अयाण रति दुगय जिउ जतउ ॥
पर रमणि मिल्हि सत्तय वमणि जीव दय दृढ समहयउ।
जिणउदयसूरि मुहगुरू नमहु, सिद्धि रमणि लील्इ लहउ ॥३॥
सुगुरु सिद्धि इम भणइ किंत्ति तुय तणी थुणिज्जइ।
सुगुरु देव इम भणय लीइ गणहर तुय दिज्जय।
सुगुरु सुविहि गण नित्ति अचउ तुय नामहि लग्गउ।
तुहत पढइ सिद्धत सुगुरु जिनभत्ति विलग्गउ ॥
जिणउदय सूरि जग जुगपवर, तुय गुण वनउ सहसि फणि।
एरसउ सुगुरू हो भवियणह, कहय सिद्धि ण मन्नमणि ॥४॥
कवणि कवणि गुणि थुणउ कवणि किणि भय वखाणउ।
थूलभद्द तुह सील लधि गोयम तुह जाणउ।
पाउ पक मउ मलिउ दलिउ क दप्प निरुत्तउ।
तुह मुनिवर सिरि तिलउ भविय कप्पयरु पहुत्तउ ॥
जिणउदयसूरि मणहर रयण सुगुरु पट्टधर उद्धरणु।
'पहुराज' भणइ इमजाणि करि, फलमनवछिउ सुह करणु ॥५॥
फल मनवछिउ होइ जि किवि तुह नाम पयासय।
तुझ नाम सुणि सुगुरु रोर दारिद पणासइ।
नामगहणि तुय तणय सयल श्रावय उस्सासहि।
•　　॥
जिणउदयसूरि गणहर रयणु सुगुरु पट्टधर उद्धरणु।
"पहुराज' भणइ इम जाणि करि, सयल सघ मगलु करणु ॥६॥

सजम सरमइ निम्मसु, सुगोम निवमर च (घ) रणं ।
सुगुरु गणहररयणं, वंदे जिणसिंह सूरिमहं ॥ ६ ॥
जिणपद सूरि मुणिंदो, पयडिय नीसेस निहऊयणाणंदो ।
मंपइ जिणवर सिरि, वद्धमाण तित्थं पभावेइ ॥१०॥
सिरि जिणपद सूरीणं, पट्ट मि पइट्ठि ओगुण गरिट्ठो ।
जयइ जिणदेव सूरी, निय पन्ना विजय सूरसूरी ॥११॥
जिणदेव सूरि पहोदय, गिरि चूडाविभूमणे भाणू ।
जिण मेरु सूरि सुगुरु, जयउ जए सयल विघ्ननिहिं ॥१२॥
जिणहित सूरि मुणिंदो, तप्पजेरविय कुमुयवण चंदो ।
मयणकरि कुम विहडण, दुद्धरपंचाणणो जयउ ॥१३॥
सुगुरु परंपरा गाहा, कुलय मिणजो पढेइ पच्चूसे ।
सो लहइ मणोवछिय, सिद्धि सव्वंपिभव्वजणे ॥१४॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि छप्पय ॥

गयण थकी जिण कुल्ह[१] आणि ओघइ उत्तारी ।
कियो महिप[२] स्युं वाद सुणयउ[३] नगरी नरनारी ॥
पातिसाह[४] रजियउ साथि वड वृक्ष चलायउ ।
शत्रुंजय[५] राइण सरिस, वरिस दुद्धइ झड ल्यायउ ॥
जिण दोरडइ मुद्रिका प्रकट कीय, जिन प्रतिमा बुल्लिय वयण ।
जिणप्रभसूरि खरतर सुगच्छि, भरहखेत्र मंडिय रयण ॥१॥
॥ इति गुरावली गाथा कुलक समाप्तम् ॥

१ नालि, २ मुख, ३ नयर पिक्खइ, ४ दिल्लीपति सुरताण पूछि

खरतरगच्छ पट्टावली

प्रथम श्री(धवल) राग

धन[1] धन जिण (शासन?) पातग नाशन, त्रिभुवन गरुअउं गहगहए ।
जासु[2] तणउ जसुवाउ गंगाजल, निरमल महियले महमह[3] ए ॥१॥
श्रीवयरस्वामी गुरु अनुक्रमि चिहु दिसे, चंद्रकुल[4] चउपट जाणिइए ।
गच्छ चउरासीय माहि अति गरुअउ, खरतरगच्छ वक्खाणिइए ॥२॥

छंदः—

वखाणियइ गिरि मांहि गरुअउ, जेम मेरु महीधरो ।
मणि मांहि गिरूयउ जेम सुरमणि, जेम ग्रह गणि दिणयरो ॥
जिम देव दानव माहि गरुअ, गज्जए अमरेसरो ।
तिम सयल गच्छह मांहि गरुअउ, राजगच्छ सु खरतरो ॥३॥

राग देशाखः—

खरतरगच्छहिं खरउ ववहार, खरउ आचार मुनि आचरइ ए ।
खरउ सिद्धांत वखाणेइ सुहगुरु, खरउ विधि मारग वापरइ ए ॥ ४ ॥
तसु गच्छ[5] मण्डण पाप विहंडण, जे हुआ सुविहित सिरोमणि ए ।
श्री जयसागर गुरु उपदेसिहिं, गाइसु खरतर गच्छ धणी ए ॥ ५ ॥

---

१ श्रीजिनशासन २ ताह ३ गहगहए ४ कुभवउपट ५ गछ

छंदः—

गुरु गच्छ धणी देउ हरषि गाइसु, प्रथम हरिभद्र सूरि गुरो ।
तसु वंसि क्रमि उदयउ मुणीसर, देवसूरि सुगणहरो ॥
सिरि नेमिचन्द मुणिंद सुंदर, पाटि तसु उजवाल ए ।
सिरि सूरि उज्जोयण महीसर, पाव पंक पखाल ए ॥ ६ ॥

रागदेशाग्र छाया

आयुष ऊपरि मास छ सीम, गाजिउ सूरिमंत्र लेइ (य) नीम ।
पायाउद पहुतउ धरणिंदो, प्रगटियो वयमय आदिजिणंदो ॥ ७ ॥
मिथ्याती जे जोगी (य) जडिया, गुरुगुण अमिसइ ते महुनडिया ।
जिणशासन हूउ जयवाउ,¹ विमल मगइ मनि आणंद आउ ॥ ८ ॥
विमल सुवसहीय विमलि करावो (य),
जसु उत्तमसिद्धि (य) त्रिभुवनि भावो ।
जाणि कि नंदीसर परसादो, पस्तरि देउउ सिसि जसवादो ॥९॥

॥ छंदः ॥

असुराउ जसु उवरासि लीधउ, विमलवर मंत्रीसरं ।
कारविय निरुपम विमल वसही, गरुअगिरि आबू सिरे ॥
सिरि सूरि मंत्र प्रभाव प्रगटिय, सुविहित मग्ग दिवायरो ।
सिरि वद्धमाण मुणिंद नंदउ, सयल गुण रयणायरो ॥१०॥

॥ राग राजवल्लभः ॥

गूजर देसिहिं जाणियइ, पाटण अणहिलपुर नामी ए ।
राज करइ गजपति तिहां सिरि, दुल्लह नरवइ नामो ए ॥११॥
चउरासी मठपति तिहां, आचारिज छइ तिणि कालि ए ।
जिणवर मंदिरि ते वसइ, इक सुविहित मुनिवर टालि ए ॥१२॥

---

१ वाद ।

सुचिहित नइ मठपति हुउ, ग (?रा)यंगणि वसिहि विवादू ए।
सूरि जिणेसरि पामिउ, जग देखत जय जयवादू ए ॥१३॥
दंससय चउवीसहिं गए, उथापिउ चेइयवासू ए।
श्रीजिनशासनि थापिउ वसतिहि, सुविहित मुनि(वर)वासू ए ॥१४॥
गुरू गुणि रंजिउ इम भणइ श्री मुखि दुल्लह नरनाहू ए।
इणि कलिकालिहि खरहरा, चारित्रधर एहजि साहू ए ॥१५॥

॥ छन्दः ॥

खरहरा चारित्रधर गुरु, एहु विरुद प्रकासिउ।
उथप्पिय[१] चियवास सुविहिय, संघ वसहि निवासिउ।
रजइउ जिणि राउ दुल्लह, जयउ सूरि जिणेसरो।
तसु पाटि सिरि जिणचन्द गणहर, भविय लोअ दिणेसरो ॥१६॥

॥ राग धन्याश्रीः ॥

श्रीजिन शासन उधरिउंए,
नव अंगए तणइ[२] वखानि, श्री अभयदेवसूरिजुगपवरो
प्रगटिऊ एथंभण पास, श्रीजयतिहुअणि जेणे गुरो ॥१७॥

॥ छन्दः ॥

गुरु गरुअ खरतर गच्छि उदयउ, अभयदेव गणेसरो।
जसु पायत्र वंदइ देवि पदमावती, धरण सुरेसरो ॥
निय वयण सीमंधर जिणेसर, जासु गुण वक्खाण ए।
किम मु सरीखउ मूढ़ ते गुरु, वरणवी जगि जाण ए ॥१८॥

---

१ उवरियपियवास २ वणइ।

जाणियइ सुविहित सिरोमणि ए।
तसु तण ए पाटि सिंगार, पुर् विहि "पिंडविशुद्धि" करो।
इणि जुगी ए एक जोगिंद, श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरो ॥१६॥

छंदः—

गुरु गुण तणउ भडार गणहर, मयल संयम भर धरो।
वागडी देसि वखाणि जिणधम, दसमहस श्रावक करो।
चीतउड उपरि देवि चामुंड, प्रसिद्ध जिणि प्रतिबोधिया।
तिणि सूरि जिण वल्लह जईसरि, करण लोय न मोहिया ॥२०॥
श्रीजिनदत्त सूरि गुरु नमउ ए।
अम्बिका ए देवि आदेसि, जाणियइ चिहु जुगे जुग प्रधान।
सयंभरी ए राय इइ जेहि, दीधउ श्रीजिनधर्म दान ॥२१॥

छंदः—

जिनधर्म दानिहि पनरसय मुनि, दीखिया जिण निज करे।
वग्वाण सुणिवा देव आवइ, तेत्र सारइ बहु परे॥
चउसट्ठि योगिणी नामि देवी, आसु आण न खंडए।
तसु गुरु तणइ सुपसाइ नंदउ, एहु खरतर संघ ए॥२२॥
श्रीजिनचंद्र सूरि नर रयण।
नरमणी ए जासु निलाडि, झलहलइ जेम गयणहिं दिणंदो।
तसु तणइ ए पाटि प्रचंड, श्रीसूरिजिनपति सुरिंदो ॥२३॥

छंदः—

सर सूरिइन्द मुणिद जिनपति, श्रीजिन[1] शासनि गज्ज ए।
त्री वादइ जयपताका, विरुद जसु जगि छज्ज ए॥
अहंसि(जि)रि जिणेसर सूरि वंदउ, जिण प्रबोह मुनीसरो।
कलिकाल केवलि विरुद गणहर, तयणु जिणचंद सूरि गुरो॥२४॥

राग धन्याश्री भासः—

साहेलीए नयरि देरउरि सुरतरु, सुगुरु वर श्रीजिनकुशल सुरे।
साहेली ए थूभिहिं प्रणमइ तसुपय, भवियजन[2] भगति ऊांति सूरे।
साहेली ए तीह तणे जाइहि दोहग, दुरिअ दालिद दुहसयल दूरे।
साहेलीए तीह तणइ मंदिर विलसइ, संपति सय वरसु भरि पूरे॥२५॥

छंदः—

भरि पूरि आवइ सयल संपय, भविय लोयह नितु घरे।
जे थूभि श्री जिनकुसल सुह गुरु, पय नमइ देराउरे।
तसु पाटि सिरि जिणपदम गणहर, नमउ पुहवि प्रसिद्धउ।
"कूर्चालि सरसती" विरुद पाटणि जासु संघहिं दिद्धउ॥२६॥
साहेली ए इणिगच्छि लब्धिहि गोयम गह गहइ श्रीजिनलब्धि सूरे।
साहेली ए चन्द्र गच्छे पूनिमचन्द जिम सोह ए श्रीजिनचंद सूरे॥
साहेली ए श्रीसंघ उदयकर चंदउ नदेन श्रीजिनउदय सूरे।
साहेली ए सूरि पुरंदर सुंदर गुरुअउ श्रीजिनराज सूरे॥२७॥

---

१ जैनपति २ जे

माहेली ए निनु नवतत्व वखाण ए जाण ए सयल सिद्धान्त सारो।
साहेली ए मगहर रूपि अनोपम सजम निरमल गुण भंडारो।
माहेली ए गोयम जंनु कि अभिनवउ अभिनवउ थूलभद्द यवर गुरि।
साहेली ए संपइ प्रणमउ गच्छपति श्रीजिनभद्रसूरि जुग पवरो ।२८।
माहुमालदे निलउ वछराज साह मल्हारो।
स्याणीय कुखहि अवयरिउ छाजइ खरतर गच्छ मारो।
साहेली ए सपय पणमउ गच्छपति श्रीजिनचन्द्र सूरि युगपवरो।
दसणि भविषण मोहए सोहइ सूरि गुणरयण धरो ॥२६॥

छंदः—

जुगवर तणा गुणरयण पूरी गम्भ एह गुरावली।
श्रीसधि भाविहि सामले ती मन तणी पूरउ रली॥
आराधनउ विधि खरतर स .. . ... ।
इम भणइ भगतिहि सोमकुंअर जाम चद दिणदउ ॥३०॥
इति श्रीविधिपक्षालकार श्रीखरतर गुरुणा गुर्वावली समाप्ता॥

—*—

नोट —श्रीजिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकेमें २६ वीं गाथा अतिरिक्त मिली है।

ज्ञात होता है उस प्रतिके लिखने के समय जिनचन्द्रसूरि विद्यमान होंगे अतः यह १ गाथा उसीमे वृद्धि कर दी है।

१ ६द्द गणधर गह्यउ

श्रीभावप्रभसूरि गीतम्

समरवि सुहगुरु पाय अहे, ज(सु) दरसणि मनु उल्हसइ ए।
'थुणीयइ मुणिवर राय अहे, कलियुगे जसु महिमा वसइ ए ॥१॥
निरमल निय जस पूरि अहे, चन्दन वन जिम महिमहइ ए।
श्रीय भावप्रभसूरि अहे, श्रीयखरतरगछे गहगहइ ए ॥ २ ॥
अमिय समाणीय वाणि अहे, नवरस देसण जो करइ ए।
समय विवेक सुजाणि अहे, समकित रयण सो मनि धरइए ॥३॥
पंच महव्वयधार अहे, पंच विषय परि गंजणू ए।
पालय पंच आचार अहे, पंचमि (ध्यात्व) भंजणू ए ॥ ४ ॥
भंजणु मोह नरिंदो अहे, मयणु महाभडो वसि कीउ ए।
वसि कीउ कोहु गयंदो अहे, मानु पंचाननु वन (स?)कीउ ए ॥५॥
चमकीउ दलिउ कषाय अहे, लोभ भुजंगमु निरुजणिउ ए।
निजणिउ अरि रागाय अहे, सयल सुरा सुरे सेवीयउ ए ॥ ६ ॥
सेवइ जसु पय साध अहे, पंकय महूअर रुण उणइ ए।
धन धनु जे नरनारि अहे, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ॥७॥
मंगल लछि विलास अहे, पूरइ ए वंछिय सुहकरू ए।
निरुवम उवसम वास अहे, रंजण भविअण मुणिवरू ए ॥ ८ ॥
नव रस देसण वाणि अहे, घण जिम गाजइ ए गुहिर सरे।
मयण दवानल वारि अहे, नागिहिं जलि वरिसइ सुखरे ॥ ६ ॥
विहरइ सुविही याचार अहे, फास कुसुम जसु निरमलउ ए।

मान्हूअ साख विशाल अहे, लूणिग हु ठि महियलि निलउ ए ॥१०॥
लवर्णिहिं गोयम सामि अहे, सीयलिहिं साधु सुदरशनु ए।
सखड साह मन्हार अहे, राजल देविय नदनु ए ॥११॥
निरमल गुण भडारो अहे, श्रीय जिनराजसूरे शीस वरो।
सयम सिरि उरि हारो अहे, सागरचन्द्रसूरे पाटु धरो ॥१२॥
सुमच्छ-सुरतरु तेम अहे, सुकृत रसो भरि पूरीउ ए।
गुणमणि रयणिहिं जेम अहे, लवणिम मंजरि अकूरीउ ए ॥१३॥
दिणियर जिम सविकासो अहे, जस कीयरनिगुण विस्तरीए।
जगि जयवतउ सूरे अहे, पूरव गुर सवि उद्धरी ए ॥१४॥
उद्धरिय धीरिम मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगछि मुख मडणो।
यच समतिहिं जिहु गुपिति गुपतउ, दुरित भवभय खंडणो।
सिरि आइरिय सुवर कानि दिगियर, भविक कमल सविकासणो।
जयवतु श्रीय गुरु भावप्रभसूरि, जाम ससि गयणगणो ॥१५॥

॥ इति श्रीभदाच यांणा गीतम् ॥

श्रीरागि ढाल ॥ छ ॥

श्रीकल्याणचन्द्रगणि कृत
श्रीकीर्तिरत्नसूरि चउपइ

सरसति सरस वयण दे देवि, जिम गुरु गुण बोलिउं संखेवि ।
पीजइ अमीय रसायण बिंदु, तहवि सरीरिहिं हुइ गुण वृन्द ।१।
मरु मंडण पयडउ धण रिद्धि, नयर महेवउ नर बहु बुद्धि ॥
ओसवंश अति घण तिणि ठाण, वसइ सुरद्रुम जिम धणदाण ।२।
तहि श्री संखवाल गुणवंत, उदयवंत साखा धनवंत ।
कोचर साह तणइ संतान, आपमल्ल देपा बहु मानि ॥ ३ ॥
सीलिहिं सीता रूपइ रंभ, दान देइ न करइ मनि दंभ ॥
देप घरणी देवलदे नारि, पुत्त रयण तिणि जन्मा च्यारि ॥४॥
लखउ भादउ साह सुरंग, केल्हउ देल्हउ बंधव चंग ॥
धनद जेम धनवंत अनेक, धर्मकाजि जसु अति सविवेक ॥५॥
चउदह गुणपचासइ जम्मु, दिखिउ देल्ह त्रेसट्ठइ रंमु ॥
श्रीजिनवर्द्धन सूरिहि शाख, कीर्तिराइ सीखविय सुपात्र ॥६॥
हिव वाणारीय पद सत्तरइ, पाठक पद असीयइ ऊधरइ ॥
तयणंतरि आयरिह मंतु, जोगि जाणि गुरि दीधउ मंतु ॥७॥
लखउ केल्हउ करइ विस्तारि, उछव जेसलमेर मंझारि ॥
श्रीजिनभद्रसूरि सत्ताणवइ, किया श्री कीर्तिरयण सूरिवइ ॥८॥
वादी मइगल ता गड़ अड़इ, जां गुरु केसरि दृष्टि न चड़इ ॥
जब किरि अम्ह गुरु बोलइ बोल, वादी मूकइ मांन निटोल ॥९॥

मान्हूअ सारु विशाल अहे, ऊगिग कुलि मंदिय लिनिलउ ए॥१०॥
लबधिहिं गोयम सामि अहे, सीयलिहिं मावु सुदंसणु ए।
सम्वह साह मन्हार अहे, राजल देविय नदंनु ए॥११॥
निरमल गुण भडारो अहे, श्रीय जिनराजसूरि शीस वरो।
संयम सिरि उरि हारो अहे, सागरचन्द्रसूरि पाटु धरो॥१२॥
सुमनसु सुरतरु तम अहे, सुगुरु रसो भरि पूरीउ ए।
गुणमणि रयणिहिं जेम अहे, लखणिम मंजरि अंकूरीउ ए॥१३॥
दिणियर जिम सविकासो अहे, जस कीयरतिगुण विसतरीए।
जागि जयवतउ सूर अहे, पूरव गुरु सवि उद्धरी ए॥१४॥
उद्धरिय धीरिमि मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगछि मुगुमडणो।
पंच समतिहिं त्रिहुं गुपिति गुपतउ, दुरिल भवभय खंडणो।
सिरि आइरिय मुवर कांति दिणियर, भविक कमल सविकासणो।
जयवंतु श्रीय गुरु भावप्रभसूरि, जाम ससि गयणगणो॥१५॥

॥ इति श्रीवंदन याणा गीतम्॥
श्रीरागि ढाल॥ छ॥

श्रीभक्तिलाभोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनहंससूरि गुरुगीतम् ॥

सरसति मति दिउ अम्ह अतिघणी, सरस सुकोमल वाणि
श्रीमज्जिनहंससूरिगुरुगाइसिउं, मन लीणउ गुण जाणि ॥१॥सर०
अति घणीयदियउ मति देव सरसति, सुगुरु वंदण जाईइ ।
प्रहउठि श्रीजिनहंससूरि गुरु, भाव भगतिहि गाईइ ॥२॥
पाट उत्सव लाख वेची (पिरोजी) कर, करमसिंह करावए ।
गुरु ठामि ठामि विहार करता, आगरा जव आवए ॥३॥
तव हरखिउ डुंगरसी घणो, वंधव वली पामदत्त ।
श्रीमाल चतुर नर जाणियइ, खरतर गुरुगुण रत्त ॥४॥
तव हरखिउ डुंगरसी करावइ, सुगुरु पइसारा तणो ।
वहु परें सजाई सहु सुणज्यो, वात ए छे अति घणी ॥५॥
पाखरथा हाथी पादसाह, सुगुरु साम्हो संचरइ ।
गुरु पाय हेठइ कथीपानड, पटोला वहु पाथरइ ॥६॥
पातसाह साहमो आविउ, उंवर खान वजीर ।
लोक मिलिया पार न जाणियइ, मोरइ काच कपूर ॥७॥
आवीया साहमा पादसाह सवे वाजा वाजए ।
जेण सरणाइ जह्लरि संख वाजइ, ससरिअ अंवर गाजए ॥८॥
मोति वधावइ गीत गावइ, पुण्य कलस धरइ सिरे ।
सिंगारसारा सव नारी करइ, उच्छव घर घरे ॥९॥

जहि मस्तकि गुरु नियकरु ठवइ, तइ घरि नवनिद्धि संपइ हवइ ।
मुह गुरु जह भणावइ सीस, त पडिन हुइ विस्वा वीस ॥१०॥
जिहां जिहां गुणवंता रहइ, तिहां श्रावक रिधिहि गहगहइ ॥
गाए लगार न अविचल खेम, लखधिवंत जणिजइ एम ॥११॥
पनरह पंगवीसइ वरसमि, बइसाखा वदिदिण पचमि ।
पचवीस दिण अणसण पालि, सरगि पहुना पाव पखालि ॥१२॥
रयिजिम झगमगि झिगमिग करड, नवइ तत्र तनु अणसण धरइ ।
अतिसय जिम तित्थकरतणा, गुरु अनुभवि हुया अतिघणा ॥१३॥
सुह गुरु अणसण सीधउ जाम, वीर विहार देविहि ताम ।
झल हलत दीठो पुण्य कोय, जडिय किमाडिहि लोक प्रसिद्धि ॥१४॥
जिम उदयाचलि उगउ भाणु, तिमपूरव दिसि प्रगट प्रमाणु ।
थापिउ थुभ सुनिश्चलठाण, श्री वीरमपुर उत्तम ठाणि ॥१५॥
श्रीखरतर गणि सुरतर राय, अहि निसि किर्तिरयण सूरि पाय ।
आगाहु भवियणइकचित्ति, त मण वछित पामइ झत्ति ॥१६॥
चिन्तामणि जिम पूरइ आस, पूजइ ज मनि धरिय उल्लास ।
तिणि कारणि गुरु चरण त्रिकाल, सेवइ नर नारि भूपाल ॥१७॥
आ कीर्तिरत्न सूरि चउपइ, प्रहउठी जे निश्चल थइ ।
भणइ गुणइ तिहि काज सरति,"कल्याणचन्द्र" गणि भगतिभणति ॥१८॥

॥ इति श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ ॥

सं० १६३७ वर्षे शाक १५८२ प्र० ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्या तिथौ गुरुवासरे । श्रीमहिमावती मध्ये श्रीबृहत्खरतर गच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये सगवाल गोत्रीय संघमार धुरन्धर साहवेल्हात-त्पुत्ररत्न धन्ना तत्पुत्ररत्न सा० वरसिंघ तत्पुत्र सा० फुबरा तत्पुत्र सा० नवा तत्पुत्र सा० सुरताण तत्पुत्ररत्न सा० खेतसीह भ्रातृ साह थापसी पुस्तिका कारापिता पुत्र पुत्रादि चिरंनंद्यात् । शुभं भवतु ।

[श्रीपूज्यजीके संग्रहस्य गुटकाके पृ० ४२ से]

श्रीभक्तिलाभोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनहंससूरि गुरुगीतम् ॥

सरसति मति दिउ अम्ह अतिघणी, सरस सुकोमल वाणि
श्रीमज्जिनहंससूरिगुरुगाइसिउं, मन लीणउ गुण जाणि ॥१॥सर०
अति घणीयदियउ मति देव सरसति, सुगुरु वंदण जाईइ।
प्रहउठि श्रीजिनहंससूरि गुरु, भाव भगतिहि गाईइ ॥२॥
पाट उत्सव लाख वेची (पिरोजी) कर, करमसिंह करावए।
गुरु ठामि ठामि विहार करता, आगरा जव आवए ॥३॥
तव हरखिउ डुंगरसी घणो, बंधव वली पासदत्त।
श्रीमाल चतुर नर जाणियइ, खरतर गुरुगुण रत्त ॥४॥
तव हरखिउ डुंगरसी करावइ, सुगुरु पइसारा तणी।
बहु परें सजाई सहु सुणज्यो, वात ए छे अति घणी ॥५॥
पाखरथा हाथी पादसाह, सुगुरु साम्हो संचरइ।
गुरु पाय हेठइ कथीपानइ, पटोला बहु पाथरइ ॥६॥
पातसाह साहमो आविउ, उंबर खान वजीर।
लोक मिलिया पार न जाणियइ, मोरइ काच कपूर ॥७॥
आवीया साहमा पादसाह सवे वाजा वाजए।
जेण सरणाइ झल्लरि संख वाजइ, ससरिअ अंबर गाजए ॥८॥
मोति वधावइ गीत गावइ, पुण्य कलस धरइ सिरे।
सिगारसारा सव नारी करइ, उच्छव घर घरे ॥९॥

रपटका सहित तबोल दियउ, वचिउ वित्त अपार।
इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिओ जय जयकार ॥१०॥
तबोल स्थिउ सुजस लीधउ, इसी वात घणो सुणी।
श्रीसिकन्दर बादशाह, वडइ निहीनउ घणो ॥११॥
जिसी जिनप्रभसूरि सिरामति, पादशाहे जणियइ।
ष्थी सहु लोकमाही, घणु घणु वखाणीयइ ॥१२॥
दीवान माहे तेडावियो, कीधी पूज बहुत।
दखाडी सिरामती आपणि, गुरुया गुर गुणवन्त ॥१३॥
दीवान माहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ।
जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
श्रीसिकन्दर चित्त मानियउ, सिरामत काइ कही।
पाचमइ वदी वासरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
वदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
गुरु मोटा करम तणा धणी, जाणिए इणउ इहनाणि ॥१६॥
वदि छोडि मोटउ विरुदलधउ, बादशाहे परखिया।
श्रीपासनाह जिणद तुट्ठउ, सघ सकलइ हरखीया ॥१७॥
श्रीभक्तिलाभ उवझाय बोलइ भगति आणी अति घणी।
श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्

श्री पद्ममन्दिर कवि कृत

॥ श्री देवतिलकोपाध्याय चौपई ॥

पास जिणेसर पय नमुं, निरुपम कमला कंद ।
सुगुरुथुणंता पामियइ, अविहड सुख आणंद ॥१॥
भारहवास अजोध्या ठाम, वाहड गिरि वहुधण अभिराम । ,
चवदहसइ चम्माल प्रसिद्ध, निवसइ लोक घणा सुसमृद्ध ॥२॥
ओसवाल भणसाली वंश, निरमल उभय पक्ष ।
करमचंद सुहकरम निवास, तसुघरि जनम्या गुणह निवास॥३॥
तासु घरणि सोहण जाणियइ, सील सीत उपम आणीयइ ।
पनरहसइ तेत्रीसइ वास, तसु घरि जनम्या गुणह निवास ॥४॥
दीधउ जोसी देदो नाम, अनुक्रमि वाधइ गुण अभिराम ।
रामति रमतउ अति सुकमाल, माइ ताइ मन मोहइ बाल ॥५॥
इगतालइ संजम आदरि, पाप जोग सगला परिहरी ।
भणीय सयल सिद्धांतां सार, छासठइ पद लह्यो उदार ॥६॥
श्रीदेवतिलक पाठक गहगहइ, महियलि महिमा सहुको कहइ ।
देस विदेशे करी विहार, भवियण नइ कीधा उपगार ॥७॥
ईसनयण नभरस ससि वास, सेय पंचमी मिगसर मास ।
करि अणशण आराहण ठाण, पाम्यउ अनिमिष तणउ विमाण ॥८॥

जेसलमेर थुंभ आणियइ, प्रगट प्रभाव पुहवि माणीयइ ।
दरसण दीठइ अति उछाह, समरणि सवि टालइ दुसदाह ॥९॥
खास सास जर एमुहज रोग, नाम लियइ नवि आए सोग ।
अधिक प्रताप सलहियइ आज, जो प्रणमइ तसु सारइ काज ॥१०॥
थाल विसाल थापना करी, निरमल नेवज आगलि धरी ।
केसरि चन्दन पूज रसाल, विरची चाढइ कुसमह माल ॥११॥
मृगमद मेलि अगर घनसार, भोग ऊगाहउ अतिहि उदार ।
करि साथियउ अखंड तदु लइ, सुगुणगान कीजइ निह वलइ ॥१२॥
चित्त तणी सहि चिंता टलइ, मनह मनोरथ ततखिण फलइ ।
खरतरगणगयणिहि ससि समउ, भाविकलोक करिजोडी नमउ ॥१३॥
गुरु श्रीदेवतिलक उवझाय, प्रणम्यइ वाधइ सुह समवाय ।
अरि करि केसरि विसहर चोर, समर्यउ असिव निवारइ घोर ॥१४॥
ए चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरु गुण थुणइ ।
कहइ "पद्ममदिर" मनशुद्धि, तसु थाए सुख संपति रिद्धि ॥१५॥

मुनि हर्षकुल कृत

महो० श्रीपुण्यसागर गुरु गीतम्

राग:---सूहव

श्रीजगगुरु पय वंदीयइ, सारद तणइ पसायजी।
पंचइंद्रिय जिणि वशिकीय, ते गाइसु मुणिरायजी ॥१॥
मन शुद्धि भवियण भावियइ श्रीपुण्यसागर उवझाउ जी।
पालइ शील सुदृढ़ सदा, मन वंछित सुखदाउ जी ॥
विमल वदन जसु दीपतउ, जिम पूनम नउ चंद जी।
मधुर अमृत रस पीवता, थाइ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥
दस विधि साधु धरम धरइ, उपशम रस भण्डारो जी।
क्षमा खड्ग करि जिन हण्यउ, हेलइ मदन विकारो जी ॥३॥मन॥
ज्ञान क्रिया गुणि सोहतउ जसु, पणमइ नरवर राउ जी।
नामइं नव निधि संपजइ, सेवउ मुनिवर पाउ जी ॥४॥म०॥
धन उत्तम दे उरि धरयउ, उदयसिंह कुलि दिनकार जी।
जिन शासन मांहि परगड़उ, सुविहित गच्छ सिणगार जी ॥५॥म०॥
श्रीजिनहंस सूरिसरइ सइ हथि दीखिय शीस जी।
हरषी "हरप कुल" इम भणइ, गुरु प्रतपउ कोड़ि वरीस जी ॥६॥म०॥

---*---

श्री जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास

दोहा :—राग असावरी

जिनवर जग गुरु मन धरि, गोयम गुरु पणमेसु ।
सरस्वती सद्गुरु मानिधइ श्री गुरु रास रचेसु ॥ १ ॥
वात सुणो जिम जन सुखइ, ते तिम कहिस जगीस ।
अधिको ओछो जो हुवइ, कोप(प?) करो मत रीस ॥ २ ॥
महावीर पाटइ प्रगट, श्री सोहम गणधार ।
ताम पाटि चउसट्ठिमइ, गच्छ खरतर जयकार ॥ ३ ॥
सवत सोल वारोत्तरइ, जैसलमेरु मझार ।
श्री जिन माणिक सूरि ने थापिउ पाट उदार ॥ ४ ॥
मानियो राउल माल दे, गुण गिरुओ गणधार ।
महीयलि जसु यश निरमलो, कोय न लोपइ कार ॥ ५ ॥
तेजि तपइ जिम दिनमणि श्री जिनचन्द्र सूरीश ।
सुरपति नरपति मानवी सेव करइ निश दीश ॥ ६ ॥
युगप्रधान जगि सुरतरू सूरि शिरोमणि एह ।
श्री जिन शासनि सिरतिलो, शील सुनिरमल देह ॥ ७ ॥
पूरव पारण पामियो, खरतर विरुद अभग ।
सवत सोल सनोतरे, उजवालइ गुरु रगि ॥ ८ ॥
साधु विहार विहरता, आया गुरु गुजराति ।
करइ चउमासो पाटणे, उच्छव अधिक विख्यात ॥ ९ ॥

युगप्रधान जिनचन्द्र सूरिजीको हस्तलिपि

(सं० १६११ लि० कर्मस्तव वृत्तिका अन्तिम पत्र)

चालि राग सामेरी

उच्छव अधिक विख्यात, महीयलि मोटा अवदात ।

पाठक वाचक परिवार, जूथाधिपति जयकार ॥ १० ॥

इणि अवसरि वातज मोटी, मत जाणउ को नर खोटी ।

कुमति जे कीधउ ग्रन्थ, ते दुरगति केरउ पंथ ॥ ११ ॥

दठवाद घणा तिण कीधा, संघ पाटण नइ जसलीधा ।

कुमति नउ मोड़िउ मांन, जग मांहि वधारिउ वांन ॥ १२ ॥

पेखी हरि सारंग त्रासइ, गुरु नामइ कुमति नासइ ।

पूज्य पाटण जय पद पायउ, मोतीड़े नारि वधायउ ॥ १३ ॥

गामागर पुरि विहरंता, गुरु अहमदाबाद पहुंता ।

तिहां संघ चतुर्विध वंदइ, गुरु दरसण करि चिर नंदइ ॥ १४ ॥

उच्छव आडम्बर कीधउ, धन खरची लाहउ लीधउ ।

गुरु जांणी लाभ अनन्त, चउमासि करइ गुणवन्त ॥ १५ ॥

चउमासि तणइ परभाति, सुह गुरु पहुंता खंभाति ।

चउमासि करइ गुरुराज, श्री संघ तणइ हितकाज ॥ १६ ॥

खरतर गच्छ गयण दिणंद, अभयादिम देव मुणिंद ।

प्रगट्या जिण थंभण पास, जागइ अतिसइ जसवास ॥ १७ ॥

श्री जिनचन्द सूरिन्द, भेटयउ प्रभु पास जिणन्द ।

श्री जिन कुशल सुरीस, वंदया मन धरि जगीस ॥ १८ ॥

हिव अहमदाबाद सुरम्म, जोगीनाथ साह सुधम्म ।

शत्रुंजय भटेणरंगि, तेड्या गुरु वेगि सुचंगि ॥ १९ ॥

मेल्यो मनुमन गुरु माथि, परघल खरचइ निजआथि ।
　　चाल्या भेटण गिरिराज, संघपति सोमजी सिरताज ॥ २० ॥

राग मल्हार दोहा

पूर्व पश्चिम उत्तरउ, दक्षिण चहु दिसि जाणि ।
　　संघ चालिउ सेत्रुंज भणी, प्रगटो महीयलि वाणि ॥ २१ ॥
विक्रमपुर मण्डोवरउ, सिन्धु जेसलमेर ।
　　सीरोही जालोर नउ, सोरठि चापानेर ॥ २२ ॥
संघ अनेक तिहा आविया, भेटण विमल गिरिन्द ।
　　लोकतणी संख्या नहीं, माथि गुरु जिणचन्द ॥ २३ ॥
चोर चरड़ अरि भय हुया, वडी आदि जिणंद ।
　　कुशले निज घर आविया, मानिय श्री जिनचन्द ॥ २४ ॥
पूज्य चउमासो सूरतइ, पहुता वर्षा कालि ।
　　संघ सकल हर्षित थयउ, फलो मनोरथ मालि ॥ २५ ॥
वली चौमासो गुरु कीयउ, अहमदावादि रसाल ।
　　अवर चौमासा पाटणे, कीयो मुनि भूपाल ॥ २६ ॥
अनुक्रमि आव्या खम्भपुरि, भेटण पास जिणंद ।
　　रूप करइ आदर थयउ, करउ चउमासि मुणिंद ॥ २७ ॥

राग धन्याश्री० ढालजलालानी

तिह विक्रमपुर ठाम, राजा रायसिंह नाम ।
　　कर्मचन्द तसु परधान, मंत्रउ बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥
ओस महा वंश हीर, बच्छावत वड वीर ।

सुन्दर सकल सोभागी, खरतर गच्छ गुरु रागी ।
बड़ भागी बलवन्त, लघु बंधव जसवन्त ॥ ३० ॥
श्रेणिक अभय कुमार, तासु तणइ अवतार ।
मुहतो मतिवन्त कहियइ, तसु गुण पार न लहियइ ॥ ३१ ॥
पिसुण तणइ पग फेर, मुंकी वीकम नयर ।
लाहोरि जईय उच्छाहि, सेव्यो श्री पातिशाह ॥ ३२ ॥
मोटउ भूपति अकबर, कउण करइ तसु सरभर ।
चिहुं खण्ड वरतिय आण, सेवइ नर राय रांण ॥ ३३ ॥
अरि गंजण भंजन सिंह, महीयलि जसु जस सीह ।
धरम करम गुण जांण, साचउ ए सुरताण ॥ ३४ ॥
बुद्धि महोदधि जाणी, श्रीजी निज मनि आणी ।
कर्मचन्द तेड़ीय पासि, राखइ मन उलासि ॥ ३५ ॥
मान महुत तसु दीधउ, मन्त्रि सिरोमणि कीधउ ।
कर्मचन्द शाहि सुं प्रीत, चालइ उत्तम रीति ॥ ३६ ॥
मीर मलक खोजा खांन, दीजइ राय राणा मांन ।
मिलीया सकल दीवांणि, साहिब बोलइ मुख वाणि ॥ ३७ ॥
मुंहता काहि तुझ मर्म, देव कवण गुरू धर्म ।
भंजउ मुझ मन भ्रन्ति, निज मनि करिय एकन्ति ॥ ३८ ॥

राग सोरठी दोहा

वलतउ मुहतउ विनवइ, सुणि साहब मुझ वात ।
देव दया पर जीव ने, ते अरिहंत विख्यात ॥ ३९ ॥

क्रोध मान माया तजी, नहीं जसु लोभ लगार ।
उपशम रस में झीलता, ते मुझ गुरु अणगार ॥ ४० ॥
शत्रु मित्र दोय सारिखा, दान शीयल तप भाव ।
जीव जतन जिहां कीजिय, धर्मह जाणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मइ जाण्या हइ बहुत गुरु, कुण' तेरइ गुरु पीर ।
मन्त्रि भणइ साहिब सुणउ, हम खरतर गुरु धीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रगट हइ, श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हइ सुगुण नर, श्रीजिनचन्द सुरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हरावित, निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्यानिधि आगर, गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
सभलि अकबर हरखियउ, कहा हइ ते गुरु आज ।
राजनगर छइ साम्प्रतइ, सांभलि तु महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

वात सुणी ए पातिशाह, हरखियउ हीयइ अपार ।
हुकम कियो महता भणी, तडि गुरु लाय म वार ॥ ४६ ॥
मन वार लावइ सुगुरु तडण भेजि मेरा आदमी ।
अरदास इक साहिब आगड, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अत धूप गाढि पात्र चलिय, प्रवहण कुछ बहम नहीं ।
गुजराति गुरु हइ डीलि गिरुआ, आविन सकइ अत्रसही॥४८॥
वलतउ कहइ मुहता भणी, तडइ उमका सीस ।
दुइ जण गुरु नइ मुकीया हित करी विस्वा वीस ॥ ४९ ॥
हितकरि मूक्या वगि दुइजण, मानसिंह इहा भेजीय ।
जिम शाहि अकबर तासु दरसणि, देखि नियमन रजीय ॥५०॥

महिमराज वाचक सातठाणे, मुकीया लाहोर भणी ।
मुनि वेग पहुंता शाहि पासइ, देखि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥
साहि पूछइ वाचक प्रतइं, कब आवइ गुरु सोय ।
जिण दीठइ मन रंजीय, जास नमइ बहुलोय ॥
बहु लोय प्रणमइ जासु पयतलि, जगत्रगुरु हइ ओ वड़ा ।
तव शाहि अकबर सुगरु तेड़ण, वेगि मुंकइ मेवड़ा ॥
चउमासि नयडी अवही आवइ, चालवउ नवि गुरु तणउ ।
तव कहिइ अकबर सुणो मंत्री, लाभ थउंगउ तसु घणउ ॥४८॥
पतशाहि जण अविया, सुह गुरु तेड़ण काजि ।
रंजस कुछ ते नवि करइ, गह गहीयउ गच्छराज ॥
गच्छराज दरसणि वेगि देखि, हेजि हियड़उ हींस ए ।
अति हर्ष आणी साहि जणते, वार वार सलीस ए ॥
सुरताण श्रीजी मंत्रवीजी, लेख तुम्ह पठाविया ।
सिर नामी ते जण कहइ गुरु कुं, शाहि मंत्री बोलाविया ॥४९॥
सुह गुरु कागल वांचिया, निज मन करइ विचार ।
हिव मुझ जावउ तिहां सही, संघ मिलिउ तिण वार ॥
तिणवार मिलियउ संघ सघलो, बइस मन आलोच ए ।
चउमास आवी देश अलगउ, सुगुरु कहउ किम पहुंच ए ॥
समझावि श्रीसंघ खंभपुर थी, सुगुरु निज मन दृढ़ सही ।
मुनिवेग चाल्या शुद्ध नवमी, लाभ वर कारण लही ॥५०॥

राग सामेरी दूहा:—

सुन्दर शकुन हुआ बहु, केता कहुं तस नाम ।
मन मनोरथ जिण फलइ, सीझइ वंछित काम. ॥५१॥

क्रोध मान माया नहीं, नहीं जसु लोभ लगार ।
उपशम रस में झीलता, ते गुरु गुण भण्डार ॥ ४० ॥
शत्रु मित्र सम सारिखा, जिन शासन सद भाव ।
जाव जीवन जिहां कीजिय धर्मह आणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मइ न ग्या हइ बहुत गुरु गुण तइ गुरु धीर ।
मन्त्रि भणइ साहिब सुणउ हम सरभर गुरु धीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रगट हइ श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हइ सुगण नर, श्रीजिनचन्द सुरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हरावित निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्या निधि आगार, गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
सभलि अकबर हरखियउ, कहां हइ ते गुरु आज ।
राजनगर उइ साप्रतइ साभलि सु महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

वात सुणी पातसाह हरखित हुयउ अपार ।
हुकम कियो महता भणी, तेडि गुरु लाय म वार ॥ ४६ ॥
मन वार त्यावइ सुगुरु तइण भजि मरा आदमी ।
अरदास इक माहिर आगइ करइ सुहगुउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अरु भूप गाडि पात चलिय, प्रवहण कुछ बहस नहीं ।
गुजराति गय हइ डालि गिहआ, आवि न सकइ अवसही॥४८॥
उत्तर कहइ सुल्तान भणी, तइउ उसका सीस ।
दुइ जण गुरु नइ मुकीया हित करी बिदया वीस ॥ ४६ ॥
नितकरि मस्या वगि दुइजण, मानसिंह इहा भेजीय ।
जिम शाहि अकबर तासु दरसणि, देखि नियमन रंजीय ॥५०॥

महुर वधाउ आविड सिवपुरि, हरखिउ संघ सुजाणो जी ।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, जाणिउ राव सुरताणो जी ॥६१॥प०
संघ तेड़ी ने रावजी इम भणइ, आपुं छुं असवारो जी ।
तेडि आवउ वेगि मुनिवरु, मत लावउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसंघ राय जण पाल्हणपुरि जइ, तेडी आवइ रंगो जी ।
गामागर पुर सुहगुरु विहरता, कहता धर्म सुचंगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (इकवीस ढालियानी)

सीरोही रे आवाजउ गुरु नो लही, नर-नारी रे आवइ साम्हा उमही ।
हरि कर रथ रे पायक बहुला विस्तरइ,
कोणी(क) जिम रे गुरु वंदन संघ संचरइ ॥
संचरइ वर नीसांण नेजा, मधुर मादल वज्ज ए ।
पंच शब्द झलरि संख सुस्वर जाणि अंबर गज्ज ए ॥
भर भरइ भेरी वलि नफेरी, सुहव सिर घटकिज ए ।
सुर असुर नर वर नारि किन्नर, देखि दरसण रंज ए ॥६४॥
वर सूहव रे पूठि थकी गुण गावती, भरि थाली रे मुक्ताफल वधावती ।
जय २ स्वर रे कवियण जण मुख उच्चरइ, वर नयरी रे मांहे इम गुरु संचरइ
संचरइ श्रावक साधु साथइ, आदि जिन अभिनंदिया ।
सोवनगिरि श्रीसंघ आवउ, उच्छव कर गुरु वंदिया ।
राय श्रीसुलताण आवी, वंदि गुरु पय वीनवइ ।
मुझ कृपा कीजइ बोल दीजइ, करउ पजुसण हिवइ ॥६५॥
गुरु जाणि रे आग्रह राजा संघ नउ, पजुसण रे करइ पूज्य संघ शुभ मनउ ।
अट्ठाही रे पाली जीव दया खरी, जिनमंदिर रे पूजइ श्रावक हितकरी ।

वदो वउलावी वलइ, हरखइ सघ रसाल ।
  भाग्यवली जिणचद गुरु, जाणइ बाल गोपाल ॥५२॥
तरमि पूज्य पधारिया अमदावाद मझार ।
  पइसारउ करि जस लीयउ सघ मल्यो सुविचार ॥५३॥
हिव चउमासो आवियउ, किम हुइ साधु विहार ।
  गुरु आगेवइ सघ सुं, नावइ बात विचार ॥५४॥
तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आव्या दोय अपार ।
  घणु २ मुहतइ लिख्यो, मत लावउ तिहा वार ॥५५॥
वर्षा कारण मत गिणउ, लोक तणउ अपवाद ।
  निश्चय वहिला आवस्यो, जिम थाइ जसवाद ॥५६॥
गुरु कारण जाणी करी, होस्यइ लाभ असख्य ।
  सघ कहइ हिव जायवउ, कोय करउ मत कख ॥५७॥

ढाल:गोडी (निंबीयानी) (आंकडी)

परम सोभागी सहगुरु वंदियइ, श्रीजिनचद सूरिन्दो जी ।
मान दीयइ जस अकबर भूपति, चरण नमइ नरवृन्दो जी ॥५८॥
सघ वदावी गुरुजी पागुरया, आया म्हसाण गामो जी ।
  सिधपुर पट्टना खरतर गच्छ धणी, साह वनो तिण ठामो जी ॥
गुरु आडबर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।
  सघ पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवदन अधिकारो जी ॥५९॥
पुज्य पाल्हण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, सघ सकल उच्छाहो जी ।
सव पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहो जी ॥६०॥

महुर वधाउ आविउ सिवपुरि, हरखिउ संघ सुजाणो जी ।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, जाणिउ राव सुरताणो जी ॥६१॥प०
संघ तेड़ी ने रावजी इम भणइ, आपुं छुं असवारो जी ।
तेडि आवउ वेगि मुनिवरु, मत लावउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसंघ राय जण पाल्हणपुरि जइ, तेडी आवइ रंगो जी ।
गामागर पुर सुहगुरु विहरता, कहता धर्म सुचंगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (इकवीस ढालियानी)

सीरोही रे आवाजउ गुरु नो लही, नर-नारी रे आवइ साम्हा उमही ।
हरि कर रथ रे पायक बहुला विस्तरइ,
कोणी(क) जिम रे गुरु वंदन संघ संचरइ ॥
संचरइ वर नीसांण नेजा, मधुर मादल वज्ज ए ।
पंच शब्द झलरि संख सुस्वर जाणि अंबर गज्ज ए ॥
भर भरइ भेरी वलि नफेरी, सुहव सिर घटकिज ए ।
सुर असुर नर वर नारि किन्नर, देखि दरसण रंज ए ॥६४॥
वर सूहव रे पूठि थकी गुण गावती, भरि थाली रे मुक्ताफल वधावती ।
जय २ स्वर रे कवियण जण मुख उचरइ, वर नयरी रे मांहे इम गुरु संचरइ
संचरइ श्रावक साधु साथइ, आदि जिन अभिनंदिया ।
मोवनगिरि श्रीसंघ आवउ, उच्छव कर गुरु वंदिया ।
राय श्रीसुलताण आवी, वंदि गुरु पय वीनवइ ।
मुझ कृपा कीजइ बोल दीजइ, करउ पजुसण हिवइ ॥६५॥
गुरु जाणि रे आग्रह राजा संघ नउ, पजुसण रे करइ पूज्य संघ शुभ मनउ ।
अट्ठाही रे पाली जीव दया खरी, जिनमंदिर रे पूजइ श्रावक हितकरी ।

हिवकरिय कहइ गुरु सुणउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
किण परइं पूनिम दिह्र मइं तुझ, अभय अविचल पालीयइ।
गुरु सत्र श्रीजावालपुर नइं वेगि पहुना पारणइ॥
अति वच्छव कियउ साह धन्नइ सुजस लीयो तिणि खिणइ ॥६६॥
मत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुमाहिनइ।
फुरमाणा रे मूंक्या दुइ जण पूज्य ने ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो।
पग किण इक रे पटइ वार म लगाइजो।
म लगाडिजो तिहा वार काइ, कहति जाणी अति घणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीयउ, जायवा लाहुर भणी।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु साथइ, पातिशाही जण वली ॥
गन्धर्व भोजक भाट चारण मिल्या गुणियन मन रली ॥६७॥
हिव देछरे गाम सराणउ जाणियइ, ममराणी रे साइपरगि वखाणियइ,
सत्र आवी रे विक्रमपुर नो वमही।
गुरु वंदारे महाजन मन्नलइ गहगही ॥
गाहि गहीय लाहिण सत्र कीधी नयर टुणाडइ गयो।
श्रीसघ जेसलमेरु नो तिहा वदी गुरु हरखित थयो।
रोहीठ नइरइ उच्छव बहु करि, पूज्य जी पधराविया।
साह थिरउ मेरउ सुजस लाया, दान बहु दवराविया ॥६८॥
सघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहा आवीयउ,
करि लाहिण रे शासनि शोभ चढावियो।
व्रत धोयो रे, नदी करी चिहु उवर्यो।

तिथि बारस रे, मुंको ठाकुर जस वर्यों ।
जस वर्यो संवइ नयर पाली, आडंबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य वांदिया तिहां नांदि मांही, दानि दालिद्र खंडियउ ।
लांघियां ग्रामइं लाभ जाणी, सूरि मोहिन निरखिया ।
जिनराज मंदिर देखी सुन्दर, वंदि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
चीलाड़इ रे, आनन्द पूज्य पधारीए ।
पइसारउ रे, प्रगट कीयउ पट्टारीए ।
जइतारणि रे, आवे बाजा बाजिया ।
गुरु वंदी रे, दान वलइ संघ गाजिया ॥
गाजियउ जिनचंद्रसूरि गच्छपति, वीर शासनि ए वड़ो ।
कलिकाल गोतम स्वामि समवड़, नहीँय को ए जेवड़उ ।
विहरता मुनिवर वेगि आवइ, नयर मोटइ मेड़तइ ।
परसरइ आया नयर केरे, कहइ संघ मुंहता प्रतइ ॥ ७० ॥

॥ राग गोडी धन्या श्री ॥

कर्मचन्द कुल सागरे, उदया सुत दोय चन्द ।
भागचन्द मंत्रीसर, बांधव लिखमीचन्द ।
हय गय रह पायक, मेली बहु जन वृन्द ।
करि सबल दिवाजउ, वंदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पंच शब्दउ झल्लरि, वाजइ ढोल नीसांण ।
भवियण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।
तिहां मिलीयो महाजन, दीजइ फोफल दांन ।
सुन्दरी सुकलीणी, सूहव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

हितकरिय कहइ गुरु सुगउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ॥
किण पर्व पूनिम दिट्ठ मंइ तुझ, अभय अविचल पालीयइ।
गुरु सव श्रीजावालपुर नइं वेगि पहुता पारणइ॥
अति उच्छव कियउ साह वन्नइ सुजस लीधो तिणि खिणइ॥६६॥
मन्त्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिबइ।
फुरमाणा रे मूंक्या दुइ जण पूज्य नै॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो।
पण किण इक रे पठइ वार म लगाइजो।
म लगाडिजो तिहां वार काइ, ऊहति जाणो अति घणी॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, जायवा लाहुर भणी।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु मायइ, धानिसाही जण वली॥
गायर्वं भोजक भाट चारण मिल्या गुणियन मन रली॥६७॥
हिव दछरे गाम मराणउ जाणियइ, भमरागी रे स्याहपरगि वखाणियइ,
सव आवी रे विक्रमपुर नो उमही।
गुरु वधारे महाजन मजलइ गहगही॥
गहि गहीय लाहिण सव कीधी नयर ढुणाडइ गयो।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वदी गुरु हरखित थयो।
रोहीठ नइगइ उच्छव वहु करि, पूज्य जी पधराविया।
साह थिरइ मेरइ सुगम लाया, दान बहु दवराविया॥६८॥
संघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहा आवीयउ,
करि लाहिण रे शासनि शोभ चढ़ावियो।
व्रत चोथौ रे, नन्दी करी चिहुं उच्चर्यो।

संघ उच्छव मंडइ आडंबर अभिराम ।
संघ आवियो वंदण, महिम तणइ तिण ठाम ॥७८॥
खरची धन अरची श्री जिनराय विहार ।
गुरु वाणि सुणि चित्त हरखिइ संघ अपार ।
संघ वंदी वलीयउ, पहुंतउ महिम मंझार ।
पाटणसरसइ वलि, कसूर हुयउ जयकार ॥७९॥
लाहुर महाजन वंदन गुरु सुजगीस ।
मनमुख ते आविउ चाली कोस चालीस ।
आया हापाणइ श्रीजिनचन्द सूरीश ।
नर नारी पयतलि सेव करइ निसदीस ॥८०॥

राग गौड़ी दूहा:—

वेगि वधाउ आवियउ, कीयउ मंत्रीसर जांण ।
क्रम २ पूज्य पधारिया, हापाणइ अहिठाण ॥८१॥
दीधी रसना हेम नी, कर कंकण के कांण ।
दानिइ दालिद खंडियउ, तासु दीयउ बहुमान ॥८२॥
पूज्य पधार्या जांण करि, मेली सब संघात ।
पहुंता श्री गुरु वांदिवा, सफल करइ निज आथ ॥८३॥
तेड़ी डेरइ आंण करि, कहइ साह नइं मन्त्रीस ।
जे तुम्ह सुगुरु बोलाविया, ते आव्या सुरीस ॥८४॥
अकबर वलतो इम भणइ, तेड़उ ते गणधार ।
दरसण तसु कउ चाहिये, जिम हुइ हरप अपार ॥८५॥

गज टम्बर सवतउ, पूज्य पधार्या जाम।
मन्त्री लाहिण कीधी, खरची बहुला दाम।
याचक जन पोप्या, जग में राख्यो नाम।
धन धन ते मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥
श्रन नन्दि महोतसव, लाभ अधिक तिण ठाण।
नवलिया पातसाहि, आया ले फुरमाण।
चाल्या मच सायइ, पहुता फळवधि ठाणि।
श्री पास जिणसर, भेंट्या त्रिभुवन भाणि ॥ ७४ ॥
हिव नगर नागोरइ रइ आया श्री गच्छराज।
बाजित्र बहु हय गय मेलो श्रा सङ्घ साज।
आवि पइ धर्ष्या करइ हम उत्तम काज।
जउ पूज्य पधार्या तउ सरिया सब काज ॥७५॥
मन्त्रीसर वाडइ महड मन नइ रङ्ग।
पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरङ्ग।
गुरु दरसण दलि वधियो हर्ष कलोल।
महीयलि जस व्यापिउ आपिउ वर तबोल ॥७६॥
गुरु आगम नलेरिया प्रगटियो पुन्य पडूर।
सब बीकानरउ आविउ सघ सनूर।
जिणमद सिनवाना प्रवहण सइ वलि च्यार।
धन खरचइ मविषण, भावइ वर नर नारि ॥७७॥
अनुक्रम पडिहारइ, राजुलदेसर गामि।
रस रंग रीणीपुर पहुता सरतर स्वामि।

बोलइ कूड़ बहुत ते नर मध्यम,
इण परभवि दुख लहइ ए।
चोरी करम चण्डाल चिहुं गति रोलवइ,
परम पुरुष ते इम कहइ ए ॥६१॥
पर रमणि रस रंगि सेवइ जे नर,
दुरगति दुख पावइ वही ए।
लोभ लगी दुखहोय जाणउ भूपति,
सुख संतोष हवइ सही ए ॥६२॥
पंचइ आश्रव ए तजे नर संवरइ,
भवसायर हेलां तरइ ए।
पामइ सुख अनन्त नर वइ सुरपद,
कुमारपाल तणी परइ ए ॥६३॥
इम सांभलि गुरु वाणि रंजिउ नरपति,
श्री गुरु ने आदर करइ ए।
धण कंचन वर कोड़ि कापड़ बहु परि,
गुरु आगइ अकबर धरइ ए ॥६४॥
लिउ टुक इहु तुम्ह सामि जो कुछ चाहिये,
सुगुरु कहइ हम क्या करां ए।
देखि गुरु निरलोभ रंजिउ अकबर,
बोलइ ए गुरु अणुसरां ए ॥६५॥
श्रीपुज्य श्रीजी दोय आव्या बाहिरि,
सुणउ दिवांणी काजीयो ए।

राग गोड़ा यालूडानीः—

पंडित मोटा साथ मुनिवर जयसोम,
कनकसोम विद्या वरू ए।
महिमराज रत्ननिधान वाचक,
गुणविनय समयसुन्दर शोभा धरू ए ॥८६॥
इम मुनिवर इकनीम गुरु जी परिवर्या,
ज्ञान क्रिया गुण शोभता ए।
संघ चतुर्विध साथ याचक गुणी जण,
जय जय वाणी बोलता ए ॥८७॥
पहुता गुरु दीवाण देखी अकबर,
आवइ साम्हा उमही ए।
वंदी गुरु ना पाय माहि पधारिया,
सईहथि गुरु नौ कर ग्रही ए ॥८८॥
पहुता दउढी माहि, सुगुरु साह जी
धरमवात रंगे करइ ए।
चित श्रीजी देखी ए गुरु सेवता,
पाप ताप दूरइ हरइ ए ॥८९॥
गच्छपति द्य उपदेश, अकबर आगलि
मधुर स्वर वाणी करी ए।
जे नर मारइ जीव त दुख दुरगति,
पामइ पातक आचरी ए ॥९०॥

बोलइ कूड़ बहुत ते नर मम्मण,
इण परभवि दुख लहइ ए।
चोरी करम चण्डाल जिउं गमि रोलवइ,
परम पुरुष ते इम कहइ ए ॥६१॥
पर रमणि रस रंगि सेवइ जे नर,
दुरगति दुख पावइ सही ए।
लोभ लगी दुखहोय जाणउ भूपति,
सुख संतोष हुवइ सही ए ॥६२॥
पंचइ आस्रव ए तजे नर संवरइ,
भवसायर हेलां तरइ ए।
पामइ सुख अनन्त नर वइ सुरपद,
कुमारपाल तणी परइ ए ॥६३॥
इम सांभलि गुरु वाणि रंजिउ नरपति,
श्री गुरु ने आदर करइ ए।
धण कंचन वर कोड़ि कापड़ बहु परि,
गुरु आगइ अकबर धरइ ए ॥६४॥
लिउ टुक इहु तुम्ह सामि जो कुछ चाहिये,
सुगुरु कहइ हम क्या करां ए।
देखि गुरु निरलोभ रंजिउ अकबर,
बोलइ ए गुरु अणुसरां ए ॥६५॥
श्रीपुज्य श्रीजी दोय आव्या बाहिरि,
सुणउ दिवांणी काजीओ ए।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,
जैन धर्म नो राजायो र ॥६६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल ऋद्धि धन सपदा, कायम हम दिन आज ।
गुरु देखी माहि हरखियो, जिम करी घन गाज ॥६७।
धणी सुं चाली करि, आया अब हम पासि ।
पहुचो तुम निज थानकै, सघमनि पूरी आस ॥६८॥
वाजित्र हयगय अम्ह तणा, मुहता र परिवार ।
पूज्य उपासरइ पहुचवउ, कार आडम्बर सार ॥६६॥
नउनउ गुरुजी इम भणइ, साभलि तू महाराय ।
हम दोवाज क्या करा, साचउ पुन्य सराय ॥१० ॥
आग्रह अति अकबर घरी, म्हेल्इ सवि परिवार ।
उच्छव अधिक उपासरइ, आवइ गुरु सुविचार ॥१०१॥

राग आशावरी:—

हय गय पायक नइपरि आगइ, बाजइ गुहिर निसाण ।
धवल मगल थइ सूहव गंगइ, मिलीया नर राय राण ॥१॥
भाव धरीने भवियण भेटउ श्रीजिनचन्द्रसूरिन्द ।
मन सुधि मानित साहि अकबर, प्रणमइ जास नरिन्द र ॥भ ॥आ॥
श्री सघ चउविह सुगुरु म थइ, मत्राश्वर कर्मचन्द ।
पदमारो शाह परवत कीघउ, आणिमन आणन्द र ॥ ३ । भाव० ॥
उच्छव अधिक उपाश्रय आव्या, श्री गुरु घइ उपदेश ।
अमीय समाणि वाणि सुणता, भाजइ सयल किलेस र ॥४॥भा०॥

भरि मुगताफल थाल मनोहर, सूहव सुगुरु वधावइ ।
याचक हर्षइ गुरु गुण गांता, दान मान तव पावइ रे ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुंता, लाहुर नयर मंझारि ।
मनवंछित सहुकेरा फलीया, वरत्या जय जयकार रे ॥६॥भा०॥
दिन प्रति श्रीजी सुं वलि मिलतां, वाधिउ अधिक सनेह।
गुरु नी सूरति देखि अकबर, कहइ जग धन धन एह रे ॥७॥ भा०
कइ क्रोधी के लोभी कूड़े, के मनि धरइ गुमान ।
षट् दरशन मइं नयण निहाले, नहीं कोइ एह समान रे ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कुं शाहि अकबर, दउढ़ी महुल पधारउ ।
श्री जिनधर्म सुणावी मुझ कुं, दुरमति दूरइ वारउ रे ॥९॥भा०
धरम वात (रं) गइ नित करता, रंजिउ श्री पातिशाहि ।
लाभ अधिक हुं तुम कुं आपीस, सुणि मनि हुयउ उच्छाहि रे ॥१०॥

रागः—धन्याश्री । ढालः सुणि सुणि जंबू नी

अन्य दिवस वलि निज उलट भरइं, महुरसउ ऐकज गुरु आगे धरइ।
इम धरइ श्री गुरु आगलि तिहाँ अकबर भूपति ।
गुरुराज जंपइ सुणउ नरवर नवि ग्रहइ ए धन जति ।
ए वाणि सम्भलि शाहि हरख्यो, धन्य धन ए मुनिवरू ।
निरलोभ निरमम मोह वरजित रूपि रंजित नरवरू ॥११॥
तव ते आपिउ धन मुंहताभणी, धरम सुथानिक खरचउ ए गणी ।
ए गणीय खरचउ पुन्य संचउ कीयउ हुकम मुंहता भणी ।
धरम ठामि दीधउ सुजस लीधउ वधी महिमा जग घणी ।

इम चैत्री पूनम दिवस सतिक, माहि हुकम सुदइ कीयउ।
जिनराज जिनचन्दसूरि वडौ, दान याचक नइ दीयउ ॥ १२॥
सब करी ऐसा देस साहन भणी,
कास्मीर ऊपर चढ़ीयउ नर मणी।
गुरु मयाउ आग्रह करीय तेड़या, मानसिंह मुनि परवर्या।
मनवर्या साथइ राय राणा, उम्बरा त गुणभर्या ॥
वलि मीर मिलक वडू खान खोजा, साथि कर्मचन्द मन्त्रवी।
सव सत वाज्इ वइइ सुवयइ, न्याय चलवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥
श्री गुरु वाणि श्रीजी निसु सुगइ
धर्म मूर्ति ए धन धन मुह भणइ ।
शुभ दिवस रिपु बल हलि भगी, नयर श्रीपुरि उतरी।
अम्मारि तिहा दिन आठ पाली देश सारी जयश्री।
आविवउ भूपति नयर लाहुर, गुहिर वाजा वाजिया ।
गच्छराज जिनचन्दसूरि दर्खी, दुख दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥
जिनचन्दसूरि गुरु श्रीजी सु आवि मिली,
एकान्तइ गुण गोठि करइ रली ।
गुण गोठि करता चित्त धरता सुणिवि जिनदत्तसूरि चरी।
हरखियउ अकबर सुगुरु ऊपरि प्रथम सइ मुख हितकरी।
युगप्रधान पदवी दिद्ध गुरु कु, विविध वाजा वाजिया।
बहु दान मानइ गुणइ गानइ, संघ सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥
गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ ।
मुणि अरगाम हमारा मुं हिवइ ॥

अरदास प्रभु अवधारि मेरी, मंत्रि श्रीजो कहइ वली ।
महिमराज ने प्रभु पाटि थापउ, एह मुझ मन छइ रली ॥
गुणनिधि रत्ननिधान गणिनइं, सुपद पाठक आपीयइ ।
शुभ लगन वेला दिवस लेइ, वेगि इनकुं थापियइ ॥ १६ ॥
नरपति वांणी श्रीगुरु सांभली,
कहइ मंइ मानी वातज ए भली ।
ए वात मांनी सुगुरु वांणी, लगन शोभन वासरइं ।
मांडियउ उच्छव मंत्रि कर्मचन्द, मेलि महाजन बहुरइं ॥
पातिशाहि सइमुख नाम थापिउ, सिंह सम मन भाविया ।
जिनसिंह सूरि सुगुरु थाप्या, सूहवि रंग वधाविया ॥ १७ ॥
आचारज पद श्री गुरु आपिउ,
संघ चतुर्विध साखइ थापियउ ।
व्यापीउ निरमल सुजस महीयलि, सयल श्रीसंघ सुखकरू ।
चिरकाल जिनचंदसूरि जिनसिंह, तपउ जिहां जगि दिनकरू ॥
जयसोम रत्ननिधान पाठ (क), दोय वाचक थापिया ।
गुणविनय सुन्दर, समयसुन्दर, सुगुरु तसु पद आपीया ॥ १८ ॥
धप मप धों धों मादल वाजिया,
तव तसु नादइ अम्बर गाजिया ।
वाजिया ताल कंसाल तिवली, भेरि वीणा भूंगली ।
अति हर्ष माचइ पात्र नाचइ, भगति भामिनी सवि मिलो ;
मोतीयां थाल भरेवि उलटि, वार वार वधावती ।
इक रास भास उलासि देतो, मधुर स्वर गुण गावती ॥ १६ ॥

कर्मचन्द परगट पद ठवणो कीयो,
सत्र भगति करि मयण सनोपीयउ।
सनोपिया जाचक दान दइ, किद्ध कोडि पसाउ ए।
सग्राम मत्री तणउ नन्दन, करइ निज मनि भाउ ए॥
नव ग्राम गइवर दिद्ध अनुक्रमि, रंग धरि मन्त्री वली।
मागना अश्व प्रधान आप्या, पाचसइ ते सवि मिली॥ २०॥
इण परि लाहुरि उच्छव अति घणा,
कीधा श्री सघ रंगि वधावणा।
टम चोपडा शास शृङ्गार गुणनिधि, साह चापा कुल तिलउ।
धन मान चापल देइ कहीय, जासु नन्दन गुण निलउ॥
विधि वेद रस शशि मास फागुन, शुक्ल बीज सोहामणी।
थापी श्री जिनसिंह सूरि, गुरुराइ संघ बधामणी॥ २१॥

राग—धन्याश्री

ढाल—(सीरावल मण्डण सामो लहिस जी)
अविहडि लाहुरि नयर वधामणाजी, वाज्या गुहिर निसाण।
पुरि पुरि जी (२) मत्री बधाऊ मोकल्याजी॥ २२॥
हर्ष धरी श्रीजी श्रीगुरु भणी जो, वगसइ दिवस सुलतान।
वरतइ जी (२) आण हमारी, जा लगइ जी॥ २३॥
मास असाढ अठाइ पालवी जो, आदर अधिक अमारी।
सघलइ जी (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजी॥ २४॥
वरस दिवस, लगि जलचर मूकियाजी, खंभनगर अहिठाणि।
गुरु नइ जी (२) श्रीजी लाभ [illegible]उजी॥ २५॥

यइ आसीस दुनी महि मंडलइजो, प्रतिपइ कोडि वरीस।
ए गुरुजो (२) जिण जगिजीव छुड़ाविया जो ॥ २६॥

राग—धन्याश्री ।

ढाल:—(कनक कमल पगला ठवइ ए)

प्रगट प्रतापी परगडो ए, सूरि वडो जिणचन्द।
कुमति सवि दूर टल्या ए, सुन्दर सोहग कन्द ॥ २७ ॥

सदा सुहगुरु नमोए, दइ अकबर जसु मांन। सदा०। आंकणी।
जिनदत्तसूरि जग जागतउ ए, गरुने सानिधकार। स०।
श्रीजिनकुशल सूरीश्वरू ए, वंछित फल दातार ॥स०॥ २८ ॥
रीहड़ वंशइ चंदलउ ए, श्रीवन्त शाह मल्हार। स०।
सिरीयादे उरि हंसलउ ए, माणिकसूरि पटधार ॥स०॥ २६ ॥
गुरु ने लाभ हुया घणां ए, होस्यइ अवर अनन्त। स०।
धरम महाविधि विस्तरइ ए, जिहां विहरइ गुणवंत॥ स०॥३०॥
अकबर समवड़ि राजीयउ ए, अवर न कोई जांण।स०।
गच्छपति मांहि गुणनिलउ ए, सूरि वड़उ सुरतांण ॥ स०॥३१॥
कवियण कहइ गुण केतलाए, जसु गुण संख न पार। स०।
जिरंजीवउ गुरु नरवरू ए, जिन शासन आधार ॥स०॥३२॥
जिहां लगी महीयलि सुर गिरी ए, गयण तपइ शशि सूर।स०।
जिनचन्द रि तिहां लगइ, प्रतपउ पून्य पडूर ॥३३॥स०॥

वसु युग रस शशि वच्छरइ ए, जेठ वदि तेरस जाणि ।म०।
शांति जिनेसर सानिधइ ए, रास चडिउ परमाणि ॥३४॥म०॥
आग्रह अति श्री सघ नइ ए, अहमदाबाद मंझारि ।स०।
रास रच्यो रलियामणउ ए, भवियण जण सुखकार॥३५॥स०॥
पटइ गु(सु)णइ गुरु गुण रसो ए, पूजइ तास जगीस ।स०।
कर जोडी कवियण कहइ, विमल रग मुनि सीस ॥३६॥स०॥

इति श्री युगप्रधान जिनचन्द्र सूरीश्वर रास समाप्ता मिति। लिखितं लब्धिकल्लोल मुनिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे, प० लक्ष्मीप्रमोद मुनि वाच्यमानं चिरं नंद्यात् यावच्चन्द्र दिवाकरौ। श्रीरस्तु।

* कवि समयप्रमोद कृत *

॥ श्रीयुगप्रधान निर्वाण रास ॥

दोहा राग (आसावरी)

गुणनिधान गुरु[1] पाय नमि, वाग वाणि अनुसार (आधारि)।
युगप्रधान निर्वाण नी, महिमा कहिसुं विचार ॥ १ ॥
युगप्रधान जंगम यति, गिरुआ गुणे गम्भीर।
श्री जिनचन्द सुरिन्दवर, धुरि धोरी ध्रम धीर ॥ २ ॥
संवत पनर पंचाणूयइ, रीहड़ कुलि अवतार।
श्रीवन्त सिरिया दे धर्यउ,[2] सुत सुरताण कुमार ॥ ३ ॥
संवत सोल चड़ोत्तरइ, श्री जिनमाणिक सूरि।
सइ हथि संयम आदर्यउ, मोटइ महत पडूरि ॥ ४ ॥
महिपति जेसलमेरु नइ, थाप्या राउल माल।
संवत सोल वारोत्तरइ, शत्रु तणइ सिर साल ॥ ५ ॥

ढाल (१) राग जयतसिरि

(करजोड़ी आगल रही एहनी ढाल)

आज वधावौ संघ मइं, दिन दिन वधते[3] वानइ रे।
पूज्य प्रताप वाधइ[4] घणौ, दुश्मन कीधा कानइ रे ॥६॥ आ०

---

१ गौतम २ देवोनइ ३ बाधइ ४ बधइ

सुनिहिन पद उमआलियउ, पूज्य परिहरइ परिग्रह माया र ।
उग्र विहारइ विहरता, पूज्य गुर्जर खडइ आया र ॥ ७ ॥

रिषिमतीया सु तिहा थयउ, अनि झूठी पोथी वादी र ।
पुज्य वचन बल कुमतिया, परगट गालयउ नादो र ॥८॥ आ०॥
पूज्य तणी महिमा सुणी, सन्मान्या अकबर शाहइ रे ।
युगप्रधान पद आपियउ, सह लाहउर उच्छाहइ रे ॥९॥ आ०॥
कोडि सवा धन खरचियउ, मन्त्रि क्रमचन्द्रजी भूपालइ रे ।
आचारिज पद तिहा थयउ, सवन सोल अड़तालइ रे ॥१०॥आ०॥
सवत सोलमइ बावनइ, पुज्य पच नदी (सिन्धु) साधी रे ।
जिन शासी जय पामियउ, करि गोतम ज्यु सिधि याधी रे ।११।आ०॥
राजा राणा महलो, एतउ आइ नमे निज भावइ रे ।
श्रीजिनचन्द्रसूरिसर, पुज्य सुलहइ निज २ पावइ रे ॥१२॥आ०॥
मइ हथि करि ज दीखिया, पूज्य शीश तणा परिवारो रे ।
त आगम नइ अर्थे भर्या, मोटी पदवीधर सुविचारो र ।१३।आ-
योगी, मोम, जिना मना , पूज्य कोया मयवी साथा रे ।
" अवइत सुगुरु तणा, जाणि माणिक हीरा आथा र ।१४।आ०।

---

१ इस रासकी ३ प्रतिय हमार पास हैं जिनमें ऐसा ही लिखा है । मुद्रित "गणधर सार्ध शतक" में भी इसी प्रकार है । किन्तु पट्टावलि आदि में सर्वत्र सं० १६२९ हो लिखा है ।
२ भाव तणइ ३ वनि

॥ दोहा सोरठी ॥

महा मुणीश्वर मुकुट मणि, दरसणियां दीवांण।
च्यारि असी गच्छि सेहरो, शासण नउ सुरतांण ॥१५॥
अतिशय आगर आदि लगि, झूठ कहुं[४] तउ नेम।
जिम अकबर सनमानिउ, तिम वलि शाहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सटोप, कियउ दरसणियां सुं कोप।
ए कामणगारा कामी, दरबार थी दूरि हरामी ॥१७॥
एकन कुं पाग बंधावउ, एकन कुं नाआन अगावउ।
एकन कुं देशवटो जंगल दीजै, एकन कुं पलालो कीजइ ॥१८॥
ए शाहि हुकुम सांभलिया, तसु कोप (कउप) थका खलभलिया।
जजमान मिली संयतना, दरहाल करइ गुरु जतना ॥१९॥
के नासि होई[२] पूंठि पड़ीया, केइ मइवासइ जइ चढ़ीया।
केइ जंगल जाई बइठा, केइ दौड़ि गुफा मांहि (जाइ) पइठा ॥२०॥
जे नासत यवने झाल्या, ते आणि भाखसी घाल्या।
पाणी नै अन्नज पाल्या, वयरीड़ा वयर सुं साल्या ॥२१॥
इम सांभलि शाशन होला, जिणचंद सुरीश सुशीला।
गुजराति धरा थी पधारइ, जिन शाशन वान वधारइ ॥२२॥
अति आसति वलि गुरु चालो, अपुरां भय दूरइ पालो।
उग्रसेनपुरइ पउधारइ, पुन्य शाहि तणइ दरबारइं ॥२३॥

---

४ कथुं १ का २ हिंदु

पुज्य देखि दीदारइ मिलिया, पातिसाह तणा कोप गलीया।
गुजराति धरा क्यु आए, पातिशाहि गुरु बतलाए ॥२४॥
पातिशाहि कुं देत आशीश, हम आए शाहि जगदीश।
काहे पाया दुख शरीर, जाओ जउरा करउ गुरु पीर ॥२५॥
एक शाहि हुकुम जउ पावा, बदियड़ा[१] बंदि छुडावा।
पतिशाहि सयरात करीजइं, दरशणिया पूर (दूतउ) दीजइं ॥ २६ ॥
पतिशाहि हुतउ जे रूठउ, पूज्यभाग वलइ अति तूठउ।
जाउ विचरउ देश हमारे, तुम्ह फिरता कोइ न वारइ ॥ २७ ॥
धन धन खरतरगच्छ राया, दर्शनिया दण्ड[२] छुडाया।
पूज्य सुयश करि जगि छाया, फिरि महरि मेडतइ[५] आया ॥२८॥

दूहा (धन्यासिरि)

श्रावक श्राविका[३] बहु परइ, भगति करइ सविशेष।
आण वहै गुरराज नी, गौतम समवड देखि ॥ २९ ॥
धरमाचारिज धर्म गुरु, धरम तणउ आधार।
हिव चउमासउ जिहां करइ, ते निसुणो सुविचार ॥ ३० ॥

ढाल (राग--धवल धन्यासिरी, चिन्तामणिपासपूजियै)

देश मडोवर दीपतउ, जिहां बीलाड़ा नामो रे।
नगर वसै निवहारिया, सुख संपद अभिरामो रे ॥३१॥ दे० ॥
धोरी धवल जिसा[४] तिहां, खरतर संघ प्रधानो रे।
कुउ दीपक कटारिया, जिहां घरि बहु धन धानो रे ॥३२॥दे०॥

---

१ बध, २ दंड, ३ श्रावी, ४ जिहाँ रहै, ५ सहुरमतह।

पंच मिली आलोचिया, इहां पूज्य करे चोमासो रे।
जन्म जीवित सफलउ हुवइ, सयणां पूजइ आसो रे ॥३३॥दे०॥
इम मिली संघ तिहां थकी, आवइ पुज्य दिद्वारइ रे।
महिमा वधारइ मेड़तै, पूज्य वन्दी जन्म समारइ रे ॥३४॥दे०॥
युगवर गुरु पउधारीयइ, संघ करइ अरदासो रे।
नयर बिलाड़इ रंग सुं, पूज्यजो करउ चौमासो रे ॥३५॥दे०॥
इम सुणि पूज्य पधारिया, बिलाड़इ रंगरोल रे।
संघ महोत्सव मांडियउ, दीजे तुरत तंबोल रे ॥ ३६ ॥ दे० ॥

दोहा (राग गोडी)

पूज्य चउमासो[१] आवियउ, श्री संघ हर्ष उत्साह।
विविध करइ परभावना, ल्ये लक्ष्मी नो[२] लाह ॥ ३७ ॥
पूज्य दियइ नित्य देशना, श्रीसंघ सुणइ वखाण।
पाखी पोसहिता जिमइ, धन जीवित सुप्रमाण ॥ ३८ ॥
विधि सुं तप सिद्धान्त ना, साधु वहइ उपधान।
पूज्य पजूसण पड़िकमे, जंगम युगहप्रधान ॥ ३९ ॥
संवत सोलेसित्तरइ, आसू मास उदार।
सुर संपद सुंह गुरु वरी, ते कहिसुं अधिकार ॥ ४० ॥

(ढाल भावना री चंदलियानी)

नाणै (नइ) निहालइ हो पूज्य जी आउखउ रे, तेड़ी संघ प्रधान।
जुगवर आपै हो रूड़ी सोखड़ी रे, सुणिज्यो "पुण्य-प्रधान" ॥४१॥ना०॥

---

१ गृहउ, २ री

गुरु कुल वासे हो वसिज्यो चेलड़ा रे, मत लोपउ गुरु कार।
मार अनइ वलि सयम पालिज्यो र, सूधौ साधु आचार ॥४२॥ना०॥
सघ सहु नै धर्मलाभ कागलइ रे, लिखिज्यो दश विदेश।
गच्छधुरा जिनसिंहसूरिनिश्रांहिस्य रे,करिज्यो तसुआदेश॥४३॥ना०॥
साधु भणी इम सीख थी पूजजी र, अरिहन्त सिद्ध सुमारि।
सहमुख अणसण पूज्य जो उच्चरइ र, आसू वदि ल पाख ॥४४॥ना०॥
जीव चउरासि लख (राशि) खामिनै रे, कञ्चन तृण सम निन्द।
ममता नै वलि माया मोसउ परिहरी र, इमनिज पाप निकद ॥४५॥ना०॥
वयर कुमार जिम अणसण उजलउ र, पालो पहुर चियार।
सुख ने समाधे ध्यानै धरम नइ रे, पहुचइ सरग मझार ॥४६॥ना०॥
इन्द्र तणो तिहा अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर वृन्द।
साधु तणउ धर्म सूधौ पालियौ रे, तिण फलिया ते आणंद ॥४७॥ना०॥

दोहा (राग गौडी)

गंगोदक पावन जटइ, पूज्य पखाली अग।
चोवा चन्दन अरगजा, सघ लगावइ रग ॥ ४८ ॥
वाजा वाजइ जन मिलइ, पार विहूणा पात्र।
सुर नर आवै देखवा, पूज्य तणउ शुभ गात्र ॥४९॥
वेश बणावी साधु नउ, धूपि सयल शरीर।
वैसाडी पालखियइ, उपरि बहुत अबीर ॥ ५० ॥

ढाल राग-गउडो (श्रेणिक मनि अचरिज थयउ एहनी)

हाहाकार जगत्र हूयउ, मोटो पुरुप असमानो रे।
वड वखती विश्रामियउ, दीवइ जिउ वुझाणउ रे ॥ ५१ ॥

पुज्य पुज्य मुखि उच्चरइ, नयणि नीर नवि मायइ रे।
सद्गुरु सो(?सा)लइ सांभरइ, हियडुं तिल तिल थायइ रे ॥५२॥पूज्य०॥
संघ साधु इम विलविलइ, हा ! खरतर गच्छि चंदउ रे।
हा ! जिणशासण सामियां, हा ! परताप दिगंदउ रे ॥५३॥पूज्य०॥
हा ! सुन्दर सुख सागरु, हा ! मोटिम भंडारउ रे।
हा ! रीहड़ कुल सेहरउ, हा ! गिरुवा गणधारउ रे ॥५४॥पूज्य०॥
हा ! मरजाद महोदधि, हा ! शरणागत पाल रे।
हा ! धरणीधर धीरमा, हा ! नरपति सम भाल रे ॥५५॥पूज्य०॥
बहु वन सोहइ भूमिका, वाणगंगा नइ तीर रे।
आरोगी किसणागरइ, वाजाइ सुरभि समीर रे ॥ पू०।५६ ॥
बावन्ना चंदन ठवो, सुरहा तेल नी धार रे।
घृत विश्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु संस्कार रे ॥ पू०॥५७ ॥
वेश्वानर केहनउ सगउ, पणि अतिसय संयोग।
नवि दाझी पुज्य मुंहपत्ति, देखइ सघला लोग रे ॥ पू०॥५८ ॥
पुरुष रत्न विग्हइ करी, साथि मरवउ न थावइ रे।
शान्तिनाथ समरण करी, संघ सहु घर आवइ रे ॥ पू०॥५९॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल:—

सुविचारी हो पूज्यजी, तुम्ह विनु घड़ी रे छः मास।
दरसण दिखाड़उ आपणउ हो, सेवक पूजइ आश ॥६०॥ सुवि०

एकरसउ पउधारियइ हो, दीजइ दरसण रसाल।
 संघ उमाहु अति घणउ हो, वंदन चरण त्रिकाल ॥६१॥ सुवि०
वाल्हेसर रलियामणा हो, जे जगि साचा मीत।
 तिण थी पागरउ पूज्यजी रे, सो मनि ए परतीत ॥६२॥ सुवि०
इणि भवि भव भवान्तरइ हो, तुं साहिब सिरताज।
 मातु पिता तु देवता हो, तुं गिरुआ गच्छराज ॥६३॥ सुवि०
पूज्य चरण नित चरचता हो, कन्नर वंछित ओइ।
 अलिअ विघन अलगा टलइ हो, पगि २ संपद होइ ॥६४॥ सुवि०
शांतिनाथ सुपसाउलइ हो, जिनदत्त कुशल सूरिन्द।
 तिम जुगवर गुरु सानिधइ हो, सघ मयल आणंद ॥६५॥ सुवि०
मीठा गुण श्रीपूज्य ना हो, जेहवी साकर द्राख।
 रवक कूड इहां त(न?)ी हो, चन्दा सूरिज साख ॥६६॥ सुवि०
तासु पाटि महिमागर हो, मोहण सुरतर कन्द।
 सूर्य जेम चडती कला हो, श्री जिनसिंह सुरीद ॥६७॥ सुवि०
हो युगवर, नामइ जय जय कार।
वद्य वधावइ चोपडा हो, दिन दिन अधिकउ वान।
 पाटोधर पुहवी तिलउ हो, चिर नन्दउ श्रीमान् ॥६८॥ सुवि०
युगवर गुरु गुण गावता हो, नव नव रग विनोद।
 एहनु[१] आस्या फलइ हो, ऊपइ "समयप्रमोद" ॥६९॥ सुवि०

॥ इति युगप्रधान जिनचन्द सूरि निर्वाणमिद ॥

---

१ दूसरी हस्तलिखित प्रतिमें रुई है।

॥ युगप्रधान आलजा गीतम् ॥

आसू मास वलि आवीयउ, पूज्यजी, आयउ दीवाली पर्व पू० ।
काती चउमासो आवीयउ, पू० आया अवसर सर्व ॥१॥
तुम्हे आवो रे श्रियादे का नंदन, तुमे विनु घड़िय न जाय पू०।
तुम्हे विन अलजो जाय पूज्य० ॥ तुम्हे० ॥
शाहि सलेम वली उंबरा, पू० संभारइ सहु कोइ ।
धर्म सुणावउ आविनइ पू०, जीव दया लाभ होइ ॥तु०॥२॥
श्रावक आया वांदिवा पू०, ओसवाल नइ श्रीमाल ।
दरशण द्यउ इक वार कउ, पू० वाणि सुणावउ विशाल ॥तु०॥३॥
राजउठ मांड्यउ वेसणइ, पू० कमली मांडी सुघाट ।
वखाण नी वेला थइ पू०, श्रीसंघ जोयइ वाट ॥पू०॥तु०॥४॥
श्राविका मिलि आवी सहु, पू० वांदण बे कर जोड़ ।
वंदावी धर्मलाभ द्यो पू०, जिम पहुंचइ मन कोड़ि ॥पू०॥तु०॥५॥
श्राविका उपधान सहु वहै पू०, मांड्यउ नंदि मंडाण ।
माल पहिरावउ आविनइ पू०, जिम हुवै जन्म प्रमाण ॥पू०॥तु०॥६॥
अभिग्रह वांदण उपरि पूज्य०, कीधा हुंता नर नार ।
ते पहुंचावउ तेहना, पू० वंदावउ एक वार ॥पू०॥तु०॥७॥
परव पजूसण वहि गया पूज जी, लेख वाञ्छै सहु कोय ।
मन मान्या आदेश द्यउ, पू० शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥तु०॥८॥

तुम सरिखउ संसारमें पू०, देखुं नहिं को दीदार।
नयना तृप्ति पामइ नहीं, पू० सभारू सौ वार ।।पू०।।तु०।।६।।
मुझ मिलवा अलजो घणो पूज्य०, तुम्हे तो सकल अलक्ष।
सुपनि मे आवि वदावज्या, पू० हु जाणिसि परतक्षि ।।पू०।।तु०।।१०।।
युगप्रधान जगि जागतउ, पू० श्री जिनचन्द मुणिंद।
सानिधि करिज्यो मघ ने, पू० समयसुंदर आणंद ।।पू०।।तु०।।११।।

।। इति श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराणा आलजा गीत ।।

स० १६६६ वर्षे श्री समयसु(दं)र महोपाध्याय तच्छिष्यमुख्य श्री वाचनाचार्य श्रीमहिमासमुद्र ×गणि तच्छिष्य प० विद्याविजय गणि शिष्य प० वीरपालेनालेहि ।। १ ।। (पत्र ४ हमारे संग्रहमें)

× पाठक श्री समयसुन्दरजीगणि ने इनके आग्रहसे स० १६६० में "श्रावकाराधना" बनाई जिसकी अन्त्य प्रशस्ति इस प्रकार है :—
आराधना सुगम संस्कृत वार्तिकाभ्या, चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण।
श्रावाभिधान नगर महिमासमुद्र शिष्याग्रहेण मुनि षडरस चन्द्र वर्षे ॥

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

मन धरीय सासण माइ, तूं मुझकरि सुपसाउ,

मन वचन दृढ़ करिकाय, चिदानंद सुं लयलाय,

गाइवा श्री गछराउ, मुझ उपज्यो वहु भाउ ॥ १ ॥

धन धन खरतर गच्छ मंडण, श्रीजिनचंद्रसूरि पय वंदण । टेर ।

मारवाड़ि देस उदार, जिहां धरम को विस्तार ।

तिहां खेतसर मंझारि, ओसवंश कउ सिणगार ।

सिरवंत साह उदार, तसु सिरीय देवी नार ॥ धन० ॥ २ ॥

सुख विलसतां दिन दिन्न, पुण्यवंत गरभ उपन्न ।

नव मास जिहां पडिपुन्न, जनमीया पुत्र रतन्न ।

तिहां खरचीया वहु धन्न, सव लोक कहइ धन धन्न ॥धन०॥३॥

नाम थापना सुलताण, नितु नितु चढ़ते वान ।

जग मांहे अमली मान, सूरिज तेज समान ।

मतिमंत सव गुण जाण, रूप रंजवइ रायराण ॥ धन० ॥ ४ ॥

तिहां विहरता माणिकसूरि, आविया आणंद पूरि ।

देसणा दिद्ध सनूरी, निसुणइ भवियण भूरि ।

पूरव पुण्य पडूरि, मोहनी कर्म करि चूरि ॥ धन० ॥ ५ ॥

सुलताण मनहि विचार, लेइया सयम भार ।
सुणि मात निज परिवार, यहु अथिर सब ससार ।
अनुमति द्यो सुविचार, हम हार्दिगे अणगार ॥ धन० ॥ ६ ॥
सुणि पूत तू सुकमाल तरो नव योवन सुरसाल ।
यहु मदन अति असराल, क्या जाणदी तू वाल ।
आपणि मनि सभाल, तब पीउइ चारित्रपाल ॥ धन० ॥ ७ ॥
अव निसुणि मोरी मात, ए छोडि झूठी वात ।
चारित्र कउ व्याघात, नहु कीजइ कहि तात ।
सजम्म लेइ विख्यात, लइ जु नीकी भाँति ॥ धन० ॥ ८ ॥
भणिया इम इग्यारह अग, मन माहे आणि रग ।
गुरु भालि अतिहि उत्तग, गुरु रूपि विजित अनंग।
परवादि वाद अभग, गुरु वचन गग तरग ॥ धन० ॥ ६ ॥
सोलसइ सवत वार, जिनमाणिक्यसूरि पटधार ।
जिणि सूरि मन्त्र उचार, पामीयो पुण्य अवतार ।
सिरिवत शाह मल्हार, सब लोक मानइ कार ॥ धन० ॥ १० ॥
सुखकरउ श्रीजिणचद, सब साधु केरे वृन्द ।
जा लगि रवि धू चन्द ता लग तू चिरनन्द ।
कहइ कनकसोम मुणिद, करउ सघ कू आणद ॥ धन० ॥ ११ ॥
॥ स० १६२८ वर्षे प० कनकसोमैर्विलिखि ॥

(२)

राग—मल्हार

भलइ री भलइ आज पूज्य पधारइ, विहरता गुरु साधु विहारइ ।भ०।
जुगवर श्रीजिन शासनि आगइ, महियल मोटइ भाग सोभागइ ॥भ०१॥

सूरिमन्त्र गुरु सानिध मोधिउ, पातिसाहि अकबर प्रतिबोधिउ ।भ०।
सब दुनीया मांहे कीधी भलाइ, हफतह रोज अमारि पलाई ॥भ०॥२॥
परतिख पंचे पीर आराधी, संघ उदय काजि पंचनदी साधी । भ० ।
वाणी अमृत वखाण सुणावइ, सूत्र सिद्धांत ना अरथि जणावइ॥भ०॥३
वलिहारी म्हारा पूजजी ने वयणे, वलिहारी अणियाले नयणे ।भ०।
श्रीवन्त-नन्दन सकल सनूरउ, उदयवन्त गुरु अधिक पडूरइ॥भ०॥४॥
? ....,..............................।भ०।
श्रीजिनमाणिकसूरि पटधारी, वाचक श्रीसुन्दर सुखकारी ॥भ०॥५॥

(३)

ए मेरउ साजणीयउ सखि सुन्दर सोइ, जो मुझ वात जणावइ रे ।
किणि वाटड़ियइ मेरउ पूज्य पधारइ, श्रीगुरु सवहि सुहावइ रे ।
गुरु सवहि सुहावइ, जिणि पुरि आवइ, तिणिपुरि सोह चढ़ावइ ।
गुरु सोभागी, गुरु विधि आगी, पुण्य उदय स चढ़ावइ ।
गच्छराउ गुणी जिनचन्द मुणी, जण कार न लोपइ कोइ ।
आवाजउ गुरु कउ जो जांणइ, मेरउ साजण सोइ ॥१॥
ए जिम मइगलीयउ वण वीझ विनोदी, जिम घन दरसण मोरा रे ।
रवि दंसणियइ कोक मुरंगी, दरसण चन्द चकोरा रे ।
जिम चन्द चकोरा रे, तेम अघोरा देखि दरसण तोरा ।
हित संतोषइ पुण्यइ पोषइ, अति हरषित मन मोरा ।
निरदन्दी श्रीजिनचन्द्र पधारउ, वेगइ होइ प्रमोदी ।
तुम्हि देखि सहु जण जिम वीझावण, मइगलीयउ सुविनोदी ॥२॥

ए गुरु जोवतीयड विधि मारगि लीयड इणिपुरि लोहन मासारे।
कसि कचणीयड जेम परीख्या, दिन दिनि वान सवाया रे।
तिणु वान सवाया मोह न माया, मन्मथ आग मनाया।
पट्ट मोहारा कोमल काया, आ खरतर गच्छ राया।
ज्युं लागी रंगीरसि निउं रमतउ, अलि मकरंद पीयउ।
भाग वडी गुणि वर जेवणि, जो विधि मारग लेयउ ॥३॥
ए मनि आणंदयउ साधु कीरति, बोल्इ ए गुरु सील उदार रे।
गुरु सुहव दे कूखि मराला, श्रीवन्त साह मल्हारा रे।
मरि वन मल्हारा श्रीजयकारा, रीहडकुलि सिणगारा।
जग आधारा तिणु अविकारा, माणिकसूरि पटधारा॥
चउरासी गछ माहि गाजी निशल्या, कोइ नहीं इणि तोलइ।
चिरनंदउ जिणचन्द मुणिसर, साधुकीर्ति इम बोलइ ॥ ४ ॥

(४)

राग—देशाख

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, सुललित वाणि करइ रे वखान।
युगप्रधान जिन शासनि सोहइ, अकबर शाहु दीयइ बहुमान ॥१॥
गुजर मंडलइं सोभन, मतन सुखि सुनि जसु गुणगान।
बहुत पहुरि सुगुरु पधारउ, बसन शोभि लाहोर सुथान ॥२॥श्री०॥
अरथ विचार पूछि मत्र थिर थिर, रीझे अकबर साहि सुजान।
बहुत ज दरसनि मइ देख्ये, कौन कहुं या सुगुरु समान ॥श्री०॥३॥
भाग सोभाग अधिक या गुरु कउ, सूरनि पाक अमृत समवानि।
पेम करइ अकबर आगमये, सब दुनीया मंहि अभयदान ॥श्री०॥४॥

श्रीजिनमाणिकसूरि पटोधर, रीहड़ वंशि चढ़ावत वांन ।
कहइ गुणविनय पूजजो प्रतपउ, खरतरगच्छ उदयाचलभान।श्री०।५।

(९)

राग—सारंग

सरसति सामिणी विनवुं, मांगु एक पसाय । सखीरी ।
उलट आणी गाइसुं, श्रीखरतर गच्छराय ॥ स० ॥ १ ॥
श्रीचिणचन्द सूरिश्वरू, कलि गौतम अवतार । स० ।
सूरि सिरोमणि गुणभर्यो, सकल कला भंडार ॥श्री०॥ २ ॥
ओसवंश सिरि सेहरउ, रीहड़ कुलि सिणगार । स० ।
सिरियादे उरि जनमीया, श्रीवंत शाह मल्हार ॥श्री०॥ ३ ॥
श्रीजिनशासन परगड़उ, वड खरतरगच्छ ईस । स० ।
नर नारी नित जेहनउ, नाम जपइ निशदीस ॥श्री०॥ ४ ॥
श्रीजिनमाणिकसूरि नइ, पाटइ प्रगट्यउ भाण । स० ।
राय राणा मुनि मंडली, मानइ मोटा जाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥
सोभागी महिमानिलउ, महियल मोहनवेलि । स० ।
अबूझजीव प्रतिबूझवइ, वाणि सुधारस रेलि ॥श्री०॥ ६ ॥
जग रुगले जस पामीयउ, प्रतिबोधी पातिशाह । स० ।
खंभाइत दधि माछली, राखी अधिक उच्छाह ॥ श्री० ॥ ७ ॥
आठ दिवस आषाढ़ के, अट्ठाही निरधारि । स० ।
सब दुनीयां मांहि सासतो, पालावी अमारि ॥ श्री० ॥ ८ ॥
शील सुलक्षण सोहतउ, सुन्दर साहस धीर । स० ।
सुविधि सुपरि करि साधीया, पंचनदी पंचपीर ॥श्री०॥ ९ ॥

सूधउ मारग उपदेसो, पाय लगाड्या लाख । स० ।
दरसण ज्ञान क्रिया धर, सविगच्छ पूरइ साख ।।श्री०।।१०।।
मइ हियि अक्षर थापिया, महगुरु युगहप्रधान । स० ।
आसुन्दर प्रभु चिरजयउ, दिन दिन चढतइ वान ।।श्री०।।११।।

(६)

श्री अकबर बहुमान, कीधउउ सुप्रधान ।
कर्मचन्द बुद्धिनिधान । मीर मलिक खोजा खान,
काजीमुला परधान । पयनमइ करि गुणगान, दिन चढते वान ।।१।।
मन दिन मुझ मन रलि घणी, श्रिय जिणचन्द सूरिसेव तणी । आं ।
मारवाड गुजर बग, मेवाड सिन्धु कलिंग ।
मालव अरूव अग, पूरब सुदेस तिलग ।
सब दस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चग ।
जिम केतकि वनभृङ्ग, तिम सुगुरु सु मुझ रङ्ग ।। २ ।।सव०।।
कलि गोतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।
निरमाय निरहकार, धन धन्न ए अणगार ।
माणिक्यसूरि पटधार, अति रूप वयर कुमार ।
श्रावक शाह मल्हार, 'सुमतिकलोल सुखकार ।। ३ ।।सव०।।

(७)

अकबर भूपति मानीया, जिग मानइ सहु लोइ ।
जिनचन्द्रसूरि सुरीश्वर, वन्दै वाछित होइ ।
वदया वछित होइ अहनिसि, देखता चिन हीस ए ।
श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि समवडि अवर कोइ न दीसए ।
सम्पति कारक, दुरतनिवारक धर्मधारक महाव्रती ।
मन भाव आणी लाभ जाणो, नमइ अकबर भूपती ।। १ ।।

असुरां गुरु प्रतिबोधीउ, दाखी धरम विचार।
शासन सोह चढावीयो, माणिकसूरि पट्टधार ॥
पट्टधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड़ वंसइ दिन मणी ।
श्रीवंत श्रीयादेवी नंदन, सुविहित साधु सिरोमणी ॥
गुणरयण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण व्रत लीउ ।
सुविचार सार उदार भावइ असुरां गुरु प्रतिबोधीयउ ॥ २ ॥
एहवो गुरु वंद्यो नहीं इणि जगि ते अकयथ ।
अकबर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमथ ॥
मणिमथ खरतर गच्छ केरउ, अभिनवेरउ सुरतरु ।
मन तणा कामित सयल पूरइ, रूप जेम पुरन्दरु ॥
जसु तणइ दरसणि दुरित नासइ, रिद्धि वासइ घर सही ।
इम कहइ अकबर तेह अकयथ, जेणि गुरु वंद्यो नहीं ॥ ३ ॥
युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकबर राज ।
सइमुख हरखै इम कहइ, ए गुरु सब सिरताज ।
सिरताज सब गच्छ एह सहगुरु, करइ वगसीस इम वली,
गुजरात खभायत मंदरि करउ निरभय माछली ।
वर्धमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली ।
आपइ अकबर अधिक हरपे, युगप्रधान पदवी भली ॥ ४ ॥
जां लगि अम्बर रवि शशि, जां सुर शैल नदीस ।
तां नंदउ ए राजियो, मानइ आण नरेस ॥
जसु आण मानइ राव राणा, भाव बहु हियडइ धरी ।
नन्द त्रुधिरस शशि वरसि चैत्रह नवमि तिहि अति गुण भरी ।

इम विमल विरुद मगद मचर, समयप्रमोद मसुइसा ।
युगवर जिनचन्द्रसूरि वंदा, जाम मगर रवि शशि ॥ ५ ॥

(८)

॥ पंच नदी सायन गीत ॥

विक्रम (पुर) नयरे श्री मन हरषिये एक नी ढाल ।
श्री गौयम गणहर प्रणमी करी आणी उ-ट अङ्ग ।
गुरु गुण गावता मुझ मन गह गहे, थायइ अति उच्छरङ्ग ॥१॥
धन श्रीजिनशासन सलहियें, खरतर गच्छ सिणगार ।
युगप्रधान जिनचन्द्र जतीसरु, गुरु गोयम अवतार ॥२॥धन॥
टामपुरे जिनधर्म सुणाविने, बूझव्यो पातिसाह ।
श्री गुरु पंचनदी पति साधिवा, कीधा मनहिं उछाह ॥३॥धन॥
मच साथि सुलताण पधारिया, पइसायों सविशेष ।
देख हरख्या सवि जन पय नमें, खान मलिक तिम सेख॥४॥धन॥
ठामि ठामि हुकुमइ श्री शाहिने, वड्ता धर्म विचार ।
अमरशान मछियल वरतावता, सत्र उदय जयकार ॥५॥धन॥
आया पंचनदी तट पत्तनइ, चन्द्रवंशे अभिमान ।
आविल अट्ठम तप गुरु आदरी, बैठा निश्चल ध्यान ॥६॥धन॥
सोलसय बावने वच्छरे, पुष्य सहित रविवार ।
माहवउल बारस तिथि निरमली, शुभ महूरत शिशि वार ॥७॥धन॥
बेडी बइसी पहुता जिहा मिलै, पंचनदी भर नीर ।
अवरति निश्चल नाव तिहा रहो, ध्यान धरै गुरु धीर ॥८॥धन॥

शील सत्त तप जप पूजा वसै, माणिभद्र प्रमुख सुमन्न ।
यक्ष सहु जिनदत्तसूरि सानिधै, तेह थया सुप्रसन्न ॥९॥धन०॥
प्रहसमि गुरुजी पत्तणि अविया, वाज्या जेत्र निसाण ।
ठाम २ ना संघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ॥१०॥धन०॥
घोरवाड़ वंसे परगड़ा, नानिग सुत राजपाल ।
सपरिवार तिहां वहु धन खरचिनै, लीधो यश सुविशाल ॥११॥धन०॥
तिहां थी उच्चनगर गुरु आविया, वंद्या शान्ति जिणंद ।
देरावर प्रणम्या जग दीपता, श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥१२॥धन०
हिव तिहां थी मारग विचि आवतां, सुन्दर थुंभ निवेश ।
पद पंकज जिनमाणिकसूरिना, भेट्या तिणे प्रदेश ॥१३॥ध०॥
नवहर पास जुहारी पधारिया, जेसलमेरु मंझार ।
फागन सुदी बीजै सहु हरपीया, राउल संघ अपार ॥१४॥धन०॥
श्रीजिनचंद यतीश्वर गुणनिलो, प्रतपो युग प्रधान ।
'पद्मराज' इम पभणइ मन रसइ, दिन दिन वधतै वान ॥१५॥धन०॥

(९)

वनी हे सद्गुरुकी ठकुराई
श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदो, जो कुछ हो चतुराई ॥१॥वनी०॥
सकल सनूर हुकम सव मानति ते जिन्ह कुं फुरमाई ।
अरु कछु दोप नहीं दिल अंतरि, तिमि सवहीं मनिलाई ॥२॥वनी०॥
माणिकसूरि पाट महिमा वरो, लइ जिन स्युं वितणाइ ।
झिगमिग ज्योति सुगरुकी जागी, 'साधुकीरति' सुखदाइ ॥३॥वनी०॥

(१०) राग मल्हार

पूज्य आवाजउ साभलउ सहिए, हरख्या सगलालोक।
मोरउ मन पिण उलस्यउ सहिए, जिम हरि दंसग कोक ॥१॥
इण रे सुगुरु जी जग माहि जस पडहउ वजाड़यउ ॥आं०॥
पहिलुं अकबर मानीया सहीए, ए गुरु हीरा खाणि।
युगप्रधान पद तिण दियउ सहिए, पय लागइ रायराणि ॥२॥इण०
गच्छ अनेक मई जोइया सहिए, तुम सम अवर न कोइ।
हेलइ मयण वसी कीयउ सहिए, शीलइ थूलभद्र जोइ ॥३॥इण०
अनुक्रमि श्रीगुरु विहरता सहीए, आव्या पाटण माहि।
चउमासउ प्रभु तिहा करइ सहीए, मन आणी उच्छाह ॥४॥इण०॥
लेख आयउ आगरा थकी सहीए, जाणी सगली बात।
साहि सलेम कोपइ चढ़यउ सहीए, कुमतो थाप्या राति ॥५॥इण०॥
चउमासी करि पारणुं सहीए, करता देस विहार।
उग्रसेनपुर आविया सहीए, वरत्या जय जयकार ॥६॥इण०॥
श्रीपातिशाह बोलाविया सहीए, जंगमजुगप्रधान।
धरम मरम कहि बूझव्यउ सहीए, तुरत दीया फुरमान ॥७॥इण०॥
जिण शासन उजवालियउ सहीए, साह श्रीवंत कुल चन्द।
साधु विहार मुगता कीया सहीए, खरतर पति जिणचन्द ॥८॥इण०
सिरिया दे उरि हंसलउ सहीए, तेजइ दीपइ भाण।
"लब्धिशेखर" मुनि इम भणइ सहीए, सेवक आपणउ जाणि ॥९॥इण०॥

(११)

राउल श्री भीम इम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे ॥ पूज जी ॥
,पधारो जेसलमेरु नइ जी, प्रीति धरी निज चित्त रे ॥रा०॥१॥

वखत वडा गुजराति ना जी, पूज पधार्या जेथ रे।
धन धन लोक सहुवलि रे, जेह वसइ छइ तेथ रे ॥२॥रा०॥
पूज तणइ जे श्रीमुखइ जी, निसुणइ अमृत वाणि रे।
सेव करइ गुरु नी शाश्वती रे, तेहनो जन्म प्रमाणि रे ॥३॥रा०
दिवस घणा विचि वउलीया जी, आवण केरी आस रे।
हुंसि अछइ माहरइ हियइ जी, इहां जइ करउ चउमासि रे ।४॥रा०॥
श्री जेसलगिरि संघ नी जो, अधिक अछइ मन कोडि रे।
गुरुजी चरणइ लागिवा, रे त्रिकरण शुद्ध कर जोड़ि रे ॥५॥रा०॥
साधु नी संगति जउ मिलइ रे, तउ पूजइ मन नी आस रे।
चिंतामणि करि जउ चढयइ रे, तउ चित्त थाइ उल्लास रे ॥६॥रा०॥
मुझ मन हरख घणउ अछइ जी, तुम्ह मिलवा नुं आज रे।
तुम्ह आव्यां सवि साध्यस्यां रे, अधिक धरम तणा काज रे ।७॥रा०॥
इहां विलम्ब नवि कीजियइ जी, श्री खरतर गणधार रे।
श्री जिनचन्द्र गुणभणइ रे, "गुणविनय" गणि सुखकार रे ॥८॥रा०॥
(स्वयंलिखित-पत्र १ हमारे संग्रह में)

(१२) राग—सामेरी

सुगुरु कइ दरसन कइ वलिहारी।
श्री खरतरगच्छ जंगम सुरतरु, जिनचन्दसूरि सुखकारी ॥१॥सु०॥
अकबर शाहि हरख करि कीनउ, युगप्रधान पदधारी।
खंभायत मइ शाहि हुकम तइं, जलचर जीव उवारी ॥२॥सु०॥
सात दिवस जिनि सव जीवन की, हिंसा दूर निवारी।
देश देशि फुरमान पठाए, सब जग कु उपगारी ॥३॥सु०॥

जिनमाणिक्यसूरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवतारी।
कहइ 'गुणविनय' सकल गुण सुंदर, गावत सब नर नारी ॥४॥सु०॥
(कवि के हस्तलिखित पत्र से उद्धृत)

(१३) राग—धन्यासिरी मारूणी

सुगुरु मेरइ चिरि जीवउ चउमाल।
सम्भायत दरिया की मच्छली, बोलत बोल रमाल ॥१॥सु०॥
भाग हमारइ इहां आवत हइ, लाभपुरइ भय टाल।
श्रीजी कु अहमी अरज करज्यो, जलचर कुं प्रतिपाल ॥२॥सु०॥
एह अरज निसुणी पूज्या तइ, रज्यु वर भूपाल।
हुकम करि नइ छाप पठाइ, हरस्या बाल गोपाल ॥३॥सु०॥
युगप्रधान जिनचन्द यतीसर, छइ जसु नाम विशाल।
शाहि अकबर तसु फरमाइ, तिणि झाडायाला जाल ॥४॥सु०॥
निशभरि नींद अबइ आवत हइ, मरण तणु भय टाल।
जय जय जय आशीस दियत हइ, मिलि जीवन की माल ॥५॥सु०॥
धन धन धोर हुमाऊ कु नन्दन, जीवन दान दयाल।
धन धन श्रीखरतरगच्छ नायक, पटधारी रखवाल ॥६॥सु०॥
धन मन्त्री कर्मचन्द वडावन, उद्यम कीउ दरहाल।
साहिब नइ साचइ सुप्रमाइइ, अलीय विघ्न सब टालि ॥७॥सु०॥
धन त सब इणइ ज अवसर, परघल खरचइ माल।
तसु "कल्याण कमल" नो सपद, आपद न हुवइ बाल ॥८॥सु०॥

(१४) अपूर्ण

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसु श्री गुरुराय री माइ ।
युगप्रधान जिनचन्द यतीश्वर, सुर नर सेवे पाय री माई ॥
कलियुग कल्पवृक्ष अवतरियो, सेवक जन सुखकार री माई ॥आं॥
जिन शासन जिनचन्द तणो यश, प्रतपे पुहवि मझार री माई ।
प्रह्सम नित नित श्रीगुरु प्रणमो, श्रीखरतर गणधार री माई ॥२॥
संवत पनर पचाणुं वर्षे, रीहड़ कुल मनु भाण री माई ।
श्रीवंत शाह गृहणी सिरियादे, जनम्या श्री "सुरताण" री माई ॥३॥
संवत सोल चड़ोतर वरसे, लीधो संयम भार री माई ।
जिनमाणिक्यसूरि सैं हाथे दिक्षा, शिष्यरत्न सुविचाररी माई ॥४॥क०
लघु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो, श्रुतसागर नों सार री माई ।
अभिनव वयर कुमर अवतारै, सकल कला भंडार री माई ॥५॥क०॥
वखत संयोगे सोल बारोत्तर, जेशलमेर मंझार री माई ।
पाम्यो सूरीश्वर पद प्रकट्यो, श्रीसंघ जय २ कार री माई ॥६॥क०
उग्र विहार आदर्यो श्रीगुरु, कठिन क्रियाउद्धार री माई ।
चारित्र पात्र महंत मुनीश्वर, रत्नत्रय आधार री माई ॥७॥क०॥
सतरोत्तर वर्षे पाटण में, अधिक वधारी माम री माई ।
च्यार असी गच्छ साखै खरतर, विरुद दीपायो ताम री माई ॥८॥क०
हथगाउर सोरीपुर नामे, तीरथ विमलगिरिंद री माई ।
आबूगढ़ गिरनार सिखर तिहां, प्रणम्या श्रीजिनचन्दरी माई ॥९॥क०
आरासण तारंगै तीरथ, राणपुरै गुरुराज री माई ।
वरकाणा संखेश्वर ग्रामे, प्रणम्या श्री जिनराजरी माई ॥१०॥क०॥

अवर तीर्थ पण श्रीगुरु मेल्या, प्रतिबोध्यो पातिसाह री माई।
अकबर अधिको आमति निरखी, दीधो मौनें लाह री माई ॥११॥
खम्भायत नो खाडो करा, राख्या जीव अनेक री माई।
वरस एक लग श्री गुरु वचने, पाम्यो परम विवेक री माई ॥१२॥क०
सात दिवस लगि निज आणा में वरतावी अमारि री माई।
अकबर अवर अपूर्व कारिज, कीधा गुरु उपकार री माई ॥१३॥क०॥
पचनदी पनि परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई।
॥

(१८) श्री गुरुजी गीत

युगवर श्री जिनचन्द्रजी, जगि जिनशासनि चन्द रे।
प्रहसमि उठी पुजियइ, कामित सुरतरु कद रे ॥१ जुग०॥
सवनि पनर पचाणुवइ, श्रीवन्त साह मल्हार रे।
मात सिरियादेवि जनमीयउ, रीहड कुल सिणगार रे ।२।जुग०।
सवत सोल चिडोत्तरइ, जाणी जिणि अथिर ससार रे।
हाथि जिनमाणिकसूरि नइ, सग्रह्यउ सयम भार रे ।।३।।जुग०।।
वयरकुमार तणी परइ, लघुवइ बुद्धि भंडार रे।
गुरुकुल वास वसि पामियउ, प्रवचन सागर पार रे ।४।जुग०।
सवत सोल बारोतरइ, जेसलमेरु मझारि रे।
भाग्य बलि सूरि पदवी लही, हरखिया सवि नर नारि रे ।५।जुग०।
कठिण क्रिया जिण उद्धरि, माडियउ उग्र विहार रे ।
सूरि जिणवल्लभ सारिखउ, चरण करण गुणधार रे ।६।जुग०।

पाटण सोल सतरोतरइ, च्यारि असी गच्छ साखि रे।
खरतर विरुद दीपावियउ, आगम अक्षर दाखि रे ॥ ७ ॥ जुग० ॥
सौरीपुर हथिणाउरे, विमलिगिरि गढ़ गिरिनार रे।
तारङ्ग अर्बुदि तीरथइ, यात्र करि बहु वारि रे ॥ ८ ॥ जुग० ॥
अकबर शाहि गुरु परिखोयउ, कसवटि कंचण जेम रे।
पूज्यनी मधुर देसण सुणी, रंजियउ साहि सलेम रे ॥९॥ जुग० ॥
सात दिवस वरतावियउ, मांहि दुनिया अभयदान रे।
पंच नदी पति साधिया, वाधियउ अति घणउ वान रे ॥१०॥जुग०॥
राजनगर प्रतिष्ठा करी, सबल मंडाण गुरुराइ रे।
संघवी सोमजी लछिनउ, लाह लियइ तिणि ठाइ रे ॥११॥जुग०॥
सुप्रसन्न जेहनइ मस्तकइ, गुरु धरइ दक्षिण पाणि रे।
तेह घरि केलिकमला करइ, मुखवसइ अविर(ल) वाणि रे ॥१२॥जुग०॥
दरसनी जिन मुगता करी, सोल सित्तर वासि रे।
अविया नगर बिलाड़ए, सुगुरु रह्या चउमासि रे ॥१३॥जुग०॥
दिवस आसु वदि वीजनइ, उच्चरी अणशण सार रे।
सुरपुरि सुगुरु सिधारिया, सुर करइ जय जयकार रे ॥१४॥जुग०॥
नाम समरणि नवनिधि मिलइ, सवि फलइ संघनी आस रे।
आधि नइ व्याधि दूरइ टलइ, संपजइ लील विलास रे ॥१५॥जुग०॥
केशर चन्दन कुसुम सुं, चरचतां सहगुरु पाय रे।
पुत्र संतान परघल हुवइ, दिन दिन तेज सवाय रे ॥१६॥जुग०॥
श्रीजिनचन्दसूरीसरू, चिर जयउ जुगहप्रधान रे।
इणपरि गुरु गुण संथुणइ, पाठक 'रत्ननिधान' रे ॥१७॥जुग०॥

(श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार-सूरतस्थ हस्त लिखत ग्रन्थात्
प्रेपक पन्यास केशरमुनिजी)

॥ इति श्री गुरुजी गीतं ॥

(१६)

॥ ६ राग ३६ रागिणी गर्भित् गीत ॥

कीजइ ओच्छव सन्ता सुगुरु केरउ (१)
सुललित वयण सुण सखि मेरउ (२)
कहउरी संदेस खरा गुरु आवतिया (३)
तिणवेला उलसी मेरी छातिया (४) ॥१॥

आएरी सखि श्रीवंतमल्हारा,
खरतर गच्छ शृङ्गारहारा। ए आंकडी (५)
अइसा रंग वधावन कीजइ (६)
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ (७)
ऐसे सुगुरु कुं नित्य उलगउरी (८)
सुन्दर शरीरा गच्छपति अउरी ॥ ६ ॥ आ० ॥२॥

दु ख के दार सुगुरु तुम हउ री (१०)
गाउ गुण गुरु केदारा गउरी (११)
सोरठगिरि की जात्रा करणकु आपणरी गुरु पाय परउ (१२)
भाग्यफल्यो ओच्छव लोकणरयो (१३) ॥३॥
तु कृपापर दउलति दे मोहि हु तेरो भगत हुं री (१४)
गुरुजी तु उपर जीव रासी रहुरी (१५)
इंदु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी (१६)
हु चरण लागु हर हमर वारी (१७) आ० ॥४॥

अहो निकेत नटनराइण फइ आगइ
अइसइ नृत्य करत गुरुके रागइ (१८)
ऐसे शुद्ध नाटक होता गावत सुंदरी
वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर घुघरी (१६) ॥५॥
रास मधु माधवइ देति रंभा, सुगुरु गायंति वायंति भंभा (२०)
तेजपुज जिमसे भेइरवी, जुगप्रधान गुरु पेखउ भवि(२१)आ०॥६॥
सबहि ठउर वरी जयतसिरी (२२)
गुरुके गुण गावत गुजरी (२३)
मारुणि नारी मिली सब गावत सुन्दर रूप सोभागी रे (२४)
आज सखि पुन्य दिसा मेरो जागी (२५) ॥७॥
तोरी भक्ति मुज मन मां वसी री (२६)
साहि अकबर मानइ जसु बाबरवंसी (२७)
गुरुके वंदणी तरसइसिंधुया (२८)
इया सारी गुरुकी मूरतिया (२६) आ० ॥८॥
गुरुजी तुंहिजकृपाल भूपाल कलानिधि तुंहिज सबहि सिरताज(३०)
आवइ ए रीतइ गच्छराज (३१)
संकरा भरण लांछन जिन सुप्रसन्न
जिनचंदसूरि गुरुकुं नतिकरु (३२) ॥६॥
तेरी सुरतकी बलिहारी, तुं पूरव आस हमारी,
तुं जग सुरतरु ए (३३)
गुरु प्रणमइरी सुरनर किन्नर धोरणी रे
मनवंछित पूरण सुरमणी रे (३४) ॥१०॥

मालती मन्दमिश्री अमृत थइ वचन मीठे गुरु तर इद ताअइ (३५)

करउ वइया गुरुकु त्रिकाल्ह हरउ पंच प्रमाद रे (३६)

सवईकु कल्याण सुख सुगुरु प्रमाद रे (३७) आ० ॥११॥

वहु परभाति वउ उठउ सार (३८)

पंचमहाव्रत धर गुरु उदार (३६)

हु आदसकार प्रमुतरा, जुगप्रधान जिनचन्द

मुनिमरा, तुं प्रभु साहिब मेरा (४०) ॥१२॥

दुरित मे वारउ गुरुजी सुख करउ र श्रामइ पुरउ आशा

नाम तुमारइ नवनिधि सपजइ र लामइ लील विलास (४१) ॥१३॥

धन्यासरी रागमाला रची उदार, छ राग छत्रीस भाषा भद विचार,

सोलमइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरुवार,

थभण पास पसायइ प्रभावती मझार (२) ध० ॥१४॥

जुगप्रधान जिनचन्द सूरींद सारा

चिर जयउ जिनसिंघसूरि सपरिवार (३ घ)

सकलचन्द मुणीसर सीस उन्नतिकार,

"समयसुन्दर" सदा सुख अपार (६ ध०) ॥१५॥

इति श्रीयुगप्रधान जिनचन्दसूरीणा रागमाला सम्पूर्णा,

इता प० समयसुन्दरगणिना लिखिता स० १६५२ वर्षे

कातिक सुदि ८ दिन श्री रतनतीर्थ नगर।

(१७) रागः—आसावरी

पूज्यजी तुम्ह चरणे मेरउ मन लीणउ, ज्युं मधुकर अरविंद ।
मोहन वेलि सबइ मन मोहियउ, पेखत परमाणंद रे ॥१॥पूज्य०॥
सुललित वाणि वखाण सुणावति, श्रवति सुधा मकरंद रे ।
भविक भवोदधि तारण वेरी, जनमन कुमदनी चंद रे ॥२॥ पूज्य०॥
रीहड वंश सरोज दिवाकर, साह श्रीवंत कउ नंद रे ।
"समयसुन्दर" कहइ तुं चिरप्रतपे, श्रीजिणचन्द मुणिंद रे ॥३॥पूज्य०॥

(१८) आसावरी

भले री माई श्री जिनचन्द्रसूरि आए ।
श्रीजिन धर्म मरम बूझण कूं, अकबर शाहि बुलाए ॥ १ ॥
सद्गुरु वाणी सुणि शाहि अकबर, परमाणंद मनि पाए ।
हफतहरोज अमारि पालन कुं, लिखि फुरमान पठाए ॥ २ ॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूर पुलाए ।
"समयसुन्दर" कहै श्रीजिनचन्दसूरि सब जनके मन भाए ॥३॥

(१९) आसावरी

सुगुरु चिर प्रतपे तुं कोड़ि वरीस ।
खंभायत बन्दर माछलड़ी, सब मिलि देत आशीस ॥ १ ॥ सु०
धन धन श्री खरतरगच्छ नायक, अमृतवाणि वरीस ।
शाहि अकबर हमकुं राखणकुं, जासु करी बकशीस ॥ २ ॥
लिखि फुरमाण पठावत सबही, धन कर्मचन्द्र मंत्रीश ।
"समयसुन्दर" प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥३॥

(७०)

श्री खरतर गच्छ राजीयउ रे माणिक सूरि पटधारो रे।
सुन्दर साधु सिरोमणी रे, विनयवंत परिवारो ॥ १ ॥
विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखी आज हमारो।
ए चन्द्राउलउ छइ अति सारउ, श्रीपूज्यजी तुम्हे वेगि पधारो॥१॥
जिणचन्दसूरिजी रे, तुम्ह जग मोहण वलि।
सुणज्यो वीनती रे, आवउ आम्हारइ दिसि, गिरुआ गच्छपति रे॥
वाट जोवंता आवीया रे हरख्या सहु नरनारी।
संघ सहु उच्छव करइ रे घरि २ मंगलाचारो॥
घरिघरि मंगलचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ बहिनी मोरी।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्योरी, हुं बलिहारी पूजजी तोरी॥२॥श्री॰
अमृत सरिखा बोलडा रे, सांभलतां सुख थाज्यो।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जाज्यो॥
अलिय विघन सहु जायइ रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदु उगमते सूरइ।
ए चन्द्राउलउ गाउ हजूरइ, तउ मुझ आस पूरइ सवि सूरइ॥ ३॥
जिणदीठां मन उलसइ रे नयण अमीय झरंति।
ते गुरुना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति॥
वंछित काज सरंति सदाइ श्रीजिणचन्दसूरि वांदउ माई।
ए चन्द्राउला मास सदाई, प्रीति "समयसुन्दर" मनिपाई॥४॥श्री

(७१)

जिनचन्दसूरि आलीजा गीत रागः—आसावरी सिंधूडो

थिर अकबर मुं पायोयउ, युग प्रधान जग जोइ।
श्रीजिनचन्दसूरि सारिखउ. सूरि॰ कलियुग न होसइ कोय॥१॥

ऊमाह धरी नइ तातजी हुं आवियउरे, हो एकरसउ तुं आवि ।
मनका मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाउ ॥ २ ॥
जिनशासनि राख्यउ जिणइ, ढोल्लउ ढमढोल ।
समझायउ श्री पातिसाह, सद्गुरु खाटयउ तई सुबोल । ऊ० ॥३॥
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिन्ध थी पंथ ।
नगर गाम सहु निरखीया, कहो क्युं न दीसइ पूज्य कंथ ।ऊ० ॥४॥
शाहि सलेम सहु अंबरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारइ तुं नइ चाह मुं, हो पूज्यजी पधारउ किरपाल । ऊ० ॥५॥
बाबा आदिम बाहुबलि, वीर गौयम ज्युं विलाप ।
मेलउ न सरज्यउ माहरउ मा०, ते तउ रह्यो पछताप । ऊमा०।६।
साह वडउ हो सोमजी राख्यउ कर्मचन्द राज।
अकबर इंद्रपुरि आणीयउ हो, आस्तिक वादी गुरु आज । ऊमा०।७।
मूयइ कहइ ते मूढ़नर, जीवइ जिणचन्दसूरि ।
जग जंपइ जस जेहनउ, जेह० हो पुहवि कीरत पडूरि ।ऊमा०।८।
चतुर्विध संघ चीतारस्यइ, जां जीविसइ तां सीम ।
वीसार्या किम विसरइ,विस० हो निर्मल तप जप नीम ।ऊमा०।९।
पाटि तुम्हारइ प्रगटीयउ, श्री जिणसिंह सूरीस ।
शिष्य निवाज्या तइ सहु , तइं० रे जतीयां पूरी जगीस ।ऊमा०।१०।
समयसुन्दर कृत अपूर्ण—प्राप्त

कवि कुशल लाभ कृत

॥ श्रीपूज्य वाहण गीतम् ॥

राग—आसावरी

पहिलो प्रणमु प्रथमजिण, आदिनाथ अरिहंत।
नाभि नरेश्वर कुलतिलक आपइ सुख अनंत ॥ १ ॥
चक्रवर्त्ती जे पांचमो, सरणागत साधारि।
शांति करण जिन सोलमो, शान्तिनाथ सुखकार ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी सिर मुकटमणि, यादव वंश जिणिंद।
नेमिनाथ भावइ नमुं आणी मन आणंद ॥ ३ ॥
श्री खंभायत मंडणो, प्रणमु थंभण पास।
एक मना आराधता, पूरइ जन नी आस ॥ ४ ॥
शासननायक समरीयई, वर्द्धमान वर वीर।
तीर्थंकर चौवीसमो, सोवन वर्ण शरीर ॥ ५ ॥
च्यारि तीर्थंकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीश।
त्रिण चौवीशी जिन तणा, नाम जपूं निशदीस ॥ ६ ॥
श्रीगौतमगणधर सधर, नमिसुं लब्धिनिधान।
चउलिकमला करि वशइ, महिमा मेरु समान ॥ ७ ॥
समरू शासनदेवता, प्रणमुं सद्गुरु पाय।
तासु प्रसादे गाइस्यु, श्री खरतरगच्छ राय ॥ ८ ॥

सतर भेद संयम धरइ, गिरुआ गुण छतीस ।
अधिकी उत्कृष्टी क्रिया, ध्यान धरइ निसदीस ॥ ९ ॥
सूयगडांग सूत्रे कह्या, वीर स्तव अधिकार ।
भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ॥ १० ॥
आ भव सागर सारिखुं, सुख दुख अंत न पार ।
सद्गुरु वाहण नी परइ, उतारइ भवपार ॥ ११ ॥

ढालः—सामेरी

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष वि नेऊ धाण ? ।
ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ॥ १२ ॥
मोजा ऊंचा अभिमान, विषयादिक वायु समान ।
संसार समुद्र मंझारि, जीव भम्या अनंत वारि ॥ १३ ॥
हिव पुण्य तणइ संयोग, पाम्यो सद्गुरु नो योग ।
भवसागर तारणहार, जिन धर्म तणउ आधार ॥ १४ ॥
वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ ।
कालरि जलि किहांन छीपइ, पर वादी कोइ न जीपइ ॥ १५ ॥
इहनइ तोफान न लागइ, सुखि वायु वहइ वैरागइ ।
जल थल सविहुं उपगारइ, भवियण जण हेलां तारइ ॥ १६ ॥

ढालः—हुसेनी धन्यासिरी

श्रीजिनराय नीपाइयउ ए, वाहण समुं जिनधर्म,
भविक जनतारवा ए ॥ १७ ॥

तारइ २ श्रीवत शाह नो नन्दन वाहण तणी परइ ।
तारइ २ सिरियादे नो सुत कि, वाहण मिला मती ए ।
तारइ २ श्रीपूज्य सुसाधु, श्रीखरतरगच्छ गच्छपति ए ॥ आं० ॥
अविहड वाहण ए सही ए सविहु सुख व्यापार ।
धर्म धन दायकू ए ॥ १८ ॥
तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए ।
पहलउ त पयठाण, सुमति सूत्रधर्यो ए ॥ १९ ॥
ता० गुण छत्तीस सोहामणा ए ।
बिहु दिसि बाक मडाण, सुकृत दल मलिया ए ॥ २० ॥
ता० कूया शुभ चारित्र तणउ ए ।
जयणा जोडी संधि, सवल सढ तप तणउ ए ॥ २१ ॥
ता० शील डवू सो सोभतो ए ।
ले मन सुगुरु वराण, दया गुण दोरडो ए ॥ २२ ॥
तारइ तारइ लक्ष्मी त शुद्धी त्रिपाण,
पुण्य करणी पतास, संतोष जलइ भर्याउ रे ॥२३॥
ता० दशविध धर्म वेडू गती ए ।
संवर तह जना रचि मासरि छत्रडी ए ॥२४॥
ता० सतर भेद संयम तणा ए,
ते आडग्ग अपार । मवग सु पञरी ए ॥२५॥
ता० आज्ञा नाउ अगी समोए ।
पच समिति पर वाण, कीर्त्तिरज जइ ल्हइ ए ॥२६॥
ता० विमइ वारह भावनाए ।
(दा) दाढा शुभ परिणाम, नागर नवतत्त्व तणा ए ॥२७॥

ता० फलगा फोलइ लेपीड ए, ज्ञान निरुपम नीर ।

शोलइ समरस भर्यांए ॥२८॥

ता० शासन नायक हू (क्रू) यडए, मालिम श्री गुरुराज ।

कराणि मुनिवराए ॥२९॥

ता० जिन भाषित मारग वहइ ए, वाजित्रनाद् सिझाय ।

सुसाधु खलासीयाए ॥३०॥

तारइ २ ए मारग जिनधर्म तणडए, को डोलइ नहीं लगार ।

भद्दा गुणियां करइए ॥३१॥

ता० मल (चा ?) वारो ते काठोवा ए, कुमती चोर हीनोर ।

सहु भय टालताए ॥३२॥

ता० पुण्य क्रियागे पूरीया ए, बहुरति वस्तु अनेक ।

सुजस पाखर खरीए ॥३३॥

ता० कषाय डूंगर टालवइए, वइनड ध्यान प्रवाह ।

सिलामति आवीयोए ॥३४॥

ढाल-रामगिरी:—

धर्ममारग उपदेशना, करता २ विचइ विहार रे ।

आव्याजी नगर त्रंबावती, श्री संघ हर्ष अपार रे ॥३५॥

पूज्य आव्या ते आसा फली, श्री खरतरगच्छ गणधार रे ।

श्री जिनचन्द्रसूरि वांदीयइ, साथइ २ साधु परिवार रे ॥३६॥पू०॥

आगम सूत्र अर्थे भर्यां, सुकृत क्रियाण ते सार रे ।

चारित्र वखारि अति भली(यां). व्रत पचखाण विस्तार रे ॥३७॥

वस्त अपूर्व वहुरिवा, मिल्या २ भविक नर-नार रे ।
विनय करि पुज्य नइ वीनवइ, आपउ २ वस्तु उदार रे ॥३८॥पू०॥
मोटा २ श्रावक श्राविका, करइ मडाण अनेक र ।
महोत्सव अधिक प्रभावना, जागइ २ विनय विवेक रे ॥३९॥पू०॥
ज्ञान दरशण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महत रे ।
पुण्य व्यापारि आवि मिल्या, बहुरना लाभ अनन्त र ॥४०॥पू०॥
दान गुण मोतीय निर्मला, पच आचार ते पाच रे ।
दश पचखाण ते कहरवउ, अगर ते शीतल वाच र ॥४१॥पू०॥
सूफ ते सद्दहणा खरी, सुगुरु सेवा सिकलात रे ।
पोत सुरासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ॥४२॥पू०॥
हीर पेटी महोत्सव घणा, इ श्रा (त्रा ?) मी ते सूजनी साग रे ।
भाव(जाच)परिवार लिय अति भलो, निवृति ते किसमिस द्राख रे ॥४३॥
श्रीफल श्रीगुरु देशणा, वीश थानिक कमखाव रे ।
नादि उछव मलीयागरउ, पूज्यनी भगति गुलाब रे ॥४४॥पू०॥
देश विरति ते कचकडउ, चोली(ल) या ते उपधान रे ।
दात(न)? शीलागरय वजलउ, राती जगु तेह कवाण र ॥४५॥पू०॥
शीतल सुकडि भावना, स्नात्र ते कपूर बरास रे ।
कतीरुउ कल्याणिक जाणीयइ, कस वग्यो सइ उपवास रे ॥४६॥पू०॥
मासखमण मसझारे समु (भलुं), लारीने लाख नवकार रे ।
सूर ना मेद हीरा खरा, उचित नु दान दीनार रे ॥४७॥पू०॥
पाखर कमण वरीया विसइ, लवग ओ(ब)ली विधा(सय)त्रीस रे ।
नाम आलोयण वाडीया, छठ तप विसय गुणतीस रे ॥४८॥पू०॥

संसार तारण ढु कांवली, चउथो व्रत तेह दस्तार रे ।
अखोड आंबिल निम जाणवी, कल(इ)य वेयावच्चसार रे ॥४६॥पू०॥
अठम तप ते टोक(प)रां, अठाही ते सेव खजूर रे ।
समवसरण तप ते मिरी, सोपारी सामायिक पूर रे ॥५०॥पू०॥
लाहिण माल पहिरावणी, उत्तम क्रियाण ते जोइ रे ।
परखोय वस्त जे संग्रही, लाख असंखित होइ रे ॥५१॥पू०॥
श्री गुरु शासण देवता, वाहण ना रखवाल रे ।
भगति भणी सानिध करइ, फलइ मनोरथ माल रे ॥५२॥पू०॥

रागः—केदार गौड़ी

दिन २ महोत्सव अति घणा, श्रीसंघ भगति सुहाइ ।
मन शुद्धि श्रीगुरु सेवीयइ, जिणि सेव्यइ शिवसुख पाइ ॥५३॥पू०॥
भविक जन वंदो सहगुरु पाय, श्री खरतर गच्छराय ॥आं०॥
प्रभु पाटिए चउवीसमइ, श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि ।
उद्योतकारी अभिनवो, उदयो पुन्य अंकूर ॥५४॥भ०॥
शाह (श्रावक) भंडारी वीरजी, साह राका नइ गुरुराग ।
वर्द्धमानशाह विनयइ घणो, शाह नागजी अधिक सोभाग ॥५५॥भ०॥
शाह वछा शाह पदमसी, देवजीने जैतशाह ।
श्रावक हरखा(पा)हीरजी, भाणजी अधिकइ उच्छाह ॥५६॥भ०॥
भंडारी माडण नइ भगति घणी, शाह जावडने घणा भाव ।
शाह मनुआने शाह सहजीया, भंडारी अमीउ अधिक अछाह रे॥५७॥
नित मिलइ श्रावक श्राविका, संभलइ पूज्य वखाण ।
हीयडउ उल्लसइ ...

आग्रह दरसो श्री सघनो, पूज्यजी रहया चउमास।
धर्मनो मार्ग उपदिसइ इम पहुंतो मननो आस ॥५६॥भ०॥
प्रतिमाप्रतिष्ठा थापना दीक्षा दीयइ गुरराज।
इम सफल नर भव तहनो, जे करइ सुकृत ना काज रे ॥६ ॥भ०॥

राग :—गुड मल्हार

आव्यो मास असाढ झबूक दामिनी र।
जोवइ २ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी र॥
चातक मधुरइ सादिकि प्रीऊ २ उचरइ रे।
वरसइ घण वरसात सजल सरवर भरइ रे॥६१॥
इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे।
श्रावक ना सुख हेत आया व्रतावती र।
जोवउ २ अम गुरु रीति प्रतीति वधइ वली र।
दिक्षारमणी साथ रमइ मननी रली रे॥६१॥आ०॥
सवेग सुधारसनीर सबल सरवर भया रे।
पच महाव्रत मित्र सजोगइ सचर्या र।
उपशाम पालि उतग तरग वैरागता र।
सुमति गुप्ति वर नारि सजोग सौभाग्यता रे॥६२॥
प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरुवर घणा रे।
कोकिल कामिनी गीत गायइ श्री गुरु तणा रे।
गाजइ २ गगन गभीर श्री पूज्यनो देशना रे।

सदा गुरु ध्यान स्नान लहरि शीतल वहइ रे।
कीर्त्ति सुजस विसाल सकल जग मह महइ रे।
सातें खेत्र सुठाम सुधर्मह नीपजइ रे।
श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख संपजइ रे ॥६४॥
सामग्री संयोग सुधर्म महुइ सुणइ रे।
फलीया पुण्य व्यापार आचार सुहामणा रे। २
पुण्य सुगाल हवंति मिल्या श्री पूज्यजी रे।
वाहण आव्या खेति वर वाइ हर ? रमजी रे ॥६५॥
जिहां २ श्रीगुरु आण, प्रवर्ते जिह किणइ रे।
दिन २ अधिक जगीस जो थाइज्यों तिह किणइ रे।
ज्यां लग मेरु गिरिन्द गयणि तारा घणा रे।
तां लगि अविचल राज करउ, गुरु अम्ह तणा रे ॥६६॥
परता पूरण पास जिणेसर थंभणउ रे।
श्रीगुरु ना गुण ज्ञानहर्ष भवियण भणउ रे ॥
"कुशललाभ" कर जोडि श्रीगुरु पय नमइ रे।
श्रीपूज्य वाहण गीत सुणतां मन रमइ रे ॥६७॥

गुरु गीत नं० २३

सभ (व?) नमइ चक्रवर्त्ती जिनचन्दसूरि,
चतुर (विध)संघ चतुरंग सेन सजि, वारे विघन अरि दूरि ।
नव तत नवनिधान जिन पाए, आगम रंगा कूरि ।
चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ नीलवट नूरि ॥१॥स०॥
पंच महाव्रत महल (ण?)श्रमण गुण, हइ दरबार हजूरि ।
दरसण ज्ञान चरण जिण्ह तीरथ, साधि सकति अरि चूरि ॥२॥स०॥
मरधर गूजर सोरठ मालव, पूरव सिंध सपूरि ।
पटखण्ड साधि परम गुरु मानिधि, घुरे सुजस के तूरि ॥३॥स०॥
निरमल वंस उदय पुनि पाए, दरसन अगि अंकूरि ।
मुनि"जयसोम"वदति जय २ धुनि, सुगुरु सकति भरपूरि ॥४॥स०॥

जयप्राप्ति गीत

(२४) राग :—

देखउ माई आसा मेरइ मनकी, सफल फलीर उलटि अंगि न माइ ।
सुभम जसु दमनरइ, नवरंगि दीपाथउ नाम रे ।
साम मोटी महि मंडले, सब जन करइ प्रणाम रे ॥१॥जीतउ०॥
श्रीखरतरगच्छ राजीयउ, श्रीजिनचंद्र सुरिंदर
मान मोह्यो सुमति तणउ, त्रिभुवन हुओ आणंद रे ॥२॥जी०॥
पाटणि भूप दुर्लभ सुग, वरस दसमइअसी मानि रे ।
सूरि गण पमुह तिहां चउरासी, मद्दगति जीपी आमाणि रे॥३॥जीतउ॥
दिवस सुभ थान पचासरउ, करीय परणाम विमार रे ।
सूरि जिणेश्वर पामीया, खरतर बिरुद उदार रे ॥४॥जीतउ०॥

संवत सोल सतरोत्तरइ, पाटण नयर मझार रे।
मेली दरसण सहु संमत, ग्रन्थ नी साखि साधार रे ॥५॥जीतउ०॥
पूर्व विरुद्ध उजवालियउ, सारवि दाखइ सहु लोक रे।
तेज खरतर सद्गुरु तणउ, ऋषिमती ते थयउ फोक रे ॥६॥जीतउ०॥
रिगमनी (ऋषिमती) जे हुंतउ 'कंकली' बोलतो आल पंपाल रे।
खष्ट कीधउ खरतर गुरे, जाणइ बाल गोपाल रे ॥७॥जीतउ०॥
निलवट नूर अतिसउ घणउ, खरतर मोह सम जोडि रे।
जंबु करिगमता जे भिडइ, जय किम पामइ सोड़ रे ॥८॥जीतउ०॥
माणिकसूरि पाटइ तपइ, रिहड कुल सिणगार रे।
श्रीजिनचन्द सूरि गुणधा निलउ, सेवक जन सुखकार रे ॥६॥जी०

---

(२७) विधि स्थानक चौपई

गरुवो गच्छ खरतर तणो, जेहने गुरु श्रीजिनदत्तसूरि।
भद्रसूरि भाग्यइ भर्यो, प्रणमन्ता होइ आणंद पूरि कि ॥१॥
सूरि शिरोमणि चिरजयउ, श्रीजिनचन्द्रसूरि गणधारि।
कुमति दल जिण भांजियउ, वर्त्यो जग मांहि जय २ कार कि ॥२॥
बालपणइ चारित लियउ, विद्या बुद्धि विनय भंडार।
अविधि पंथ जिण परिहरी, धारइ पंच महाव्रत धार कि ॥३॥
गुण छत्तीस सदा धरइ, कलिकालइ गोयम अवतार।
सहु गच्छ माहे सिर धणी, रूपे मयण मनायउ हार कि ॥४॥
सूरि "जिनेश्वर" जगतिलउ, तासु पाटाऽभय देव विख्यात।
वृत्ति नवांगि जिणइ करी, ततो खरतर प्रगटावदात कि ॥५॥

श्रीमेढी नदनी नदइ, प्रगट कियउ जिण थंभण पास ।

दुष्ट समाच्यउ तेहनी, ते खरतर गच्छ पूरइ आस कि ॥६॥

सवत सोल सत्तोतरइ (१६१७), अणहिल पाटण नगर मझार ।

श्रीगुरु पहुंता विचरता, बहु भविजन मन हर्ष अपार ॥७॥

केई कुमति कदाग्रहिया, बोलइ सूत्र अरथ विपरीत ।

निज गुरु सामिउ बोलवइ, तिहां करि श्रीगुरु पाम्यो जीत कि ॥८॥

कडवाली सही सूरती, पहिन नगी वहे अभिमान ।

सागर छीवर सम थयो, जिहि उदयो खरतर गुरु मानि कि ॥९॥

पाटण माहि पचासरी, पाडा पाखलि जे पोशाल ।

पौल देई पैसी रह्यो, जे मुणि लावन आल पंपाल कि ॥१०॥

गच्छ चौरासी मेलवी, पच शास्त्र नी साखि उद्दार ।

जीत्यउ खरतर राजियो, ए सहुको जाणै संसार कि ॥११॥

श्रुति उग्याडा पौरसी, बहु पडितुना कहता दोष ।

मृषावाद इम बोलता, बोलो प्रत किम पामै पोष कि ॥१२॥

घणा दिवस ना वाकुला, माडा गोरस लोधा वीर ।

विधिवादइ साधु लिया, टाम ? ए दीठै हीर कि ॥१३॥

वर्धमान जिन वा (पा?) रजे, लोधा वासो शुद्ध आधा(हा?)र ।

सवहा तेहना तुम्हें, टालो छो ए कवण आचार कि ॥१४॥

पर्व चारि पोसह तणा, बोलइ सूत्र अरथ नैं साखि ।

पर्व पर्व पोसह करौ, तहनी नवि दीसै किहु सारि कि ॥१५॥

सातसीम झाझेरडा, इम पूछइवा छइ बहु बोल ।

ते सूधी परि सदहौ, मत्र आमक काइ (ग) वाओ निटोल कि ॥१६॥

रोस रोस हम मनि नहीं, एक जीभ किम करउं वखाण ।
श्रीजिनकुशल सूरिन्द्र नें, समरणि लाभें कोड़ि कल्याण कि ॥१७॥

गहुंली नं० (२६) रागः—गूजरी ।

अब मइ पायउ सब गुणजांण ।
साहि अकबर कहइ ए सुहगुरु, जिनशासन सुलताण ॥अब०॥आंकणी॥
यतीय सती मइं बहुत निहाले, नही को एह समान ।
के क्रोधी के लोभी कूड़ा, केइ मन धरइ गुमान ॥१॥अब०॥
गुरुनी वाणि सुणी अवनिपती, बूझयउ थइ सन्मान ।
देस विदेश जीऊ हिंस्या दली, भेजी निज फुरमान ॥२॥अब०॥
श्रीजिनमाणिक सूरि पटोधर, खरतरगच्छ राजान ।
चिरजीवो जिनचंद यतीश्वर, कहइ मुनि"लब्धि"सुजान॥३॥अब०॥

गहुंली नं० (२७) रागः—गूजरी ।

दुनिया चाहइ दो सुलतान ।
इक नरपति इक यतिपति सुन्दर, जाने हइ रहमांन ॥दु०॥आंकणी॥
राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावो निज आण ।
बर्बर वंस हुमाऊ नंदन, अकबर साहि सुजांण ॥१॥दु०॥
विधि पथ हीलक दुरजन जनके, गालो मद अभिमान ।
श्रीवंत सुत सब सूरि सिरोमणी, जग मांहि "जुगप्रधान" ॥२॥दु०॥
चइठ सिंहासण हुकुम सुनावति, को नवि खंडत आण ।
मिर 'मलक' बहु उनकुं सेवति, इनकुं मुनि राजान ॥३॥दु०॥

इक छत्र सिर धरि मथाडंबर, धारति दोऊ समान ।
कहति"लब्धि"जिनचद घरावर, प्रतिपो जहा दोऊ मान ॥भा० दु०॥

गहूंली नं० (२८) रागः—धवल धन्याश्री ।

नीको नीकउरी जिनशासनि ए गुरु नीको ।
युगप्रधान जगि जगम एही,दीयउ प्रमु अकबर टो(टी?)कउरी॥जि०॥आ०
राज काज (आज) हम सुन्दर, सफउ भयउ अब नीको ।
साहि अकबर कहइ जु मोकु, दरसण थयो गुरुजी कउरी ॥१॥जि०॥
मोहन रूप सुगुर वडभागी, लह्यौ मान श्रीजीउ को ।
जे गुरु उपर मद मच्छर धरता, हुउ मुख तिहकु फीकउ रो॥२॥जि०॥
श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजइ, नाद सुणी जिउ सीह को ।
सार (ह?)श्रीवन सुनन चिर जीवउ, साहिब "लब्धि"मुनी को ॥३॥

गहुंली नं० (२९) रागः—सोरठो ।

आज उछरग आणद अति उपनौ,
आज गच्छ राज ना गुण थुणीजइ ।
गाम पुरि पाटणइ रगि वधावणा,
नवनवा उछव सब कीजइ ॥ आज०॥आ०॥
हुकम श्री साहि नइ पच नदि साधिनइ,
उदय कीयउ सघनो सवायो ।
सघपति सोमजी, सुणउ मुझ विनती,
सोय जिणचद गुरु आज आयो ॥१॥आ०॥

साहि प्रतिबोधता पंच नदी साधतां,

सुजसनद जास जगि जेर वागी ।

"लब्धिकल्लोल" मुनि कहइ (कहति) गुरु गायतां,

आज सुख परम मनि प्रीत जागी ॥८॥आ०॥

---

(३०) गहूंली

सुगुरु मेरउ साहिब कामगवी ।

मनशुद्ध साहि अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥१॥सु०॥

सकल निशाकर मंडल समसरि, दीपति वदन छवि ।

महिमंडल मइ महिमा जाकी, दिन प्रति नवीनवी ॥२॥सु०॥

जिनमाणिक सूरि पाटि उदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ।

पेखत ही हरखत भयउ मन मइ, "रत्न निधान" कवी ॥३॥सु०॥

---

(३१) सुयश गीत ॥ रागः—धन्याश्री ॥

नमो सूरि जिणचन्द दादा सदादीपतउ,

जीपतउ दुरजण जग विशेष ।

रिद्धि नवनिद्धि सुखसिद्धि दायक सही,

पादुका प्रहसमइ उठि देख ॥ १ ॥ नमो० ॥

सधवइ मोटिकउ बोल खाटयउ खरउ,

शाहि सलेम जसकीध सेवा ।

गच्छ चउरासी ना मुनिवर राखिया,

साखीया सूरिजचन्द देवा ॥ २ ॥ नमो० ॥

भाग सोभाग वइराग गुण आगला,
आवना कलियुगि जीव जाग्यउ।
अन्तलगि आतम धरम कारिज(क)री,
स्वर्ग पहुता पछी सुर वधाग्यउ ॥ ३ ॥ नमो० ॥
गरवर सदका सुरतरु सारिखउ,
कष्ट संकट मति दूर कीजइ।
'हर्षनन्दन' कहइ चतुर्विध संघ,
नित दिन दौलति एम दीजइ ॥ ४ ॥ नमो० ॥

॥ श्रीजिनसिंहसूरि गीतानि ॥

रागः—वेलाउल

(१)

शुभ दिन आज वधाइ, धवल मंगल गावो माइ ।

श्रीजिनसिंहसूरि आचारज, दीपइ बहुत सवाइ ॥१॥शुभ०॥

शाहि हुकम श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सइंहथि दीन वडाइ ।

मंत्रीश्वर कर्मचंद्र महोच्छव, कीनउ तबहुं बनाइ ॥२॥शु०॥

पातिशाह अकबर जाकुं मानत, जानत सब लोकाइ ।

कहइ 'गुणविनय' सुगुरु चिरजीवउ,श्रीसंघ कुं सुखदाइ ॥३॥शु०॥

---

(२) रागः—मेवाडउ

श्रीगौतम गुरु पायनमी, गाउं श्री गच्छराज

श्रीजिनसिंघ सूरीसरु, पूरवइ वंछित काज ॥

पूरवइ वंछित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोहइ ए

मुनिराय मोहन वेलि ने परे, भविक जन मन मोहइ ए ।

चारित्रपात्र कठोर किरिया, धरमकारज उद्यमी,

गच्छराजना गुणगाइस्युंजी, श्रीगौतम गुरु पयनमी ॥१॥

गुरु लाहोर पधारिया, तेडाव्या कर्मचंद ।

श्री अकबर ने सहगुरु मिल्या, पाम्या परमाणंद ।

पामीया परमाणंद ततक्षण, हुकम दिउ उठो ने कियो ।

अत्यंत आदर मान गुरुन, पादशाह अकबर दियउ।
धर्म गोष्ठि करता दया धरता, हिंसा दोष निवारिया।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥२॥
श्रीअकबर आग्रह करी, काश्मीर कियो र विहार,
श्रीपुर नगरमोहामणु ,तिहां वरतावी अमार ॥
अमार वरती सर्व धरती, हुओ जयजयकार ए,
गुरु सीत ताप(ना) परीसह सह्या विविध प्रकार ए।
महालाभ जाणी हरस आणी, धीरपणु हियडे धरी,
काश्मीर देश विहार कीधो श्रीअकबर आग्रह करी (३)
श्री अकबर चित रजियो, पूज्यने करइ अरदास।
आचारिज मानसिंघ करउ, अम मन परमउल्लास
अम्ह मन आज उलास अधिकउ, फागुण सुदी बीजइ मुदा।
सइहथि जिनचदसूरी दीधी, आचारिज पद सपदा।
करमचद मत्रीसर महोत्सव, आडवर मोटो कियो।
गुरुराजना ॥४॥
गुण देखि गिरुआ, वरीस सह गुर, चापडा चन्नी कला।
चापसी साह मल्हार चापल देवि माता तन इला,
पादसाह अकबरसाहि परख्यो श्रीजिनसिंघ सूरि चिरजयउ।
आसीस पभणइ "समयसुन्दर", सघ सहु हरखित थयउ ॥५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां जकडी गीत समाप्तम्

(३) गुरु गीतम्

आज मेरे मन की आश फली ।
श्रीजिनसिंहसूरि गुरु देखत, आरति दूर टली ॥१॥
श्रीजिनचंद्रसूरि सइंहत्थइ, चतुर्विध संघ मिली ।
शाहि हुकम आचारज पदवी, दीधी अधिक भली ॥२॥
कोडि वरिस मंत्री श्रीकरमचंद्र, उत्सव करत रली ।
"समयसुन्दर" गुरुके पदपंकज, लीनो जेम अली ॥३॥

---

(४)
जिनसिंहसूरि हीडोलण गीतं

सरस्वति सामणि वीनवुं, आपज्यो एक पसाय ।
श्रीआचार्य गुण गाइसुं, हींडोलणा रे आणंद अंगि न माय ॥१॥ही०॥
चांदउ श्रीजिनसिंहसूरि, ही० प्रह उगमत(ल) इ सूरि ।ही०।
मुझ मन आणंद पूरि, ही० दरसण पातिक दूरि ॥आं०॥
मुनिराय मोहण वेलड़ी, महियल महिमा आज ।
चंद जिम चढ़ती कला ही० श्रीसंघ पूरवइ आस ॥२॥
सोभागी महिमा निलउ, निलवट दीपइ नूर ।
नरनारि पाय कमल नमइ, ही० प्रगट्यो पुण्यपडूर ॥३॥ही०॥
चोपड़ा वंशइ परगडउ, चांपसी शाह मल्हार ।ही०।
मात चांपल दे उरि धर्यो, ही० प्रगटयउ पुण्य प्रकार ॥४॥ही०॥
चौरासी गच्छ सिर तिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस ।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं, ही० 'समयसुन्दर' घइ आसीस ॥५॥ही०

---:***:---

(५) जिनसिंहसूरि गहूंली

चाल्उ सहगी सहगुरु वंदिवाजा, मन मुझ मांन वदिवानो काड रे।
श्रीजिनसिंहसूरि आवीयाजा, सखी करूं प्रणाम कर माड रे ।१।चा०
मान घ पन्द उरे घरीजी, सखी चम्पमा शाह मल्हार रे।
मनमाहन महिमा निलउजी, सखी चोपडा साख शृंगार रे ।२।चा०
वडगादह व्रत आदर्यौजी, सखी पच महाव्रत धार रे।
सकल कल्याण सोहवाजी, सखी लहिर विद्या भडार रे ॥३॥चा०॥
श्री अकबर आमद करीजी, सखी काश्मीर किवउ विहार रे।
मातु आखाडइ माहि रहीयउ रे, सखी निहु वरताविअमारि रे।४।चा०
श्रीजिनचन्द्रसूरि थापीयउजी, सखी आचारिज निज पटधार रे।
सब सयल आण्या पछी, सखी खरतर गच्छ जयकार रे।५।चा०
नदि महोच्छव महीयउजी, सखि कर्मचंद्र मंत्रीस रे।
नयर लाहोर निवासदजी, सखी कविरा कोडि वरीस रे ।६।चा०
गुरुजी मान्या रे मोटे ठाकुरेजी, सखी गुरुजी मान्या अकबरमाहि रे।
गुरुजी मान्या रे मोटे उबरेजी, सखी जसु श त्रिभुवनमाहि रे ।७।चा
मुझ मन मोह्या गुरुजी तुम गुणजी, सखि जिम मधुकर सहकार रे।
गुरुजी तुम दरसण नयण निरखताजी, सखी मुझमनि हर्षअपार रे।८।
चिर प्रतपइ गुरु राजीयउजी, सखी श्रीजिनसिंघसूरीस रे।
'समयसुंदर' इम विनवइजी, सखी पूरउ माहरइ मनहीं जगीस रे।९।चा०

वधावा (६)

आज रग वधामणा, मोतीयडे चउक पूरावउ रे।
श्रीआचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे ॥१॥आ०॥

जुगप्रधान जगि जाणीयइ, श्रीजिनचंदसूरि मुणिंद रे ।
सइहथि पाटइ थापीया, गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे ॥२॥आ०॥
सुर नर किन्नर हरषीया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे ।
पातिशाहि प्रतिबोधियउ, श्रीअकबर साहि सुजाण रे ॥३॥आ०॥
वलिहारी गुरु वणयडे?(वयणडे)वलिहारी गुरु मुखचन्द रे ।
वलिहारी गुरु नयणडे, पेखहांत परमाणंद रे ॥४॥आ०॥
धन चांपल दे कूखड़ी, धन चांपसी साह उदार रे ।
पुरष रत्न जिहां उपना, श्री चोपड़ा साख श्रृङ्गार रे ॥५॥आ०॥
श्री खरतर गच्छ राजियउ, जिनशासन माहि दीवउ रे ।
"समयसुंदर" कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंघसूरि चिर जीवउ रे॥६आ०

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्
॥ श्री हर्षनन्दन मुनिनालिपीकृतम् ॥

---

(७)

आज कुं धन दिन मेरउ ।
पुन्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥ १ ॥ आ० ॥
श्री जिनसिंहसूरि तुंहि (२) मेरे जीउ में, सुपनइ मइं नहींय अनेरो ।
कुमुदिनी चन्द जिसउ तुम लीनउ, दूर तुही तुम्ह नेरउ ॥२॥आ०॥
तुम्हारइ दरसण आणंद (मोपइ) उपजती, नयन को प्रेम नवेरउ ।
"समयसुन्दर"कहइ सब कुं वलभ, जीउ तुं तिन थइ अधिकेरउ॥३आ०

---

(८) चोमासा गीत।

श्रावण मास सोहामणो, महियल बरसे मेहो जी।
बापीयडारे पिउ २ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
अम्ह मन सुगुरु सनेह प्रगट्यो, मेदिनी हरयालिया।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालिया॥
सुध क्षेत्र समकित बीज बावइ, सघ आनद अति घणो।
जिनसिंघ सूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणो॥ १॥
भलइ आयउ भाद्रवउ, नीर भर्या नीवाणो जी।
गुहिर गभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिहो वखाणो जी॥
वखाण कल्पसिद्धात वाचइ, भविय राचइ मोरडा।
अति सरस देसण सुणी हरषइ, जेम चद चकोरडा॥
गोरडी मगल गीत गावइ कठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंहसूरि मुणिंद गाता, भले रे आव्यो भाद्रवउ॥२॥
आमू आस सहु फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सहगुरु उपशम रस भर्या, सायर जेम गंभीरो जी॥
गभीर सायर जेम सहगुरु सकल गुण मणि सोहए।
अति रूप सुदर मुनि पुरदर, भविय जण मण मोहए॥
गुरु चद्रनो परि झरइ अमृत, पूजता पूरइ रली।
सेवता जिनसिंघ सूरि सह गुरु, आसू मास आसा फली॥ ३॥
काती गुरु चदनी कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
धरतीयइ रे धान नीपना, जन मनि परमाणंदो जी॥
जन मनि परमाणद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा॥

घलि परव दिवाली महोत्सव, रलीय रंग वधामणा ॥
चउमास च्यारे मास जिनसिंघ, सूरि संपद आगला ।
वीनवइ वाचक "समय सुन्दर", फली गुरु पदनी कला ॥४॥

---

(९) गहूंली

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेलि ।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि ॥ १ ॥आ०॥
राय राणा सब मोहिया, मोह्यो अकबर साह रे ।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल मांह रे ॥ २ ॥आ०॥
कामण मोहन नवि करो, सुधा दीसो छो साधु रे ।
मोहनगारा गुण तुम तणा, ए परमारथ साध रे ॥ ३ ॥आ०॥
गुण देखी राचे सहुको, अवगुण राचे न कोय रे ।
हार सहुको हियड धरे, नेउर पाय तलि होय रे ॥ ४ ॥आ०॥
गुणवंत रे गुरु अम्हतणा, जिनसिंहसूरि गुरुराज रे ।
ज्ञान किया गुण निर्मला, "समय सुन्दर" सरताज रे ॥ ५ ॥आ०॥

---

(१०) गुरुवाणी महिमा गीत

गुरु वाणी (जग) सगलउ मोहीयउ, साचा मोहण वेलो जी ।
सांभलता सहुनइ सुख संपजइ, जाणि अमी रस-रेलो जी ।१।गुरु०॥
वाचन चंदन तइं अति सीतली, निरमल गंग तरंगो जी ।
पाप पखालइ भवियण जण तणा, लागो मुझ मन रंगो जी ।२।गुरु०॥

वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि "सलेम" नरिंदो जी ।
अभयदान नउ पडहो बजावियउ, श्रीजिनसिंह सूरिंदो जी ।३।गुरु०।
चोपडा वशइ सोभ चढावनउ, चांपसी शाह मल्हारो जी ।
परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ।४।गुरु०।
युगप्रधान सइहाथइ थापिया, अकबर शाहि हजूरो जी ।
'राजसमुद्र' मनरंगइ उचरइ, प्रनपउ जा ससि सूरो जी ।५।गुरु०।

---

(११) गच्छपति पद प्राप्ति गीत

श्रीजिनसिंहसूरि पाटइ बइठा, श्रीसंघ आव्या (ज्ञा?) मान रे ।
खरतरगच्छपति साही (पदवी) पाइ, वाध्यउ दिन दिन वान ।। १ ।।
माई एसा सद्गुरु वंदीयइ, जगम जुगहपूरधान रे ।
कोडि दीवाली राज करउ ज्यु, भुवनारा असमान रे ।२।मा०।
सूरिमंत्र सिर छत्र विराजइ, क्षमा मुगट प्रधान रे ।
सुमति गुपति दुइ चामर वींजइ, सिंहासण धर्मध्यान रे ।३।मा०।
श्रीसंघ रं युगप्रधान पदवी ल्ही, आया "मकुरबखान" रे ।
साजण मण चिंत्या हुआ, मल्या दुरजण माण रे ।४।मा०।
श्रीसंघ रंग करइ अति उच्छव, दीधा बहुला दान रे ।
दश दिशि कीर्ति कवियण बोल्इ, 'हरषनन्दन' गुणगान रे ।५।माई०।

---

(१२) ॥निर्वाण गीतं॥ ढालः—निंदलरी

मेडतइ नगरि पधारीया, श्रीजिनसिंह सुजाण हो । पूज्जी० ।
पोस वदि तेरस निसि भरइ, पाम्यउ पद निरवाण हो ।१।पूज्जी०।

तुम पउढयां माहरे किम सरइ, पउढण नी नहीं वार हो ।पूजजी०॥
नयण निहालउ नेह सुं, बइठउ सहू परिवार हो ॥ आंकणी० ॥
दीर्घ नींद निवारीयइ, धर्म तणइ प्रस्ताव हो । पूजजी० ॥
राइ प्रायच्छित साचवउ, पडिकमणउ शुभ भाव हो ॥२॥पू०॥
झालर बाजी देहरइ, बाजउ संख पडूर हो ।
तरवर पंखी जागीया, जागउ सुगुरु सनूर हो ॥३॥पू०॥
प्रहफाटी पगडउ थयउ, हीयउ पिण फाडण हार हो ।
बोलायां बोलइ नहीं, कइ रूठउ करतार हो ॥४॥पू०॥
समरइ सगला उंबरा, "मुकुरवखान" नवाब हो ॥पू०॥
कागल देस विदेश ना, वांची करइ (उ?) जवाब हो ॥५॥पू०॥
लहुडा चेला लाडिला, मी(वि?)नति करइ विशेष हो ॥पू०॥
पाटी परवाडि दीजीयइ, मुहडइ सामउ देख हो ॥६॥पू०॥
ए पातिसाही मेवडउ, ऊभो करइ अरदास हो ॥पू०॥
एक घड़ी पडखु नहीं, चालउ श्री जो पास हो ॥७॥पू०॥
आवी वांदिवा श्राविका, ओसवाल श्रीमाल हो ॥पू०॥
यथासमाधि कहइ करउ, एक वखाण रसाल हो ॥८॥पू०॥
बोलणहारउ चलि गयउ, रह्या बोलावण हार हो ॥पू०॥
आप सवारथ सीझव्यउ, पाम्यउ सुरलोक सार हो ॥६॥पू०॥
मौन ग्रह्यउ मनचिंतवी, कीधउ कोइ आलोच हो ॥पू०॥
सगला शिष्य नवाजीया, भागउ मूल थी सोच हो ॥१०॥पू०॥
पाट तुम्हारइ प्रतपीयउ, श्रीजिनराज सनूर हो ॥पू०॥
आचारिज अधिकी कला, श्रीजिनसागर सूरि हो ॥पू०॥११॥
भवि २ थाज्यो वंदना, श्रीजिनसिंह सूरिंद हो ॥पू०॥
सानिध करज्यो सर्वदा, 'हरषनन्दन' आणंद हो ॥१२॥पू०॥

श्री क्षेमराज उपाध्याय गीतं

सरसति करि सुपसाउ हो, गाइ सु सुहगुरु राउलो ।
गाइसुं सुह गुरु सकल सुन्दर, गछि खरतर सुहकरो ।
महियलइ महिमावंत मुणिवर, बाल्पणि संजम धरो ।
सिद्धान्त सार विचार सागर, सुगुणमणि वयरागरो ।
जयवंत श्री उवझाय खेमराज, गाइसु सही ए सुह गुरो ॥१॥
भवियण जण पडि बोहइ हो, छाजहड़इ कुलि सोहइ हो ।
छाजहड़ कुलि अवतरीय सुहगुर, साह लीला नन्दणो ।
वर नारि लीलादेवी उयरइं, पाप तापइ चन्दणो ।
दिखीया श्री जिनचन्द्रसूरि गुरि, संवत पनर सोलोत्तरइ ।
सीखविय सुपरइं सोमधज गुरि, भवियण, (जण) संशय हरइ ॥२॥
उपसम रसह भंडारू हे, संजमसिरि उर हारु ए ।
संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव ऋषि समवडि धरइ ।
नवतत्त नवरस सरस देसण, मोह माया परिहरइ ।
जिणआण धरइ हीयडइ, पंच पमाय निवारए ।
उवझाय श्री खेमराज सुहगुरु, भवइ विग्राधारए ॥३॥
कनक भणइ सिरनामी हे, मइ नवनिधि सिद्धि पामी हे ।
पामीय सुहगुर तणीय सेवा, सयल सिद्धि सुहामणी ।
चाउरे चौक पूरेवि सुहव, वधावउ वर कामिणी ।
दीपन दिनमणी समउ तेजइ भवियजण तुम्हि वंदउ ।
उदिग्ता श्री उवझाय खेमराज, 'कनक' भणइ चिरनंदउ ॥४॥

टुरु गीतं (वर्द्ध० भ० गुटका से) १७ वीं सदी लि०

—

श्री भावहर्ष उपाध्याय गीतं

श्री सरसति मति दिउ घणी, सुहगुरु करउ पसाय ।
हरप करी हुं वीनवुं, श्रीभावहर्ष उवझाय ॥ १ ॥
श्री भावहर्ष उवझायवर, प्रतपउ कोडि वरीस ।
तूठी सरसति देवता, हरपि दीयइ आसीस ॥ २ ॥
वुडि करीनइ किम तोली(य)इ, धीर गम्भीर गुणेहि ।
मेरु महासागर मही, अधिका ते गुरु देहि ॥ ३ ॥
दिन दिनि संजमि संचडइं सायर जिम सित ! पाखि ।
तप जप खप तेहवो करइ, जिसी न लाभइ लाखि ॥ ४ ॥
सुरतरु जिम सोहामणा, मन वंछित दातार ।
हर्ष ऋद्धि सुख संपदा, तरु श्रावण जलधार ॥ ५ ॥

राग :—सोरठी

जलधर जिउं जगत्र जीवाडइ, मन परम प्रीति पदि चाडइ ।
देसण रस सरस दिखाडइ, दुख दहनति दूरि गमाडइ ॥ ६ ॥
श्रावक चातक उछाह, मोर जीम श्री संघ साह ।
सरवर ते भवियण श्रवण, वाणी रसि भरियइ विवण ॥ ७ ॥
ऊगइ तिहां सुकृत अंकूर, टलइ मिथ्या भर तमल (तिमिर?)पूर ।
संताप पाप हुइ चूर, जिनशासन विमवणउ नूर ॥ ८ ॥
श्री भावहर्ष उवझाय, ते जलिहर कहियइ न्याय ।
उपसम रसि पूरित काय, सोहइ संसारि सछाय ॥ ९ ॥

दूहा:—श्रीजिन माणिक्यसूरि गुरु, दीधउ पद उवझाय।
जेसलमेरइ माहि मुदि, दमसि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥
सुगुरु पाय प्रमोद नमीयइ, दुरग दुरगति दूरइ गमीयइ।
भव सागरि भिमि न भमीयइ, सुरग संपति सरिसा रमीयइ ॥११॥
खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणद।
सेवता सुरतरु कद, रजइ गुरु वचनि नरिंद ॥१२॥
साह कोडा नदन धन्न, कोडिम दे उयरि रतन्न।
'कुलतिलक' सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा सुजगीस ॥१३॥
श्री भावहर्ष हितकारी, सुधउ मुनि पथ विचारी।
पच समिति गुपति गुणधारी, विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥
श्री भावहर्ष उवझाया, चिरजीवउ मुनिवर राया।
मइ हरखइ सुगुरु गाया, मुझ होयडइ अधिक सुहाया ॥१५॥
(समहस्थ पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतम्

राग धन्याश्री

सुगुरु के पणमो भवियण पाया,
श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।
हुवड वस विख्यात सुणीजइ, थइ सुख सम्पति ध्याया।
गुणसन वदनि सुगुरु सेवतइ, दिन २ तेज सवाया ।२।

* १ सं० १६८९ चैत्रवदि ३ दिने शुक्रवारे प० गुणसेन लिखीत
ऋषिदेव रतन वाचनार्थ (श्रीपूज्यजी संग्रह हगुरु केते)

श्री साधुकीर्त्ति जयपताका गीतम् ।

॥ जयपताका गीत ॥

सोलहसइ पंचवीसइ समइ, आगरइ नयरि विशेप रे ।
पोसहकी चरचा थकी, खरतर सुजस नी रेख रे । १ ।
खरतर जइत पद पामीयउ, साधुकीर्त्ति जय सार रे ।
साहि अकबर कह्यउ श्रीमुखइं, पण्डित गह उदार रे । खर०
"बुद्धिसागर" तणी बुद्धि गइ, भाखीयउ अति अविचार रे ।
पट्ट थया तपा ऋपिमती, खरतरे लह्यउ जयकार रे । २ ।
संस्कृत तपलो न बोलीयउ, थया खिसाण अपार रे ।
चतुर अकबर मुख पंडिते, करी सागर बुधि हार रे ।३। खर०
तर्क व्याकर्ण पढ़यउ नहीं, मरम ए सुण्यउ अखण्ड ए ।
मलम सागर बुधि ऊघडयउ, जाणीयउ अशुचि नउ पिंड रे ।४। ख०
गंगदासि साह धोधू तणइ, मोड़ीयउ कुमत नउ माण रे ।
वचन पतिशाह ए बोलियउ, बुद्धि सागर अजाण रे ।५। खर०
पीतलि मांहि थी नीकली, अह्वा रङ्ग पतङ्ग रे ।
ऋपिमती सहु अछइ एहवा, सागर वुद्धि तणइ भंग रे ।६। खर०
हुकम करि पातिशाहइ दीया, भेरि दमाम नीसाण रे ।
गाजतइ वाजतइ आवीया, खरतर सुजस वखाण रे । ७ । खर०

दूहा:—श्रीजिन माणिक्यसूरि गुरु, दीपइ पद उवझाय ।
जसलमेरइ माहि सुदि, दमसि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥
सुगुरु पाय प्रमोद नमीयइ दुरत दुरगति दूरइ गमीयइ ।
भव सागरि भिमि न भमीयइ, सुगुरु सपति सरिसा रमीयइ ॥११॥
खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणंद ।
सेवता सुतरु कंद, रंजइ गुरु वचनि नरिंद ॥१२॥
साह कोड़ा नंदन धन्न, कोडिम दे उयरि रतन्न ।
कुलतिलक सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा सुजगीस ॥१३॥
श्री भावर्ष्ष हितकारी सुघउ मुनि पथ विचारी ।
पच समिति गुपति गुणधारी विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥
श्री भावर्ष्ष उवझाया चिरजीवउ मुनिवर राया ।
मइ हरखइ सुगुरु गाया मुझ हीयडइ अधिक सुहाया ॥१५॥
(समहस्य पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतम्

राग धन्याश्री

सुगुरु क पणमो भवियण पाया,
श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।
हुवइ वस विज्ञान सुणीजइ, धाइ सुख सम्पति ध्याया ।
गुणसेन वदति सुगुरु सवाइ, दिन २ तेज सवाया ।२

* १ स० १६८५ चैत्रवदि ३ दिने शुक्रवारे प० गुणसेन लिखीत
कपिरव रतन वाचनार्थ (श्रीपूज्यजी सग्रह हयगुटकेसे)

श्री साधुकीर्त्ति जयपताका गीतम् ।

॥ जयपताका गीत ॥

सोलहसइ पंचवीसइ समइ, आगरइ नयरि विशेप रे ।
पोसहकी चरचा थकी, खरतर सुजस नी रेख रे । १ ।
खरतर जइत पद पामीयउ, साधुकीर्त्ति जय सार रे ।
साहि अकवर कह्यउ श्रीमुखइं, पण्डित एह उदार रे । खर०
"वुद्धिसागर" तणी वुद्धि गइ, भाखीयउ अति अविचार रे ।
पष्ट थया तपा ऋपिमती, खरतरे लह्यउ जयकार रे । २ ।
संस्कृत तपलो न वोलीयउ, थया खिसाण अपार रे ।
चतुर अकवर मुख पंडिते, करी सागर वुधि हार रे ।३। खर०
तर्क व्याकर्ण पढ़यउ नहीं, मरम ए सुण्यउ अखण्ड ए ।
मलम सागर वुधि ऊघडयउ, जाणीयउ अशुचि नउ पिंड रे ।४। ख०
गंगदासि साह धोधू तणइ, मोड़ीयउ कुमत नउ माण रे ।
वचन पतिशाह ए वोलियउ, वुद्धि सागर अजाण रे ।५। खर०
पीतलि मांहि थी नीकली, अहवा रङ्ग पतङ्ग रे ।
ऋपिमती सहु अछइ एहवा, सागर वुद्धि तणइ भंग रे ।६। खर०
हुकम करि पातिशाहइ दीया, भेरि दमाम नीसाण रे ।
गाजतइ वाजतइ आवीया, खरतर सुजस वखाण रे । ७ । खर०

श्रीजिनचन्द्रसूरि सानिधइ, "दया कलश" गुरु सीस रे।
"साधुकीर्त्ति" जगि जयत छइ, कहइ कवि "जल्ह" जगीस रे।८।खर०
॥ इति श्री साधुकीरति गुरु जयपताका गीतं ।

(२)

सवत् दस सय असीयइ पाटणइ, चो (चैत्य) वासी मलिमाणो जी।
खरतर विरुद लहयउ दुर्लभ मुखइ, सूरि जिणेसर जाणोरे । १ ।
जय पाइयउ (पाम्यो?)खरतर पुरि आगरइ, साधुकीर्त्ति बहु नूरे जी।
पोसह पर्व दिनइ जिण थापीयउ, अकबर साहि हजूर रे ।२। जय
आगरइ पुरि मिगसरि सुदि बारसी, सोलपचवीस वरीस जो।
पूरव विरुद सही उजवालियउ, साधुकीर्त्ति सुजगीशो रे ।३।ज०
च्यारि वरण खरतर (कु)जय (जय)करि, जाणइ बाल-गोपालजी।
वूठा वाट थटाऊ सहु कहइ, कुमती सिर पच तालोजी ।४। जय
कुबुद्धि पष्ट थयउ तउ पिण सही, नीलज अनइ ··· ·· ·· · ॥
तस्कर जिम दुइ भेरि बजाविनइ, आ०यइ रयणी ठामजी ।५ ज०
थाहमल मेघदास नेनसी, ले अकबर फुरमाणो जी।
पच शब्द बजावी जय लइयउ, खरतर कोयउ महाणो जी ।६।ज
श्रीजिनदत्त कुशलसूरि सानिधइ, उत्तम पुण्य प्रकारो जो।
कर जोडी नइ"खइपति"वीनवइ खरतर जय-जयकारोजी ।७।ज
इति श्री जयपताका गीत ॥ श्री । श्रा० भरही पठनार्थं ॥
(पत्र १ श्रीपूजजी सं०)

(३) गहुंली राग—असावरी

वाणि रसाल अमृत रस सारिखी, मोह्या भवियण लोइ जी ।
सूत्र सिद्धंत अर्थ सूधा कहइ, सुणतां सवि सुख होइ जी ॥१॥
सद्गुरु साधुकीर्त्ति नितु वन्दीयइ, उपशम रस भंडारो जी ।
शील सुदृढ़ संजम गुण आगला,सयल संघ सुखकारो जी ।स०।
पंच सुमति त्रण गुप्ति भली परइ, पालइ निरतीचारो जी ।
जे नर-नारी पय सेवा करइ, दुत्तर तरइ संसारो जी ॥२॥स० ॥
वस्तिग नन्दन गुरु चढ़ती कला, ओसवंश सिंगारो जी ।
धन खेमल दे जिणि उयरइ धर्या,सचिंती कुलि अवतारो जी ।३स०
दरसणि नवनिधि सुख सम्पति मिलइ, दयाकलश गुरु सीसोजी ।
"देवकमल" मुनि कर जोडी भणइ, पूरवउ मनह जगीसो जी ।४।स०

॥ सं० १६२५ वर्षे श्रावणसुदि १० आगरा नगरे जिनचन्दसूरि राज्ये हंसकीर्त्ति लिखितं श्राविका साहिबी पठनार्थं ॥ पत्र १ श्री-पुज्जीके संग्रहमें । (अनाथी, पार्श्व गीतसह)

(४) कवित्त

साधुकीर्त्ति साधु अगस्ति जिसो, सब सागरको नाद उतार्यो ।
पतिशाह अकबरके दरबार जीतउ जिणवाद कुमति विदार्यो ।
पीयउ जिण तिण चरवार भडार दीयउ लघु नीति विगार्यो ।
सकुच्यउ अद्ध सागर माजि गयो,
गरब इक हानि भज गच्छ निकार्यो ।१।

कवि कनकसोम कृत

जइतपद वेलि

सरसति सामणी वीनवुं, मुझ दे अमृत वाणि।
मूल थकी खरतर तणा, करिस्युं विरुद वखाणि ॥१॥
श्रावक भावी मिली सुणो, मनवरि अति आणंद।
चित्त विषवाद न को धरउ, साचउ कहइ मुनिंद ॥२॥
सोलहसय पंचीसइ समई, वाचक दया मुनीस।
चउमासि आया आगरें, बहु परि करि सुजगीस ॥३॥
"रतनचन्द" वयराग गणि, पण्डित "साधुकीर्त्ति"।
"हीररंग" गुण आगलो, ज्ञाता "देवकीरत्ति" ॥४॥
तप करि "हेमकोत्ति" भलो, "कनकसोम" जसवंत।
"पुण्यविमल" मनि ध्यान धरि, "देवकमल" सुविवंत ॥५॥
"ज्ञानकुशल" ज्ञाता चतुर, "यशकुशल" हि जस लिद्ध।
"रंगकुशल" अति रंग करी, "इलानंद" सुप्रसिद्ध ॥६॥
वैरागे चारित्र लीयो, "कीरत्ति(वि)मल" सुजाण।
वड जिम साखा विस्तरी, दिन २ चढते वान ॥ ७ ॥
चालि—नितु दिन २ चढतइ वान, श्री संघ दीयइ बहुमान।
तपछे चरचा छाड़इ, श्रावकने वात सुणाड़ ॥८॥
मो सरिखो पंडित जोर, नहीं मझि आगरे कोइ।
तिणि गर्व इसो मन कीधउं, बुद्धिसागर अपयश लीधो ॥९॥

श्रावक आगे इम बोलइं, अम्ह गाथारस(थ?) कुण खोलइ ।
श्रावक कहइ गर्व न कीजइ, पूछी पंडित समझीजइ ॥१०॥
संघवी सतीदास कुं पूछइं, तुम्ह गुरु कोइ इहां छइ।
संघवी गाजी नइं भाखइं, साधुकीर्त्ति छै इम दाखइं ॥११॥
लिखि कागद तिणि इक दीन्हउ, श्रावक वचने न पतीनउं ।
पोसह तिहि एक प्रकार, भ्रमि भूलउ ते अविचार ॥१२॥
साधुकीर्त्ति तत्व विचार्यो, तत्वारथ मांहि संभार्यो ।
पौषध छइं दोइ प्रकार, बूझ्यो नहीं सही गमार ॥१३॥
तिहां लिखत दोष दस दीठा, तपला तब थया निकीठा ।
मिली पद्मसुंदर नइं आखउं, गच्छ त्यासीकी पत राखउं ॥१४॥
दूहा—पद्म सुंदर इम बोलियउं, वंदन नायउं कांइ ।
स्वारथ पडीओ आपणइं, तउं आयो इण ठांइ ॥१५॥
हिव अपराध खमउं तुम्हे, पडयो वरांसउ एह ।
हिव सरणै तुम आविया, कांइ दिखाडउ छैह ॥१६॥
तपले ने संतोषीउ, पिणि सांक्यउं मन मांहि ।
साधुकीर्त्ति जिहां आविस्यै, तिहां हुं आविसुं नांहि ॥१७॥
सुणी वात खरतर खरी, संघ मिल्यो सब आइ ।
गाल वजाडइं ऋषिमती, हिव ढीला तुम्ह कांइं ॥१८॥
चालि—ढीला हिव हम्हे न होस्यां, ऋषिमतीयनकी पत खोस्यां ।
खरतरे तेजसी बोलायो बहु आणंद सुं ते आव्यो ॥१९॥
पंचे मिलि वात पतीठी, परगच्छी हुआ वसीट्ठी ।
चउथान कि चरचा थापौं, ते घर लिखि अनइ अम्ह आपउं ॥२०॥

तपला रिपु सोचावइ, इहां पद्मसुंदर नहीं आवइ ।
करिस्या पातिसाह हजूर, खरतर घरि बाज्या तूर ॥२१॥
मिगसर वदी छठ्ठ प्रभातइ, मिलिआ पातिसाह सघातइ ।
थाइमल बोलायउ पिछाणी, साहि बात सहु गुदराणी ॥२२॥
आणदइ खरतर माल्हइ, कविराज फइकी आइवाल्इ ।
निज २ थानक सवि आया, विहाणइ कविराज बुलाया ॥२३॥
अनिरुद्ध महादे मिश्र, मिलिया तिहं भट्ट सहस्र ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत भाखइ, बुधिसागर स्यु स्यु दाखइ ॥२४॥
पंडित कहइ मूढ गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुठार ।
पोषह चरचा दिन पंच, साचउ खरतर पक्ष सच ॥२५॥

दूहा:—

कविराजइ निर्णय कीयउं, जूठउं बुद्धि कुठार ।
साहि पासि जाई कहूं पोषह पर्व विचार ॥२६॥
पद्मसुन्दर इम चिंतवइ, इणि हाणइं मो हानि ।
साहि पास जाइ कहइं, द्यो हम जीवीदान ॥२७॥
मिगसर वदी बारस दिने, गया साहि आवासि ।
खरतर पूठइ देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥२८॥
साहि हजूर बोलाविआ, श्वेताम्बर कउ न्याय ।
हुं करिस ततखिण खरउ, तेड्या पण्डित राय ॥२९॥

ढाल

हिव तेड्या पंडित रायइं, कविराज सभा बोलायइं ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत बोलइं, खरतर कहि केहनइ तोलै ॥३०॥

साहि सुगत दीयइ सावासि, खरतर मनि अधिक उल्हास ।
बुद्धिसागर कछु न जाणइं, साहि साधुकीर्त्ति कुं वखाणइ ॥३१॥
पंडित सम (व? भा?) बोलइं एम, निर्णय कीधो छै जेम ।
खरतर गच्छ कउं पक्ष साचउं, तपला पखि कोइ न राचउ ॥३२॥
मूढ़ पंडित सम किम होइ, पातिसाह विचार्यो जोइ ।
तव पदमसुंदर बोलावउ, लुकि रह्यो सभा मांहि नाव्यो ॥३३॥
चउपर्वी पोपह थाप्यो, खरतर कुं जयपद आप्यो ।
गजवजीया खरतर लोक, ऋपिमती थया सव फोक ॥३४॥
विण हुकम भेरि हु (दु?) इं वावइं, तपा राति दीवी ले आवइं ।
पातिसाह सुणी ए वात, तपलारउं करउं निपात ॥३५॥
चाइमल्ल मेघइं छोड़ाया, मान भंग करी कढ़वाया ।
तपला कहइं सर भरि कीजइं, दुरि(द?)भेरि हुकम इन्ह दीजइं ॥३६॥

दूहा:—

खरतर मनहि विचारीयो, एह वात किम होइ ।
जीती वाजी हारीयइं, करउं पराक्रमकोइ ॥३७॥
थोधू चाइमल्ल नेतसी, मेघउ पारस साह ।
नेमिदास धणराज सहजसिंघ, गंगदास भोज अगाह ॥३८॥
श्रीचंद श्रीवच्छ अमरसी, दरगह परवत वखाण ।
छाजमल गढ़मल भारहू रेडउं सामीदास सुजाण ॥३९॥
चोकानव (य?)री तिहि मिल्या, महेवचा संपवाल ।
श्रावक सभ (व?) तेडावीया, महिम के कोटीवाल ॥४०॥

चालिः—

मिलि पहुतावी चापसि, यहुटी छई मिहा आपाणि ।
आदर तिह अधि(क?)उरीउ, गुरु मनि चित्त वसि कीधउं ॥४१॥
चाइमल मेषद वात वणाइ, अकबर रे निहा लीया सुलाइ ।
परवत नेमीदास हजूर, दोमह बाजा हुकम पहूर ॥४२॥
अउगेमा पातिसाहि तूठउ, मइंहाथि थापि लेउं पूठउं ।
सभ बाजा जइत वजाउं, अवणा पोरह कु बधावउं ॥४३॥
गोआ छडीदार पठाया, सामर साथा जम पाया ।
भेरि मद्दल ढोल नीसाणा, वाजया घड्यो घोल प्रमाण ॥४४॥
सघ मेलि मिल्यउ आणंदइ, गुरु सोहइ श्रीसंघ वृन्दइं ।
बाजार आगरइं वेरइ, पइसारउं कीधउं भलेरइं ॥४५॥
खरतरे जइत पद पायो, मागत जन सहु बधुलायउं ।
पच वरण व थाइ अनेक, पहिराया सधि विवेक ॥४६॥
हारयउ तपलो सहु जाणइं, खरतर कु लोक वखाणइ ।
मारी भट्ट छई इण वातइं, खरतर पाव हुइ विख्याते ॥४७॥
जिनदत्त कुशल मानिइइं, जिनभद्रसूरि वंश वृद्धइं ।
जिनचन्द्रसूरि सुरमाइइ, खरतरे जीतउं इण वादई ॥४८॥
दया 'अमरमाणिक्य'' गुरु सीस, साधुकीर्त्ति लही जगीस ।
मुनि "कनकसोम" इम आखइं, चउविह श्रीसंघकी साखइं ॥४९॥
(तत्कालीन लिखित पत्र ३ संग्रहम)

—— ** ——

जयनिधान कृत

साधुकीर्त्ति गुरु स्वर्गगमन गीतम्

सुखकरण श्रीशांति जिणेसरू, समरी प्रवचन वचनए जी ।
सोहण सुहगुरु गाईए, नि··························नभाए जी ॥१॥
चतुर सिरोमणि भावइं वंदीयइ, 'श्रीसाधुकीरति' उवझायो जी ।
प्रहसमि भवियण कामित सुरतरू, खरतरगच्छ गुरुरायोजी ॥आं०॥
संवत सोल वतीसइ सुह दिनइ, 'श्रीजिनचंद्रसूरिंदो' जी ।
माधव मासइं सुदि पुनम थापिया, पाठक पद आणंदो जी ॥२॥च०॥
सु कुल 'सचिंती' श्रीगुरु उपना, 'खेमलदे' उरि हंसो जी ।
'वस्तपाल' पिता जसु जाणिये, मुनिजन महिं अवतंसो जी ॥३॥च०॥
नाण चरण गुण सयल कला धरू, जश परिमल सुविसालो जी ।
'अमरमाणिक्य' गुरु पाटइं दीपता, अठमि शशिदलभालो जी ॥४॥च०।
गाम नयर पुरि विहरी महीयलइं, पडिवोही जणवृन्दो जी ।
सोल छयालइ आया संवतइ, पुरि 'जालोर' मुणिंदो जी ॥५॥च०॥
माह वहुल पखि अणसण उच्चरि, आणी निय मन ठामो जी ।
······························ ·························॥६॥च०॥
आउ पूरी चउदसि दिन भलइ, पहुता तव सुरलोक जी ।
थूंभ अपूर्व कियउ गुण (रु?)तणउ, प्रणमीजइ वहुलोक जी ॥७॥च०॥
इण कलिकाले श्रीगुरु जे नमइ, भाव धरी नरनारी जी ।
समकित निर्मल हुइ वलि तेहनइं, धन कण सुत सुखकारी जी ।८।च०।
धन धन 'साधुकीर्त्ति' रलियामणा, सवही नाम सुहाए जी ।
पाय कमल जुग नितु तस प्रणमतां, घरि घरि मंगल थाए जी ।९।च०।
ऊलट आणी सहगुरु गाइया, वाचक 'रायचंद्र' सीसि जी ।
आसा पूरण सुरमणि सुरगवी, 'जयनिधान' सुह दीसि जी ॥१०॥च०।

वादी हर्षनन्दन कृत

श्री समयसुन्दर उपाध्यायानां गीतम्

(१) राग (मारूणी)

साच 'साचोरे' सद्गुरु जनमिया रे, 'रूपसीजीरा' नंद ।
नवयौवन भर संयम सग्रह्योजी, सद्गुरु 'श्रीजिनचद' ॥ १ ॥
भले रे विराज्यो उपाध्याय देशमें रे, 'समयसुन्दर' सरदार ।
अधिक प्रतापी वड जिम विस्तरै रे, शिष्य शाखा परिवार ॥भले॥२॥
चवदे विद्या आपण अभ्यसी रे, पण्डित राय पडूर ।
छोडाया वाडा मयणे मारता रे, राउल भीम' हजूर ॥भले०॥३॥
'लाहउरे' 'अकबर' रंजियो रे, आठ लाख अरथ दिखाड ।
वाचक पदवी पण पामी तिहा रे, परगड वश 'पोरवाड' ॥भले०॥४॥
सिन्धु विहारे लाभ लियउ घणो रे, रजी 'मखनूम' सेख ।
पाचे नदिया जीवदया भरी रे, राखी धेनु विशेष ॥भले०॥५॥
पहिराया पूरा मुनिवर गच्छ ना रे, प्रणमे भूपति पाय ।
वजडाव्या वाजा ताजा मेडता रे, रजी मडोवर राय ॥भले०॥६॥
चाल्हो लागे चतुर्विध सघ ने रे, 'सकलचद' गणि शीश ।
चडवखती वादी सदा रे, 'हर्षनंदन' सुजगीश ॥भले०॥७॥

कवि देवीदास कृत

(२) रागः—आसावरी सिन्धुड़ो

'समयसुन्दर' वाणारस वंदिये, सुललित वाणि वखाणो जी ।
राय रंजण गीतारथ गुणनिलो जो, महिमा मेरू समाणो जी ॥स०॥१॥
अरथ करी 'अकबर' मन रीझव्यो; वलि कहूं बीजी वातो जी ।
'जेसलमेर' सांडा जीव छोड़ाव्या, रावल करि रलिआतो जी॥स०॥२॥
'शीतपुर' मांहें जिण समझावियो, 'मखनूम' महमद सेखो जी ।
जीवदया परा पडह फेरावियो, राखी चिहुंखंड रेखो जी ॥स०॥३॥
दड़ दिवाने सगले दीपता, संघ घणो सोभागो जी ।
माने मोटा राणा राजिया, वणारीस वडभागो जी ॥स०॥४॥
सद्गुरु सिगलो गच्छ पहिरावियो, लोक मांहे यश लीधो जी ।
'हर्षनन्दन' सरखा शिष्य जेहने, 'वादी' विरुद प्रसिद्धो जी॥स०॥५॥
जन्मभूमि 'साचोर' जेहनी, वंश 'पोरवाड़' विख्यातो जी ।
मातु 'लीलादे' 'रूपसी' जनमिया, एहवा गुरु अवदातो जी॥स०॥६॥
(श्री) 'जिनचन्दसूरि' संइहथे दीखिया, 'सकलचन्द' गुरु शीशो जी ।
'समयसुंदर' गुरु चिर प्रतपै सदा, दै 'देवीदास' आसीसो जी॥स०॥७॥

॥ इति श्रीसमयसुंदरोपाध्यायानां गीतद्वयं ॥

[हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि० प्रति, पत्र १ से]

राजसोम कृत
महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्

(३) ॥ ढाल हांजरनी ॥

नवखंडमे जसु नाम पंडित गिरुआहो, तर्क व्याकर्ण भण्या।
अर्थ किया अभिराम पदएकणराहो, आठ लाख आकरा ॥१॥
साधु बडो ए महन्त 'अकबर' शाहे हो, जेह वखाणीयो।
'समयसुन्दर' भाग्यवंत पातिशाह पू(तु?)ठोहो,थापलि इम कह्योरा॥२॥
जीवदया अशलीय राउल रजी हो, 'भीम' 'जेशलगिरि'।
करुणा उत्तम कीध 'साडा' छोडाया हो, देशमें मारता ॥३॥
'सिद्धपुर' माहे शेख 'महम्मद' मोटो हो, जिण प्रतिबोधीयो।
सिन्धु देश माहे विशेष 'गाया' छोडावी हो, तुरके मारती ॥ ४ ॥
सरस वस्त्र पटकूल गच्छ पहरायो, खरतर गहगडो।
वचनकला अनुकूल प्रन्थ देखी हो, शास्त्र कीधाघणा ॥ ५ ॥
पर उपगार निमित्त कीधो सगलो हो,धन धन इम कहे।
गीत छंद बहु वृत्ति कलियुग माहे हो, जिणे शाको कियो ॥ ६ ॥
जुगप्रधान 'जिनचन्द' स्वयंहस्त वाचक हो, पद 'लाहोर' दियो।
'श्रीजिनसिंहसूरिंद' शहर 'लवेरे' हो, पाठक पद कीयो ॥ ७ ॥
आगम अर्थ अगाह सह मुख साचो हो, जेणे प्ररुपीयो।
गिरुओ गुरु गजगाह परिवार पूरो हो, जेहनो परगड़ो ॥ ८ ॥
कीधो क्रियाउद्धार सवत सोले हो, इकासु समे।
गौतमने अणुहार पचाचार पाले हो, घणू वली तप करे ॥ ६ ॥

अणसण करि अणगार संवत सतरे हो,सय विडोत्तरे ।
'अहमदावाद' मझार परलोक पहुंचा हो, चैत्र शुदि तेरसे ॥ १० ॥
वादीगज दल सींह पाट प्रभाकर हो, प्रतपे तेहने ।
'हरषनन्दन' अणवीह पण्डित मांही हो, लीह काढी जिणे ॥ ११ ॥
प्रगट जासु परिवार भाग्यवन्त मोटो हो,वाचक जाणीये ।
दिन-दिन जय-जयकार जग जिरंजीवो हो,'राजसोम' इम कहे॥१२॥*

[इति महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतं] ......

—❀—

॥ श्री यशकुशल सुगुरु गीतम् ॥

॥ राग काफी ॥

'श्री यशकुशल' मुनीसर (नागुण) गावो तुम्ह सुखकारी ।
सहु जनने सुखसातादायक, विघ्न विडारण हारी ॥१॥य०॥
ठाम ठाम महिमा सद्गुरुनी, जाणे लोक लुगाइ ।
तिम वलि इण देशे सविशेषै, कहतां नावै काई ॥२॥य०॥
भर दरियावै समरण करतां, हाथे कर ऊबारै ।
ध्यान धरै इक मन जे साचौ, तेहना कारज सारै ॥३॥य०॥
'कनकसोम' पाटै उदयाचल, श्री 'यशकुशल' मुणिन्द ।
दिन दिन अधिको साहित्र सोहे, जिम ग्रह माहिं चंद ॥४॥य०॥
महिर करी नइ दीजइ दरिशन, जोजइ सेवक सार ।
'सुखरतन' कहै कर जोड़ी नै, भवि भवि तूं ही आधार ॥५॥य०॥

---

* यह गीत बाड़मेरके यति श्री नेमिचन्द्रजीसे प्राप्त हुआ है । एतदर्थ उन्हें धन्यवाद देते हैं ।

कविवर श्रीसार कृत

श्री जिनराजसूरिरास

[रचना समय सं० १६८१]

——※※——

.... तोरण चंग।

दीठा सगला दुख हरइ, थायइ अति उछरंग ॥ ६ ॥ मेरी०।
अति सरवर सुंदर अति भली, सोहइं घणी ध्रमसाल।

जिहं व्यवहारिया, धरम करइ सुविसाल ॥१०॥ मेरी०।
वन बाग वाड़ी अति घणी, तिहां रमइ लोक छयल।

सोहइ नगर सुहामणउ, भोगी करइ सयल ॥११॥ मेरी०।
'रायसिंघ' राय करावियउ, 'नवउ कोट' अमली माण।

कचमहले करि सोभनउ, केहउ करूं वखाण ॥१२॥ मेरी०।
हिव राज पालइ रंग सेती, राजा तिहां 'रायसिंघ'।

वयरी मृगला भागिवा, ए सादूलोसिंघ ॥१३॥ मेरी०।
प्रतिपयउ 'राठोडा' कुलई, सेवका पूरइ आस।

पट्टराणी माथइ सदा, विलसहि भोगविलास ॥१४॥ मेरी०।
तेहनइ 'मुहतउ' मल्हपनउ, परदुख काटनहार।

'कर्मचन्द' नामइ दिपतउ, बुद्धइ अभयकुमार ॥१५॥ मेरी०।
डोलनी 'रासी' जेण पृथ्वी, दिया दान अपार।

'पैंत्रीसइ' मांहि माटियउ, सगलइ मसूकार ॥१६॥ मेरी०।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह..

जिनराज सूरिजी—जिन रंगसूरिजी
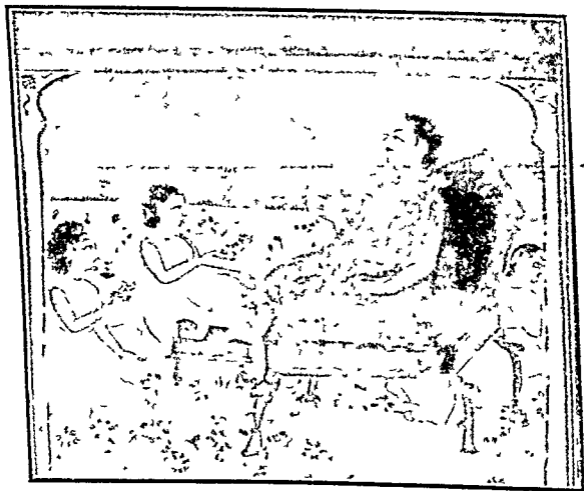
(शालिभद्र चौपइकी प्रतिसे)

'कोडि' द्रव्य दीधा याचकां, 'लाहोर' नयर उच्छाह।
श्री 'जिनचन्द' युगवर कीया, पत्तगरियउ 'पतिशाहि' ॥१७॥ मेरी०।
'नव' गाम नइ 'नव' हाथीया, तिहां दिया द्रव्य अनेक।
श्री 'जिनसिंहसूरिंद' नइ, आचारिज सविवेक ॥१८॥ मेरी०।
'रायसिंघ' राजा राज पालइ, मंत्रवी तिहि 'कर्मचंद'।
सहू को लोक सुखइ वसइ, दिन-दिन अधिक आणंद ॥१६॥मेरी०॥

दूहा— वसइ तिहां व्यवहारिउ, सोभागो सिरदार।
धर्म धुरन्धर 'धर्मसी', वोहिथ कुल सिणगार ॥ १ ॥
दुखियां नउ पीहर सदा, धर्मी नइ धनवंत।
कुल मंडण महिमा निलउ, गुणरागी गुणवन्त ॥ २ ॥
पतिभक्ता नइ गुणवती, शीयलवती वरियाम।
मनहर नारी तेहनइ, 'धारलदे' इणि नाम ॥ ३ ॥
भणि जाणइ चउसठि कला, रूपइ जीती रंभ।
एहवो नारि को नहि, अद्भूत रूप अचम्भ ॥ ४ ॥
दोगंदक सुरनी परइ, सही सगला संजोग।
निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नव-नव भोग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—मांहका जोगना नुं कहिज्योरे अरदास। ए जाति।
उत्तम गृह मांहि (ए) कदा रे, पउठि 'धारल' देवि। प्रीतमजी। पउ०
झबकइ मोती झुंबका रे, सुख सज्या नित मेव॥ प्री० सु०। १।
प्रीतमजी बोलइ अमृत वाणि, प्रीतमजी बोलइ कोयल वाणि।
प्रीतमजी तुं मेरउ सुलताण, प्रीतमजी तुं तो चतुर सुजाण।

प्रीतमजी दिठउ स्वप्न उदार, प्रीतमजी कहउ नइ तासु विचार।
प्रीतमजी थे पण्डित सिरदार ॥ आंकणी० ॥

चोवा चन्दन अरगजा रे, कसतूरि घनसार। प्री० कस्तूरि० ।
चिहु दिशि परिमल महमहइ रे, इन्द्र भुवन आकार ॥प्री० इन्द्र०॥२
दमणा पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविशाल। प्री० । जा० ।
फूल तिहा महकइ घणा रे, तिम फूलारी माल ॥ प्री०ति०।३।प्री०दी०।
दहदिशी दीवा झलहलइ रे, चन्द्रूअडा चउमाल। प्री० च० ।
भींतइ चीतर भित्या भला रे, वारू वन्नरमाल ॥ प्री० वा० ।४। प्री०
मनहर मोती आलिया रे, करइ कली उजास। प्री० क० ।
पुन्य पखइ किम पामीयइ रे, एहवा सखर आवास। प्री०ए०।५।प्री०।
'धारलदे' पउढि तिहा रे, कोइ न लोपइ लीह। प्री० को० ।
किउ सूती किउ जागती रे, दीठइ सुहणे सीह ॥ प्री० दी० ।६। प्री०
सुहणउ देखी सुहामणउ रे, पामइ हरख अपार। प्री० पा० ।
स्वप्न तणउ फल पूछिवा रे, वीनवीयउ भरतार ॥ प्री० वि० ॥७। प्री०
अमृत समी वाणि सुणीरे, जाग्या 'धरमसी' साह। प्री० जा० ।
पुण्ययोग जाणे मिली रे, साकर दूधदि माहि ॥ प्री० सा० ।।८।प्री०।
धरि आणन्द इसउ कहइ रे सखरउ लहयउ सुपन्न। प्री० स० ।
सूरवीर विद्यानिलउ रे, हुइस्यइ पुत्र रतन ॥ प्री० हु० । ६ प्री० ।
कुलदीपक बोहित्थरा रे, अन्ति हुस्यइ राजान। प्री० अ० ।
सिंह तणी परि साहमी रे, थास्यइ पुत्र प्रधान ॥ प्री० था० ।१०।प्री०।
गरभकाल पूरउ हुस्ये रे, सात दिवस नव मास। प्री० सा० ।
पुत्र मनोहर जनमिस्यइ रे, फलिस्यै मन नी आस ॥प्री० म०।११।प्री०

दीपइ हरख थयउ घणउं, सुणियउ सुपन विचार। प्री० सु०।
तहत्ति करी उठि तदा रे, फूंनी भुवन मंसार ॥प्री०प०॥८॥प्री०प्री०

दूहा—घरि (भुवन?) आवी इम चिनवइ, अजेसीस बहु रान।
धरम जागरि जागतां, प्रकटाणउ परभान ॥ १ ॥

जे भणिया बहु चारि-कला, भणिया वेद पुराण।
प्राहुणइ घर तेडिया, जोसी ज्योतिष जांण ॥ २ ॥

'श्रीधर' 'धरणीधर' सही, जोसी 'विठ्ठलदास'।
पहरी खीरोदक धोतीया, आव्या मन उल्लासि ॥ ३ ॥

संतोष्या जोसी कहइ, सुपन तणउ फल एह।
कुलदीपक सुत होइस्यइ, फूल फलां तउ नेम ॥ ४ ॥

इम फल सुपन तणउ सुणी, किया उच्छव असमान।
सनमान्या जोसी सहु, दिया अनर्गल दान ॥५॥

ढालतीजी:—मनि मेघकुमर पछतावी ॥ ए जाति।

दिव दीजइ दान अनेक, परियण मांहि वध्यउ विवेक।
सुरलोक थकी सुर चवियउ, धारलदे उरि अवतरिउ ॥ १ ॥

वधिवा लागउ परिवार, माता हरखि तिणवार।
राजा पिण थइ सन्मान, तिण दिन थी वधियउ वान ॥ २ ॥

इम गरभ वधइ सुखदाइ, तसु महिमा कहयि न जाइ।
मास त्रीजइ दोहला पावइ, माता मनि घणुं सुहावइ ॥ ३ ॥

जाणइ चन्द्र पान करीजइ, भरि घुंट अमिरस पीजइ।
वलि दान अनर्गल दीजइ, लखमी रो लाहो लीजइ ॥ ४ ॥

जिनवरनी कीजइ जात्र, घरि तेडी पोखुं पात्र।
खरचीजइ धन असमान, छोड़ावुं बन्दीवान ॥ ५ ॥

सुणियइ श्री जिनवर वाणि, मन लागी अमिय समाणि ।
ध्याउ श्रीअरिहन्त देव, कीजइ सद्गुरुकी सेव ॥ ६ ॥
धर्म रोग गमेवा ओसड, कीजइ पडिकमणउ पोसउ ।
मनशुद्धि ध्यानु नवकार, दुखिया नइ करू उपगार ॥ ७ ॥
वन वाग जइ उछरंग, प्रीतम सु कीजइ रंग ।
मनमान्या वरसइ मेह, तउ फलइ मनोरथ एह ॥ ८ ॥
'विमलाचल' नइ 'गिरनार', 'सम्मेतसिखर' सिरदार ।
भेटू 'आवू' सुखकारी, पूजा करु 'सतर'—प्रकारी ॥ ९ ॥
ताल:—जा 'खाजा' लापसी आही, वलि लाडु लावणसाही ।
परसु सुरमाणि मेवा, कीजइ साहमीनी सेवा ॥ १० ॥
धन खरची नाम लिखावु, 'सात क्षेत्रे' वित्त वावुं ।
तिम दुखिन दीन साधारू, इणि परि आपउ निसतारू ॥११॥
इम डोहला पामइ जेह, 'धरमसी' शाह पूरइ तेह ।
उत्तम नर गरभइ आयउ, माता विण आणंद पायउ ॥ १२ ॥
जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात दिहाडा खावइ ।
यइ ठिकरि ना खाइ खण्ड, कई खायइ भींत लवंड ॥ १३ ॥
एतउ गरभ सदा सुकमाल, फलि मात मनोरथ माल ।
गुणवन्त हुस्यइ ए आगइ, तिण सहको पाये लागइ ॥ १४ ॥
माता मनि घणउ सनेह, सुत देस्यइ नन्दन एह ।
गाटउ गाटउनवि गायइ, इम काल सुखे करि जायइ ॥१५॥
दिन सात अनइ नव मास, पूरउ थयउ गरभावास ।
फल फूल दहदिशी फलिया, माता मन हुइ रङ्गरलिया ॥१६॥

अति शीतल माजइ वाय, दुखियांनइ दिण सुख थाय ।
गुणवन्त पुत्र जब जायइ, तब सगलउ जग सुख पायइ॥१७॥
मुंह माग्या वरसइ मेह, लोकं र निवड़ सनेह ।
सगलइ जगि हुयउ सुगाल, गुणगावइ धरमगोपाल ॥ १८ ॥
इम उच्छव सुं अवदात, गुणमन्या सूती मात ।
'धारलदे' नन्दन जायउ, सूरिज जिम तेज सवायउ ॥१९॥

दूहा:—वइसाखा सुदि (सातम !) दिन, सोलइसय मइंसाल ।
श्रवण नक्षत्र सुहामणउ, बुधवार (इ) सुविशाल ॥१॥
पंच उंच ग्रह आविया, छत्र जोग सुखकार ।
शुभवेला सुत जनमियउ, वरत्यउ जय-जयकार ॥२॥
चन्द्र अनइ सूरिज थकी, सुत नउ अधिकउ तेज ।
रत्नपुंज जिमि दीपतउ, सोहइ माता सेज ॥३॥

ढाल चौथी, वधावारो :—

दासी आवि दौड़ति ए, जिण (हां ?) छइ 'धरमसी' शाह ।
वधाइ पुत्रनी ए-दीधी मन उमाह ॥ १ ॥
फली आसा सहू ए, जायउ पुत्र रतन । फलि० ।
कीजइ कोडि जतन० फली०, 'धरमसी' साह धन धन्न० ॥फली०॥
उदयउ पूरव पुन्य, फली आस्या सहू ए । आं० ।
सुव दीठइ दुख वीसर्यां ए, वाजइ ताल कंसाल ॥
दमामा दुडवडी ए, वाजइ वनर माल ॥ २ ॥ फली० ॥
वाजइ थाली अति भली ए, वाजइ जांगी ढोल ।
हवइ उच्छव घणाए, गीतां रा रमझोल ॥ ३ ॥ फली० ।

कुंकुं हाथा दीजीयइ ए, सूहव यइ आसीस ।
कुमर धरमसी भणउए, जीवउ कोडि वरीस ॥४॥ फ०ो० ।
गलिए फूल विछाइया ए, नाटक पडइ बत्रीस ।
कुमर भलइ जनमियउ ए, हरख धणउ निसदीस ॥५॥फ०ो० ।
जन्म महोछव इम करइ ए, खरचइ परघल दाम ।
सभल भलपद परइ ए, न गिणइ ठाम कुठाम ॥ ६ ॥फ०ो०॥
याचक जय-जय उचरइ, सगा लहइ सनमान ।
सयण सतोषिया ए, सरिया करइ गुणगान ॥ ७ ॥ फ०ो० ।
दिन दिन दमगइ आवियइ ए, करइ दमूहुण प्रेम ।
सगा सहि निहनरइ ए, असुचि उतारइ एम ॥ ८ ॥फ०ो० ।
सतर भक्ष भोजन भला ए, सालि दालि घृत घोल ।
सहू सतोषिया ए, उपरि सरस तबोल ॥ ९ ॥ फ०ो० ।
एम जमाडि जुगतसु ए, दिया नालेर सरूप ।
भलउ सहको भणइ ए, उछव कियउ अनूप ॥१०॥ फ०ो० ।
धन 'धारलदे' मायडी ए, धन्न २ 'धरमसी' साह ।
कियउ उच्छव भलउ ए, लियइ लखमीरउ लाह ॥ ११ ॥ फ०ो० ।

दूहा :—करि उच्छव रलियामणउ, पुत्र तणउ मुख जोय ।
श्री खेतसी नामउ दियउ, दीठा दउलति होय ॥ १ ॥
सहको लोक इसउ कहइ, सयणा तणइ समकख (क्ष) ।
'धरमसी' साह प्रतई हूयउ, परमेसर परतक्ख ॥ २ ॥
कुलदीपक सुत जनमियउ, करिस्यइ कुल उद्धार ।
इणि नन्दन जाया पछइ, उदय हुयउ संसार ॥ ३ ॥

वखत वलइं इम जाणियइ, शास्त्र तणइ बलि न्याय।
सहको राणा रांणवी, पडिस्यइ एहनइ पाय ॥ ४ ॥
पगे पदम झलकइ भलउ, लखण अंगि बत्रीस।
कइ गढपति कइ गच्छपति' हुइस्यइ विस्वावीस ॥ ५ ॥

ढाल ५—सुगुण सनेही मेरे लाला। इण जाति।

बीज तणउ जिम वाधइ चन्द, तिम वाधइ 'धारलदे' नन्द।
मात पिता उमहइ आणंद, देवलोक नउ जिम माकन्द ॥१॥
माता सुत नइ ले धवरावइ, बेटा-बेटा कहिय बुलावइ।
उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणंद पावइ ॥२॥
आउ मेरा नन्दन गोदि खिलावुं, वंगू लट्टु तुंनइ अणावुं।
केलवि काजल घालइ अखियां, खोलइ ले खेलावइ सखियां ॥३॥
कांनि अडगनिया पाइ पन्हइयां, घमकइ पगि घूघरियां बनियां।
चंदलउ करि वागउ पहिरावइ, सिरिकसबीकी पाग बनावइ ॥४॥
कइयइं माता कंठइ लागइं, कइयइ लोटइ माता आगइं।
कइयइ घडा ना पाणी ढोहइ, कइयइ हसि माता मन मोहइ ॥५॥
कइयइ दूधनी दोहणी ढोलइ, कइयइ हीचइ चढि हींडोलइ।
कइयइ झालइ माखण तरतउ, कइयइ छिपइ माता थी डरतउ ॥६॥
कइयइ मा नउ कंचूअउ ताणइ, कइयइ कांधइ चढिय पलाणइ।
कइयइ हसि मा साम्हउ जोवइ, कइयइं रूसण मांडी रोवइ ॥७॥
देखी कुंवर कहइ इम माता, इणि सुत दीठां थायइ साता।
मति को पापी नजरि लगावइ, गुली कांठिलउ गलइ बंधावइ ॥८॥
माऊ २ कहतउ पासइ आवइ, कांइ पूत मां एम बुलावइ।
प्रेम नजरि माँ साम्ही मेलइ, दूध मांहि जाणे साकर भेलइ ॥९॥

मणमणा बोलइ बोल अमोल, पहिरयउ वागो रातउ चोल ।
अगि शृङ्गार करावइ सोल, माता सूं इम करइ रगरोल ॥१०॥
फेरइ चकरडी माता प्रेरइ, बालूडा बलिहारी तेरइ ।
ल्गू लटू फेरइ चगा, हाथइ गोटा ल्यइ पचरगा ॥११॥
ऊचउ उपाडइ ले बाहडिया, माता कहइ आउ मेरा मान्हडिया ।
हाथे घाल्इ सोवन कडिया, गूथी दइ फूलनी दडिया ॥१२॥
मइ सोलही पासा सारइ, रमइ पचटे विविध प्रकारइ ।
बीजा बालक सहको हारइ, जीपइ कुमर भाग्य अणुसारइ ॥१३॥
इम उच्छव सु नव-नव खेलइ, 'धारलदे' रउ धोटउ खेलइ ।
रूपइ मयण तणउ अवतार, सात वरस नउ थयउ कुमार ॥१४॥
बुद्धइ वीजउ वयर (अभय?) कुमार, आवइ सहु सुणियउ इक वार ।
मात पिता चिनइ उल्हासइ, कुमर भणावउ पडित पासइ ॥१५॥

दूहा:—पुत्र भणइवा माडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय ।
विद्याआवी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥ १ ॥
भली परइ आवी भले, सिद्धो अनइ समान ।
"चाणाइक" आवइ भला, नीतिशास्त्र असमान ॥ २ ॥
तेह कला कोइ नहीं, शास्त्र नहीं वलि तेह ।
विद्या ते दीसइ नहीं, कुमर नइ नावइ जेह ॥ ३ ॥
कला 'बहुत्तरि' पुरपनी, जाणइ राग 'छतीस' ।
कला देखि सहु को कहइ जीवो कोड़िवरीस ॥ ४ ॥
'षड भाषा" भाषइ भली, "चवदह विद्या" लाध ।
लिखइ 'अठारह लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥ ५ ॥

ढाल संधिनी छट्ठो:—पणमिय पास जिणेसर केरा। इणजाति।

कुमर हिवइ जोवन वय आयउ, दिन दिन दिपइ तेज सवायउ।
गरुअउ यश तिहुभवणे गायउ, धन धन ,धारल्दे' उ(द)र जायउ ॥१॥
सूरिज जिम तेजइ करि सोहइ, मेह तणी परि महियल मोहइ।
'क्रिसण' तणी पर सूर सदाइ, दानइ 'करण' थकी अधिकाइ ॥२॥

....

रूपइ 'मनमथ' नउ मद गाल्यउ, काम क्रोध विपयारस टाल्यउ ॥३॥
सायर जिम सोहइ गंभीर, मेरु महीधर नी परि धीर।
कलपवृक्ष जिम इच्छा पूरइ, चिंतामणी जिम चिंता चूरइ ॥४॥
'विक्रमादित्य' जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी।
पांच 'पंडव' जिम वलवंत, सीह तणी परि साहसवंत ॥५॥
नयन कमल नी परि अणियाली, सोहइ अधर जाणइ परवाली।
करइ हाथ सुं लटका मटका, वोलइ वचन अमी रा गटका ॥६॥
काया सोहइ कंचण वरणी, सोहइ हाथे सखर समरणी।
लखतवंतो मोहण वेलि, हंस हरावइ गजगेतिगेली ॥७॥
मस्तक सुंदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा भावठि भाजइ।
पहिरइ नित २ नवरं वागउ, तेगदार मांहे अधिकउ तागउ ॥८॥
रायराणा सहुको द्यइ मान, धरमध्यान करिवा सावधान।
न करइ परनिन्दा परघात, केहा केहा कहूं अवदात ॥९॥
देखि दिन दिन अधिक प्रतापइं, वाकां वयरी थरथर कांपइ।
महीयलि सिगले वोलइ पूरउ, इणपरि विचरइ कुमर, सनूरउ ॥१०॥
हिव इणि अवसर श्री] 'वीकाणइ', 'अकवर' जेहनइ आप वखाणइ।
खरतरगच्छ मांहे प्रवल पडूर, आव्या गुरु 'श्रीजिनसिंह'सूर॥११॥

सुविहित साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निस्तारइं।
विचरइ मद्दियल उग्र विहारइ, आप तरइ लोकां नइ तारइ ॥१२॥
हुवइ सबल तिहां पइसारइ, जिनशासनि रो वान वधारइ।
कलिकालइ गौतम अवतारइ, पूजजी 'बीकानयर' पधारइ ॥१३॥
हरखित हुआ सहूको लोक, जिम रवि उगमि थायइ कोक।
वड़ा वडा श्रावक सुणइ अशेष, पूजजी एहवउ धइ उपदेश ॥१४॥

दोहा :— ए सायर गाजइ सलउ, अथवा गाजइ मेह।
वाणी सामलता थका, एहवउ थयउ संदेह ॥१॥
पोषइ 'नव रस' परगडा, करइ 'राग छत्रीस'।
सरस वखाण सुणी करी, सहु को धइ आसीस ॥२॥

ढाल सातमी :— मेतमुनि काइ डमडोलइरे। इणजाति।
सहको श्रावक सामलइजी, लोक सुणइ ल्ख गान।
"सेतर्मी" कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ॥१॥
भविकजन धरम सखाइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे।
कीजइ चित्त लाइ रे, भविकजन धरम सखाइ रे ॥आँकणी०॥
सदगुरुनी सगति लहीनी, लाधो आरिज खेत।
मानव भव लाधउ भलउजी, चेत सकइ तउ चेत ॥२॥ भविक० ॥
इण जगि सरव असाशतउजी, हीयइ विचारी जोय।
इम आणिरे प्राणियाजी, ममता मा करउ कोय ॥३॥भविक०॥
माया मोह्या मानवीजी, धन संचइ दिन राति।
वयरी जम पूठइ वहइजी, जीव न जाणइ घात ॥४॥भविक०॥
दस दृष्टान्ते दोहिलउजी, लाधउ नर भव सार।
तिहां पणि पुण्यइ पामियइ जी, उत्तम कुल अवतार ॥५॥भविक०॥

बत्रीस लाख विमान नउ जी, साहिब छइ जे इन्द्र ।
ते पणि श्रावक कुल सदा, वंछइ धरि आणंद ॥६॥भविक०॥
वरजीजइ श्रावक कुलइ जी, अनंतकाय बत्रीस ।
मधु माखण वरजइ सदाजी, तिम अभक्ष बावीस ॥७॥भविक०॥
सामायिक ले टालयइजी, त्रीस अनइ दुइ दोष ।
परनिंदा नवि कीजियइजी, मन धरियइ संतोष ॥८॥भविक०॥
इक दिन दिक्षा पालीयइजी, आणी भाव प्रधान ।
तउ सिवपुर ना सुख लहइजी, निश्चय देव विमान ॥६॥भविक०॥
इणि जगि सरव अशाश्वतोजी, स्वारथ नउ सहु कोय ।
निज स्वारथ अणपूजतइजी, सुत फिरी वयरी होय ॥१०॥भविक०॥
चिंतामणी सुरतरू समउजी, जिनवर भाषित धर्म ।
जउ मन शुद्धइं कीजियइजी, तउ त्रूटइ सही कर्म ॥११॥भविक०॥

दोहा :—खेतसी कुमरइं संभल्यउ, जिनसिंह सूरि वखाण ।
वाणी मनमांहे वसी, मिठ्ठी अमिय समाण ॥१॥
करजोड़ी एहवउ कहइ, आणि हरख अपार ।
तुम्ह उपदेशइ जाणियउ, मइ संसार असार ॥२॥
तिणि कारण मुझनइ हिवइ, दीजइ संजमभार ।
कृपा करि मो उपरइ, इणि भविथी निस्तार ॥३॥
वलतउ गुरु इणि परि कहइ, मकरउ ए प्रतिबंध ।
मात पिता पूछउ जइ, करउ धरम सम्बन्ध ॥४॥

ढाल आठमी:—मांहके देह रंगीली चूनरी—इणजाति ।
अहो गुरु वांदी नइ उठियउ, आव्यउ माता नइ पास हो ।
कर जोडिनइ इणि परि कहइ, आणी मन मांहि उलास हो ॥१॥

सुविहित साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निस्तारइं ।
विचरइ महियल उग्र विहारइ, आप तरइ लोका नइ तारइ ॥१२॥
हुवइ सबल तिहां पइसारइ, जिनशासनि रो वान वधारइ ।
कलिकालइ गौतम अवतारइ, पूजजी 'बीकानयर' पधारइ ॥१३॥
हरषित हुआ सहूको लोक, जिम रवि दरसणि थायइ कोक ।
बड़ा बड़ा श्रावक सुणइ अशेष, पूजजी एहवउ द्यइ उपदेश ॥१४॥

दोहा :—ए सायर गाजइ भलउ, अथवा गाजइ मेह ।
वाणी साभलता थका, एहवउ थयउ संदेह ॥१॥
पोषइ 'नव रस' परगड़ा, करइ 'राग छत्तीस' ।
सरस वखाण सुणी करी, सह को द्यइ आसीस ॥२॥

ढाल सातमी :—मेघमुनि काइ डमडोलइरे । इणजाति ।
सहको श्रावक साभलइजी, लोक सुणइ लख गान ।
"खेतसी" कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ॥१॥
भविकजन धरम सखाइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे ।
कीजइ चित्त लाइ रे, भविकजन धरम सखाइ रे ॥आँकणी०॥
सदगुरुनी सगति लहीजी, लाधो आरिज खेत ।
मानव भव लाधउ भलउजी, चेत सकइ तउ चेत ॥२॥ भविक० ॥
इण जगि सरव अथाशाततउजी, हीयइ विचारी जोय ।
इम जाणिरे प्राणियाजी, ममता मा करउ कोय ॥३॥भविक०॥
माया मोह्या मानवीजी, धन सचइ दिन राति ।
वयरी जम पूठइ वहइजी, जीव न जाणइ घात ॥४॥भविक०॥
दश दृष्टते दोहिलउजी, लाधउ नर भव सार ।
तिहां पणि पुण्यइ पामियइ जी, उत्तम कुल अवतार ॥५॥भविक०॥

त्रीस लाख विमान नउ जी, साहिब छइ जे इन्द्र ।
ते पणि श्रावक कुल सदा, वंछइ धरि आणंद ॥६॥भविक०॥
वरजीजइ श्रावक कुलइ जी, अनंतकाय बत्रीस ।
मधु माखण वरजइ सदाजी, तिम अभक्ष्य बावीस ॥७॥भविक०॥
सामायिक ले टालयइजी, त्रीस अनइ दुइ दोष ।
परनिंदा नवि कीजियइजी, मन धरियइ संतोष ॥८॥भविक०॥
इक दिन दिक्षा पालीयइजी, आणी भाव प्रधान ।
तउ सिवपुर ना सुख लहइजी, निश्चय देव विमान ॥९॥भविक०॥
इणि जगि सरव अशाश्वतोजी, स्वारथ नउ सहु कोय ।
निज स्वारथ अणपूजतइजी, सुत फिरी वयरी होय ॥१०॥भविक०॥
चिंतामणी सुरतरू समउजी, जिनवर भाषित धर्म ।
जउ मन शुद्धइं कीजियइजी, तउ त्रूटइ सही कर्म ॥११॥भविक०॥

दोहा :—खेतसी कुमरइं संभल्यउ, जिनसिंह सूरि वखाण ।
वाणी मनमांहे वसी, मिठ्ठी अमिय समाण ॥१॥
करजोड़ी एहवउ कहइ, आणि हरख अपार ।
तुम्ह उपदेशइ जाणियउ, मइ संसार असार ॥२॥
तिणि कारण मुझनइ हिवइ, दीजइ संजमभार ।
कृपा करि मो उपरइ, इणि भविथी निस्तार ॥३॥
वल्तउ गुरु इणि परि कहइ, मकरउ ए प्रतिबंध ।
मात पिता पूछउ जइ, करउ धरम सम्बन्ध ॥४॥

ढाल आठमी:—मांहके देह रंगीली चूनरी—इणजाति ।
अहो गुरु वांदी नइ उठियउ, आव्यउ माता नइ पास हो ।
कर जोडिनइ इणि परि कहइ, आणी मन मांहि उलास हो ॥१॥

मोनइ अनुमति दीजइ मातजी, हुं लेइस संजमभार हो।
जगि स्वारथ नउ सहु को सगउ, मिलीयोछइ ए परिवार हो ॥२॥मो०॥
सद्गुरु नी देसण सुणी, मन माहि धरी अनुराग हो।
हिव इणिभवथी मन उभगउ, मुझ नइ आव्यउ वयरागहो ॥३॥मो०॥
अहो देस विदेश फिरो करी, खाटीजइ परिघल आथि हो।
पणि परलोकइ जाता थका, तो नावइ प्राणी साथि हो ॥४॥मो०॥
अहो इणभवि परभवि जीवनइ, सुख कारण श्रीजिनधर्म हो।
जिणथी सुरा सम्पति सम्पजइ, कीजइ तेहिज कर्म हो ॥५॥मो०
अहो डाभ अणि-जल जेहवउ, जेहवउ चञ्चल नय (हय?) वेग हो।
माता अथिर निसउ ए आउखउ, आण्यउ इम जाणि संवेग हो ॥६॥मो०
अहो इणि जगि को केहनउ नहीं, परिजन नइ वलि परिवार हो।
भगवन्तरउ भाख्यउ जीवनइ, इक धर्म अछइ आधार हो ॥७॥मो०॥
अहो जीव तणइ पूठइ वहइ, सर सान्ध्यइ वयरी काल हो।
तिण कारण करसुं मातजी, पाणी आव्या पहलइ पाल हो ॥८॥ मो०।
अहो ए सुख भोगवता छता, दुख थाय पछइ असमान हो।
ते सोनउ केयउ कीजियइ, जे पहिरयउ तोडइ कान हो ॥९॥ मो०।
अहो जेह वडा सुखिया अछइ, वलि दूसयइ सुखिया जेह हो।
ते सहु को पुण्य पसाउलइ, इहा कोइ नहीं सन्देह हो ॥१०॥ मो०।
भेदाणी धरमइ करी, माता मुझ साते धात हो।
मुनिवर नउ मारग मादरइ, हियडइ वसियउ दिनरात हो ॥११ मो०।

दोहा :—पुत्र वयग इम सम्भली, संजम मति सुविशाल।
मुर्छाङ्कित माता थइ, पड़ी धरणी तत्काल ॥ १ ॥

गंगोदक सुं छांटिनइ, वींझ्या शीतल वाय।

सावधान हुइ तदा, इणि परि जम्पइ माय ॥ २ ॥

तुं नान्हड़ियउ माहरइ, तुं मुझ जीवनप्राण।

एक घड़ी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजाण ॥ ३ ॥

तुं सुकमाल नोक्षामणउ, दोहिलउ संजम भार।

बोल विचारी बोलियइ, संजम दुक्करकार ॥ ४ ॥

तन धन यौवन लही करी, विलसउ नवनव भोग।

वलि वलि लहतां दोहिला, एहवा भोग संजोग ॥ ५ ॥

वेलि (९):—लही एहवा भोज संजोग, विलसीजइ नवनवभोग।

तुं "बोहिथरा" कुल दीवउ, तिणि कोडि वरस चिरजीवउ ॥१॥

सुन तुं सुकमाल सदाइ, तुं सिगलानइ सुखदाइ।

जिणवर भासित ले दीक्षा, तुं किणी परि मांगिसी भिक्षा ॥२॥

तुं पंडित चतुर सुजाण, तुं बोलइ अमृत-वाणि।

तुज गुण गावइ सहु कोइ, तुज सरिखउ पुरिस न कोइ ॥३॥

दोहा :—सांभलतां पिण दोहिली, सुत संजमनी वात।

श्रावक धरम समाचरउ, तुं सुकमाल सुगात ॥ १ ॥

वेलि :—सुत तुं सुकमाल सुगात, मत कहिजो संजम वात।

इणि गरुअइ संजम भारइ, विचरेवउ खड़ग धारइ ॥१॥

बहुला मुनिवर आगेइ, चूका छइ चारित लेइ ॥

तिणी वात इसी मत कहिजो, डोकरपणि चारित लेज्यो ॥२॥

इणि जोवनवय तुं आयउ, तुं नन्दन पुण्यइ पायउ।

घणा दुखित दीन सधारउ, 'बोहिथ कुल' वान वधारउ ॥३॥

दोहा :— वचन एहवउ साभलि, इणि परि कहइ कुमार।
कायर कापुरिसा भणी, दुहिलउ संजम भार ॥ १ ॥

वेलि :— माता दुहिलउ संजम भार, जे कायर हवइ नर-नारि
जो सूर वीर सरदार, तिणनइ स्युं दुक्करकार ॥ १ ॥

गाथा :— ता(उ)तूं गो मेरुगिरो, मयरहरो(सायरो)तावहोइदुत्तारो।
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ॥ १ ॥

वेलि :— जे कुल ना जाया होवइ, ते कुलवटि साम्हउ जोवइ।
तिण कारण ढील न कीजइ, माताजी अनुमति दीजइ ॥२॥

दोहा :— संजम उपर जाणियउ, सुत नउ निविड सनेह।
हिव जिम जाणो तिम करउ, दीधी अनुमति एह ॥ १ ॥

वेलि :— हिव दीधी अनुमति एह, संयम सुं निवड सनेह।
दिक्षा नउ उच्छव कीजइ, मुंह माग्या धन खरचीजइ ॥१॥
घरि रङ्ग 'धरमसी' शाह, इम उच्छव करइ उच्छाह।
घरि मंगल वाजित्र वाजइ, तिणि नादइ अम्बर गाजइ ॥२॥
वाजइ भुंगल नइ भेरी, वाजइ नवरंग नफेरी।
वाजइ ढोल दमामा नाली, गुण गावइ अबलावाली ॥३॥
वाजइ सुन्दर सरणाइ, सुणता श्रवणे सुखदाइ।
वाजइ झलरि ना झणकार, पडइ माडल ना दोकार ॥४॥
वाजइ राय गिडगिडी रंग, धिध धिध वाजइ मुख चंग।
गन्धर्व बजावइ वीणा, सुणइ लोक सहु तिहा लीणा ॥५॥
वाजइ त्रिवली ताल कंसाल, गीत गावइ बाल-गोपाल
आलापइ राग छत्तीस, इम उच्छ (व) थाय जगीस ॥६॥

दोहा :—उष्णोदक सुं कुमर नइ, भलउ करायउ स्नान।
अङ्गि शृङ्गार कीया सहु, वणियउ वेष प्रधान ॥ १ ॥
वेलि :—हिव वणियउ वेश प्रधान, गंगोदक सुं कीया स्नान।
मोतीयडे कुमर वधायउ, आभरणे अंग वणायउ ॥ १ ॥
मस्तकि भलउ मुकुट विराजइ, दोइ कानइ कुण्डल छाजइ।
विहुं बांहे वहरखा खंध, करि सोहइ बाजूबन्ध ॥२॥
उर वर मोतिन कउ हार, पाइ घुघरिया घमकार
अश्व उपरि थयउ असवार, याचक करइ जयजयकार ॥३॥
ताजां नेजां गयणइ सोहइ, वरनोलइ इम मनमोहइ।
....॥४॥
दोहा:—हिव गुरु पासइ आवियइ, मिलीया माणस थाट।
कुमर तणउ जस उच्चरइ, 'चारण' 'भोजिग' 'भाट' ॥ १ ॥
वेलि:—हिव 'चारण' 'भोजिग भाट', "धरमसी" शाह करइ गहगाट
"खेतसी" गुरु पायइ लागइ, गुरु वांदी वइठउ आगइ ॥१॥
इम पभणइ "धरमसी" शाह, ए कुमर वडउ गज गाह।
पूजजी हिव कृपा करीजइ, ए मांहरि थापण लीजइ ॥ २ ॥
हिव कुमर सुणे वालूड़ा, ले दिक्षा चलिजे रूड़ा।
गुरुजीनो कह्यो करेजो, सूधउ संजम पालेजो ॥ ३ ॥
जिम दीपइ 'वोहिथ' वंश, तिम करिजो सुत अवतंश।
क्रोधादिक वयरी दाटे, महियली वहुलउ जस खाटे ॥ ४ ॥
तुजनइ किसी सीख सीखांवा, स्युं दांत नइ जीभ भलावां।
जिम सहुको कहइ धन धन्न, तिम करिज्यो पुत्र रतन्न ॥५॥

दोहा :—'सोलहसय छपन्न' मई, संवछर सुखकार।
'मिगसर सुदी तेरसि' दीनइ, लीयउ संजम भार ॥१॥
माणक मोती माल सहु, हय गय रथ परिवार।
छंडो संजम आदर्यो, जाण्यो अथिर संसार ॥२॥
दे दिक्षा नामउ कीयउ, 'राजसिंह' अणगार।
हिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करइ अनेथ विहार ॥३॥

वेलि :— हिव करइ अनेथ विहार, 'राजसिंह' हुओ अणगार।
लीधउ पंच महाव्रत भार, षट जीव नउ रखणहार ॥१॥
पंच सुमति भली परि पालइ, विषयारस दूरइ टालइ।
कइ धरम दश परकारइ, पाटोधर वान वधारइ ॥२॥
ग्रहणा सेवन दुइ शिक्षा, सीखी संजम नी रिक्षा।
मंडलि तप वूहा जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' विनाणी ॥३॥
दीधी दीक्षा वडइ विरुद, नामउ दीयउ 'राजसमुद्र'।
हिव शास्त्र भण्या असमान, ते गिणता नावइ गान ॥४॥
उपधान वूहा मन रंग, 'उत्तराध्यन' नइ 'आचारंग'।
तप कल्प तणउ आरहइ, छम्मासी तप पिण वूहइ ॥५॥
वयसइ बहु पंडित आगइ, लुलि लुलि सहि पाये लागइ।
इम लोक कहइ गुणरागी, जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा :—आवइ 'आठे व्याकरण' 'अट्ठारह-नाममाल'।
'छग तर्क' भणिआ भला, 'राग छत्रीस' रसाल ॥ १ ॥
भलइ मेली भणिया वलि, 'आगम पैंतालीस'।
मइंमुख श्री 'जिनसिंह' गुरु, सीरति दीयइ निशदीस ॥२॥

महियलि वादि वड घड़ा, ताता (तां लग?) गरव वहंति ।
जां लगि 'राजसमुद्र' गणि, गरुआ नवि बुझंति ॥ ३ ॥
मोटइ मुनिवर महियलइ, 'राजसमुद्र' अणगार ।
जे जे विद्या जोइयइ, तिणि नहु लाभइ पार ॥ ४ ॥
'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचंद्र सूरिंद' ।
पाटोधर प्रतिपउ सदा, रलिय रंग आणंद ॥ ५ ॥
वड वखती सुप्रसन्न वदन, जाग्यो पुण्य अंकूर ।
परतखी देवी 'अम्बिका', हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥
परतखि परतउ दिठ ए, 'अम्बा' नइ आधार ।
लिपि वांची 'घंघाणीयइ', जाणइ सहू संसार ॥ ७ ॥
'जेसलमेरु' दुरंग गढ़ि, राउल 'भीम' हजूर ।
वादइं 'तपा' हराविया, विद्या प्रबल पडूर ॥ ८ ॥
इम अनेक विद्या बलइ, खाटया वडा विरुद ।
विद्यावंत वडउ जती, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ६ ॥

ढाल दसमी—उलाला जाति ।

हिव श्री शाहि 'सलेम', 'मानसिंघ' सूं धरि प्रेम ।
वड वडा साहस धीर, मूंकइ अपणा वजीर ॥ १ ॥
तुम्ह 'वीकाणइ' जावउ, 'मानसिंघजी' कूं बुलावउ ।
इक वेर 'मानसिंघ' आवइ, तउ मुझ मन (अति) सुख पावइ ॥ २ ॥
ते 'वीकाणइ' आया, प्रणमइ 'मानसिंघ' पाया ।
दीधा मन महिराण, 'पतिसाही-फुरमाण' ॥ ३ ॥

मिलियउ सघ सुजाण, वाच्या ते फुरमाण।

तेडावा (या?) 'पतिसाह', सहु को धरइ उच्छाह ॥ ४ ॥

हिव श्री 'जिनसिंघ सूर', साहसवंत सनूर।

चितइ एम उल्हासइ, जाइवउ 'पतिसाह' पासइ ॥ ५ ॥

'बीकानेर' थी चलिया, मनह मनोरथ फलिया।

साधु तणइ परिवारइ, 'मेड़तइ' नयरि पधारइ ॥ ६ ॥

श्रावक लोक प्रधान, उच्छव हुआ असमान।

श्री गच्छनायक आयउ, सिगले आनद पायउ ॥ ७ ॥

तिहा रह्या मास एक, दिन २ वधतइ विवेक।

चलिवा उद्यम कीधउ, 'एक—पयाणउ' दीधउ ॥ ८ ॥

काल धरम तिहा भेटइ लिखत लेख कुण मेटइ।

'श्री जिनसिंघ' गुरुराया, पाछा 'मेड़तइ' आया ॥ ९ ॥

सहु सुखि लीधउ सथारउ, कीधउ सफल जमारो।

शुद्ध मनइ गहगहता, 'पहिलइ देवलोक' पहुता ॥ १० ॥

सवत 'सोल चिहुत्तरइ', 'पोषसुदि 'तेरस' वरतइ।

सोग करइ सहि लोक, पूज पहुता परलोक ॥ ११ ॥

हिव देही संसकार, कीधउ लोक आचार।

बीजइ दिन धरि प्रेम, लोक विमासइ एम ॥ १२ ॥

आगम गुणे अगाध, मिलीया बड बडा साध।

सघ मिलियउ गजथाट, कुणनइ [दीजियइ पाट ॥ १३ ॥

तब बोल्या सही लोग, 'राजसमुद्र' पाट जोग।

दीजइ एहनइ पाट, जिम थायइ गहगाट ॥ १४ ॥

"चवदह विद्या' निधान, मुनिवर मांहि प्रधान ।

एह हवइ गच्छइसर, तउ तूठउ परमेसर ॥ १५ ॥

सायर जेम गंभीर, मेरु महीधर धीर ।

दीठां दालिद्र जायइ, वांद्या नवनिधि थायइ ॥ १६ ॥

"राजसमुद्र' हवइ राजा, 'सिद्धसेन' हवइ युवराजा ।

तउ खरतरगच्छ सोहइ, संघ तणा मन मोहइ ॥ १७ ॥

दोहा—इम आलोच करि हिवइ, उठइ श्रीसंघ जाम ।

'आसकरण' आवइ तिसइ, 'संघवी' पद अभिराम ॥ १ ॥

कुलदीपक श्री 'चोपड़ा', वड़ जेहइ विस्तार ।

लखमी रो लाहउ लीयइ, संघ मांहे सिरदार ॥ २ ॥

श्री संघ आगलि इम कहइ, ए मोरी अरदास ।

'पद ठवणो' करिवा तणउ, द्यो आदेश उलास ॥ ३ ॥

इम अनुमति ले संघनी, धरइ चित्त उच्छरंग ।

पद ठवणउ संघवी करइ, आणी वल्ट अंग ॥ ४ ॥

संवत 'सोलचिहुत्तरइ', सोमवार सिरताज ।

'फागुणसुदि' 'सातम' दिनइ, थाप्या श्री जिनराज ॥५॥

भट्टारक सोहइ भलउ, 'श्री जिनराज सूरिंद' ।

प्रतिपउ तां लगि महियलइ, जां लगि ध्रू रवि चंद ॥६॥

सइंहथ 'श्री जिनराज' गुरु, थाप्या प्रबल पडूर ।

आचारिज चढ़ती कला, 'श्री जिनसागरसूरि' ॥ ७ ॥

सूरिज जिम सोहइ सदा, 'श्री जि(न?)राज सुरिंद ।

श्री 'जिनसागर' सूरि गुरु, प्रतपइ पूनिम चंद ॥ ८ ॥

हिव श्री 'जिनराज सूरिदिवरु', महियल करइ विहार।
थायइ उच्छव अति घणा, वरत्यउ जय जयकार ॥ ६ ॥
'जसलमेर' दुरग गढि, 'सहसफणउ-श्रीपास'।
थाप्यउ श्री जिनराज गुरु, समयां पूरइ आस ॥ १० ॥
श्री 'विमलाचल' उपरइ, जे आठमउ उद्धार।
कीधी तहनी थापना, जाणइ सहु ससार ॥ ११ ॥
परतिख पास 'अमीझरउ' थाप्यउ 'भाणवट' माहि।
इम अवदात किना कहू, मोटउ गुरु गजगाह ॥ १२ ॥
परतिख देवी 'अम्बिका', परतिखि 'बावन वीर'।
'पचनदी' साधो जिणइ, साध्या 'पाच पीर' ॥ १३ ॥
श्री खरतरगच्छ सेहरउ, महियलि सुजस प्रधान।
प्रतपट श्री 'जिनराज' गुरु, दिन २ वधनइ वान ॥ १४ ॥

ढाल इग्यारहमी—आयो आयउरी समरता दादा आयउ।
गायउ गायउ री जिनराजसूरि गुरु गायउ ॥
'श्री जिनसिंह सूरि' पाटोधर, प्रनपइ तेज सवायउरी ।जि०।१।आ०।
पूरव पश्चिम दक्षिण उत्तर, चिहु दिसी सुजस सुहायउ।
रगी रगीली छयल छवीली, मोती (य) वेगि बधायउरी ॥२॥जि०॥
धन धन 'धर्मसी' शाह नो नदन, धन 'धारलदे' जायउ।
तू साहिव मैं तरउसेवक, तुझ चल(र?)णे चित्त लायउ री ॥३॥जि०।
सिधु दन विहार करीनइ, 'पाच पीर' वर ल्यायउ।
उन्य हवइ निणि दमइ अधिकउ, जिणि दिशि पूज गवायउरी ।४।जि।
श्री 'ठाणाग' नी वृत्ति करिनइ, विषमउ अरथ बतायउ।
सूरि मत्रधारी परउपगारी, इंदु नउ वीजउ भायउरी ॥५॥जिन०॥

सह को श्रावक रंजी 'नव खंड', निज नामउ वरतायउ।
विद्यावंत वडउ गच्छ नायक, सहको पाय लगायउरी ॥६॥जिन०॥
सोहइ शहर सदा 'सेत्रावउ' 'मरुधर' मांहि मल्हायउ।
संवत 'सोल इक्यासी', वरसइ, एह प्रबंध वणायउरी ॥७॥जिन०॥
'आसाढ़ा वदि तेरसि' दिवसइ, सुरगुरु वार कहायउ।
श्री गच्छनायक गुण गावतां, 'मेह पिण सवलउ आयउ'री ॥८॥जि०॥
'रत्नहर्ष' वाचक मन मोहइ, 'खेम' वंश दीपायउ।
'हेमकीर्त्ति' मुनिवर मन हरषइ, एह प्रबंध करायउरी ॥९॥जिन०॥
श्री 'जिनराजसूरि' गुरु सुरतरु, मइ निज चित्ति वसायउ।
मुनि ''श्रीसार'' साहिब सुखदाइ, मनवांछित फल पायउरी॥१०॥जि०।

इति श्री खरतरगच्छाधिराज सकल साधुसमाज वृंद वंदित पादपद्म निछद्म सदनेक मंगलसद्म श्री जिनराजसूरि सूरिश्वराणां प्रबंध शुभ बंध बंधुरतरो लिखितोयं श्री कालू ग्रामे॥ शुभं भूयात् पठक पाठकना मशठमनसां॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका धारां पठनार्थं॥ श्री प्रथम दूहा २१, प्रथम ढाल गाथा १६ दूहा ५, बीजी ढाल गाथा १२ दूहा, ५ तीजी ढाल गा: १६ दूहा ३, चौथी ढालगा: ११ दूहा ५, पांचमी ढाल गाथा १५ दूहा ५, छट्ठी ढाल गाथा १४ दूहा २, सप्तमी ढाल गाथा ११ दूहा ४, आठमी ढाल गाथा ११ दूहा ५, नवमी ढाल गाथा ३७ दूहा ६, दशमी ढालगाथा १७ दूहा १४, इगारमी ढालगाथा १० सर्व गाथा २५४, सर्व श्लोक ३२४ सर्व ढाल ११, (पत्र २ से ६, प्रत्येक पत्रमें १५ लाइनें सुन्दर अक्षर, ज्ञानभंडार, दानसागर बंडल नं० १३ तत्कालीन लि०)

——※——

॥ श्री जिनराज सूरि गीतम् ॥

(१)

'श्री जिनराज सूरीश्वर' गच्छ धणी, धुरि साधु नउ परिवार।
ग्रामानुग्रामइ विहरता सखि, वरसता हे देसण जल धार ॥१॥
कइयइ सुगुरु पधारिस्यइजी, इण नयरइ हे सखि पुण्य पडूर।
सूहवि मोती वधारि (वि?) स्यै जी ॥ आ ॥
जेहनइ वसइ वडवडा, गच्छपति हुआ निरदोष।
देसना जिहनी सारि स्यै सखि, तिण सु हे हुण करइ मन रोष ॥२॥
'श्री अभयदेवसूरि' जिहा हुआ, सखि नव अग विवरणकार।
चउसठि योगिणी जिण जीतली, 'जिनदत्तसूरि' हे जिहा सुखकार ॥३॥
जेहनी महिमा नउ नहीं सखि, पार एह निहाल।
"श्री जिनकुशल सूरीश्वर" सखि, दीपइ हे इणि जगि चउसाल ॥४॥क०
पतिसाहि अकबर वृझव्यउ जिणि अमृत वाणि सुणावि।
"श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वर" हुअउ सखि, इणि गच्छि हे जग अधिक प्रभाव ॥५॥क०
'लाहोरि' दीधी जेहनइ, गुण दखि आप हजूर।
श्रीयुगप्रधान पदवी भली सखि, छानउ हे रहै किम जगि सूर ॥६॥क०
तेहनइ पाटइ प्रगटियउ सखि, 'श्री जिनसिंहसुरिन्द'।
नमु पाटि परतखि थप्पियउ सखि, ए गुरु सोहागनउ कन्द ॥७॥ क०
निर्मलइ वश(इ) ऊपनउ, वजू स्वामि शाखि शृङ्गार।
श्री'गुणविनय' सद्गुरु इमउ सखि, चाहिवा हे मुझ हर्ष अपार॥८॥क०

(२) श्री जिनराजसूरि सवैया ।

'जिनदत्त' (सूर) अर 'कुशल' सूरि मुनिंद
वंछित दायक जाकुं हाजरा हजूर जु ।
चारित पात (विख्यात) जीते (है) मोह मिथ्यात
और जो अशुभ कर्म किये जिन दूर जु,
'जिणसिंघ सूर' पाट सोहै मुनिवर थाट
भणत सुजाण राय विद्या भरपूर जु ।
नछत्तन (नक्षत्र?) मांझ जैसे राजत निछतपति,
सूरिन में राजे ऐसे 'जिनराज सूर' जु ॥१॥
जैसे वीच वारण(?)के गंगके तरंग मानो,
कोट सुखदायक भविक सुख साजकी ।
गगन अना····नकी ग्रह वेद विचरत
सव रस सरस सबल रीझ काजकी ।
गाजत गंभीर अ (घ?) न धार सुध खीर वृंद,
श्रवण सुणत धुन (ध्वनि?) ऐन मेघ गाज की ।
'जिनसिंध सूर' पाट विधना सो घड़ी (य) घाट,
अमृत प्रवाह वांनी(णी?) सूर 'जिनराज' की ।२।
'साहिजहां' पातिशाह प्रवल प्रताप जाको,
अति ही करूर नूर को न सरदाखी (?)है ।
'असी चउ गछ' सव थहराये जाके भय,
ऐसो जोर चकतौ हुवौ न कोउ भाखी है ।

श्रीय 'जिनसिंघ' पाट मिल्यउ माहि सनमुख,
'धरमसी' नदृन सकल जग साखो है ।
कहै 'कविदास' परदुरशन कु उनारै,
शासनकी टेक 'जिणराज सूरि' राखी है ।३।
'आगरै' तरत आये सनहीव मन भाये,
विविध वधाये सघ सकल उछाह कु ।
राजा 'गजसघ' 'सूरसंघ' 'असरपखान',
'आलम' 'दीवान' सदा सुगुरु सराह कु ।
कहै 'कविदास' जिणसिंघ पाट सूर तेज,
अगम सुगम कीने शासन सुठाह कु ।
'मिगसर बहु (वदि?)चौथ' 'रविवार' शुभ दिन,
मिले 'जिनराज' 'शाहिजहा' पतिशाह कु ।४।

॥ श्री गच्छाधीश जिनराजसूरि गुरु गीतम् ॥

(३) ॥ ढाल अलबेल्यानी जाति मांहे ॥

आज सफल सुरतरु फल्यउ रे लाल, आज सफल थयउ दीस । सुखदाइ
गच्छ-नायक भेट्यो भलर लाल, 'श्रीजिनराज सूरीश' ॥१॥सु०
सोभागी सवि सूरि मइ रे लाल, समता लीन शरीर । सु० ।
दिनकर नी परि दीपतउ रे लाल, धरणीधर वर (परि?)धीर ।सु॥२॥
तूठी जेहनइ 'अंबिका' रे लाल, अविचल दीधो वाच । सु० ।
लिपि बाची 'घंघाणियइ' र लाल, सहुको मानइ साच सु०॥३॥सो०॥

राउल 'भीम' सभा मन्त्री रे लाल, 'जेसलमेर' मझार । सु० ।
परवादी जीता जिणइ रे लाल, पाम्यउ जय-जयकार । सु०॥४॥सो०
'श्री जिनवल्लभ' सांभल्यउ रे लाल, कठिन क्रिया प्रतिपाल । सु० ।
इण जगि परतखि पेखियइ रे लाल, 'श्रीजिनराज' कृपाल ।सु०॥५॥सो०
प्रतिपइ पुण्य पराक्रमइ रे लाल, मानइ सहुको आण । सु० ।
पिसुन थया सहु पाधरा रे लाल, दूरइ नसि अभिमान ।सु०॥६॥सो०
मइंगल जिम गुरु माल्हतउ रे लाल, मोटा मांहि मुणिंद । सु० ।
जन मन मोहइ चाहतां रे लाल, पामइ परमाणंद । सु०॥७॥ सो०॥
क्रोध तज्यउ काया थकी रे लाल, दूरि कियउ अहंकार । सु० ।
मायानइ मानइ नहीं रे लाल, लोभ न चित्त लिगार । सु०॥८॥ सो०॥
श्री संघ सोभ वधारतउ रे लाल श्रीजिनराज मुनीस । सु० ।
प्रतिपउ गुरु महिमंडलइ रे लाल, 'सहजकीरति' आशीस ।सु०॥९॥सो०

॥ इति श्री गच्छाधीश गुरु गीतम् ॥

---

(४) ॥ ढाल, यहिनीनी जाति मांहि ॥

गच्छपति सदा गहगहइ निलउ, पंच सुमति गुपति दयाल ।
सुविहित शिरोमणि साचियउ, पंच महाव्रत पाल ॥ १ ॥
सद्गुरु वंदियइ, 'श्रीजिनराजसुरिन्द' ।
दरशन अधिक आणंद, जंगम सुरतरु कन्द ॥ आंकणी
संघपति शिरोमणि संघवी, श्री 'आसकरण' महन्त ।
पद ठवणउ जिहनउ कियउ, खरची धन बहु भांति ॥ २ ॥ स०॥

पट्टिरावियउ निज गच्छ मइण, अधिकी करणी कीध ।
'श्रीजिनसिंह' पटोधर, जग महँ जस लीध ॥ ३ ॥ स ॥
'बोहित्थ' वंशइ वाधतइ श्री 'धर्मसी' धन धन्न ।
'धारलदे' धरणी धरइ, जायउ पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥ स ॥
जसु दरिस सालुपणइ भलउ, हरखि नियउ बहुमान ।
मावासि सुन्दर करणी मली, कहइ श्री 'मुकरबखान' ॥ ५ ॥ स ॥
श्री सघ करइ बधामणा, जसु दरिस करणी सार ।
गुणवंत मगत हो रहैं, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स ॥
जिण माहि बहु गुण सुरिता, दखियइ प्रकट प्रमाण ।
वरणवो हुँ नवि सकूं, जसु विद्या अगउ मान ॥ ७ ॥ स ॥
श्री गच्छ सागर विराजयउ, जिहा गहुवा गच्छराय ।
साह अनइ वलि पातर्यउ, कहु किम जीपणउ जाय ॥८॥ स ॥
जिहा लग मरु महीधर, जिहा लगइ शशि दिनकार ।
प्रतिपउ तिहा लगि गच्छधणी, 'सदगकीरति' सुखकार ॥९॥स ॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ ।
सद्गुरु प्रतपउ जी ॥
दिन दिन तेज सवायो, भविक लोक मन भायउ ॥ १ ॥ श्री ॥
गच्छपति गलइ चालइ, पञ्च महाव्रत पालइ । स० । श्री०॥
मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०।श्री०॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ ।स०। श्री ॥
महिमा मरु समानइ, दिन दिन चढतइ वानइ ॥३॥ स० । श्री ॥

ग्रमसी' शाह मल्हार, उरि 'धारलदे' अवतार । स० । श्री०
रूपइ वइरकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स० । श्री०
गाद करी 'जेसाणइ', जस लीधउ सहुको जाणइ । स० श्री०
पास वरइ जिण जाणी, लिपि वांची 'घंघाणी' ॥ ५ ॥ स०। श्री०
बोलइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन भाणी । स० । श्री० ।
सुललित करिय वखाण, रीझविया रायराण ॥ ६ ॥ स० । श्री०
'बोहित्थरा' वंसइ दीवउ, कोड़ि वरस चिरजीवउ ॥स०।श्री०
जां लगि सूरज चन्द, 'आनन्द'प्रभु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० श्री०

(६)

आवउजी माहरइ पूज इणि देसड़इरे, चीतारइ श्री 'करण' नरेश रे ।
चीतारइ नरनारि नरेश ।
मुझ मुख थी पंथीड़ा वीनवे रे, जाई जिण छइ पूज तिण देश रे ॥१॥
तीन प्रदिक्षण तूं देइ करीरे, श्री जी रे तुं लागे पाय रे ।
वलि युवराजा 'रंगविजइ' भणी रे,इतरउ करिजे वीर पसाय रे॥२॥आ०
जसु दरशनि दीठइ तन ऊलसइ रे,मेरु तणी पर पूजजी धीर रे ।
मिहर करि पूज माहरइ देसड़इ रे,आवउ पुहपां(?) केरा वीर रे ॥३॥
संवेग्यां मांहे सिर सेहरउ रे, कलि मइ गोतम नइ अवतार रे ।
जंगम तीरथ तारक जगतमइं रे,जिण जीतउ वलि मदन विकाररे॥४॥
पूजजी जे किम मुझ नइ वीसरइ रे, जिणसुं धरम तणउ मुझ राग रे ।
ते गुरु वीसार्यां नवि वीसरइ रे, जेहनउ साचउ जस सोभाग रे ॥५॥
'श्री जिनराजसूरीसर' गच्छ धणी रे, मानी मझनी ए अरदास रे ।
'सुमतिविजय' कहि चतुर्विध संघनी रे पूजजी सफल करउ हिव आश ॥ ६ ॥ आ०

——×※×——

पहिराविय‍उ निज गच्छ सहुए, अधिकी करणी कीध ।
'श्रीजिनसिंह' पटोधरू, जग माहें जस लीध ॥ ३ ॥ स०॥
'बोहित्थ' वशइ वाधतउ, श्री 'धर्मशी' धन धन्न ।
'धारल्दे' धरणी परइं, जायउ पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥ स०॥
जसु देखि साधुपणउ भलउ, हरखि दियउ बहुमान ।
साबासि तुम्ह करणी भली, कहइ श्री 'सुकरबखान' ॥ ५ ॥ स०॥
श्री सघ करइ वधामणा, जसु देखि करणी सार ।
गुणवन सगले ही लहे, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स०॥
जिण माहि बहु गुण सूरिना. देखियइ प्रकट प्रमाण ।
वरणवो हु नवि सकूं, जसु विद्या तणउ गान ॥ ७ ॥ स०॥
श्री गच्छ खरतर चिरजयउ, जिहा एहवा गच्छराय ।
सीह अनइ वलि पाखर्यउ, कहु किम जीपणउ जाय ॥८॥ स०॥
जिहा लगे मेरु महीधरू, जिहा लगइ शशि दिनकार ।
प्रतिपउ तिहा लगि गच्छधणी, 'सहजकीरति' सुखकार ॥९॥स०॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ ।
सद्‌गुरु प्रनपउ जी ॥
दिन-दिन तेज सवायो, भविक लोक मनि भायउ ॥ १ ॥ श्री०॥
गजगति गेलइ चालउ, पञ्च महाव्रत पालइ । स० । श्री०॥
मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०।श्री०॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ ।स०। श्री०॥
महिमा मेरु समानइ, दिन-दिन चढ़तइ वानइ ॥३॥ स० । श्री०॥

'धरमसी' शाह मल्हार, उरि 'धारलदे' अवतार। स०। श्री०
रूपइ वइरकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स०। श्री०
वाद करी 'जेसाणइ', जस लीधउ सहुको जाणइ। स० श्री०
पास वरइ जिण जाणी, लिपि वांची 'पंचाणी'॥ ५ ॥ स०। श्री०
बोलइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन भाणी। स०। श्री०।
सुललित करिय वखाण, रीझविया रायराण ॥ ६ ॥ स०। श्री०
'बोहित्थरा' वंसइ दीवउ, कोड़ि वरस चिरजीवउ ॥म०।श्री०
जां लगि सूरज चन्द, 'आनन्द'प्रभु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० श्री०

(६)

आवउजी माहरइ पूज इणि देसड़इरे, चीतारइ श्री 'करण' नरेश रे।
चीतारइ नरनारि नरेश।
मुझ मुख थी पंथीड़ा वीनवे रे, जाई जिण छइ पूज तिण देश रे ॥१॥
तीन प्रदिक्षण तूं देइ करीरे, श्री जी रे तुं लागे पाय रे।
वलि युवराजा 'रंगविजइ' भणी रे,इतरउ करिजे वीर पसाय रे॥२॥आ०
जसु दरशनि दीठइ तन ऊलसइ रे,मेरु तणी पर पूजजी धीर रे।
मिहर करि पूज माहरइ देसड़इ रे,आवउ पुहपां(?) केरा वीर रे ॥३॥
संवेग्यां मांहि सिर सेहरउ रे, कलि मइ गौतम नइ अवतार रे।
जंगम तीरथ तारक जगतमइं रे,जिण जीतउ वलि मदन विकाररे॥४॥
पूजजी जे किम मुझ नइ वीसरइ रे, जिणसुं धरम तणउ मुझ राग रे।
ते गुरु वीसार्या नवि वीसरइ रे, जेहनउ साचउ जस सोभाग रे ॥५॥
'श्री जिनराजसूरीसर' गच्छ धणी रे, मानी मझनी ए अरदास रे।
'सुमतिविजय' कहि चतुर्विध संघनी रे पूजजी सफल करउ हिव
आश ॥ ६ ॥ आ०

——×※×——

कवि धर्मकीर्त्ति कृत

॥ श्री जिनसागर सूरि रास ॥

दूहा:—श्री 'थभणपुर' नउ धणी, पणमी पास जिणद।
श्री 'जिनसागर सूरि' ना, गुण गाउ आणदि॥ १॥
सरसति मनि मुझ निरमली, आपउ करिय पसाय।
आचारज गुण गावता, अविहड वर द्यो माय॥ २॥
वीर जिणिद परम्परा, 'उद्योतन' 'वर्द्धमान'।
सूरि जिणेश्वर' पाटवी, 'जिनचन्द्र' सूरि गुणखाण॥३॥
अभयदेव' 'वल्भ' गुर, पाटइ श्री 'जिनदत्त'।
'जिनचद सूरीसर' जयउ, सूरिसर 'जिनपत्ति'॥ ४॥
'जिणेसर सूरि' 'प्रबोध' गुरु, 'चद्र सूरि' सिरताज।
'कुशलसूरि' गुरु भेटता, आपइ लखमी राज॥ ५॥
'पदमसूरि' तजइ अधिक, 'लबधि सूरि' 'जिनचद'।
पाटि 'जिनोदय' तसु पटइ, श्री 'जिनराज' मुणिद॥ ६॥
'जिनभद्र' श्री 'जिनचद' पटि, 'जिनसमुद्र' 'जिनहस'।
नामइ नव निधि सपजइ, धन धन 'चोपड' वश॥ ७॥
मनवछित सुरत्र पूरवइ, 'माणिक सूरि' मुणिद।
'रीहड' वशइ गरजीयउ, युग प्रधान 'जिणचद'॥८॥

श्री 'अकबर' प्रतिबोधीयो, वचने अमृत धार।
श्री 'खरतर' गच्छराज नी, कीरति समुद्राँ पार ॥ ६ ॥
'युगप्रधान' पद आपीयो, 'अकबर' साहि सुजाण।
निज हाथि श्री 'जिनसिंह' नइ, पदवी दीध प्रधान ॥१०॥
तिण अवसर बहु भाव सुं, देइ 'सवा कोडि' दान।
'बच्छावत' वित वावरइ, 'कर्मचंद' मंत्रि प्रधान ॥११॥
युगवर 'जंबू' जेहवउ, रूपइ 'वइर-कुमार'।
'पंच नदी' साधी जिणइ, शुभ लगन शुभ वार ॥१२॥
संवत 'सोल गुणहत्तरइ', वूझवि साहि 'सलेम'।
'जिनशासनि मुगतउ' कर्यो, 'खरतर' गच्छ मइ खेम ।१३।
तासु पाटि 'जिनसिंह' गुरु, तासु शीस सिरताज।
'राजसमुद्र' 'सिद्धसेनजी', दरसणि सीझइ काज ॥१४॥
युगवर श्री 'जिनसिंह' नइ, पाटइ श्री 'जिनराज'।
'जिनसागरसूरि' पाटवी, आचारिज तसु काज ॥१५॥
कवण पिता कुण मात तसु, जनम नगर अभिहाण।
कुण नगरइ पद थापना, 'धरमकीरति' कहइ वाणि ॥१६॥

ढाल:— तिमरीरइ

'जंबू' दीपह थाल समाण, 'लख जोयण जेहनो परिमाण।
'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस, 'मरुधरि' 'जंगलि' देस निवेस ॥१७॥
तिहां कणि राजइ 'रायसिंघ' राज, 'बीकानयरं' वसइ शुभकाज।
ठाम ठाम सोहइ हट सेरी, वाजित्र वाजइ गावइ गोरी ॥१८॥

नगर माहि वहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानशील तप भावि उदारी।
वसइ तिहा पुण्यइ बहु वित, साह 'वछा' नामइ थिर चित्त ॥१६॥

राग :—रामगिरी।

दोहा—रयणी सोहइ चद सुं, दिनकर सोहइ दीस।
तिम 'वछा' 'वोहिथ' कुलइ, पूरउ मनह जगीस ॥२०॥

ढाल:— पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' मती, रूपइ रभा नु जीपती।
'चउसठि' कला तणी जे जाण, मुखि बोलइ सा अमृत वाणि ॥२१॥
प्रिय सु प्रेम धरइ मनि घगउ, 'दसरथ' सुत जिम 'सीता' सुणउ।
चद्र चकोर मनइ जिम प्रीति, पालइ पतिव्रत धरम नी रीति ॥२२॥
पाचे इन्द्री विषय सयोग, नित नित नवला बहुविध भोग।
नव यौवन काया मद मची, इद्र सघातइ जाणे सची ॥२३॥

राग:— आसावरी

दूहा—सुखभरि सूती सुदरि, पेखि सुपन मध राति।
रयण चोल रत्नावली, प्रिउ नै कहइ ए बात ॥ २४ ॥
सुणी वचन निज नारि ना, मेघ घटा जिम मोर।
हरख भणइ सुन ताहरइ, थासइ चतुर चकोर ॥२५॥

ढाल—आम फली माइडी मन मोरी, कूखइ कुमर निधान रे।
मनवछित डोहला मनि पूरइ, पामइ अधिकउ मान रे ।२६।आं०
सवत 'सोल बावन्ना' वरषइ, 'काती सुदी' 'रविवार' रे।
'चउदसि'नै दिनि असिणि रिखइ(नक्षत्रइ?),जनम थयो सुखकारी।२७

नित नित कुमर वाधइ वहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कंद रे ।
नयणी अनोपम निलवट सोहइ, वदन पूनम नउ चंद रे ॥२८॥
सहुअ सजन भगतावी भगतइ, मेलि वहु परिवार रे ।
'चोलउ' नाम दियउ मन रंगइ, सुपन तणइ अनुसारि रे ॥२६॥
सहिअ समाण मिलि मात पासइ, माह 'वछराज' कुलि दीव रे ।
'सामल' नाम धरि हुलरावइ, मुखि वोलइ चिरजीव रे ॥३०॥

रागः— मारु

दोहा—रमइ कुमर निज हरखसुं, मात 'मृगा दे' पुत्र ।
गजगति गेलइ चालतउ, कुलमंडण अदभूत ॥ ३१ ॥
मीठा वोलइ वोलडा, काय कनक नइ वान ।
वालक 'वत्रीस लखणो', मात पिता द्यइ मान ॥ ३२ ॥

ढालः— पाछलो

माइडी मनोरथ पूरइ, सुन्दर सुंखड़ी आपइ रे ।
वड़ा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सीख समापइ रे ॥३३॥
आसा वांधी माइड़ी, सेवइ सुरतरु जेमो रे ।
पोसइ कुमर नइ वहु परइ, 'शालिभद्र' जिम प्रेमो रे ॥३४॥
इण अवसरि तिहां आवीया, 'जिनसिंह सूरि' सुजाणो रे ।
श्री संघ वंदइ भावसुं, उछव अधिक मंडाणो रे ॥३५॥
मात 'मृगादे' सुत सहू, निसुणइ अरथ विचारो रे ।
मन मइ वैराग उपनो, जांणी अथिर संसारो ॥ ३६ ॥

दोहा—'गजसुकमाल' जिम 'मेघ मुनि', 'अइमतो तिण काले ।
'सामल' ते करणी करइ, जाणइ वाल गोपाल ॥३७॥

ढाल :—केदारा गोडी

सांभली वचन सद्गुरु केरा, जीवादिक नवतत्व भलेरा ।
उपशम रस भ(भी?)र कायकलेसी, संजम सेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे जइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि लीउ मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३६॥
मात भणइ वछ सांभलि सांचुं, इण वचनइ पुत्र हु नवि रांचुं ।
लोह चणा मयण दांति चवायइ, तेहथी संजम कठिन कहायइ ॥४०॥
कुमर भणइ माता किं सूरे परचारइ, कायर हुइ ते हीयडु हारइ ।
संजम लेवा वात कहेवी, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग :—देसाख

दोहा :—वडभाइ 'विक्रम' सहित, 'मान' भणइ सु(सु?)झसाथि ।
करिसु आतमाराधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध माहि साकर मिली पीता आणंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना, हरखउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
'विक्रमपुर' थी अनुक्रमइ, सद्गुरु करइ (अ) विहार ।
'अमरसरइ' पउधारिया, 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामाइक पोसउ करइ पडिकमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ कुमर मनइ उलासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिहां, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र वाजइ नवनवा, वरनउला सुप्रकार ॥४६॥
'श्रीमाल' वंशि सुहामणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम उछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठइ' 'माह' मासि सुभ मासि ।
मात सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
तिहांथी चारित लेइ नइ, सद्‌गुरु साथि विहार ।
विद्या भीखइ अति घणी, धरता हर्ष अपार ॥४६॥
अनुक्रमि देस चंदावतां, आया 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद' ने, लागइ जुगवर पाया ॥५०॥
पांच समिती तीन गुप्ति जे, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ, न करइ पर नी तांति ॥५१॥
सामाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सव्व प्रकार ।
'सतावीस' गुणे करी, सोहइ 'सामल' सार ॥५२॥
तप वूहा मांडलि तणा, वड दिखा तिहां दीध ।
'श्रीजिनचंद्र सूरि' सइंहथइ, 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
वूहा उपधान उलटइ, आगम ना वलि जोग ।
'छ मासी' 'विक्रमपुरइ' सरिया सकल संयोग ॥५४॥
सुगुरु भणावइ चाह सुं, उत्तम वचन विलास ।
युगप्रधान बहु हित धरइ, पहुंचइ वंछित आस ॥५५॥

चउपइ :—पभणइ शास्त्र सिद्धांत विचार,मुणिवर'सिद्धसेन'सिरदार
गुरु नउ विनय साचवइ भलउ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण निलउ ॥५६॥
'अंग इग्यारह' 'बार-उपंग', 'पयन्ना-दस भणइ मन चंग ।
'छ छेद' ग्रन्थ मूल सूत्रह 'च्यार',
'नन्दी', अनइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

'षउद्दह' निद्रा तजउ निहाण, सद्गुरु उत्तम करइ वखाण।
उदयचन्द्र अवसर नउ जाण, निज गुरु तगइ जे मानइ आण ॥८८॥
रसमासन माहे पहुली दीह, मोटइ गुरु पामइ निसदीह।
इम जिन प्रतीधरम नउ धणी, तप जप संयम करणा धणी ॥८९॥
यात्र करी 'सेत्रुञ्ज' तणी, साथइ 'जिनसिंह सूरि' दिनमणी।
संघरी 'आसकरण' विख्यात, संघ करावी कारिज जान ॥९०॥
'खंभात' नइ 'अमदावाद', 'पाटण' माहि थयउ जसवाद।
'वडली' वंदया 'जिनदत्तसूरि', भेट्या पातक जायइ दूर ॥९१॥
इणि अनुक्रमि 'जिनसिंह सूरि', 'सीरोहीयइ' गुरु सबल पडूरि।
करिअ पइसारो वंदइ संघ, राजा मान दियइ 'राजसिंह' ॥९२॥
'जालउरइ' आवइ गच्छराज, वाजित्र बाजइ बहुत दिवाज।
श्रीसंघ सु वंदइ कामिनी, रूपइ जीति सुर भामिनी ॥९३॥
'खडप' नइं 'दूणाडा' हेव, 'घघाणी' भेटया बहु देव।
अनुक्रमि मन मइ धरिअ उलासि, आव्या'बीकानेर' चउमासि ॥९४॥
'थानमल' पइसारो करइ, नासागइ अंबर थरहरइ।
कीधा नेजा पोलि पगार, वसतिइ आया श्रीगणधार ॥९५॥
आनन्दइ चउमासउ करी(इ), आया 'सवडा' बहु दिन धरी।
तडानइ श्रीसाहि 'सलेम', 'मेडता' आया कुसल खेम ॥९६॥

रागः— वैराडी

दूहा — निणि अवसर 'जिणसिंह' नउ, परवसि थयउ सरीर।
देवगनइ छूटा नही, पुरुष वडा बहु मीर ॥९७॥

संवत 'सोल चउद्दत्तरि' वरसइ, 'फागुण सुदि' 'सनिवार'।
सुभ वेला सुभ महूरत जोगइ, 'सातमि' दिवस अपार ॥
संघ सहु हरखित थइ वंदइ, दाइ बहुलउ बहुमान।
'आसकरण' संघवी तिण अवसरि, आपइ वाछित दान ॥७५॥
भट्टारक 'जिनराजसूरि', वर्त्तमान गणधार।
पाटइ 'जिनसागर' थइ, आचारिज अधिकार ॥७६॥

ढाल :—तेहिज

विहरिअ 'राणपुरइ' 'वरकाणइ', 'सिमिरि' मेल्या पाम।
'ओइम' 'घघाणी' यात्र करीनइ, 'मेडतइ' करिअ चउमास।
तिहांथी उच्छव कीध जेमाणइ, 'भगसाली' 'जोवराज'।
'राउल' 'कल्याण' सु श्री सघ वदइ, सीधा सगला काज ॥७७॥
अमृत वाणि सुणइ तिहा श्रीसघ, येंच्या इग्यारह अग।
मिस्री सहित रुपइआ लाहइ, साह 'कुसला' मन रंग॥
लूद्रपुरइ पाउधारइ सदगुरु, श्रीसघ सामइ आवइ;
साहमीवच्छल करइ साह 'थाहरु', 'श्रीमल' सुत वित्त वावइ ॥७८॥
तिहांथी विहार करि 'जिनसागर', आचारज हितकार।
'फलवद्धीयइ' आवइ ततखिण, थावइ बहुअ प्रकार॥
उलट धरिअ तिहा कणि वादइ, श्रीसंघ दाइ बहुमान।
पइसारउ करि 'श्रावक' 'मानइ', दीधउ याचक दान ॥७९॥
श्रीखरतर गच्छ सोह चढावइ, तिहांथी करिअ विहार।
'कारणुअइ' आया बहु रंगइ, संघ वंदइ गणधार ॥

बीकानयर वंदीइ पहुंचइ, 'श्रीजिनसागर सूरि' ।

'पासणीए' करयुं पइसारउ, रंगइ बहुत पडूरि ॥८०॥

राग :—सामेरी

पासाणी बहु वित वावइ, पइसारउ साम्ही आवइ ।

'सोलह सिणगारे' सारी, सिरि(श्री?) कलश धरि बहु नारी ॥८१॥

सिरि 'भागचंद' सुत आवइ, 'मणुहरदास' निज दावइ ।

वलि संघ सहगुरु वंदइ, श्रीखरतरगच्छ चिरनंदइ ॥८२॥

तिहां वाजइ ढोल नीसाण, संख झालरनउ मंडाण ।

बहु उछवि बसतइ आयां, श्रीसंघ तणइ मनिभाया ॥८३॥

सुहव मिली निउंछण कीजइ, निज जन्म तणउ फल लीजई ।

तंबोल भली पर दीधा, मन वंछित कारिज सीधा ॥८४॥

राग :—धन्याश्री

'विक्रमपुर' थी संचरी ए, 'सर' मांहि करिअ चउमास ।

दिन दिन रंग वधामणाए पूरइ मननीआस ॥आं०॥

वधावउ सदगुरु ए,'जिनसागरसूरि'वधावउ ।आ०।खरतरगच्छपडूर।व०।

तिहां श्री रंगइ आवियाए, 'जालयसर' सुखवास ।व०।

उच्छव सुगुरु वांदिआए, मंत्री 'भगवंत दास' ॥८५॥व०॥

विचरिय तिहां थी भावसुं ए, 'डीडवाणउ' वंदावि ॥ व० ॥

'सुरपुर' संघ सुहामणउ, भेटइ बहुलइ भावि । व० ॥ ८६ ॥

'मालपुरइ' महिमा थइ ए, लीधउ लाभ विशेष ॥ व० ॥

श्री संघ वंदइ चाह सुं, प्रहसमि नयणे पेखि ॥ व० ॥ ८७ ॥

नयर 'वीलाडइ' चित धरी ए, चतुर करइ चउमास ॥ व० ॥
उच्छव करइ 'कटारिया' ए, पासी पारण रास ॥ व ॥ ८८ ॥
अनुक्रमि सद्गुरु पागुरइ ए, 'सद्दनीनद्द' तिहाली ॥ व० ॥
'रायमल' सुत जगि परिगहउए, 'गोलवछा' 'अमीपाल' ॥८९॥व०॥
थयर जेहनइ मनि भलउए, वड वरनी 'नेतसीह' ॥ व० ॥
बहु परिवारइ दीपताए, भत्रीजउ 'राजसीह' ॥ व० ॥ ९० ॥
सवही न्यइ आव्यौ ए, प्रन उवार सवर ॥ व० ॥
रूपइए लाहण करिए, तबोलइ नालेर ॥ व० ॥ ९१ ॥
'रसाउत' वित्त वावरइ ए, 'सीरीमाल' 'वीरदास' ॥ व० ॥
'माडण' 'तजा' रगसु ए, 'रीहड' 'दरडा' खास ॥ व० ॥ ९२ ॥
सुदर गुरु सोहामणउ ए, भावइ कीजइ सेव ॥ व० ॥
तिहाथी विहरी अनुक्रमि ए, वद्या 'राणपुर' देव ॥ व० ॥ ९३ ॥
कुभलमेरइ जिन थुणी ए, 'मेवाडइ' गुणगान ॥ व० ॥
'उदयपुरा' नउ राजीयउ ए, राणउ 'करण' यइ मान ॥९४॥व०॥
'लखमीचद' सुत परगडाए, 'रामचद' 'रघुनाथ' ॥ व० ॥
चित्त धरि वदइ प्रहसमइए, 'भजाइचद' सुत साथि ॥९५॥व०॥
साधु विहारइ पग भरइ ए, 'सोनगिरइ' अहिठाण ॥ व० ॥
श्री सघ उच्छव नित करइ ए, अवसर नउ जे जाण ॥९६॥व०॥
'साचउर' सघ सहु मिली ए, आग्रह हे 'हाथिमाह' ॥ व० ॥
चउमासइ गुरु राखीयाए, 'जिनसागर गजगाह ॥ ९७ ॥ व० ॥
वर्त्तमान गच्छराजजा ए, 'जिनसागर सूरि' सुखकार ॥व०॥
'श्री जिनसागर' चिरजयउए, आचारिज पद धार ॥९८॥व०॥

युगवर खरतर गच्छ धणीए, 'जिनचंद सूरि' गुरुराय ॥व०॥
शीस सिरोमणी अतिभलाए, 'धरमनिधान' उवझाय ॥६६॥व०॥
तास शीस अति रंगसु ए, 'धरमकीरति' गुण गाइ ॥ व० ॥
संवत 'सोलइक्यासीयइए, 'पोस वदि' 'पंचमि भाइ ॥१००॥
'श्री जिनसागरसूरि' नउ ए, रास रच्युं सुखकंद ॥ व० ॥
सुणतां नवनिध संपजइ ए, गातां परमाणंद ॥ १०१ ॥ व० ॥
तां प्रतपउ गुरु महियलइ, जां गगनइ दिनईस ॥ व० ॥
"धरमकीरति" गणि इम कहइ ए, पूरं सकल जगीस ॥१०२॥व०

इति भट्टारक जिनसागर सूरिणाम् रास
(वीकानेर स्टेट लायब्रेरीमें पत्र ४)

श्रीजिनसागर सूरि सवैया

धुरा देस मरुधरा शहर 'वीकाण' सदाइ,
'वोहिथ' हरे विरुद इत वसइ 'वछउ' वरदाइ ।
'मृगा मांत' मोटिम्म, सुपन सूचित सुत सुन्दर,
'आठ' वर्ष अधिकार कला अभ्यास कुलोधर ।
वैराग जोग मां रमतइ, लखमी तजी कोडे लखे,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसडे आखे ॥१॥
युगप्रधान 'जिनसिंह' वंस 'चोपडा' विसेखइ,
श्रावक 'अकबर' शाहि लीय धर्मलाभ अलेखइ ।
सइंहथ तेण गुरु पासि, सुकृत करि माता संगइ,
'अमरसरइ' ऊनति आण मनरंगि अभंगइ ॥

सप्रयो साधु मारग सरस, पूरण गुण पूरण पन्ने,
　　सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसहे आररे ॥२॥
विनय विवेक विचार वाणि सरसती विराजइ,
　　'रिण धवद' निधान, सुजस जगि वाजा वाजइ।
विषम वाणि विखवाद, विसयरस अंगि न वाधइ,
　　वस्तवंत धर विवुध वान दिन प्रति वाधइ ॥
वाजणी थाट वादी विपइ, परि परि पूगउ पाररे।
　　सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसहे आररे ॥३॥
उच्छव रंग वधाइ दिवावन, सुंदर मंगल गीत सुहावन,
मोतीन थाल विसाल भरि भरि, भामिनी भावसुं आपि वधावन।
गच्छ नायक लायक सारा गुणी, गुण गावत वंछित ते फल पावन।
श्री 'जिनसागरसुरि' वइरागर, नागर रंगि देख्यउ गुरुआवन ॥४॥
प्रगट सोभाग साग विकट वडराग माग,
　　राग हुं कउ लाग दोप दूरि होर हीयउ हइ।
तेतु तुम दढधार अमृत ज्ञान आहार
　　कठिन क्रिया प्रकार काम जु वहीयउदइ।
ललित ललाट नूर, तपनि प्रताप सूर,
　　'सागर' सुरिंद गुरु गौतम कहायउ हइ ॥५॥
सवाया छंद (उपरोक्त विकानेर स्टेट लायब्रेरी की
प्रति मे, तत्कालीन लि०)

——×*×——

कवि सुमतिवल्लभ कृत

श्री जिनसागर सूरि निर्वाणरास
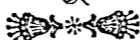
दूहा:—समरुं सरसति सामिनी, अविरल वाणि दे मात ।
गुण गाइसुं गच्छराज ना, 'सागर सूरि' विख्यात ॥१॥
सहर 'बीकाणो' अति सरस, लखिमी लाहो लेत ।
'ओस वंश' मंइ परगड़ा, 'बोहिथरा' विरुदेत ॥ २ ॥
'वच्छराज' घरि भारजा, 'मिरघा दे' सुत दोइ ।
'वीको' नइ 'सामल' सुखो, अविचल जोड़ी जोइ ॥ ३ ॥
श्री 'जिनसिंघ सुरीश' नी, सांभलि देशन सार ।
मात सहित बान्धव विन्हे, संज (म) लइ सुखकार ॥४॥
'माणिकमाला' मावड़ी, 'विनयकल्याण' विशेष ।
'सिद्धसेन' इम त्रिहुं तणा, नाम दीक्षा ना देखि ॥ ५ ॥
'वादी राय' भणाविया, 'हर्षनंदन' करि चित्त ।
'चवदह' विद्या सीखवी, सूत्र अर्थ संयुक्त ॥ ६ ॥
सूधो संयम पालतां, विद्या नउ अभ्यास ।
करतां गीतारथ थया, पुण्याइ परकास ॥ ७ ॥
'सिद्धसेन' अभिनव थयो, 'सिद्धसेन' अवतार ।
वीजा चेला बापड़ा, 'सांमलिउ' सिरदार ॥ ८ ॥
श्री 'जिनचंद सुरीश' नउ, वचन विचारी एम ।
आचारिज पद थापना, कीधी कहिस्युं नेम ॥ ९ ॥

ढाल १ (पुरन्दरनी चौपाइनी)

'मरुधर' देसि मझार 'मेडतो' मद्दर भलोरी।
'आसकरण' 'ओसवाल', 'चोपडा' वश निलोरी ॥ १ ॥
पद ठवणो करि पूज्य, अवसर एह लह्यो री।
खरचे द्रव्य अनेक, सुकृत ठाम सही री ॥ २ ॥
सूरि मंत्र लह्यो शुद्ध, महगुर तेणि समें री।
श्री 'जिनसागर सूरि' इन्द्रिय पाच दमे री ॥ ३ ॥
मोटो भाग्य महन्त, करणी कठिन करे री।
श्री 'जिनसिंह' के पाट, खरतर गच्छ खरेरी ॥ ४ ॥
पालि पंच आचार, तारण तरण तरी री।
पंच सुमति प्रतिपाल, तप संयम की खरी री ॥ ५ ॥
पृथिवी करिय पवित्र, साथि साधु भला री।
अप्रतिबद्ध विहार, दिन दिन अधिक कला री ॥ ६ ॥
'चौरासी गच्छ' माहि, जाकी शोभ भली री।
चतुर्विध संघ सनूर, संपद गच्छ मिली री ॥ ७ ॥

ढाल २ (मनड़ो मान्यो रे गौड़ी पासजी रे)

मनडु रे मोह्यु माहरु पूजजी रे, श्री 'जिनसागर सूरि'।
वड भागी भट्टारक ए भला जी, दिन दिन गच्छ पडूरि ॥ १ ॥
सखर गीतारथ साधु भला भलाजी, मानइ मानइ पूज्य नी आण।
'समयसुन्दर' जो,पाठक परगड़ाजी, पाठक 'पुण्य प्रधान' रे ॥ २ ॥

'जिनचन्द्र सूरि ना' शिष्य माने सहुजी, वड़ा वड़ा श्रावक तेम।
धनवंत धींगा पूज्य तणइ पखइजी, वड़भागी गुरु एम ॥ ३ ॥म०
संघ उदयवन्त 'अहमदावाद' नो जी, 'वीकानेर' विशेष।
'पाटण' नइ 'खंभाइत' श्रावक दीपताजी,'मुलताणी'राखी रेख॥४॥म०
'जेसलमेरी' श्रावक पूज्य ना परगड़ाजी, संघनायक 'संखवाल'।
'मेड़ता' मइं 'गोलवच्छा' गह गहेजी, 'आगरा'में 'ओसवाल' ॥५॥म०
'वीलाड़ा' मइं संघवी 'कटारिया' जी, 'जइतारणि' 'जालोर'।
'पचियाख''पाल्हणपुर''भुज्ज''सूरत'मइं जी,'दिल्ली' नइ 'लाहोर'॥६॥म०
'लूणकरणसर' 'उच्च' 'मरोट' मइं जी, नगर 'थटा' मांहि तेम।
'डेरा' में सामग्री सावती जी 'फलवधी' 'पोकरण' एम॥७॥ म०
'सागरसूरि' ना श्रावक सहु सुखीजी, अधिकारी 'ओसवाल'।
देश प्रदेशे श्रावक दीपताजी, मर खंचण भूपाल ॥ ८ ॥ म०

ढाल ३ (कड़खानी)

'करमसी' शाह संवत्सरी पोखिनें, 'महमद' दिइ अति सुजश लेवे।
सुपुत्र 'लालचन्द'हर वरस संवत्सरी,पोखि ने संघ नुं श्रीफल देवे॥१॥
धन्य हो धन्य 'सागरह सूरिन्द' गुरु, जेहनो गच्छ दीपे सवायो।
वड़ वड़ा श्रावक परगड़ा नवखंडे,पूज्य नो सुयश त्रिहुंलोक गायो॥२॥
शाह 'लालचन्द' नी, धन्य वड़ी मावड़ी,जे वियमान 'धनादे' कहीजइ।
'पूठीया' उपरा खंडनो 'पीटगी', मखर समराविनइ लाभ लीजइ॥३॥
वहुअ 'कपूर दे' जेहनो जाणइं, सुपुत्र 'उग्रसेन' नी जेह माता।
खरचवइ आगला गच्छ ना काम नइ,धर्म ना रागिया अधिक दाता॥४॥

साह'शान्तिदास'सहोदर 'कपूरचन्द' सु, वेलिया हेम ना जेह आपे।
'सहस दोय रूपिया पाच शत' आगला, खरचिने सुजश निज सुथिर थापे ॥५॥
मात 'मानबाई इ' सह इक पीठणी, करीय उपासरइ(म)सुजश लीधा।
वरस ना वरस आसाढ चोमास ना,पोसीना पोरिसा बोल कीधा॥६॥
शाह 'मनजी' तणो कुटुंब अति दीपतो, विहु गवडे चढ नामो चढायो।
शाह 'उदेकरण' 'हाथी' खरो 'हाथियो', जेठमल 'मोमजी' तिम सवायो ॥७॥
धरम करणी करे शाह हाथो'अधिक,राय'बन्दी'छोडतो विरुद राखै।
जीव प्रतिपाल उपगार सहु नै करै,सुपुत्र'पनजी भला सुजस दाखै॥८॥
'मूलजी सघजी' पुत्र 'वीरजो, 'परोख' सोनपाल' 'सूरजी' वखाणो।
पाखीया'वोस नइ च्यारि' जोमाडिने,पुण्य नो वाहरु जे पहाणो ॥६॥
'परीख''चन्द्रभाण''लाडू'सदा दीपता,'अमरसी'शाह सिरताज जाणो।
'सघवो' 'कचरमल परीख' अखइ अधिक, वाछड़ा 'देवकर्ण' तिम वखाणो ॥ १० ॥
साह 'गुणराजना' सुपुत्र अति सलहीइ, 'रायचन्द गुलालचन्द' साह दाखो।
एम ओसवंश उदयवत'राजनगर'नो भल भला श्रावक एम आखो ॥११
तेम 'रभाइनी' रूप नायक वडो,'भडशाली' 'बधू' सुजस वहीई।
वड वडो धरम करणी घणी जे करी,शाह मोआ'ऋषभदास'लहिए॥१२॥

दोहा—श्री 'जिनसागरसूरि' नो, उदयवन्त परिवार।
चेला गीतारथ सहु, पालइ पञ्च आचार ॥ १ ॥

यथा योग जाणी करी, पाठक वाचक कीध ।

श्री 'जिनधर्म'सूरीशने, गच्छ भार इम दीध ॥२॥

ढाल ३

इक दिन दासी दौड़ती,

आवै कृष्ण नइ पासे रे ॥ एहनी ॥

'अहमदाबाद' मइ आंपणइ, सेंहथि संघ हजूर रे ।

प्रथम ओढाड़ी पछेवड़ी, श्री'जिनसागरसूर' रे ॥ १ ॥

अवसर लाखीणो लही, खरचे द्रव्य अनेक रे ।

'भणसाली 'वधू' भारिजा, 'विमला दे' सुविवेक रे ॥२॥

वलनुं पद थापन करी, सूर मन्त्र गुरु दीध रे ।

श्री'जिनधर्म सूरीश्वरु', नाम थापना इम कीध रे ॥ ३ ॥

संघवणि 'सहजलदे' तिहां, ल्यइ लिखमी नो लाह रे ।

पद ठवणो करइ परगड़ो, कहइ लोक वाह-वाह रे ॥४॥

पहिला पणि सुकृत जिके, कीधा अनेक प्रकार रे ।

शत्रुंजय संघ करावित, खरचो द्रव्य हजार रे ॥ ५ ॥

श्री 'जिनसागरसूरि' जी, सद्गुरु साथे लीध रे ।

पाटेश्वरने पांभरी, जाचक जन ने दीध रे ॥ ६ ॥

'भणसाली मधुआ' घरणि, ते 'सहिजल दे' एह रे ।

पद ठवणि जे 'पूज्य' नैं, खरची नइ जस लेइ रे ॥ ७ ॥

ढाल ४ (कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

अवसर जाणी आपणउ रे, आगळ थी अणगार ।

जिण थी शिव सुख पामिइ रे, ते सांभलि अंग इग्यार ॥ १ ॥

सुगुरु जो धन्य-धन्य सुम अवतार,
ए माणस भव नुं सार ॥ आंकणी ॥
आनुपूरवी पहुंचो रे, उपशम्यो पूरव रोग ।
श्री संघ 'अहमदाबाद' नो रे, गीतारथ संयोग ॥२॥
'आगमनीज' नइ ढाहडि रे, निव्यादिक नइ सार ।
मीरामणि सद्गुरु दि(य)ई रे, गुरु गच्छ नुं व्यवहार ॥३॥
धारित पेरी ऊपरि रे, गच्छ भार सहु छोडि ।
उत्तम मारग आदरि रे, अशुभ कर्म दल मोडि ॥ ४ ॥
'सुदि आठम वैसाख' नो रे, अणसण नो उच्चार ।
श्रीसंघ नी साखि करइ रे, त्रिविधि-त्रिविध विविहार ॥५॥
पासे गीतारथ यति रे, श्री 'राजसोम' उवझाय ।
'राजसार' पाठक भला जी, 'सुमतिजी' गणि नी सहाय ॥६॥
'दयाकुशल' वाचक वलि रे, 'धर्ममन्दिर' मुनि एम ।
'समयनिधान' वाचक वड रे, 'ज्ञानधर्म' मुनि तेम ॥ ७ ॥
"सुमतिवल्लभ" सावधान सु र, आठ पुहर सीम तेम ।
शाह 'हाथी' धर्म हाथियो रे, निजरावि गुर एम ॥ ८ ॥

ढाल (५) विणजारानी

मोरा सद्गुरुजी, तुम्हे करज्यो शरणा च्यार । सद्गुरुजी करज्यो०
अरिहन्त सिद्ध सुसाधुनो मो० केवलि भाषित धर्म,
ए फल नरभव लाधनो ॥ १ ॥ मो०
जीव 'चुरासी' लख, त्रिकरण शुद्ध खमाविज्यो । मो० ।
पाप अठारह थान, परिहरि अरिहन्त ध्यावज्यो ॥ २ ॥ मो०

परिहरि सगला दोष, बिताळीस आहार ना। मो०

जिन धर्म एक आधार, टालि दुःख संसार ना ॥ ३ ॥ मो०

ए संसार असार, स्वारथ नो सहुको सगो। मो०।

अथिर कुटुम्ब परिवार, धर्म जागरिया तुम जगो ॥ ४ ॥ मो०

अथिर छइ पुत्र कलत्र, अथिर माल घर परिग्रहो। मो०।

अथिर विभव अधिकार, अथिर काया तिमि ए कहो ॥५॥ मो०

तुम्हें भावज्यो भावन वार, मन समाधि मांहि राखज्यो। मो०।

अथिर मात नइ तात, अथिर शिष्यादिक नइ भाखज्यो ॥ ६ ॥ मो०

जीवत हाथ मई जाइ, राखी को न सकइ सही। मो०।

जेहवो संध्या वान, तेहवी संपद ए कही ॥ ७ ॥ मो०

एकलो आवइ जोव, जाइ एकलो प्राणियो। मो०।

पुण्य पाप दोइ साथ, भगवंत एम वखाणियो ॥ ८ ॥ मो०

बाल मरण करी जीव, ठामि ठामि हुओ दुखी ।मो०।

पंडित मरण ए जाणि, जिण थी जीव हुवइ सुखी ॥॥६॥मो०

इम भावना एकांत भाव, अरिहन्त धर्म आराधता ।मो०।

पुंहता सरग मझारि, आतम कारिज साधता ॥१०॥मो०॥

दोहा :—'सतर(इ) सइ उगणीस' मइं, मास 'जेठ वदि तीज'।

'शुक्रे' 'सागरसूरि' जी, सरग ना पाम्या चीज ॥ १ ॥

ढाल ६—*काया कामिनी वीनवइ रे लाल, एहनी*।

अवसर लाखीणो लहीरे, साह हाथी सर्व जाण ।मेरे पूजजी०।

महिमा मोटी इम करइ रे लाल, पूज्य तणइ निर्वाण ॥ १ ॥

पासइ रहि निजराविया रे, दिन 'इग्यारह' सीम। मे०।

सुंस सवद व्रत आखड़ी रे लाल, नाना विधि ना नीम ॥२॥मे०

चोवा चदन अरगजा रे, सद्गुरु तणइ सरीर। मे०।
करि अरचा पहिराविया रे लाल, पाभरी पाट् चीर ॥मे०॥३॥
देव विमान जिसी करी रे, माडवी अति श्रीकार। मे०।
वाजे गाजे वाजते रे लाल, करि नीहरण विचार ॥मे०॥४॥
वयरचि मूकडि अगर सुं रे लाल, कस्तूरी घनसार। मे०।
दहन दीइं घृत सींचता रे लाल, श्री पूज्य सुं निरधार ॥मे०॥५॥
जीव छुडावी (वि?)जुगति सुं रे, श्री संघ मेली होइ। मे०।
'गाया' 'पाडा' 'बाकरी' रे लाल, रूपइया शत 'दोइ' ॥मे०॥६॥
'शान्तिनाथ' नइ देहरइ रे लाल, वन्दी देव विशेष। मे०।
वचन साभलि वीतराग ना रे लाल, मूंकी सोग असेष ॥मे०॥७॥

(ढाल ८) धन्याश्री—*कुंअर भलइ आविया एहनी।*
श्री 'जिनसागर सूरि' जी ए, पाटि प्रभाकर तेम।
सुगुरु भले गाइयइ, श्री'जिनधर्म सुरीसरु, जयवंता जग एम ॥१॥
देस प्रदेशे विहरता ए, भविक जीव प्रतिबोह। स०।
उदयवन्त गच्छ जेहनो ए, महियल मोटी सोह ॥ स० ॥ २ ॥
गुण गाता सद्गुरु तणा ए, पूज्यइ मन नी खाति। स०।
मन वछित सहू ना फलि ए, भाजि मन नी भ्राति ॥ स० ॥ ३ ॥
संवत 'सतर चौसोत्तरइ' ए, 'सुमतिवल्लभ' ए रास। स०।
'आसगसुदि पुनम' दिनि ए, कीयो मनह उल्लास ॥ स० ॥ ४ ॥
श्री 'जिनधर्म्म सुरीश' नो ए, माथि छै मुझ हाथ। स०।
'सुमतिवल्लभ' मुनि इम कहइ ए, 'सुमतिसमुद्र' शिष्य साथ ॥स०॥५॥

॥ इति श्रीनिर्वाणरास सपूर्ण ॥

(हमारे संग्रह मे, तत्कालीन लि०)

श्री जिनसागरसूरि अष्टकम्

(१)

श्री मज्जेशलमेरुदुर्ग नगरे, श्री विक्रमे गुर्जरे।
थट्टायां भटनेर मेदिनितटे, श्री मेदपाटे स्फुटम्॥
श्री जावालपुरे च योधनगरे, श्री नागपुर्यां पुनः।
श्रीमल्लाभपुरे च वीरमपुरे, श्री सत्यपुर्यामपि ॥१॥
मूलत्राण पुरे मरोट्ट नगरे, देराउरे, पुग्गले।
श्री उच्चे किरहोर सिद्धनगरे, धींगोटके रूंघले॥
श्री लाहोरपुरे महाजन रिणी, श्री आगराख्ये पुरे।
सांगानेरपुरे सुपर्व सरसि, श्री मालपुर्यां पुनः ॥२॥
श्री मत्पत्तन नाम्नि राजनगरे, श्री स्थंभतीर्थे स्तथा।
द्वीपे श्री भृगुकच्छ वृद्धनगरे, सौराष्टके सर्वतः।
श्री वाराणपूरे च राधनपूरे, श्री गूर्जरे मालवे।
....॥३॥
सर्वत्र प्रसरी सरीति सततं, सौभाग्यमाबालयतः।
वैराग्यं विशदा मतिः सुभगता, भाग्याधिकत्वं भृशम्।
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता, येषां यशोवादता।
सूरि श्री जिनसागरा विजयिनो, भूयासुरंते चिरम् ॥४॥
आचार्याः शतशश्च संति शतशो, गच्छेषु नाम्नांपरम्।
त्वं त्वाचार्य पदार्थयुग् युगवरः, प्रौढः प्रतापाकरः॥

मध्याना मव सागर प्रतरणे, पोतायमानो भुवि ।
श्री मच्छ्री जिनमाार मुखकर , सर्वत्र शोभा कर ॥४॥
सौम्यत्वो हिम दीधि तौ सुर गुरौ, बुद्धि र्धराया क्षमा ।
तत्र श्री स्तरणौ परोपकृति धी , श्री विक्रमे भूपतौ ॥
सिद्धि गोरखनाथ योगिनि वटु र्लोमदच लम्बोदर ।
सन्येव निविताश्रया गुण गणा , सर्वेऽपित्वा प्रभो ॥६॥
श्री बोहित्थ कुलाम्बुधि प्रविकसन्नाशेय रोचि प्रभा ।
भास्वन्मातृ मृगासु कुक्षि सरसि, श्री राजहंसोपमा ॥
श्री मद्विक्रम वासि विश्व विदिता , श्री वच्छराजा गजा ।
सतु श्री जिनसागरा, खरतरे, गच्छे चिरंजीविन ॥७॥
इथं काव्य कदम्बकं प्रवरकं, मुल्तापुर प्राभृतम् ।
विद्वत् समयादिसुन्दर गणिभिर्भक्त्या विरक्तिभूतम् ॥
युष्मद्दौहतम प्रताप तपनो, देदीप्यताः सत्वरं ।
पूत पूरयत स्व भक्त यनिना, शीघ्रं मनोवाञ्छितम् ॥ ८ ॥

(बिकानेर स्टेट लायब्रेरी)

॥ जिनसागरसूरि अवदात गीत ॥

(२)

पूरब पण्डित पूछीयइ रे, भामिणि आप सभावरे। जोसीड़ा।
आवो टीपणो देखिने, मांडि लगन उपाय रे ॥ १ ॥ जो०
"श्रीजिनसागरसूरिजी' रे, आज काल किण गाम रे। जो०।
मो मन वांदण उमह्यो रे, सुणि अवदात नइ नाम रे। जो०।
'श्रीजिनसागरसूरिजी रे लो०। आ०।
"श्रीजिनकुशल' यतीश्वरइ रे लो, सुपन दिखाड्यो साच रे। जो०
जन्म थकी यश विस्तर्यो रे, निकलंक काछ नइ वाच रे।२। जो०
राउल 'भीम' नरेसरइ रे लो, निरखी गुरु मुख नूर। जो०।
केसर चन्दन चरची नइ रे, पामिसि पदवी पडूर रे। ३। जो०
उदय दिखाडयो 'अम्बिका' रे लो, श्री जिनशासन देव रे। जो०
युगप्रधान 'जिनचन्दजी'रे लो, करइ कृपा नित मेव रे। ४। जो०
मन मान्या वंछित फल्या रे, पूज्य पधार्या आप रे। जो०।
'हर्षनन्दन' कहइ सर्वदा रे लो, वाधउ अधिक प्रताप रे। ५। जो०

(३)

गाम नगर पुर विहरता पूजजी, 'श्रीजिनसागरसूरि'।
कठिन क्रिया खप आदरी, पूजजी, पूहवि सुजस पडूरि ॥ १ ॥
पूजजी पधारउ सूरजी 'मेडतइ' रे, श्रावक अति अविवेक।
श्रावक चितारइ दिन प्रति चाह सुं, थापइ लाभ अनेक।
श्रीसंघ श्रीसंघ वांदी हो, हरखित थाइस्यइ। आ०

खरतर गच्छ शोभा दीयउ, पूजजी बोहिथरे वरदान ।
साहिब 'मुहरवखानजी,' पूजजी पग लागे घइ मान ॥ २ ॥पू०॥
रूप कला पण्डित कला, पू० वचन कला गुण देख ।
राय राणी मानइ घणु, पूजजी थाइ माहे विशेष ॥ ३ ॥पू०॥
कामण मोहन नवि करो पू० लोक सहु वसि थाय ।
ए परमातम प्रोछवउ 'पू० पूर्व पुन्य पसाय ॥ ४ ॥पू०॥
चित्त चाहता आविया, पू० श्रीसघ मानी वचन ।
रग महोच्छव दिन प्रतइ, 'हरपनन्दन' कहइ धन ॥ ५ ॥पू०॥

(४)

॥ जाति फूलडानी ॥

श्री सघ आज वधावणी, हिव आज अधिक उछरगो रे ।
आचारज पद पामियउ, 'जिनसागरसूरि' सुचंगो रे ॥ १ ॥श्री०॥
खरतरगच्छ उन्नति थइ, हिव कीधा अनुपम कामो रे ।
दुरजण मुहडा सामला, हिव साजण वाधी मामो रे ॥२॥श्री०॥
धन पिता 'वच्छराज' जो 'मृगा' पिण माता धनो रे ।
वश धन 'बोहिथरा', जिहा उत्तम पुत्र रतनो रे ॥ ३ ॥ श्री०
बाजा वाज्या रूयडा, वलि तान मान सन्मानो ।
मूहव गावइ सोहलउ, निहा याचक पामइ दानो रे ॥ ४ ॥ श्री०
नयण सलूणा पूजजी, हिव हु बलिहारी नामइ रे ।
मोहनगारा मानवी, हिव'हरपनन्दन'सुख पामइ रे ॥ ५ ॥ श्री०

(५)

चतुर माणस चित्त उलसइ रे, देखी पूज सरूप रे। हो पूजजी॥
नान्हीवय गुण मोटका रे, उपजइ भाव अनूप रे॥१॥
ए परमार्थ प्रीछज्यो रे।
मान सरोवर लहुडोरे, राजहंस सेवइ तीर रे।
लवणागर मोटउ घणुं रे, पंथी न चाखइ नीर रे॥२॥
चंदा केरे चांदणे, सहुको वइसइ पास रे।
सूर (सूर्य!) तपइ जो आकरो, जावइ सहुको नासि रे॥३॥
ऊंचो लांबो अति घणउ, सरलउ पिंड खजूर रे।
नान्हो केलि कहावतो, छाया फल भरपूर रे॥४॥
मोटा मइगल मद झरइ, विलसइ ता गर (लग?) राज।
सींहणि केरो छावडोरे, गाजइ नहां वन मांझ॥५॥
नान्हा मोटा क्युं नहीं, गुण अवगुण चंधाण।
'जिणसागर सूरि' चिर जयउ रे, हर्षनन्दन' गुण जाण॥६॥

श्री करमसी संथारा गीतम्।

सहगुरु चरण नमी करी, गाइसु थोकणिगाइ।
'करमसीह' करणी करी, मोहरंगइ विणु रंग॥
विणु रंग संवेगइ पालिय, निम मावन्नुं पालिय जिणइ।
धन धन 'छूटइ बापडा' नउ, गुणह प्रगट जिणइ किणइ॥
तउ करी काया प्रथम सोधी, जिणइ पद् उम परिहरी।
'करमसी' गुणहि किघउ संथारउ, सुगुरु चरण नमी करी॥१॥
सोलइ गुरु कुल धरम नो, मनि आणी संवेग।
जाणी काया कारमी, करि निरधउ मन एक॥
मन एक निरधार करी आदर अन्न समुदइ परिहर्यउं।
आहार त्रिविध त्रिविध संयोगइ गुरु सुणइ आगमन वर्यउ॥
आराधना करि सौर ग्यामग, धरी त्रिविध उछाम नो।
करमसी तिणि विधि किघउ संथारउ, रीति गुरु कुल-धाम नो॥२॥
पहुतउ संथारइ जिणि परइ, जिणि विधि पुरव साधु।
करम भांजिया सिद्ध हुयउ, भणइ 'करमसी' साधु॥
'करमसी' साधु भणइ दीपायउ, गच्छ खरतर सउनइ।
परभावना अम्मारि करना, उच्छव होई दिन दिनइ॥
सिद्धान्त सोनारथ सुणावइ, साधु धयावष करइ।
धन धर्म करमट त्रिय ग्यावइ, पहुतउ संथारइ जिणि परइ॥३॥

जन्म 'जेसाणइ' जेहनउ, 'चांपा शाह' मल्हार।
'चांपलदेवि' उरि धर्यउ, 'ओसवंश' नउ सिणगार ॥
'ओसवंश' नउ सिणगार ए मुनि, दुकर करणो जिणि करी।
अन्नेक जामन मरण हुंती, छटउ अणसण उच्चरी ॥
'करमसी' मुनि मन कीरयउ करडउ नेह नाण्यउ देहनउ।
मन मदन करड्इ क्षेत्र जीत्यउ, जन्म 'जेसाणइ' जेह नउ ॥ ४ ॥
जेहनी प्रशंसा सुर करइ, मानव केहो मात्र।
सोम मुनीश्वर इम कहइ, धन धन एह सुपात्र ॥
धन एह पात्र सुसाधु सुन्दर, परतखि मुनि पंचम अरइ।
धन जन्म जीविय जाणि एहनउ, परगच्छी महिमा करइ ॥
मास की संलेखण करि नइ, अधिक दिन वीस ऊपरइ।
ए अमर जग मइं हुअउ इणि परि, प्रशंसा सुर नर करइ॥५॥
'वइसाखइ' संतोपस्युं, 'सातमि वदि' उच्चार।
कियउ संथारउ करमसी, कलि मइं धन अणगार ॥
अणगार धन्ना शालिभद्र जिम, तप अनेक जिणइ किया।
'सइ अढी वेला निवी आंबिल' करी जिण अणसण लिया ॥
चारित्र पंचे वरस पाली, सु ल्यउलाई मोक्ष स्युं।
आणंद खरतर गच्छ वाध्यउ, वइसाखइ संतोप स्युं ॥ ६ ॥

॥ इति गीतम् ॥

——※×※——

कवि ललितकीर्त्ति कृत
॥ श्री लब्धिकल्लोल सुगुरु गीतम् ॥

गुरु 'लब्धिकल्लोल' मुणिन्द जयउ, जाणे पूरव दिसि रवि उदयउ।
मन चिन्तित काजि सिद्धि थयउ, दुःख दोहग दूरइं आज गयउ॥
'सोलह सइ इग्यासी' वर वरसइ, भवियण लोकण देखण हरसइ।
गच्छपति आदेसइं 'मुज' आया, चउमास रह्या श्री संघ भाया॥२॥
'कातो वदि छट्ठि' अणसण सीधो, मानव भव सफल जिणे कीधो।
ले परभव ना संबल बहुला, पहुंता सुर सुरसर(?) भुवन वहिला॥३॥
आवी सुरपति नरपति निरखइ, 'मगसर वदि सातम' बहु हरखइ।
पगला थाप्या चढतइ दिवसइ, निरखी तन वयन नयन विकसइ॥४॥
थिर थान भलो 'मुज्ज' मइ सोहइ, सुर नर किन्नर ना मन मोहइ।
सद्गुरु परतिख परता पूरइ, सहु संकट विकट विघन चूरइ॥५॥
'श्रीमाली' कुल फैरव चदा, साह 'लाइण' 'लाछिम' दे नंदा।
दउलति दायक सुरतरु कंदा, प्रणमइ पद पंकज नर वृन्दा॥६॥
श्री 'कीरतिरतन सूरीश' तणी, शाखा मइं अद्भुत देव मणी।
वाचक 'लब्धिकल्लोल' गणी, दिन प्रति प्रनमउ जिम दिवस मणी॥७॥
गणि 'विमलरग' पाटइ छाजइ, अभिनव दिनकर जिम जगि राजइ।
जसु नामइ कलिय विघन भाजइ, जसु अतिशय करि महियलि गाजइ॥
मन शुद्धइं कीजइ गुरु सेवा, अति मीठी दीठी जिम मेवा।
निज गुरु पद सेव करण हेवा, दिन प्रति वाछइ जिम गज-रेवा॥६॥

तुम्ह देश देशन्तरि कांइ भमउ, गुरु सेव थकी दालिद्र गमउ ।
ईति अनीति कुनीति दमउ, घर बइठा लिखमो पामि रमउ ॥१०॥
साह 'पीथइ' 'हाथी' 'रायसिंघइ', 'मांडण' आदइ करि 'भुज' संघइ ।
उद्यम करि थुंभ तणउ रंगइ, थाप्या पूरव दिशि मन संगइ ॥११॥
निज सेवक नइ दरसण आपइ, पगि पगि सानिध करि दुःख कापइ।
गणि 'ललित कीर्ति' चढतइ दावइ, वंदइ गुरु चरण अधिक दावइ ।१२।

॥ इति गुरु गीतम् ॥

सुगुरु वंशावली

भट्टारक 'जिनभद्र' खरउ, गच्छ नायक खरतर ।
तसु पट्टहि 'जिनचन्द' सूरि, तप तेज दिवाकर ॥
सद्गुरु श्री'जिनसमुद्र', तासु पट्टहिं श्रुत सागर ।
तसु पट्टहि बुधिमंत सूरि 'जिनहंस' सूरीश्वर ॥
अभिनवउ इन्द्र रूपइ अधिक, संजम रमणी सिर तिलउ ।
गच्छपति तास पट्टहि गुहिर, 'जिनमाणिक' महिमा निलउ ॥१॥
'पारिख' वंश प्रसिद्ध, जुगति जिनधर्म सुं जोरी ।
कहु तसु पट्टि 'कल्याणधीर', वाचक धर्म धोरी ॥
'भणशाली' कुल भाण शीस, तसु पट्टहि सुरतरु ।
वाचक श्री'कल्याणलाभ' वाणी अनुपम वरु ॥
पाठक 'कुशलधीर' तासु सिसु, वदइ एम वंशावली ।
गुरु भगत शिष्य गुरु गुण यही सफल करउ रसनावली ॥२॥
(P. C. गुटका नं० ६०)

॥ श्रीविमलकीर्त्ति गुरु गीतम् ॥

(१)

प्रह ऊठी नित प्रणमियइ हो, 'विमलकीर्त्ति' गणि चंद।
तेज प्रतापे दीपता हो, प्रणमैं बहु नर वृन्द ॥ १ ॥
भविक जन वंदियइ हो, नासे पाप पुलाय ॥ भ० ॥ आंकणी ॥
खरतरगच्छ में शोभता हो, सर्व कला गुण जाण।
जेहनइ मुखि भारती वसइ हो, आगइ ज्ञान विज्ञान ॥ २ ॥ भ०।
'हुंबड़' गोत्रे परगड़ा हो, 'श्रीचंद' शाह मल्हार।
मात 'गवरा' जनमिया हो, शुभ मूरति(महूरत) सुखकार ॥३॥भ०।
संवत् 'सोलह चउपनइ' हो, लीधी दीक्षा सार।
'माह सुदि सातम' दिनइ हो, पाल्इ निरतिचार ॥ ४ ॥ भ०।
'साधुसुन्दर' पाठक भला हो, सकल कला प्रवीण।
सइंहथ दीक्षा जेंग दीधी हो, ध्यान दया गुण लीण ॥५॥भ०।
चउरासी गच्छ सेहरो हो, श्री 'जिनराज सूरिन्द'।
वाचक पद सइंहथ दियो हो, सेव करइ जन वृन्द ॥६॥भ०।
'सोलहसइ बाणू' समइ हो, श्री 'किरहोर' सुठाम।
आराधन अणसण करी हो, पहुंता स्वर्ग सुधाम ॥ ७ ॥ भ०।
'विमलकीर्त्ति' गुरु नाम थी हो, जायइ पातक दूर।
'विमलरत्न' गुरु सेवता हो, प्रगटे पुण्य पडूर ॥ ८ ॥ भ०।

---

(२)

राग—धन्याश्री ॥

वाचक 'विमलकीर्ति' गुरुराया, प्रणमो भवियण पाया वे ।
दरशन देखि नवनिधि थाइ, सुख संपति लील सदाइ वे ॥ १॥वा०
संवत 'सोल चउपन्ना' वरसे, चतुर चारित्र गहइ हरपइ वे ।
'साधुसुन्दर' तसु गुरु सुवदीता, वादी गज मद जीता वे ॥२॥व
तासु शिष्य गुरु कमल दिणन्दा, भविक चकोर चित्त चंदा वे ।
अनुक्रम 'वाचक' पदवी पाइ, गुरु सौभाग्य सवाइ वे ॥३॥वा०॥
मूल चक्क 'मुलताण' कहावइ, तिहां चउमासइ आवइ वे ।
दान पुण्य (तिहाँ) अधिका थावइ, श्री संघ वधतइ दावइ वे॥४॥वा०॥
सिन्धु नगर 'कहिरोरइ' आया, लख चौरासी खमाया वे ।
अणसण पाली स्वर्ग सिधाया, गीत ज्ञान वहु गाया वे ॥५॥वा०॥
शिष्य शाखा प्रतपउ रवि चंदा, जां लगि मेरु ध्रू चंदा वे ।
'आणंदविजय' इम गुण गावइ, चढ़ती दउलति पावइ वे ॥६॥वा

साध्वी हेमसिद्धि कृत

॥ लावण्यसिद्धि पहुतणी गीतम् ॥

राग :—सोरठ

दूहा:—आदि जिणेसर पय नमी, समरी सरसति मात।
गुण गाइसुं गुरुणी तणा, त्रिभुवन माहि विख्यात ॥ १ ॥

वेलि ढाल:-जे त्रिभुवन माहि विख्यात, 'लावनसिद्धि' गुण अवदात
'बीकराज' साहनी धीया, वइरागइ चारित्र लीया ॥२॥
'गूजर दे' माता रतन्न, सहू लोक कहइ धन धन्न।
शीलादिक गुण करि साता, सहु दुनीया माहि वदीता ॥३॥
जिण माया मोह निवार्या, भवियण भव-जलनिधि तार्या।
सूधा पच महाव्रत पालइ, त्रिण्ह गुप्ति सदा रखवालइ ॥ ४ ॥

दूहा:—अढार सहस शीलंगधर, टालइ सगला दोस।
सुन्दर सजम पालती, न करइ माया मोस ॥ ५ ॥
न करइ तिहा माया मोस, वलि निज घट नाणइ रोस।
धन धन ते श्रावक श्रावी, गुरुणी नइ प्रणमे आवी ॥ ६ ॥
मीठी जिसी अमीय समाणी, सुन्दर गुरुणी नी वाणी।
सुणि सुणि बूझइ भवि लोक, दिनकर देखणि जिम कोक ॥ ७ ॥
पहुतणी 'रत्नसिद्धि' पाटइ, दिन प्रति जस कीरति खाटइ।
नवनिध हुइ गुरुणी नई नामइ, मनवछित सहीयण पामइ ॥८॥

दूहा:—अंग उपांग सहु तणा, जाणइ अरथ विचार ।
श्री 'लावण्यसिद्धि' पहुतणी, विद्या गुण भंडार ॥६॥
सब विद्या गुण भंडार, महिमंडलि करइ विहार ।
तप करि काया उजवालइ, 'चंदनबाला' इणि काले ॥१०॥
'जिनचंद' सुगुरु आदेस, परमाण करइ सुविशेष ।
अनुक्रमि 'विक्रमपुरि' आवी, निज अंत समय परभावी ॥११॥
सवि जीवह रासि खमावी, उत्तम भावना मन भावी ।
अणशण आदरियउ रंगइ, सुर व(प्र?)णमइ धरमहु संगइ ॥१२॥
दूहा:—समकित सूधउ पालती, करती सरणा च्यारि ।
इण परि संथारो कीयउ, माया मोह निवारि ॥ १३ ॥
माया मोह निवारी, करइ संघ प्रभावन सारी ।
वाजइ पंच शब्द तिहां भेरी, नीसाण घुरंति नफेरी ॥१४॥
अपछर आरतीय उतारि, जिन शासन महिम वधारी ।
जिनवर नो ध्यान धरंती, नवकार हियइ समरंती ॥ १५ ॥
दूहा:—संवत 'सोलहसइ बासट्ठि', पहुती सरग मंझारि ।
जय जय रव सुर गण करइ, धन गुरुणी अवतार ॥ १६ ॥
धन धन गुरुणी अवतार, भवियण जन नइ सुखकार ।
थिर थांन 'विक्रमपुरि' थुंभ, देखि मनि धरइ अचंभ ॥१७॥
परता पूरण मन केरी, कल्पतरु थी अधिकेरी ।
'हेमसिद्धि' भगति गुण गावइ, ते सुख संपति नितु पावइ ॥१८॥
(तत्कालीन लि० हमारे संग्रह में)

———

पट्टनणी हेमसिद्धि कृत

सोमसिद्धि(साध्वी)निर्वाण गीतम्।

राग :—मल्हार

सरस वचन मुझ आपिज्यो, सारद करि सुपसायो रे।
सहगुरुणी गुण गाइसुं, मन धरि अधिक उमाहो रे ॥१॥
सोभागिणि गुरुणी वंदीयइ, भाव धरी विशेषो रे। सो० आंकडी।
गीतारथ गुरुणी जाणीयइ, गुणवंती सुविचारी रे।
करूणा रस पूरी सदा, मन जन कुं सुखकारी रे ॥२॥सो०।
शील्इ सीता रूयडी, सोमइ चन्द्र समानो रे।
उग्र विहारइ तप करइ, महिमा महित प्रधानो रे ॥३॥सो०॥
'नाहर' कुल माहि चंदलउ, 'नरपाल' जु गुण ठामो रे।
तेहनी नारी जाणियइ, शील करी अभिरामो रे ॥४॥सो०॥
'सिंघा दे' गुण आगली, तास पुत्री गुणवंतो रे।
रूप करी अति शोभनी, 'सगारी' नाम वहंतो रे ॥५॥सो०॥
योवन वय जब आवीयउ, पिता मन माहि चितइ रे।
'बोथरा' वंशे दीपतउ, 'जेठ शाह' सुहावइ रे ॥६॥ सो०॥
तास पुत्र 'राजसी' कहीजइ, परणावइ मन रंगो रे।
वरष अढार हुआ जेम(ज?)लइ, उपदेश सुणी मन चंगो रे ॥७॥सो०॥
वइराग उपनउ तेहनइ, अनुमति मांगी तेमो रे।
सासु स्वसरा इम कहइ, हुज्यो तुझ नइ खेमो रे ॥ ८ ॥सो०॥

चारित्र पालतां दोहिलउ, सुकुमाल जु तुझ देहो रे।
मत कहिज्यो कांइ तुम्ह वली, मुझ चारित्र ऊपर नेहो रे ॥९॥सो०
उच्छव महोत्सव कीधा घणा, दीक्षा लीधी सारो रे।
'लावण्यसिद्धि' कन्हइ रहइ, सूत्र अर्थ ना लयइ विचारो रे ॥१०॥सो०
'सोमसिद्धि' नाम जु थापीयउ, गुणे करी निधानो रे।
आपणइ पद थापो सही, चारित्र पालइ प्रधानो रे ॥११॥सो०॥
'सैत्रुज' प्रमुख यात्रा करी, तिम वलि तीर्थ उद्धारो रे।
कीधी भावइ सदा सही, तप उपमा सारो रे ॥ १२ ॥सो०॥
'श्रावण वदि चउदसि' दीनइ, 'बृहस्पतिवार' प्रधानो रे।
अणसण लीधउ भावसुं, सब कला गुण निधानो रे ।१३।सो०।
देव थानक पहुंता सही, श्री गुरुणी गुणवंतो रे।
गुरुणी आस्या पूरी करउ, मुझ मन घणी खंतो रे ॥१४॥सो०॥
विरला पालइ नेहडउ, तुंम सुं (तो?) प्राण आधारो रे।
तुम्ह विना हुं क्युंकर रहुं, दुखीया तुं साधारो रे ।१५।सो०।
मोरा नइ वलि दादुरां, बाबीहा नइ मेहो रे
चकवा चिंतवत रहइ, चंदा उपरि नेहो रे ॥ १६ ॥ सो० ॥
दुखीयां दुख भांजीयइ, तुम्ह विना अवर न कोइ रे।
सहगुरुणी गुण गावीयइ, वांदउ दिन दिन सोइ रे ॥ १७ ॥सो०॥
चंद्र सूरज उपमा, दीजइ (अधिक) आणंदो रे।
पहुलोणी 'हेमसिद्धि' इम भणइ, देज्यो परमाणंदो रे ॥१८॥सो०॥

॥ इति निर्वाण गीतम् ॥

(तत्कालीन लि० हमारे संग्रहमें)

———

साध्वी विद्या सिद्धि कृत

॥ गुरुणी गीतम् ॥

. . ..

""करि आगली, सुमति गुपति भंडार ॥ प्र० ॥१॥

गोत्रज 'माइमखा' जाणियइ, 'करमचंद' साह मल्हार ।

भाव अधिक परिणामइ आदर्यो लीयउ संजम सार ॥प्र०॥२॥

जगनी (जाणीती ?) गउ माहे पवत्तणी, क्रिया पात्र सुविचार ।

अहनिस चपना नाम सुमरणउ, सुख संपत्ति सुखकार ॥४ प्र०

श्री 'जिनसिंह सूरीसर' आपीयउ, 'पवत्तणी' पद सुविशाल ।

तप जप संजम करी परि राखती, जिम माता नइ बाल ॥५प्र०॥

साध्वी माहि सिरोमणि साध्वी, भणिय गुणिय सुजाण ।

राति दिवस जे समरण करइ, प्रणमइ चतुर सुजाण । ६ । प्र० ।

'सोलइसइ निआणू' वरम मइ, 'भाद्रव बीज' अपार ।

इम बोलइ 'विद्यासिद्धि' साध्वी, संपति हुवइ सुखकार ॥प्र०॥७॥

(सं० १६९९ भा० व० ३ दि०)

(१) श्रीगुर्वावली फाग

पणमवि केवल लच्छि वरं, चउवीसमउ जिणंदो ।
गाइसु 'खरतर' जुग पवर, आणिसु मनि आणंदो ॥१॥
अहे पहिलउ जुगवर जगि जयउ ए, श्री 'सोहमसामि' ।
वीर जिणंदह तणइ पाटि, सो शिवपुर गामी ॥
मोह महाभड तणउ माण, हेलि निरदलीयउ ।
'जंबूस्वामी' सुस्वामि साल, केवलसिरि कलीयउ ॥२॥
सुयकेवलि सिरि 'प्रभवसूरि', 'सिज्जंभव' गणहर ।
दस पूर्वधर 'वयरस्वामि', तयणुक्कमि मुणिवर ॥
तसु वंशि दिणयर जिसउए, तव तेय फुरन्तु ।
सिरि 'उज्जोयणसूरि' भूरि, गुण गणहिं वदीतउ ॥३॥
'आबूयगिरि' सिहरि जेण, तप कीयउ छम्मासी ।
पयड़ीकय सिरि सूरि मंत्र, तसु महिम पयासी ॥
'पउमावइ' 'धरणिन्द' जासु, पय क(य) मल नमंसिय ।
नंदउ सो सिर 'वद्धमाण', मुणि लोय पसंसिय ॥४॥

भास

'अणहिल्लपुरि' मढपत्ति (जीपी) जेण, थापी मुणिवर वासो ।
रायंगण 'दुल्लह' तणइं, पामी विरुद पयासो ॥५॥
अहे 'खरतर विरुद'पयासु जा(सु), दीधउ चउसालो ।
निम्मल संयम गुणहि जासु, रंजिय भूपालो ॥

वारिय चेइयवास वास, थापिय मुणिवर केरु ।
सूरि 'जिणेसर' गुरुराय, दीपइ अविवेक ॥६॥
'श्रीजिणचंद' मुणिन्द चंद, जिम मोहइ सप्पइ ।
विवरिय जेण नवंग चंग, पयडो धंमग पडु ॥
तिय वयणिहि गुण कहइ जासु, सीमंधर जिणवर ।
सलहिज्जइ सिरि 'अभयदेव', सो सूरि पुरन्दर ॥७॥
'बागडिया' 'दस स(ह)स' सार, मावइ पडिबोहिय ।
'चित्रोडी' 'धार्मड' खंड, जसु दरसणि मोहिय ॥
'पिण्डविसोही' विचार सार, पयरण निम्माविय ।
'जिणवल्लह' सो जाणीयइ ए, जण नयण सुहाविय ॥८॥

भास

'अम्ब' एवि पयास करि, जाणी जुगहपहाणो ।
'नागदेवि (व?)' जो मुणिपवर थाणी अमिय समाणो ॥६॥
अहे अमी समाण वखाण जासु, सुणिवा सु(र) आवइ ।
चउसठि जोगणि जासु नामि, नहु तणु (किंपि?) संतावइ ॥
जुगवर श्री 'जिणदत्तसूरि', महियलि जाणीजई ।
निर्म्मल मणि दीपति भाल 'जिणचंद' नमिज्जइ ॥१०॥
राजसभा छत्रीस वाद, कियउ जइ जइ कारो ।
'बबेरक' पद ठवण जासु, सुप्रसिद्ध अपारो ॥
सद्गुरु श्री 'जिनपतिसूरि', गाजइ अलवेसर ।
सूरि 'जिणेसर' 'जिणपबोह', 'जिणचंद' मईसर ॥११॥

चंपक जिम वणराय मांहि, परिमल भरि महकइ ।
कस्तूरी घनसार कमल, केवड़उ वहकइ ॥
तिम सोहइ 'जिनकुशल सूरि', महिमा गुण मणहर ।
तयणंतरि 'जिनपद्मसूरि', जिणशासणि गणहर ॥१२॥

भास

लब्धिवन्त 'जिनलब्धि' गुरु, पाटिहि सिरि 'जिणचंदो' ।
उदय करण जिण उदयवंत, श्री'जिणराज'मुणिन्दो ॥१३॥
अहे श्री 'जिनराज' मुणिन्द पाटि, गयणंगणि चंदो ।
खरतरगण सिंगार हार, जण नयणाणंदो ॥
सायर जिम गंभीर धीर, आगम संपन्नउ ।
सहिगुरु श्री 'जिनभद्रसूरि', कलि गोयम मन्नउ ॥१४॥
तसु पाटि'जिणचंद सूरि', जिनसमुद्र सूरिन्दो ।
तसु पाटिहि 'जिनहंस सूरि', किरि पूनम चन्दो ॥
श्री'जिनमाणिक सूरि' तासु, पाटिहि गुण भरियउ ।
चिरं जीवउ जगि विजयवन्त, संघहि परिवरियउ ॥१५॥
जद्दूमंडलि अचल मेरू, दिणयर दीपंतउ ।
गिरुउ खरतर संघ एह, तां जगि जयवंतउ ॥
वाणारसि सिरि 'खेमहंस', गणिवर सुपसाइ ।
खेलाखेली फाग बंधि, सहगुरु गुण भावइ ॥१६॥
॥ इति गुरावली फाग संपूर्णा ॥

चारित्रसिंह कृत

(२) गुर्वावली

सिव सुखकर रे, पास जिणसर पय नमउ,
गोयम गुरु रे, चरण कमल मधुकर रमउ।
कवि जननी रे, दिउ मुझ शुभ मति निरमली,
रंगि गाइसुं, सुविहित गच्छ गुरावली॥
सुविहित गच्छ गुरावली किर, जेम भवियण गाइयइ।
बहु सिद्धि रिद्धि निधान उत्तम, हेलि सिवपुर पाइयइ।
जे नाण दंसण चरण उज्जल, 'चउदमयरावन' वली।
गणधार सवि ते भावि वंदो, एह निर्मल मति रली॥१॥
सिव रमणी रे, वर सिरि वीर जिणसरु,
गुण गण निधि रे, 'गोयम'स्वामी गणहरु।
उपगारी रे सुरकारी भवियण तणइ,
इक जीहा रे, तहना गुण बहु किम थुणइ॥
किम थुणइ तहना गुण महोदधि, कवहि पार न पावए।
जिसु मधुर ध्वनि कर दूर दानव, किन्नरी गुण गावए॥
जसु नाम जिह्वा झरइ अमृत, पढम मंगल कारणो,
सो वीर जिणवर पढम गणधर, जयो दुख निवारणो॥२॥
'गच्छाधिप' रे, 'सोहम' सामी गुण निला,
तसु पाटहि रे 'जंबू सामी'जग तिलो।
वर अचरा रे कोडि 'नवाणू' परिहरी,
सुभ भावइ रे, परणी जिह संयम सिरी॥

संयमश्री जिहि हेलि परणी, चरण करण सु धारओ ।
मय अठ्ठ वारण मान गंजण, भविय दुत्तर तारओ ।
सोभाग सुन्दर सुगुण मन्दिर, मुक्ति कमला कामिनी ।
जिह नाथ पामी अतलेने? छइ, भइय शुभ गुण गामिनी ॥३॥
तदनन्तर रे, 'प्रभव स्वामि' श्रुतकेवली,
सिव पद्धति रे, भवियह भाखी अति भली ॥
'सिज्जंभव' रे, सामी गुण गणधार ए,
मिथ्या मत रे, पाप तिमिर भर वार ए ॥
वार ए कुमत कुसंग दूषण, भाव भेय दिवायरो ।
'जसभद्द' गणहर नाण दंसण, चरण गुणगण सायरो ॥
'संभूतिविजय' प्रधान मुनिपती, प्रबल कलिमल खंडणो ।
श्री 'भद्रबाहु' सुबाहु संजम, जैन शासन मंडणो ॥ ४ ॥
श्री 'थूलिभद्र' रे, वाम कामभड भंजणो,
उपसम रस रे, सागर मुनि गण रंजणो ॥
जसु उत्तम रे, सुजस पडह जगि वाज ए,
अति निरमल रे, शील सबल दल गाज ए ॥
गाजए दुक्कर सुविधि-कारी, जासु गुण पूरी मही ।
रवि चक्क तलि वर सील सुभ वलि, जेह सम सरिखो नही ।
प्रतिबोधि कोश्या मधुर वयणिहि, किद्ध उत्तम साविया ।
सो ब्रह्मचारी सुकृत-धारी, भावि प्रणमो भाविया ॥ ५ ॥
तसु अनुक्रमि रे, 'अज्जमहागिरि' जगि जयो,
जिणकप्पह रे, तुलणाकारी सो भयउ ॥

तासु सीसवर रे, 'भद्र सुहथी' आणिये,

'संप्रति' नृप रे, मायग जासु पसायियइ ॥

पसायिये जिन सासु उत्तम, सयल महिमा अति घणो ।

श्री 'अज्जगंगो' थिवर पइट्टिय, तासु पाटिहिं गच्छ धणी ।

'हरिभद्र' आरिय गुणनि धारिय, 'साम अज्ज' मुणीसरो ।

'पन्नवण सुत्त' उद्धार कारी, जयो सो अति गुणवरो ॥ ६ ॥

तिय आरिजरे,'संडिल्ल'नाम सहमर,श्री रेवत रे सिर'मुणिंद जुगंधर ।

धर्मगिर रे धर्माचारिज सोहए,वर संजम रे सील सुगुण जग मोहए ।

मोह ए रत्नत्रय विभूषित, 'अज्जगुत्त' मुणीसरा,

गुण रयण रोहण भविय मोहण, 'अज्जसमुद' गणीसरा ।

सिर 'अज्जमंगु' सुसम पयडण, पवर दिणयर दीप ए ।

सिरि 'अज्ज सोहम' थविर हरियर, मोह सुभट जीप ए ॥७॥

गुण सागर रे, 'भद्रगुत्त' मुनि नायगो,

भवियण जण रे, समकित सुरतरु दायगो ।

'सीहगिरि' गुरु रे, अनेयासी राज ए,

आ ईसर रे, देस पूरव-धर छाज ए ॥

छाज ए बाला मयणमाला, रूव दमणि नवि चल्यो ।

वर कणय कोडि हुंलि छोडी, मयण मय भड जिणि मल्यउ ।

सिरि 'वयर स्वामी' सिद्धि धामी, फलिय सिव सुह आगमो ।

निष्कलंक चारित्र धवल निर्मल, सिव जुग पवरागमो ॥८॥

श्री आरिज रे, 'रक्षित' जिणमय भास ए,

नव पूरव रे, साधिक शुभ मति वास ए ।

'दुर्वलिकापक्ष' प्रधान दिगेसरु, श्री 'आरिजनन्दि' मुणिंद गणेसरू ॥
गणेसरू सिर 'नागहत्थी' मान माया चूरणो,
'रेवंत' गणधर 'ब्रह्मदीपी' सूरि वंछिय पूरणो ।
'संडिल' जइवर परम सुहकर, 'हेमवंत' महा मुणी ।
सिर 'नागअज्जुण' नाम वाचक, अमिय सम सुन्दर झुणी ॥ ९ ॥

'श्रीगोविन्द' रे वाचक पदवी हिव लहइ,
सम दम खम रे, चरण करण भर निरवहइ।
श्रुत जल निधि रे, 'दिन्नसभूइ' वायगो,
'लोकह हित' रे, सहगुरु शुभ मति वायगो।
वायगो भासइ हियइ वासइ, 'दूप्यगणि' जगि निरमला ।
वर चरण खंती गुत्ति मुत्ती, नाण निश्चय उजला ॥
श्री 'उमास्वाति' सुनाम वाचक, प्रवर उपसम रतिधरो ।
'पंचसय' पयरण परम वियरण, पसमरइ सुइ गुणधरो ॥१०॥

हिव 'जिनभद्र' रे, क्षमासमण नामइ गणी,
श्री 'हरिभद्र' रे सूरीसर जगि दिनमणी ॥
अंगीकृत रे, जिन मत 'देव सूरीश्वरु' ।
श्री 'नेमिचन्द्र' रे, सूरिराय दुरयह हरु ॥
दुरिय हरु सुखकरु सुविहित, सूरि 'उद्योतन' गुरो,
श्री सूरिमंत्र प्रभाव प्रकटित, 'वर्द्धमान' गुणाकरो ॥
दुह कुमत छेदी सुविधि वेदी, मिच्छतम तम दिणयरो,
जिणधम्म दंसी अति जसंसी, भविय कयरवस सहरो ॥११

जे सुहगुरु रे, अण विहार विहरता,

'अणहिल्लपुर' रे पाटणि पहुता विहरता ॥

चियवासी, रे महिमा सहज तिहं कियउ,

'दुर्लभ' नृप रे 'खरतर' बिरुद तिहां दीयउ ॥

तिहं दियउ खरतर बिरुद उत्तम नाम जग माहि विस्तरइ,

आदरइ जिनमत भावि भवियण, सुविधि मारग विस्तरइ ॥

चियवासी मयगल सबल दल छल, केसरी पद पाव ए,

श्री 'जिनेश्वर सूरि' सुविहित, सुजस रेह रहाव ए ॥१२॥

हिव सुविहितर, चक्र चतुर चिन्तामणी,

मिथ्यामर र, तिमिर विहडन दिनमणी ॥

जिन प्रवचन र, वचन विलास रमालए,

वन मधुकर रे, अति संवेग रसालए ॥

'सवेगरग विसाल साला', नाम प्रकरण जिह कह्यो,

भव पाप पंक पखालि निरमल, नीर संजम तप धरयो ॥

'जिनचन्द्र सूरि' नवंग विवरण, रयण कोस पयास(ए)णो,

श्री 'अभयदेव' मुणिंद दिनपति, परम गुण गण भासणो ॥१३॥

हिव तप जप र, ज्ञान ध्यान गुण उजला,

आतम जय रे, चरणु सुसारसु निरमला ।

'जिनवल्लभ' र, सुविहित मारग दाख ए,

विधि थापक र, कुमति उसूत्र वि दाख ए ॥

दाख ए गम तरग सुवचन, अविधि तरु भंजण करी,

सवेग रग तरग सागर, नवल आगल गुणभरी ।

तसु पाटि श्री 'जिनदत्त सूरि' गुरु, 'युगप्रधान' सुहायरो ।

चारित्र चूडामणि समुज्जल, 'जैनचन्द्र' सूरीसरो ॥१४॥

तासु पाटिहि रे, वालइ चंद कि चंदणो,
श्री 'जिनपति' रे, सूरीसर जगि मंडणो।
'जिनईश्वर' रे 'जिनप्रबोध' सूरीसरु,
नव सुन्द(र)रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुधा करु॥
श्री 'जैनचन्द्र' सुधाकरु जल, कुशल कमला कारणो,
'जिनकुशल सूरि' सुरिंद संकट, दुख दोहग वारणो।
'जिनपद्म' सूरि विलास अविचल, पउम आतम थाप ए।
'जिनलब्धि' लब्धि निधान 'जिनचन्द्र', सूरि सुभ मति आप ए॥१५॥

उदयाचल रे, उदय 'जिनोदय' सुहगुरु,
सुखदायी रे, श्री 'जिनराज' कलाधरु।
भद्रंकर रे, श्री 'जिनभद्र' मुणीसरु,
'चंद्रायण' रे, 'चन्दसूरि' गुरु गणहरु॥
गणधार मोह विकार विरहित, 'जिनसमुद्र' यतीश्वरु।
'जिनहंस सूरीसर' सुमंगल, करण दुह दालिद्र हरु।
श्री 'जैनमाणिक' सुगुण माणिक, खीरसागर अनुपमो,
जय सुखकारी दुखहारी, कप्पतरु वर जंगमो॥१६॥

श्री 'सोहम' रे, स्वामि ने अनुक्रम भयो,
तेसठमइ रे, पाटइ ए जुगवर जयो।
सूरीसर रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुसोह ए,
वयरागी ए, उपसम धर मन मोह ए॥

मोह ए भवियण जगह मानस, एह परम जगीसरु,
वर ध्यान सुमति निधान सुन्दर, नवल करुणा रस भरु।
पग विषय विषम विकार गजण, भाव भड भय जीप ए।
सो सुविधधारी शीलधारी, जैन शासन दीप ए ॥१७॥
गभीरिम र, उपमा सागर गुरु तणी,
किम पावइ र जिह तई महिमा अति घणी।
मह मूलिक र, रत्नत्रय जिह जाणीयइ,
सम दम रस रे निरमल नीर वखाणियै ॥
वखाणियै जिह सबल सयम, रग लहरी गहगहइ,
सुध्यान वडवानल सुगुण मय, नदी पूर जिहा वहै।
एक इह अचरिज भयउ हम मनि, सुणहु भवियण इम यहइ।
'जिनचदसूरि' सुरिन्द पटतर, यहउ जलनिधि किम लहइ ॥१८॥
इह सुहगुरु र, गुण गण वर्णन किम सकै,
बहु आगम रे, पाठी तउ पुणि ते थकै।
इह कारणि र, श्री गुरु सम को किम तुलइ,
किह पीतलि रे, कचन सम सरि किम मुलइ ॥
किम मुलइ रयणी दिन समाणी, बहुय सरवर सागरा,
नक्षत्र ससहर सूर कातर, उखर भू रयणागरा।
सोभाग रग सुरग चगिम, चरण गुण गण निरमला
'जिनचन्द्र सूरि' प्रताप अविचल, दिन दिनइ चढती कला ॥१९॥
'ढिलि' मडलि र, 'रुस्तक' नगर सोहामणो,
तिहा श्री सघ रे, सोहइ अति रलियामणो।

ऊमाहो रे, निवसइ गुरु दंसण तणो,

मन मंहि जिम रे, चातक घन तिम अति घणो ॥

अति घणो भाव उल्हास उच्छव, सधन धन सो अवसरो,

सा धन्न वेला सु धन मेला, जत्थ दीसइ सुहगुरो ।

जे भावि वंदइ तेह नन्दइ, दुख छन्दइ वहु परै,

संग्रहइ समकित शुद्ध सोवन, सुगुरु उच्छव जे करइ ॥२०॥

मन मोहन रे, गुण रोहण धरणी धरु,

पूर्व ऋषि रे, उजवालइ जगदीसरु ।

चिर प्रतपो रे, श्री 'जिनचंद्र' यतीसरु,

जां दिनकर रे, ससहर सुर वर भूधरु ॥

सुर भूधरु जां लगइ अविचल, खीरसागर महियलै,

जयवन्त गुरु गच्छपति गणधर, प्रकट तेजइ इणि कलइ ।

'मतिभद्र' वाचक सीस 'चारित्र,-सिंह' गणि इम जंप ए ।

गुरु नाम सुणतां भावि भणतां, होइ सिव सुख संप ए ॥२१॥

—※—
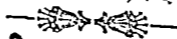
गुर्वावली नं० ३

ढाल—गीता छन्द नी ।

भारति भगवति रे, तुं वसि मुख कजे मेरइ,

सहगुरु सुरतरु रे, गाइसुं सुजस नवेरइ ।

सहगुरु गाइसुं सुविहित यति पति, सिरि 'उद्योतनसूरि' वरो ।

तसु पाट पुरन्दर सोहग सुन्दर, 'वर्द्धमानसूरि' युग प्रवरो ।

'अणहिल्पुर' 'दुर्लभ' राय अंगणि, जिणि मठपत पण जीतउ ।

क्रिया कठोर 'जिनेश्वरसूर' ति, 'खरतर' विरुद वदीतउ ॥१॥

निधि सु विरचित र, जिणि 'संवेगरंगशाला'।
गुरु 'जिनचन्द सूरि' रे, तेज तरणि सुविशाला।
सुविशाल सुर्थभण पास प्रकाशक, नव अग विवरण करण न(वा?)री।
श्री 'अभयदेव सूरि' वर तसु पाटइ, श्री 'जिनवल्लभ सूरि' गुरो॥
'अम्बिका देवी' देसित युगवर, 'जिनदत्त सूरि' अदीणो।
नरमणि मंडित 'जिनचन्द' पदि, 'जिनपति' सूरि प्रवीणो॥२॥
'नमिचन्द' नन्दन रे, सूरि 'जिनसर' सारा,
सूरि सिरोमणि रे जिन प्रबोध उदारा।
सुविचार उदारा 'जिनचन्दसूरि', 'जिनकुशल सूरि' 'जिनपद्म' मुणी
श्री 'जिनलब्धि सूरि' 'जिणचन्द', 'सुगुरु जिणोदय' सूरि मुणो।
'जिनराज' मुनिय (वि) 'जिनभद्र' यतीसर,
श्री 'जिणचन्द सूरि' 'जिनसमुद्र' वसी।
श्री 'जिनहंस सूरि' मुनि पुगव श्री 'जिनमाणिक सूरि' शशी॥३॥
तसु पदि परिगहउ रे, गुण मणि रोहण मोहइ।
'रीहड' कुलतिलउ रे, सकल सुजन मन मोहइ।
मोहइ वचन विलास अमृत रस, 'श्रीवंत' साह जनेता।
'सिरियादे' उरि रत्न अमूलक, श्री खरतर गच्छ नेता।
"नयरग" भणइ विसद विधि वेदी, मध सहित निरदंदी।
श्री 'जिनचन्द' सूरि सूरीश्वर, चिर नन्दउ आणन्दी॥ ४॥

—*—

कविवर समयसुन्दर कृत

(४) खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव।
श्री 'खरतर' गुरु पट्टावली, नाम मात्र प्रभणुं मन रली ॥ १ ॥
उदयउ श्री 'उद्योतन' सूरि, 'वर्द्धमान' विद्या भर पूरि।
सूरि 'जिणेसर' सुरितरु समो,श्री'जिनचन्द सूरीश्वर'नमइ॥२॥
अभयदेव सूरि सुखकार, श्री 'जिनवल्लभ' किरिया सार।
युगप्रधान 'जिनदत्त सूरिंद', नरमणि मंडित श्री 'जिनचंद' ॥३॥
श्री 'जिणपति' सूरिश्वर' राय, सूरि जिगेसर प्रणमुं पाय।
'जिनप्रबोध' गुरु समरूं सदा, श्री 'जिनचन्द' मुनीश्वर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री 'कुशल' मुणिंद, श्री 'जिनपद्म सूरि' सुखकंद।
लब्धिवंत श्री 'लब्धि' सूरीस, श्री 'जिनचंद नमुं निसदीस ॥५॥
सूरि 'जिनोदय' उदयउभाण, श्री 'जिनराज' नमुं सुविहाण।
श्री 'जिनभद्र' सूरीश्वर भलउ, श्री 'जिनचंद सकल गुण निलउ ॥६॥
श्री 'जिनसमुद्र सूरि' गच्छपती, श्री 'जिनहंस' सूरिश्वर यती।
'जिनमाणकसूरि' पाटे थयउ, श्री 'जिनचंद सूरिश्वर जयो ॥७॥
ए चउवीसे खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट।
ते पामइ मनवंछित कोडि, 'समयसुंदर' पभणइ करजोडी ॥८॥

इति श्री खरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिताच पं० समयसुंदरेण ॥ सुन्दर वड़े वड़े अक्षरों में लिखित।

(जय० भं० नं० २५ गुटका)

कविवर गुणविनय कृत

(५) खरतरगच्छ गुर्वावली

प्रणमु पहिलो श्री 'वर्द्धमान', बीजो श्री 'गौतम' गुण वान।
त्रीजा श्री 'सुधरम' गणधार, चौथो 'जंबू' स्वामि विचार ॥१॥
पंचम श्री 'प्रभव' प्रभु थुणु, श्री 'शय्यंभव' छठो भणु।
'यशोभद्र' सत्तम गणधार, श्री 'सम्भूतिविजय' सुखकार ॥२॥
'कोसा' वेश्या वश नवि पडयो, 'थूलभद्र' मुझ मनमें चढयो।
दशम 'सुहस्तिसूरि' उदार, 'संपति' नृप प्रतिबोधनहार ॥३॥
श्री 'सुस्थित' मुनि इग्यारमो, 'इन्द्रदिन्न' बारम नितु नमो।
तरम 'दिन्नसूरि' दीपतो, 'सींहगिरि' सुर गुरु जीपतो ॥४॥
पनरम तेरम वागि जइलो, रूप कला साहइ दहलो।
दस पूर्व धर धीरो जिस्यो, 'वयरस्वामि' मुझ हीयडे वस्यो ॥५॥
सोलम त्रुवन जिण व्रत लीध, 'वज्रसेन' स्वामि सुप्रसिद्ध।
सतरम 'चन्द्रसूरि' मुणि चन्द, 'सामन्तभद्र सूरि' सुखकन्द ॥६॥
'देवसूरि' प्रणमु सुपवित्त 'कुमदचन्द्र' वाद जिण जित्त।
वीसमो श्री 'प्रद्योतनसूरि', जगि उद्योत कियो जिणि भूरि ॥७॥
सप्तभाव शान्तिस्तव' कारि 'मानदेव' गुरु महिमा धारी।
श्री 'देवेन्द्रसूरि' गुण निलउ, सिव पद जिण दखाव्यो भलो ॥८॥
'भक्तामर' 'भयहर' हित धरी, स्तवन कीयो जिण करुणा करी।
ते श्री 'मानतुंगसूरीश', 'वीरसूरि' राज तिसदीस ॥९॥

ढाल—श्री 'जयदेवसूरीसरु', पंचवीसम प्रभ जाणि रे।
'देवानन्द' वखाणियइ, छावीसम मनि आणो रे ॥ १० ॥ए०
एहवा सद्गुरु गाइये, मन शुद्धि करीय त्रिकालो रे।
संयम सरवरि झीलता, षटकाया प्रतिपालो रे ॥११॥ ए०
'विक्रमसूरि' दिवाकरु, तसु पाटि 'नरसिंह सूरि' रे।
श्री 'समुद्र सूरीश्वरु', महकइ सुजस कपूर रे ॥ १२ ॥ ए०
'मानदेव' त्रीसम हुयो, श्री 'विबुधप्रभसूरि' रे।
'जयानन्द' बत्रीसमो, राजइ सुगुण पडूरि रे ॥ १३ ॥ ए०
श्री 'रविप्रभ' रवि सारखो, तेजइ करि 'मतिमद्र' रे।
'यशोभद्र' चउत्रीसमो, पइत्रीसम 'जिनिभद्र रे' ॥ १४ ॥ ए०
श्री 'हरिभद्र' छत्रीसमो, सइत्रीसम 'देवचन्द्र' रे।
'नेमिचन्द्र' अडत्रीसमो, उदयो जाणि दिणन्द रे ॥ १५ ॥ ए०
ढाल:—श्री 'उद्योतन' मुनिवरु, श्री वर्द्धमान महन्तो रे।
'विमल' दण्डनायक जिणे, प्रतिबोध्यो जयवन्तो रे ॥१६ ॥
युगप्रधान गुरु जाणिवा ॥
'खरतर' विरुद जिणइ लह्यो, 'दुर्लभ' राज नी साखइ रे।
सूरि 'जिणेसर' जगि जयो, कीरति सवि जसु भाखइ रे ॥१७॥यु
श्री 'जिनचन्द्र' यतीसरु, 'अभयदेव' गणधारो रे।
नव अंग विवरण जिणि कीया, जिण शासन सिणगारो रे॥१८॥यु
ढाल:—चामुंडा जिणि बूझवी, श्रुतसागर तसु पाटइ रे।
श्री 'जिनवलभ' गुरु थया, महीयल मोटइ थाटइ रे ॥१६॥ यु०॥
जीती चौसठ योगिनी, जिणि श्री' जिनदत्तसूरि' रे।
नाम ग्रहण तेहनो कीयउ,विकट संकट सवि चूरइ रे ॥२०॥यु०॥

श्री 'जिनचन्द्र सूरीसर' साभलो, नरमणि मण्डित भालोजी।
तेहनइ पाटइ श्री 'जिनपति' थया, सकल साधु भूपाल जी।।२१।।धन०।।
धन धन श्रीखरतर गच्छ चिरजयो, जिहा एहवा मुनिराजो रे।
शुद्ध क्रिया आगम में जे कही, ते भाखइ मिर काजो जी ।।२२।।धन०।।
सूरि 'जिनेसर' सरस्वति मुख वसइ, जसु महिमा नो निवासो जी।
'जिनप्रबोध' प्रतिबोधन जे करइ, अमृत वचन विलासोजी ।।२३।।धन०
'श्रीजिनचन्द्र' यतीसर तेहथी, 'श्रीजिनकुशल' प्रधानोजी।
जसु अतिशय करि त्रिभुवन पूरियो, कुण हुवइ एह समानोजी।।२४।।ध
'बाल धवल सरस्वती' बिरुद करी, लाधो जिण विख्यातो जी।
'पद्म सूरीसर' तसु पाटइ थयो, लब्धि सूरि सुवदीतो जी ।।२५।।धन
श्री 'जिनचन्द्र' 'जिनोदय' यतीवरू, धीरम घर 'जिनराजो' जी।
श्री 'जिनभद्र' थयो सुविहित धणी, भवसागर वर पाजो जी ।।२६।।ध
'जिनचन्द्र' 'समुद्र' सूरीसर सारिखो, कुण हुवइ क्षवि गुण पूरि जी।
श्री 'जिनहंस' मुनीसर मानीयइ श्री 'जिनमाणिक' सूरि जी ।।२७
पातिसाहि अकबर प्रतिबोधीयो, अमर पडह जगि दिद्धो जी।
पचनदी जिणि साधी साहसइ, चन्द्र धवल जस सिद्धोजी ।।२८।।ध०
'युगप्रधान' पद साहइ जसु दीयो, श्री 'जिनचन्द' सूरिंदो।
उजारी 'खंभायत' माछली, चिरजयो जा रवि चन्दो जी ।।२९।।धन०
वीर थकी अनुक्रमि पट्ट हुआ, जे जे श्री गच्छ धारो जी।
नाम सही ते प्रभणय्या एहना, कुण पामइ गुण पारो जी ।।३०।।धन०।।
'जेसलमेरु' विभूषण 'पास' जी, सुप्रसादइ अभिरामो जी।
श्री 'जयसोम' सुगुरु सीसइ सुख, 'गुणविनय' गणि शुभ कामो जी।।३१।।
।। इति ।।

॥ श्री जिनरंगसूरि गीतानि ॥

॥ ढाल—हंसला गीतनी जाति ॥

(१)

मनमोहन महिमा निलउ, श्री रंगविजय उवझायन रे।
सेवत सुरतरु सम वडइ, सवहि कइ मनि भाय न रे ॥१॥म०॥
संवत 'सोल अठइत्तरइ', जेसलमेरु मंझारि न रे।
फागुण वदि सत्तमि दिनइ, संयम ल्यइ शुभ वार न रे ॥२॥म०॥
अनुपम रूप कला निला, ज्ञानचरण आधार न रे।
भवियण नर प्रति वूझवइ, परिहर विषय विकार न रे ॥३॥म०॥
निज गच्छ उन्नति कारणइ, श्री जिनराज सुरिन्द न रे।
पाठक पद दीयउ विधइ, प्रणमइ मुनि ना वृन्द न रे ॥४॥ म०॥
कुमति मतंगज केसरी, महिमागर मतिवन्त न रे।
मानइ मोटा महिपती, महिमा मेरु महन्त न रे ॥५॥म०॥
'सिंधुड़' वंश दिनेसरू, 'सांकरशाह' मल्हार न रे।
'सिन्दूर दे' उर हंसलउ, 'खरतरगच्छ' सिणगार न ॥६॥म०॥
वड़ शाखा जिम विस्तरउ, प्रतपउ जां रवि चन्द न रे।
"राजहंस" गणि वीनवइ, देज्यो परम आणंदन रे ॥७॥म०॥
॥ इतिश्री पाठक गीतम् , कृतं पं० राजहंस गणिना ॥

(२)

खरतर गच्छ युगराजियउ, थाप्यउ श्री जिनराज न रे ।
पाठक रंगविजय जयउ, सत्र गच्छपति सिरताज न रे ॥ १ ॥
भवियण वादउ भावस्यूं, जिम पावउ सुख सार न रे ।
रूप कला गुण आगलउ, निर्मल सुजस भंडार न रे ॥२॥ भ०॥
सरस सुकोमल देसना, मोहइ सहूय संसार न रे ।
कूड कपट हीयइ नहीं, सहुको नइ हितकार न रे ॥३॥ भ०॥
होडि करइ गुरु नी जिके, ते जायइ दह थोडि न रे ।
सुख पावइ त सामना, जे सेव करइ कर जोड़ि न रे ॥४॥ भ०॥
गुरु गुण गावइ मन सूरइ, नाम जपइ निसि दीस न रे ।
'ज्ञानकुशल' कहइ तेहनी, पूजइ मनह जगीस न रे ॥५॥ भ०॥

॥ युगप्रधान पद गीतम् ॥

(३)

'जिनराजसूरि' पाटोधरू, दमच्यार विद्या जाण ।
वचन सुधारस वरसतौ, मानें सहूको आण ॥ १ ॥
म री सही ए वादोनो, जिनरंग, वाणी मनमें रंग ।
वाणी गंग तरंग । मो०
पातिसाह परख्यो जेहने, दीधो करि फुरमाण ।
मान मोरे (सुवा ?) माहरो, करज्यो वचन प्रमाण ॥२॥ मो०॥
तसु पुत्र दीप पाटवी, 'दारा' स को सुल्तान ।
युगप्रधान पदनो तणो, करि दीधो निमाण ॥३॥ मो०॥

'नेमीदास' 'मोहन' साहोजइ, 'श्रीमाली' ज्ञाति सुजाण।
सा(वा?)ह पंचायण अति भलउ, गुरु राखी गुण जाण ॥४॥मो०॥
पैसारो बालिमांति तुं, कीधो निसाण रे काज।
हाथी निशनायां भला, पोहत गुरुवरी माहा ॥५॥मो०॥
बाजा वजाया नवा (?), नेजा दमाया नूर।
दान देइ याचक भणि, बादाणी रे पूर ॥ ६ ॥मो०॥
श्रीपूज आया उपासरे, श्री संघ सगले साथ।
मन रंग महाजन लोकनें, नालेर दीधा हाथि ॥७॥ मो०॥
गूहुव वधावे गोरडि, सुहवी गावे गीत।
फेट उवारे कापड़ा, राखै कुल री रीत ॥८॥ मो०॥
संवत 'सतरहाहोतरे', श्री संघ आणंद आण।
'युगप्रधान' पद थापीया, 'मालपुरे' मंडाण ॥९॥ मो०॥
वाड़ी सणा नद जीपनो, महिमा तणो भंडार।
दूर कीया दुरजन जिणइ, खरतर गछ सिणगार ॥१०॥मो०॥
धन मात जस 'सिंदूर दे', धन पिता 'सांकरसीह'।
धन गोत्र 'सिंधुड' परगड़ो, धन मोरी ए जीह ॥११॥मो०॥
'कमलरत्न' इम वीनवे, मुझ आज अधिक आणंद।
चिरजीवो गुरु ए सही, जां लगि ध्रु रवि चन्द ॥१२॥मो०॥

——*——

॥ श्री कमलहर्ष कवि कृत ॥

श्रीजिनरतनसूरि निर्वाण रास

सरसति सामणि चरण कमल नमी, होयडइ सुगुरु धरेवि।
श्री 'जिनरतन सूरीसर' गुरु तणा गुण गाऊं संखेवि ॥ १ ॥
'श्रीजिनरतनसूरीसर' समरियै ॥
मदियल मोटउ 'मरुधर' देस मइ, 'शुभ सरणा' गाम।
धूना(धनो?)रोक वसइ सुगीया जिहां, धरमी अति अभिराम ॥२॥श्री०॥
वसइ तिहां वर शाह 'तिलोकसी', चावउ चतुर सुजाण।
'ओसवाल' वंश उन्नति करू, जुगति करइ वखाण ॥ ३ ॥श्री०॥
तासु घरणि 'तारा दे' (दो) पनी सील्पनी सुचंग।
रूपवन्त शोभा सं आगलो, सरस सुकोमल अङ्ग ॥ ४ ॥श्री ॥
रतन अमोलख जिणइ जनमियो, कुल मण्डण कुल भाण।
मात पिता बन्धव सहु हरखिया, जाणइ राणो राण ॥ ५ ॥श्री०॥
'आठ वरस' नइ मन माहि उपनो, लघु वय पिण वैराग।
माया ममता सगली छाडिनै दिन २ चढतइ वान (भाग?) ॥६॥श्री ॥
श्री 'जिनराज सूरिश्वर' गुरु कन्हे, आणी मन आणन्द।
निज 'बाधव' 'माता' नीने मिली, लीधी दीख मुणिंद ॥ ७ ॥श्री०॥
शास्त्र अनेक भण्या थोडइ दिनइ बुद्धि तणइ विस्तार।
चउद वरस नइ सयम आव्यो सफल गिणी अवतार ॥ ८ ॥श्री०॥

निज उपदेशइ भविजन बूझवइ, करइ अनेक विहार ।
पाल्ह (?) मन सुधइ मुनिवर भलइ, चारित्र निरतीचार ॥ ९ ॥श्री०॥
गुण अनेक गुणी श्री पूजजी, संसाधि निज पाट ।
'अहमदावाद' नगर मांहि आविया, 'पाठक पद' उल्लास ॥१०॥श्री०॥
गुणे भलिया 'जयमल' 'तेजसी', अवसर लही एकन्त ।
आणंद सुं उच्छव कीधउ तिहां, खरच्यउ धन धरि खंत ॥११॥श्री०॥
'पाटण' नगरइ पूज्य पधारिया, चतुर रह्या चउमास ।
सूत्र सिद्धांत अनेक सुणावतां, सहु नी पूरइ आस ॥ १२ ॥ श्री०॥
संवत 'सतरइ सय' वरसइ भलइ, श्री 'जिनराज सूरिन्द' ।
सहहथ 'रतन सूरीसर' थापीया, मनि धरि अधिक आणंद ॥१३॥श्री०॥
'असाढ़ा सुदि नवमी' शुभ दिनइ, गिर निज पाटइ थापि ।
श्री 'जिनराज' सरगि पधारिया, त्रिविधि खमावि पाप ॥१४॥श्री०॥
श्री 'जिनरतन' तणी मानी सहु, देस प्रदेसइ आण ।
ठामि २ सिंघइ नेडावीया, गणिना जन्म प्रमाण ॥ १५ ॥ श्री० ॥

ढाल:—तूंगीया गिर शिखर सोहइ, एहनी ।
चउमासि पारण करी सद्गुरु, कीयो तेथी विहार रे ।
आविया 'पाल्हणपुरइ' पूजजी, कीयउ उच्छव सार रे ॥ १ ॥
आज धन 'जिनरतन' वांदा, गया पातक दूर रे ।
श्रीसंघ सगलउ मनि हरख्यउ, प्रकट पुण्य पडूर रे ॥२॥ आ०॥
'सोवनगिरी' श्री संघ आग्रहि, आवीया गणधार रे ।
पइसार उच्छव सबल कीधउ, मीठ (सेठ?) 'पीथइ' सार रे ॥३॥आ०॥

चउमास चारी तिन कीधी, पूजजी परसिद्ध रे।
 चउमास चौथी वले राख्या, संघ आग्रह किद्ध रे ॥१५॥ आ०॥
दिन दिन चढ़तउ सुजस महियल, गुण अधिकइ गच्छराज रे।
 दुत्तर दुखसायर पडतां, जगत जाणे जिहाज रे ॥ १६ ॥ आ०॥

करजोडी इम विनवुं एहनो ढाल:—

इण विधि इम रहतां थकां, पूजजी नइ होडोलइ असमाधि।
कारण जोगइ उपनी, करमे पिण हो हिव अवसर लाध ॥ १ ॥
तुम्ह विण पूजजी किम सरइ।
'आषाढ़ा सुदि दसम' थी, वपु वाधी हो वेदन विकराल।
ध्यान एक अरिहन्त नो, मनि राखइ हो छांडी जंजाल ॥ २ ॥ तु०॥
वइरागइ मन वालियउ, नवि कीधा हो ओषध उपचार।
संवेगी सिर सेहरो, 'चउरासी' हो गच्छ मइं श्रीकार ॥ ३ ॥ तु०॥
अल्प आउखो जाणीनइ, पोतानउ हो पूजजी तिण वार।
सइंमुख अणशण आदर्यो, सवि छंडी हो पातक आचार ॥४॥ तु०॥
क्रोध लोभ माया तजी, तजीया वलि हो आठे मद मोह।
पापस्थानक सवि परिहर्या, जगमांहि हो अति वधती सोह ॥५॥तु०॥
मन वचन कायाइं करी, वलि लागा हो व्रत ना दूषण जेह।
ते आलोयां आपणा, गच्छ नायक हो गिरुआ गुण गेह ॥ ६ ॥ तु०॥
सरण च्यारे उच्चरी, आराधी हो सूधा गुरु देव।
कलमल पाप पखालिनइ, पट् जीवन हो पाली नित मेव ॥ ७ ॥ तु०॥
जीव अनेक छोडाविया, याचक मिली हो धन खरची अनन्त।
दुखीयां दान दियउ घणो,धन २ धन हो मुनि लोक कहन्त ॥८॥तु०॥

संवत 'सतरइ' मय भलइ, इग्यारे' हो 'श्रावणि वदि सार'।
'सोमवार' 'मानम' दिनइ, सोभागी हो पहले पहर मंझार ॥६॥तु०॥
'चउरासी' लख जीवनइ, खमावी हो आलोइ पाप।
'हरपचाम'नइ हरखस्यु,निज पाटइ हो अविचलथिर थाप ॥१०॥तु०॥
निरमल चित नवकार नउ, मुखि कहना हो धरता सुभध्यान।
श्रीपूज्यजी सवेगी हो, पहुंता अमर विमान ॥ ११ ॥ तु०॥
करे अनोपम कोकही, माहीं मुखमल हो वड़ सूक विछाय।
चोया चन्दन अरगजा, कस्तूरी हो केसर चरचाय ॥१२॥ तु०॥
विधि विधि वाजित्र वाजता, वइसारी हो जाणे देव विमान।
हयवर गयवर हींसता, सहु लोकहु (हो)करता गुण गान ॥१३॥तु०॥

ढाल—वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा राय एहनी।

वइठो आमण दुमणो सोभागी,ए ताहरउ परिवार हो। सोभागी०।
परदेसी जिमि छांडिने सो०, जइये किम गणधार हो। सो०। १।
दरसण द्यो गुरु माहरा सो०,
सहु श्रावक श्राविका। सो०। जोवइ तुमची वाट हो। सो०।
ए वेला नहीं ढील नी सो०, सुन्दर रूप सुघाट हो। सो०। २।
वेला थइ वखाणनी सो०, मिलीया सहु रायराण हो। सो०।
आवी वइमो पूठीयइ सो०, वार म ल्यावो जाण हो। सो०। ३।
आवी वइठा एकठा सो०, पडिन पूछण काज हो। सो०।
वेगउ उत्तर द्यउ तुम्हे सो०, गरुआ श्री गच्छराज हो। सो०। ४।
एक वेली सुविचार नइ, वोलउ बोल रसाल हो। सो०।
वाट जोवइ जिम मेह नी सो०, उभा वाल गोपाल हो। सो०। ५।

इतना दिवस लगइ हुंती सो०, मन मइं सहु नइ आस हो। सो०।
तइं तउ भूल तिका करी सो०, चाल्या छोडी निरास हो। सो०।६।
शिष्य सहु वालावी नइ सो०, फेरयउ माथइ हाथ हो०। सो०।
ते वेला स्युं वीसरी सो०, करि बीजा नउ हाथ हो। सो०।७।
आवण अवधि न कही सो०, नाण्यउ मन मइ नेह हो। सो०।
अनवइ (?) जेम विचारी नइ सो०, छनमें दीधी छेह हो ॥सो०॥८॥
चउमासु पिण जाणि नइ सो०, संक न आणी कांइं हो।सो०।
अधविचइ म मकी करी सो०, कुण कहु छांडो जाइ हो।सो०।६।
देव विमाने मोहीयउ सो०, पूठी खबरि न कीध हो। सो०।
इहां तो लोभ न को हुंतो सो०, तिहां लोभइ चित दीध हो।सो०।१०।
आलस किण ही वात नउ सो०, नवि हुंतउ तिल मात हो। सो०।
दोप तुम्हारउ को नहीं सो०.............................॥११॥
मन थी भावन मूंकतउ सो०, एक समइ पिण एम हो। सो०।
ते पिण भाव विसारियउ सो०, बीजा सुं धरे प्रेम हो० ॥सो०।१२।
पल भर (पिण) सरतो नहीं सो०, पूज पखइ निसदीस हो। सो०।
जमवारोकिम जाइस्यइ सो०, महि मोटा जगदीस हो।सो०।१३।
खिण २ मइं गुण संभरइ सो०, आठ पोहर दिन राति हो। सो०।
कुण आगलि कहि दाखवुं सो०, तेहनी वीगत वात हो।सो०।१४।
वीसार्या निवि वीसरइ सो०, सदगुरु ना गुण गाम हो। सो०।
समरइ सहु साचइ मनइ सो०, नित नित लेइ नाम हो।सो०।१५।
परतिख इण पंचम अरइ सो०, सूरि सकल सिरताज हो। सो०।
तुझ सरिखउ जग को नहीं सो०, वइरागी मुनिराज हो।सो०।१६।

गच्छपति नो आगइ हुआ मो०, होस्यइ वलि इह जेह हो।मो०।
पिण नो सम संसार मइ मो०,नवि दीसइ गुण गेह हो।मो०।१९
यस्तनारर विग्ननिलउ मो०, सूत्र सिद्धान्त प्रवीण हो। मो०।
कलियुग माहे जुगना मो०, अधिको धरम धुरीण हो।मो०।१८
नई नड नाहरउ निरवाहीयउ मो०, जनम प्रइय समान हो।मो०।
मोहिण पम प्रन आदर्यो मो०,पाल्यउ मीहि समान हो।मो०।१९
त्रिभुवन मइ ताहरी क्षमा मो०, साराइं समार हो०। मो०।
वलि माहि इक तुं हुओ मो०, निरलोभो गणधार हो।मो०।२०
मंडियल मइ यश ताहरो मो०, कहता नावे पार हो। मो०।
गुण अधिका गच्छराम ना मो०, केता कहुं वखाण हो।मो०।२१
राम मरम इम आदिस्यउ मो०,पूज्य तणउ निरवाण हो।मो०।
भाव धरइ परमोद सु मो०, करज्यो खेम कल्याण हो।मो०।२२
'श्रावण सुदि इग्यारमइ' मो०, थिर शुभ थावर वार हो। मो०।
'मानविजय' सोम इम भणइ मो०,'कमलहरष'सुखकार हो।मो०।२३
अनि अयवनउ 'आगरइ' मो०, खरतर सब सुखकार हो। मो०।
गुरु संपत दइयो सदा मो०,धरि मन शुद्ध विचार हो।मो०।२४
भणता गुणता भावस्यु मो०, राम सरस इक चित्त मो०।
नवनिधि सिद्धि महिमा वधइ मो०,था(य)इ जन्म पवित्र हो।मो०।२५
॥ इति श्री श्री जिनरत्नसूरि निर्वाण राम समाप्तम्॥

सं० १७११ वर्षे कार्तिक सुदि ७ दिने सोम वासरे लिखत पाटण मध्ये मानजी कस्समी वस्य लिखत ॥ साध्वी विद्यासिद्धि साध्वी-समयसिद्धि पठनार्थ। पत्र ३

(बीकानेर बृहद्-ज्ञानभंडार)

श्री जिनरतनसूरि गीतानि

(१)

काल अनन्तानन्त एहनी ढाल—

'श्री जिनरत्न सूरीश', पूज वांदेवा हो मुझ मन छइ सही ।
देखण तुझ दीदार, आवइ चतुर्विध हो श्रीसंघ सामउ उमही ॥ १ ॥
गुरुया श्री गच्छराजा, खरतर गच्छ मई····पूज दीपइ सदा ।
प्रतपइ अधिक पडूर, जिण मुख दीठइ हो सुख होवइ मुदा ॥ २ ॥
'लुणिया' वंश विख्यात, साह 'तिलोकसी' हो कुल सिर सहेरउ ।
'तेजल' देवि मल्हार, हंस तणी परि हो सद्गुरु अवतर्यउ ॥ ३ ॥
'पाटण' नयर प्रसिद्ध, श्री 'जिनराजइ' हो सइं हथि थापीयउ ।
संवेगी सिरदार, अधिकउ जाणी हो गुरु पद आपियउ ॥ ४ ॥
मुख जिसउ पूनिमचंद, वाणि सुधारस हो निज मुख वरसतउ ।
करतउ उग्र विहार, भव्य जीवानइ हो नित प्रतिवोधतउ ॥ ५ ॥
ताहरी त्रिभुवन मांहि, मस्तक आणज हो मन सूधी धरइ ।
युगवर वीर जिणन्द, तेह तणी परि हो उत्कृष्टी करइ ॥ ६ ॥
(प्रण) मइ भवियण लोक, तुझ मुख देख्यां हो पाप सवे टल्या ।
'राजविजय' गुरु शिष्य, 'रूपहर्ष' भणि हो वंछित मुझ फल्या ॥ ७ ॥

(२) राग:—ढाल—नायकारी

श्री गच्छ नायक सेवियइ रे, 'श्री जिनरतन' सूरिंद रे। सुगुरुजी ।
पूज्य नइ वधावउ मोतिया रे लाल, आणी मन आणंद रे ।सुगुरुजी।१।

वाणी सुधारस वरसइ, सुणिवा कुं जन मन तरसइ। स०। ८।
इम 'खेमहरष' गुण बोलइ, पूज्यजी के कोइ न तोलइ। स०। ९।
(किरहोरमें श्राविका रजी पठनार्थ कविके स्वयं लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

(४) ढाल—पोपट पंखियानी

सुण रे पंथिया कब आवइ गच्छराज, सफल विहाणउ आज।
सरिया वंछित काज, भेट्या श्री गच्छराज।
सुणि रे पंथिया कब (आवइ) गच्छराज। आंकणी।
उभी जोवूं वाटडी, आइ कहइ कोई मुझ्झ।
सोवन जीभ वधामणी, देसुं पंथी हो तुझ। १। सु०।
सुमति गुपति धरता थका, पालइ शुद्ध आचार।
किरिया आचरता थका, साथइ बहु अणगार। २। सु०।
'लूणीया गोत्रइ दीपता, साह तिलोकसी जाणि।
'तारादे' जननी भली, सुत जनम्या गुण खानि। ३। सु०।
भावइ संजम आदर्यउ, जननी सुत सुखकाजि।
जिणवर भाषित मारगइ, दीख्या श्री 'जिनराज'। ४। सु०।
संवत 'सतरहिसइ' भलइ, मास 'आषाढ़' प्रमाण।
श्री 'जिनराजइ' थापिया, सुकलइ 'सप्तमि' जाणि। ५। सु०।
गामागर पुर विहरता, जलधर नी परि जाणि।
भवियण नइ पडिबोधता, भेटउ ऊगत भाण। ६। सु०।
'कनकसिंह' गणिवर कहइ, दिन दिन द्युं आसीस।
श्री जिनरतन सुरिंदजी, प्रतपउ कोडि वरीस। ७। सु०।

इति श्री गुरु गीतम् (पत्र १ हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि०)

आवउ तुम्ह इण देस मइ र लाल० । आ० ।
लूणिया' वसइ ल्यवनी रे, तिलोकसी' साह मल्हार रे।सु०।
'तारा' उरि हसलउ र लाल, कामगवी अनुहार र। सु०।२। आ०
श्री 'जिनराज सूरीसरइ' र, सउहथ दीधउ पा र।स०।
वड वरानी वइरागीयउ र लाल, कलि गौतम नउ घाट र।स०।३।आ०
शीलइ करि थूलभद्र समउ रे, रूपइ वइर कुमार रे।स०।
पालइ पच महाव्रत रे लाल, लोभ तउ नहीय लिगार र।स०।४।आ।
वाणी सुधारस वरसतउ रे, सजल जलद अनुहार र। स०।
आगम सूत्र अरथ भरयउ र लाल, श्री खरतर गणधार र।स०।५।आ
श्री सघ हरप अउइ घणउ रे, वदिवा तुम्हारा पाय र। स०।
तुझ मुख कमल निहालिवा र लाल, चाह धरइ राणाराय रे।स०।६।
'जिनराज' पाटइ चिर जयउ रे, सुहव द्यइ आसीस र। स०।
'खेमहरप मुनि इम भणइ र, लाल जीवउ कोडि वरीस र।स०।७।आ

(३) रागः—मल्हार, ढाल वइ लो री

'श्री जिनरतन' सूरिंदा, दीपइ मुख पूनिम चदा। सहगुरु वदउ वे।१।
'लूणीया' वस विराजइ, दिन २ ए अधिक दिवाजइ। स०।२।
'पाटण' मइ पद पायउ, सन आनद जन मन भायउ। स०।३।
'तिलोकसी' शाह मल्हारा, तारा द' उरि अवतारा। स०।४।
गुणे गौतम गणधारा, गुरु रूपइ वइरकुमारा। स०।५।
शीलइ तउ थूलभद्र साहइ, छत्रीस गुण मन मोहइ। स०।६।
आगम अरथ भंडारा, जिण शासण मइ सिणगारा। स०।७।

वाणी सुधारस वरसइ, सुणिग्रा कुं जन मन तरसइ। स०।८।
इम 'खेमहरष' गुण बोलइ, पूज्यजी के कोइ न तोलइ। स०।९।
(किरहोरसें श्राविका रजो पठनार्थ कविके स्वयं लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

(४) ढाल—पोपट पंखियानी

सुण रे पंथिया कब आवइ गच्छराज, सफल विहाणउ आज।
सरिया वंछित काज, भेट्या श्री गच्छराज।
सुणि रे पंथिया कब (आवइ) गच्छराज। आंकणी।
ऊभी जोवूं वाटडी, आइ कहइ कोई मुझ्झ।
सोवन जीभ वधामणी, देसुं पंथी हो तुझ्झ।१।सु०।
सुमति गुपति धरता थका, पालइ शुद्ध आचार।
किरिया आचरता थका, साथइ बहु अणगार।२।सु०।
'लूणीया गोत्रइ दीपता, साह तिलोकसी जाणि।
'तारादे' जननी भली, सुत जनम्या गुण खानि।३।सु०।
भावइ संजम आदर्यउ, जननी सुत सुखकाजि।
जिणवर भाषित मारगइ, दीख्या श्री 'जिनराज'।४।सु०।
संवत 'सतरहिसइ' भलइ, मास 'आषाढ़' प्रमाण।
श्री 'जिनराजइ' थापिया, सुकलइ 'सप्तमि' जाणि।५।सु०।
गामागर पुर विहरता, कलयर नी परि जाणि।
भवियण नइ पडिबोधता, भेटउ कनक भाग।६।सु०।
'कनकसिंह' गणिवर कहइ, दिन दिन द्युं आसीस।
श्री जिनरतन सुरिंदजी, प्रतपउ कोडि वरीस।७।सु०।
इति श्री गुरु गीतम् (पत्र १ हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि०)

॥ जिन रत्नसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

'श्री जिनचन्द सूरीसरू' रे, गच्छ नायक गुण जाण रे । सोभागी ।
महियल मइं महिमा घणो रे लाल, जाणइ राणो राण रे सो०॥१॥श्री०
सुन्दर रूप सुहामणो रे, वखतावर वड़ भाग रे । सो० ।
'बार वरस नइ ऊपनउ रे लाल,लघुवइ मति वइ राग रे सो०॥२॥श्री
श्री 'जिनरत्न' सूरीसर आपियउ रे, सइं हथ संयम भार रे ॥सो०॥
श्री संघइ उच्छव कियउ रे लाल, 'जेसलमेर' मझार रे सो० ॥३॥श्री
गोतम जिम गुण गहगहइ रे, साइ 'सहसमल' नन्द रे । सो० ।
'गणधर गोतइ' गुण निलो रे लाल,दरसण परमानन्द रे । सो॥४॥श्री
श्री 'जिनरत्न सूरीसरइ' रे, दीयउ अविचल पाट रे । सो० ।
वधतइ वरस 'अढार' मइ रे लाल, सेवइ मुनिवर थाट रे ।सो॥५॥श्री
'सिन्दूर दे' सुत चिर जयउ रे लाल, गच्छ खरतर सिणगार रे ।सो०।
शीतल चन्द तणी परइ रे लाल, संवेगो सिरदार रे । सो० ॥६॥श्री०
श्री 'जिनरत्न' पटोधरू रे, सहुनी पूरइ आस रे । सो० ।
धर मन हर्ष ऊमाहलउ रे लाल, पभणइ 'विद्याविलास' रे ।सो०॥७॥श्री

॥ इति श्री वर्तमान श्री जिनचन्द्र सूरि गीतम् ॥
॥ साध्वी रत्नमाला वाचनार्थम् ॥

(२)

श्री'जिनचन्द' सूरीश्वर वंदीयइं रे, गरुयउ गछपति गुणमणि गेह रे ।
मोहनगारी मूरति ताहरी रे, घडीय विधाता सइंहथि एह रे । १।श्री०
वदनि कमल सरसति वासउ कीयो रे,
अड सिद्धि आवि रही जसु हाथि रे ।

कर दाहिण सिर थापइ जेहनइ रे,ते नर पामइ वछित आथि रे ।३।श्री०
ईति उपद्रव कोन हुवइ किहा रे, जिहा किणि विचरइ श्री गछराज रे।
घरि २ मगल होइइ नवनवा रे, जावइ भावठि सगली भाज रे ।३।श्री०
धन धन श्रावक नइ वलि श्राविका रे भावइ आवि सुणइ उपदेस रे।
पामी धरमलाभ गुरु आसिका रे,शाता सुखनउ जाणि निवेस र ।४।श्री०
जोता नयण वाल्हा गच्छपति रे, ते नावइ जुगवर ताहरी जोडि रे।
रजुया कोडि मिलई जउ एकठा रे,तउकिम थायइ सूरिज होडि रे।५।श्री०
श्री जिनरत्न' आदेसइ आविया रे, रगइ 'राजनगर' चउमास रे।
वयणे * सगुरु तणे पदवी लही रे चिहु दिशि प्रगटयउ पुण्य प्रकाश रे ।६।
'नाहटा वशइ' जइमल 'तेजसी र,देव गुरू भगती माता तास रे ।
हरखइ 'कमलूरा' उछव करी रे, शोभा वधारी जगमइ खास रे।७।श्री०
कुल उजवालक 'गणधर' गोतमइ रे,'सहस करण' सुपीयार दे' नद रे।
सुप्रसन्न हुइ जोवइ जिण सामुहउ रे तेहना जावइ दोहग दद र ।८।
ध्रु शशि गिर अविचल जालगइ रे, ता लगि प्रतपउ गच्छाधीश रे।
वाचक'रूपहरप'सुपसाउले र,'हरषचन्द' पभणइ अधिक जगीस र।६।

इति श्री गुरु गीतम् (स० १७३० आसू वदि ८ बीकानेरे लि० पत्र २ हमार सग्रहम)

(३)

जीहो पथी कहि सदेसडउ, जीहो पूज्यजी नइ पाइ लागि । जीहो० ।
गुरु दरसण तू देखता जीहो, जागस्यइ तुग भागि । १ ।

---

*मानजीकृत गीतम भी
सइमुख (इ)श्रीपूजजी रे, अमृत पदवी वाणि ।
पाटइ एहनउ थापज्यो रे, करेज्यो वचन प्रमाण । ४ । मे० ।

चतुर नर वंदु श्री 'जिनचन्द्र'
जीहो अमृत श्रावणी देस ना , जीहो सांभलता दुख जाय ।
जीहो तिण कारणि तूं जाई नइ.जोहो करेज्यो वचन प्रमाण ।२।जी०।
वचन प्रमांण कीधा हुंता जी, घर माहि नवि निधि थाइ । जी० ।
गुरु प्रणम्यां सुख संपजइ, जीहो कुमति कदाग्रह जाइ । ३ । जी०
'वीकानयरइ' जाणीयइ रे, जी० बहु रिधिनउ भंडार । जी० ।
तिणगाम मांहि दीपतउ जी, 'सहसकरण' सुखकार । ४ । जी० ।
'राजल्दे' कुखि उपनउ जी हो, नामइ 'श्री जिनचन्द' । जीहो ।
वइरागि तिणि व्रत लीयउ, मनि धरि अधिक आणंद । ५ । जी० ।
विद्या सुरगुरु सारिखउ जी हो, रूपइ वइरकुमार ।
श्री 'जिनरत्न' पाटइ सही, बहु सुखनउ दातार । ६ । व० । जी० ।
चिर जीवउ गछ राजीयउ, खरतर गछ नउ इन्द्र । जी० ।
पण्डित 'करमसी' इम कहइ जी, प्रतपउ जां रवि चन्द्र । ७ ।

---

(४)

सुगुरु वधावउ मूहव मोतियां, श्री 'जिणचंद' मुणिन्द ।
सकल कला करि शोभता, जाण कि पूनम चन्द ॥ १ ॥ सु० ॥
लघु वय संयम जिण लीयउ, सूत्र अरथ नउ जाण ।
पूज पद पायउ जिण परगडउ, पूरव पुण्य प्रमाण ॥ २ ॥ सु० ॥
'श्री जिनरत्न सूरि' सइ हथइं, श्री संघ तणइ समक्ष ।
पाटइ थाप्या हे प्रेम सुं, मति मन्त जाणि नइ मुख्य ॥ ३ ॥ सु० ॥
'चोपड़ा' वंशइ चिर जयउ, 'सहिसू' शाह सुतन ।
मात 'सुपियारे' जनमियउ, सहुको कहइ धन धन्न ॥ ४ ॥ सु० ॥
श्री 'जिन कुशल सूरि' सानिधइ प्रतिपउ कोडि वरीस ।
वधतइ दावइ गुरु वधो, 'कल्याणहर्ष' घइ आशीस ॥ ५ ॥ सु० ॥

(५)

पंचनदी साधन कवित्त

उछलती जल अकल बोल, कल्लोल छिलती।
वलती घडती वेल झाग अत्थाग झिलंती।
भमरेटे भयभीत भभकती तटे भिडती।
पडती जुडती पवन ज अनम जड उथेंडती।
जप जाप आप परताप जप, सुरि मंत्र सानिध सबल।
'जिनरतन' पाट 'जिणचन्द' जुगत, 'पच नदी' साधी प्रबल। १।
॥ कवित्त पचनदी साधी तिण समय रो (१८ वीं शताब्दी लि०)

वाचक अमरविजय गुण वर्णन

कवित्त

साच शील संतोष, साधु लछन सरुजाई।
बरपन अमृत बचन, विपुल विद्या वरदाई।
'उदयतिलक' गुरु आप, हरप सु दीयो बोप हित।
पुन्य थान निज परसि, चौपई कीयो विमल चित्त।
सज्जन सुभाव सुरु सु सदा, शास्त्र हेत बूझे सकल।
वाचक वदा वखनैत वर, 'अमरसिंह' तुझ यश अचल ॥१॥
(जयचन्दजी के भण्डारस्थ उपरोक्त पत्र से)

श्री जिनचन्द्रसूरि

(बाबू बहादुर सिंहजी नाहटा के सौजन्य से)
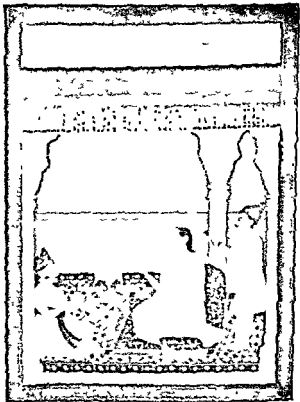
जिन सुखसूरि गीतम्

——**——

(१)

ढालः—रसोयानी

सहु मिलि सूहव आवउ मन रली, गावो गुरु गच्छराय । सोभागी० ।
विधि सुं वंदो 'जिनसुख सूरि' नइ, जसु प्रणम्या सुख थाय ।सो०।१।स
'वहरा' गोत्र विराजइ अति भला, 'रूपचंद' शाह मल्हार । सो० ।
'रतनादे' माता उर ऊपनउ, खरतरगछ सिणगार ।२। सो० ।सहु०।
श्री 'जिनचंद्र' सूरीसर सइंहथइ, थाप्या अविचल पाट । सो० ।
'सूरत' विंदर श्री संघ नी साखइ, सुविहित मुनि जन थाट ।३।सो०।
चारित लघुवय माहे आदरयउ, तप जप सुं वहु लीन । सो० ।
आगम अरथ विचार समुद समउ, विद्या चउद प्रवीण ।४।।सो०।।
सोभागी गुण रागी अति घणुं, वड वखती गुण खाणि । सो० ।
कठिन क्रिया सुविहित गछ साचवइ, मीठी अमृत वाणि ।।५।।सो०।।
सोम पणइ करि चंद सुहामणा, प्रतपइ तेज दिणंद । सो० ।
रूप कला करि अधिक विराजतउ, मोहइ भवियण वृन्द ।।६।।सो०।।
सूरि गुणे छत्तीसे शोभता, वड वखती वड मान । सो० ।
लोक महाजन माने वड वडा, राउ राणा सुलतान ।।७।।सो०।सहु०।
दिन २ वधतो दउलति सुं वधउ, कीरति देस प्रदेश । सो० ।
सुजस चिहुं खंड चावउ विसतरउ, आण अधिक सुविशेष । ८ सहु०।

सब मनोरथ पूरण सुरतरु, 'जिन सुखसूरि' महंत । सो० ।
इणपरि 'सुमतिविमल' असीस द्यइ, पूरवइ मननी रे खंति । ६सहु०।
॥ इति श्री 'जिनसुख सूरि' गीतम् , श्राविका जगीजी वाचनार्थं ॥

(तत्कालीन लि० पत्र २ हमारे संग्रहमें)

(२)

उदय थयो धन धन दिन आजनो, प्रगट्यउ पुण्य पडूरो जो ।
बड़ा आचारिज चढ़ती कला, नामे 'जिनसुख सूरो' जी ॥उ०॥१॥
'सूरत' शहरे हो जिनचद सूरिजी, आप्यो आपणो पाटो जी।
महोत्सव गाजे वाजे माडिया, गीतारा गहगाटो जी ॥ उ० ॥ २
'पारिख' शाह भला पुण्यातमा, 'सामीदास' 'सुरदासोजी'। •
पद ठवणो कीयो मन प्रेम सुं, वित्त खरच्या सुविलासो जी ॥उ०॥३॥
रूडी विध कीधा रानीजुगा, साहमी वत्सल सारो जी।
पहूरू ते कीधी पहिरावणी, सहु सघ नइ श्रीकारो जी ॥ उ० ॥ ४ ॥
संवत 'सतरै बासठे' समै, उच्छव बहु 'आसाढो' जी ।
'सुदि इग्यारस' पद महोत्सव सज्यो, चढ़ कला जस चाढ़ो जी ॥उ॥५
'सहि चा' 'बूरा' अति सलहिये, 'पीचो' नस परमसो जी ।
मात पिता 'रूपचद' 'सरूपदे', तेहनइ कुल अवनमो जी ॥ उ० ॥६॥
प्रतपो एहु घणा जुग गच्छपति, श्री 'जिनसुख सुरिन्दो' जी ।
श्री धरमसी' कहुं श्री सघ नइ, सदा अधिक करो आणंदो जी ॥उ०॥७

——

जिनसुखसूरि निर्वाण गीतम्

(३)

ढाल—झूंबकडानी

सहीयां चालौ गुरु वांदिवा, सजि करि सोल सिंगार ।
सहेली भाव सुं केसर भरीय कचोलडी, महि मेली घनसार ।स०।१।
'सतरैसे असीयैं' समै, 'जेठ किसन' जग जांण । स० ।
अणशण करि आराधना, पाम्यौ पद निरवांण । स० । २ ।
'जिनचन्द सूरि' पाटोधरू, 'श्री जिनसुख सूरिन्द' । स० ।
दरसण दौलति संपजै, प्रणम्यां परमाणंद । स० । ३ ।
पद थाप्यौ निज हाथ सुं, 'श्री जिनभक्ति' सूरीस । स० ।
सरचैं संघ धन खांति सुं, इह कहै आसीस । स० । ४ ।
'रिणी' नगर रलीयामणो, श्रावक सहु विधि जांण । स० ।
देस प्रदेसै दीपता, मन मोटैं महिराण । स० । ५ ।
थूंभ तणी थिर थापना, मोटैं करै महिराण । स० ।
हरष धरी संघ हेतु सुं, आसत अधिकी आण । स० । ६ ।
'माह शुक्ल छठ्ठ' नै दिनैं, शुभ महूरत सोमवार । स० ।
'श्री जिनभक्ति' प्रतिष्ठिया, हरख्या सहू नर नार । स० ।७।
साहिब सोहलो सवि मिली, पहिर पटम्बर चीर । स० ।
गुन गावौ गहराय ना, मेरु तणी परं धीर । स० । ८ ।
नामैं नवनिधि संपजै, आरती अलगी थाय । स० ।
कर जोड़ी 'चेनजी' कहै, तुलि र लागे पांय ।। सहेली भाव सुं० ६ ।।

जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल:—आयाडे मेरू आवे ए देशी।
'जिनभक्ति' जतीसर वंदो, मदगो कला दीपति चंदो रे। जि०।
खरतर गच्छ नायक राजे, छत्रीस गुणे करि छाजे रे। १। जिन०।
श्री 'जिणसुख सूरि' मनाये, दीधौ पद आपणें हाथे रे। जि०।
श्री 'रिणीपुर' संघ सवायो, महोछव कीयो मन भायो रे। २ जि०।
'सेठीया' वंसे सुखदाई, श्री जिन धर्म सोभ सवाई रे। जि०।
'हरिचन्द' पिता धर्मधोरी, 'हरिसुखदे' उदरे हीरो रे। ३। जि०।
लघुवय जिण चारित लीधो, सद्गुरु नें सुप्रमन्न कीधो रे। जि०।
विद्या जसु हुइ वरदाइ, पुन्यै गुरु पदवी पाई रे। ४। जि०।
प्रगटयौ जश देस प्रदेसें, वरते आज्ञा सुविसेसे रे। जि०।
वाटै सहु देस बधाइ, खरतर गच्छपति सुखदाई। ५। जिन०।
संवत 'सतरै उगुणयासी, जेष्ट वदि त्रीज' पुण्य प्रकासी रे। जि०।
सहु सुजस रिणी सत साध्या, इम कहे 'धर्मसी' उवझाया रे। ६ जि०

श्री जिनभक्तिसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥वाचनाचार्य सुखसागर गीतम्॥

राग —कड़खारी

वाचनाचार्य 'सुखसागर' वंदियै,
सुगुण सोभाग जसु जगि सवायो ।
अङ्ग उच्छरङ्ग धरि नारि नर नित नमै,
कठिन किरिया करण इलि कहायो ॥ १ ॥ वा० ॥

पूज्य आदेश वलि 'थंभणो' वांदिवा,
नयरि 'खंभाइतै' अधिक सुख वास ।
संघ नी आण सुप्रमाण करि पड़िकम्या,
चतुर चित चंग सूं चरम चौमास ॥२॥वा०॥

करिय चौमास अति खाश आणंद सूं,
निज वचन रंजव्या सकल नर नारी ।
ज्ञान परमाण निज आयु तुच्छ जाणिन,
साधु व्रत साचवइ वलिय संभारि ॥ ३ ॥ वा० ॥

प्रथम पोरसि अनै वलिय (सं० १७२५) 'मिगसर', तणी
'कसिण चवदस' अनै 'सोम' (शुभ) वार ।
ऊंचो चढूं एहवउ वयण मुख सुं कह्यो,
ऊंच गति जाणना एह आचार ॥ ४ ॥ वा० ॥

करिय अणसण अनै वलिय आराधना,
सकल जीव राशि शुभ चित खमावी ।
मन वचन काय ए त्रिकरण शुद्ध सुं,
भाव धरि भावना बार भावी ॥ ५ ॥ वा० ॥

एक मन भजन भगवंत नउ करतहिं,
सुणतहिं उत्तराध्ययन वाणि ।
मातचेत आप श्री संघ वैठा थका,
स्वर्ग गति लहिय पुण्यवन्त प्राणी ॥ ६ ॥ वा० ॥
वादिया गजणो सकल जग रजणो,
प्रगट घट ज्ञान बहु आण पूरो ।
दु ख दालिद्र हरि सुख सम्पति करइ,
सुप्रसन्न सेवका हुइ सनूरो ॥ ७ ॥ वा० ॥
भाग बड भेटयइ राग मन लाइ नइ,
गाइ नइ सुगुण शोभा वडाई ।
कुकम चमर पूजना पादुका अधिक,
घरि ऋद्धि नव निद्धि आई ॥ ८ ॥ वा० ॥
संघ सुखदाय मन लाय सुख सागरा,
नागरा नित नमइ शीस नामी ।
गणि 'समयसुन्दर' नित सुगुरु गुण गावता
सिद्धि नव निद्धि बहु वृद्धि पामी ॥ ६ ॥ वा० ॥
॥ इति गुरु गीतम् ॥

हीरकीर्त्ति परम्परा

॥ कवित्त ॥

'पद्‌महेम' गुरु प्रवर, सदा सेवक सुख आपै ।
'दानराज' दिल साच, सेवतां संकट कापै ॥
'निलय सुन्दर' वाचक सुगुरु, साहिब सुखकारी ।
'हर्षराज' गुणवन्त, 'हीरकीरति' हितकारी ॥
पांचे सुगुरु पांच मेरु सम, पंचालुत्तरनो परै ।
दीजियै सुख संतान रिद्धि, 'राजलाभ' वीनति करै ॥१॥
वाचक प्रवर 'राम जो', वड़ो मुनिवर वखतावर ।
नामै नवनिधि होइ, 'राजहर्ष' गुण आगर ॥
पण्डित चतुर प्रवीण, जुगति जाणन जोरावर ।
'तिलक पद्म' 'दानराज,' 'हीरकीरति' पाटोधर ॥
इम ऋद्ध वृद्धि आणंद करो, सुख सन्तति द्यो संपदा ।
'राजलाभ' कहै गुरु जी हुज्यो, सेवक नुं सुप्रसन्न सदा ॥२॥
॥ संवत् १७५० वर्षे मिती माघ सुदि ५ दिने ॥
॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

वा० हीरकीर्त्ति स्वर्गगमन गीतम्

श्री 'हीरकीरति' वाचक प्रणमो, सुर मणि सुरतरु सुरधेन समो।
अरियण दुख दोहग दूरि गमइ, घरि नवनिधि लिखमी रंग रमइ।१।
सुख सम्पति दायक उपगारी, सेवक जन नइ सानिध कारी।
लवधइ गुरु गोयम गणधारी, नित ध्यान धरू हु बलिहारी।२।
गुरु चरण करण बहु व्रत पालइ, तप जप करि असुभ करम टालइ।
पूरव मुनिवर मारग चालइ, निज देव सुगुरु मनि समालइ।३।
श्री 'गोलछा' वंसइ दीपइ, तेजइ करि दिनकर नइ जीपइ।
महियल महल महिमा जागइ, सेवक लुलि पावे लागइ।४।
छित्तीस सरय गुण भंडार, छ(व) काय वछल प्रति हितकार।
सुमिनी अज्जव मद्दव सार, मुत्ती सजम तप निरधार।५।
अगदीरउ न लीयइ साच वदइ, आकिंचन (दस) विह सील हवइ।
आहार तणा दूषण टालइ, बइतालीस सुद्धि क्रिया पालइ।६।
श्री जगगुरु जिनचन्द तणइ, महिमा जस वाम समार थुणइ।
गणि 'हेमराज' पाटे उदयो, वाचक वर 'हीरकीरति' जयो।७।
सवत मतरइ गुणतीस' समइ, रहिया चौमासउ अन समय।
'श्रावण सुदि चम्म' ओधाणइ' ज्ञानइ करि आऊखो जाणइ।८।
चोरासी योनि खमावि सहू, लय पाप अढार आलोय बहू।
अपने मुख अणशण आदरीयो, निज चित्तमें ध्यान धरम धरीयो।९।
नवकार महामत्र सभाली, गनि असुभ करम दूरे टाली।
अणशण पहुर नि आराधी, सुद्ध ज्ञानइ सुर पदवी लाधी।१०।

सतरइ 'गुणतीसइ' 'माह' मासइ, 'तेरस' दिवसइ मन उल्हासइ।
'वदि' महुरत शशि सुभ वार, पगला 'थाप्या' जयजय कार। ११।
श्री 'पद्‌महेम' वाचक प्रवरु, श्री 'दानराज' सोहाग करु।
श्री 'निलयसुंदर' 'हरषराज' मुदा, प्रणमो श्री 'हीरकीरति' सदा।१२।
पांचे गुरुना पगला सोहइ, (पंच) परमेसर जिम मन मोहै।
समयां सेवक दरसण दीजै, सुख संतति उदै उन्नति कीजै। १३।
पांचे गुरुगा पूज्यां ! पगला, दुख आरति रोग ! टलइ सगला।
घरि वइठां आइ मिलइ कमला, गुरु तूठां थोक सहू सवला। १४।
पय पूजो गुरु हिय भाव करी, केसर चन्दन सु चित्त धरी।
सदगुरु सुपसायइ रंगरली, लहे पुत्र कलत्र समृद्ध वली। १५।
दिन दिन आणंद सुमति दाता, गुरु चरणे अहनिस जे राता।
मनवंछित पूरण कामगवी, सेवक सुखदायक अधिक छवी। १६।
साचउ साहिब तुंहिज मेरो, हुं खिजमतगार भगत तेरो।
सुपसायइ गुरु नव निह संप(ज)इ, गणि 'राजलाभ' सेवक जंपइ। १७।

॥ इति श्री ॥

उपा० भावप्रमोद स्वर्गगमन गीतम्

नं० १

जिम्रौ भाव जोगी जती जोग तत्त जागतौ, वैण वखाणतौ अमृत वाणि ।
साझायो निम्रौ अवमाण २ सिउ, जपे अरिहंति मनि अति जाणी॥१॥
व्याकरण तर्क सिद्धन्त वदन्त री, जोह वदनी सदा मेद जुओ ।
भाव शिष 'भाव परमोद' चो भाव सुद्ध,
हु तौ आछो निम्रौ मरण हुओ ।।२॥
गछे चोरासीये न छै कोइ ईये गुणि, श्रवण सुनीयो न को एम सीयो।
(भावपरमोद) जिम सुखा भगवन्त भणे,
लीया जस राह स्वर्गलोक लीयो ॥३॥
वरसि 'जुग वर मुनि इन्द्र १७४४ 'गुरु' 'माह वदि',
वार अरियात जुग मान अचिमी ।
यह पाठक तणी धणी महिमा वसु,
रात दिन वडा कवि पात रचिसी ॥४॥

नं० २ कड़खामें

विरद वखाणी जे जी 'भावपरमोद' कुल रो भाण ।
जग माहि जाणिजे जी, परधान पुरष प्रमाण । टेक
परधान सुजस निधान प्रगटउ, वाधते सुखि वान ।
असमान मान गुमान अमली, माण दीयण सु दान ।
जनथा नाथणा तडण अनटा, पूजने निज प्राण ।
दीपतो सरव गुण जाण दीपे, खरतरे दीवाण ॥१॥वि०॥

व्याकरण वेद पुरांण वदतो, सकल जैन सिद्धन्त ।
ब्रह्मज्ञान आतम धरम वित्त, उपधान जोग विधन्त ।
आगम पेंतालीस अरथे, कथे कांइ न कांण ।
पाठक पदवी धार पृथि(वि) में, एहवै अहिनाण ॥ २॥ वि० ॥
थूलभद्र नारद जिसौ धीरम, सील सत्त सरुप ।
'जिनरतन' सूरि पडूरि जैनू, इखै बुद्धि अनूप ।
तिम 'चंद' रै विण छंदि चलतो, वडिम आगेवाण ॥
पाट पति छत्रपति पाव पूजैं, रीझवै रावराण ॥ ३ ॥ वि० ॥
'जिनराज सूरि' जिहाज जिन धरम, भट्टारक मुनिभूप ।
शिष्य तास 'भावविजै' समो भ्रम, गच्छ चोरासी रूप ।
'भाव विनय' तिणरै पाट भणिजै, वडिम गुग वखांण ।
एतलां वंस राजहंस ओपम, सलहिजै सुविहाण ॥ ४ ॥ वि० ॥
वांचतो वाणि वखांणि अविरल, अमृत धारा एम ।
नव नवा नव रस वचन निरुपम, जलहरां ध्वनि जेम ।
जस सुजस पंकज वास पसरी, प्रथ्वी रै परिमाण ।
रवि चंद नै ध्रू(व) मेरु रहिसी, सुजस रा सहिनांण ॥ ५ ॥ वि० ॥
जिण वाल वय ब्रह्म चारु चारित्र, लीयो जती व्रत योग ।
वय तरुण पण मन में न वंछया, भला वंछित भोग ।
सत पंच साबत नेम जत सत, वाचे रुद्र ब्रह्मांण ।
मुकीयो नहीं अरिहंत मुख हूं, अंत रै अवसाण ॥ ६ ॥ वि० ॥
आराधना सोधंत उचरै, शुद्ध सरणा च्यार ।
अति क्रोध कपट मिथ्यातमके, लोभ नहीं सिणगार ।

नहीं कोइ वैर विरोध किणसुं, मोह नहीं अतिमाण।
परलोक इंद्रपुरि पहोतो, पचखि भव (पच)खाण ॥ ७ ॥ वि० ॥
संवत 'सतरेसे चमाले', 'माह वदि' गुरुवार।
'पंचमि' तिथ वलि पहुर पिछलै, सीख मति करि सार।
भरि वीस लावो चरम भव चवी, देवता जिम ठाण।
तप जप चै परताप पर-भवि, पहुचस्यै निरवाण ॥ ८ ॥ वि० ॥
इति श्री भावप्रमोदोपाध्यायनामस्यावस्थायामुपरि अष्टक संपूर्ण।
(कृपाचंद्र सूरि ज्ञान भंडारस्थ गुटकेसे)

❀ जैनयती गुण वर्णन ❀

पेड़ तो समस्त न्याय ग्रन्थमें दुरस्त देखे,
फारसीमें रस्त गुस्त पूरे छत्रपती है।
निस्त करे तपको प्रशस्त धरे योग ध्यान,
हस्त के विलोकवे कु सामुद्रिक मती है।
पूत्र के गृहस्तके बखाने जु माहक हैं,
चुस्त है कलामें, हस्त करामात छती है।
'मेनसा' कहत षट्दर्शनमें रायरदार,
जैनमें जबर्दस्त ऐसे मस्त 'जती' है।
(१८ वीं शताब्दी लि० पत्र प्रय० भ०)

कविवर जिनहर्ष गीतम् ।
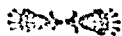
॥ दोहा ॥

सरसति चरण नमी करी, गास्युं श्री ऋषिराय ।
श्री 'जिनहरष' मोटो यति, समय अनुसार कहिवाय ॥१॥
मंद मतीने जे थयो, उपगारी सिरदार ।
सरस जोडिकला करी, कर्यो ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा, गुणवंता व्रत धार ।
तेहना गुण गातां थकां, हुइ सफल अवतार ॥३॥

वाडी ते गुडां गामनी ॥ देशी ॥

श्री जिनहरष मुनीश्वर गाईये, पाईये वंछित सीद्ध ।
दुसम काल मांहि पणि दीपती, किरिया शुद्धो कीध ॥१॥ श्रीजि० ॥
शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता मायारे मोस ।
रोस धरइ नही केहस्युं मुनीवरू, सुंदरु चित्तइ नही सोस
॥२॥श्रीजि०॥
पंच महाव्रत पाले प्रेमस्युं, न धरै द्वेप न राग ।
कपट लपेट चपेटा परिहरइ, निरमल मन में वइराग ॥३॥श्री॥
सरल गुणे दूरि हठ जेहनें, ज्ञाने शठता (र) दूरि ।
ममता मान नही मनि जेहने, समता साधु नु नूर ॥४॥श्री॥

मदमती न शास्त्र वचावना, आपना ज्ञान नो पथ ।
जोडिकला माहि मन राउनो, निरलोभी निग्रथ ॥५॥श्री॥
शत्रुजयमहातम आदि भला, तहना कीधा रे रास ।
जिन स्तुति छद छप्पया चउपई, कीधा भल भला भास ॥६॥श्री॥
निज शक्ति इम ज्ञान विस्तारीयु, अप्रमत्त गुणना निवास ।
ईर्या सुमति मुनिवर चालता, भाषासुमति स्यु भाष ॥७॥श्री॥
एषणासुमति आहारइ चित्त धरयु, नही किहाइ प्रतिबध ।
निरीह पणै मन लूखू जेहनु, नही को कलेशनो धध ॥८॥श्री॥
गच्छनो ममत्व नही पण जेहने, रुडा निस्पृह वन ।
शानो दान गुणे अलकरु, शोभागी सत्यवन ॥९॥श्री॥

(२)

श्रीजिनहरष मुनीश्वर वदीइ, गीतारथ गुणवत ।
गच्छ चुरासीइ जाणइ जेहने, मानइ सहु जन सत ॥१॥
पचाचार आचारइ चालता, नव विध ब्रह्मचर्यधार ।
आवश्यकादिक करणी उपमइ, करता शक्ति विस्तारि ॥२॥
आज कालिनार कपटी थया, माही डाक डमाल ।
निज पर आतमने धूतारता, एहवो न धरयोर चाल ॥३॥
आज नो ज्ञान अभ्यास अधिकउँ, किरिया तिहा अणगार ।
ते 'जिनहरष' माहि गुण घामीइ, निदे तेह गमार ॥४॥
आप मनी अज्ञान क्रिया करी ना(द?)हूकइ जिम माइ ।
हु गीतारथ इम मुख भाखता, मुलतु थाइर वाइ ॥५॥

कामिनि कांचन तजवां सोहिलां, सोहलुं तजवुं गेह ।
पणि जन अनुवृत्ति तजवी दोहली, 'जिनहरपइं' तजी तेह ॥६॥
श्रीसाहायिक पणि सुभ आवी मल्या, श्री'वृद्धिविजय' अणगार ।
व्याधि उपन्नइरे सेवा बहु करी, पूरण पुण्य अवतार ॥७॥
आराधना करावइ साधुनै, जिन आज्ञा परमाण ।
लख चुरासीरे योनि जीव मावतां, ध्याता रूडुंख ध्यान ॥८॥
पंच परमेष्टीरे चित्तइ ध्याइतां, गया स्वर्गे मुनिराय ।
मांडवी कीधोरे रुडी श्रावके, निहरण काम कराय ॥६॥
'पाटण' मांहिरे धन ए मुनिवरु, विचर्या काल विशेष ।
अखंडपणै व्रत अंत समइ ताइं, धरता सुभ मति रेख ॥१०॥
धन 'जिनहरष' नाम सुहामणु, धन २ ए मुनिराय ।
नाम सुहावइ निस्पृह साधनुं, 'कवीयण' इम गुणगाय ॥११॥

तिम माताना सहाय्यथी, गाजी मर्द 'देवचंद्र',
'देवविलास' रचुं भलुं, खरतरगच्छे दिणंद ॥ ९ ॥
कोइ देवाणुप्रिय कहे, ए स्तवना करे किम,
स्या ? गुण जोइ वरणवे, श्युं? वोले जिम तिम ॥ १० ॥
पंचमकाले 'देवचंद' ना, गुण दाखिवनें यत्र,
यथार्थपणे (कहो) मुज प्रतें, तो सत्य मानु अत्र ॥ ११ ॥
सांभलि मूढशिरोमणि, अछता गुण कहे जेह,
प्रशंस किम कोविद करे, गुण कहुं सांभलि तेह ॥ १२ ॥
पंचमकाले 'देवचंद्रजी', गंधहस्ति जे तुल्य,
प्रभावक श्रीवीरनो, थयो अधुना वहुमूल्य ॥ १३ ॥
रत्नाकरसिंधु सदृश, चतुर्विध संघ जिन भूप,
कही गया ते सत्य छे, सांभल तास स्वरूप ॥ १४ ॥

ढाल—कपुर होये अति उजलुंरे ए देशी।

श्री देवचंद्रजीना गुण कहुंरे, सांभल ! चतुर सुजाण।
घटता गुणनी प्ररूपणारे, कहेवाने सावधानरे।
भविका सांभलो मूकी प्रसाद । टंक। ॥ १ ॥
प्रथम गुणे सत्य जल्पनारे१, वीजे गुणे बुद्धिमान।
त्रीजे गुणे ज्ञानवंततारे३, चोथे शास्त्रमें ध्यानरे ४ ।भविका०। सां० ।२।
पंचम गुणे निःकपटतारे५, गुण छट्ठे नही क्रोध६।
संजल नो ते जांणीयेरे, नही अनंता नी योधरे ।भवि०॥ सां० ॥३॥
अहंकार नही गुण सातमेरे, ७ आठमे सूत्रनी व्यक्ति ८।
जीवद्रव्यनी प्ररूपणारे, जाणे तेहनी युक्तिरे ॥ भ० ॥ सां० ॥४॥

मारि उपद्रव टालीओ रे, अष्टादशे गुणे जेह १८
देश देशे गुण कीर्त्तिनी रे, प्रवर्त्त विख्यातनुं गेह रे। भ०। सां०। १६।
एकोनविंशति गुणगणे रे, आजानबाहु देवचंद्र १६।
क्रिया उद्धार वीसमे गुणे रे, अवधि जाणे सुरेन्द्र रे। भ० ।सां० ।१७।
जिम शेषनागने शिरमणि रे, तेहना गुण छे अनन्त।
तिम देवचंद्र मणि मंजुरे,(मस्तकेरे)एकवीस गुण महंत रे।भ०।सां०।१८।
प्रभाविक पुरुष आगे थयारे, अधुना तेहने तुल्य।
ए गुण बावीस स्थूलतारे, सूक्ष्म गुण बहुमूल्य रे। भ०। सां०। १६।
पढम ढाल ए गुणतणी रे, कवियणे भाखी जेह।
अल्पभवी हस्ये ते सद्दहेरे, एहवा पुरिस थोडा जगरेहरे ।भ०।सां०।२०

दुहा—

प्रथल ढाल ए गुणतणी, कवियण भाखी जेह,
विपक्षीने जाणवा, मनमें जाणे तेह। ॥ १ ॥
गुणतो सर्वत्र प्रगट छे, देश विदेश विख्यात,
कवियणनी अधिकाइता, स्युं ? एहमे छे वात। ॥ २ ॥
कवियण कहे एक जीभतें, किम गुणवर्णन जाय,
सागरमें पाणी घणो, गागरमें (न) समाय ॥ ३ ॥
वली कोइ भवि पुछस्ये, कवण ज्ञाति कुण जाति,
मातपिता किहां एहनां, ते संभलावो भांति ॥ ४ ॥
देश किहां किहां जन्मभू, कुंण गुरुना ए शिष्य,
कुण श्रीपूज्य वारे हुवा, भलो उलटे लीधि दीक्ष ॥ ५ ॥

विद्याविशारद किहां थया, किम सरस्वती प्रसन्न,
किहां साधना कीधी भली, सुणता चित्त प्रसन्न ॥ ६॥
देवचन्द्रना वचनथी, किम खरचाणो द्रव्य,
किम भूपति पाये नम्या, ते विरतत कहु भव्य ॥ ७॥
सर्व गुण गणनी वारता, भाखे कवियण जेह,
साभलजो भविजन तुम, पावन थाये देह ॥ ८॥

देशी हमीरानी ।

थाली आकारे थिर भलो, जम्बुद्वीप विदीन । विवेकी ।
तह म भरतक्षेत्र रम्यना, आरज देश सुप्रवीन ॥ वि० ॥ १ ॥
भविषण भाव धरी सुणो ॥ वि० ॥
मरुस्थल देश तिहां सुन्दर, तेह मे 'विकानेर' द्रग ॥ वि० ॥
तहने निकट एक रम्यता, ग्राम अछे सुभ चग ॥ वि० ॥ २ ॥ था० ॥
रिद्धिवन महाजन घणा, रिद्धिकरी समृद्ध, ॥ वि० ॥
अमारीशब्दनी घोषणा, सुणीआ जन सुबुद्धि ॥ वि० ॥ ३ ॥ था० ॥
'ओसवश' ज्ञाति जाणीय, 'लुणीयो' गोत्र सुजात ॥ वि० ॥
साह श्री 'तुलसीदासना', धर्मबुद्धि विख्यात ॥ वि० ॥ ४ ॥ था० ॥
'तुलसीनाम' नी भार्या, 'धनबाइ' पुन्यवत । विवेकी ।
शील आचार सोभतो, सत्यवक्ता क्षमावत ॥ वि० ॥ ५ ॥ था० ॥
यथाशक्ति व्रत विरचता, व्यवहारतु जे धाम ॥ वि० ॥
दम्पती प्रीतिपरम्परा, धर्मे खरचे दाम ॥ वि० ॥ ६ ॥ था० ॥
सुविहितगच्छमे जामली, वाचकमें शिरदार ॥ वि० ॥
वाचक 'राजसागर' सुधा, जैन काजी मनोहार ॥ वि० ॥ ७ ॥था०॥

अनुक्रमे गुरु तिहां आवीया, वांदवा दम्पति ताम ॥ वि० ॥
'धनवाइ' श्री गुरुने कहे, सुणो गुरु सुगुणनुं धाम ॥ वि०॥ ८॥था०॥
पुत्र हस्ये जेह माहरे, वोहरावीस धरी भाव ॥ वि० ॥
यथार्थ वयण नी जल्पना, सुगुरुये जाण्यो प्रस्ताव ॥ वि० ॥९॥था०॥
विहार करे गुरु तिहां थकी, गर्भ वधे दिन दिन ॥ वि० ॥
शुभयोगे शुभमुहूरते, सुपन लह्युं एक दिन ॥ वि० ॥ १० ॥ था० ॥
शय्यामें सुतां थकां, किंचित् जागृत निंद ॥ वि० ॥
मेरु पर्वत उपरे, मिली चौसठ इन्द्र ॥ वि० ॥
जिन पडिमानो ओछव करे, मिलीया देव ना वृन्द ॥वि० ।११ ।था०।
अर्चा करता प्रभुतणी, एहवुं सुपने दीठ ॥ वि० ॥
अैरावण पर वेसीने, देता सहूने दान ॥ वि० ॥ १२ ॥ था० ॥
एहवुं सुपन ते देखीने, थया जाग्रत तत्काल ॥ वि० ॥
अरुणोदय थयो तत्क्षिणे, मनमें थयो उजमाल ॥ वि० ॥१३॥ था०॥
उत्तम सुपन जे देखीउ, पण प्राकृतने पास ॥ वि० ॥
कहेवुं मुजने नवि घटे, जे बोले तेह फले आस ॥ वि० ॥१४॥था०॥
दृष्टांत इहां 'मूलदेव नो, सुपन लह्युं हतुं चन्द्र ॥ वि० ॥
मुखकजमें प्रवेशतां, ते थयो नरनो इन्द्र ॥ वि० ॥ १५ ॥ था० ॥
जटिल एके ते चंद्रमा, मुखमें करतो प्रवेश ॥ वि० ॥
मूरखने फल पुछतां, भोजन लह्युं सुविवेक ॥ वि० ॥ १६ ॥ था० ॥
यादृश तादृश आगले, सुपन तणो अवदात ॥ वि० ॥
कहे (ते)ने पश्चात्ताप उपजे, ए शास्त्रे विख्यात । वि० । १७ । था०।

अनुक्रमे विहार करतायका 'श्री जिनचंद' सूरीश। ॥वि०॥
नहु गामे पधारीया, जहनी प्रबल जगीस। । वि० । १८ ।था०
श्रिमिन्द वद न्पनि धनवाइ कहु तास। । वि० ।
हम्न नञा स्वामी सुजनगो, आगल सुतनु धाम(वास?)।वि० १९ था०
एक पुत्र निरमन छ अन्य सगर्भा दाठ। । वि० ।
उनन्त जागाआ पुत्र हुओ हन इष्ट। । वि० । २० ।था०
ए वाचा पुत्रने अम दजा, पग वाचकने दीधु वचन । वि० ।
नासा ढालम कवि कहु मन मा(न्या) नातु मन्न। ।वि० २१।था।

दूहा:—सोरठा

न्पना आ गुरुपास करजोडी करे विनती,
तुम उपर विश्वास, यथार्थ कहो श्रीस्वामीजी ॥ १ ॥
सुनाः पायना ग्रन्थ काढ्या गुरुए तनुलिप्त,
सत्य वाल निग्रन्थ, लाभालाभ त जोइन ॥ २ ॥
त्रा गुरु गिर धुणावाय चमत्कृति थइ चित्त,
सामान्य घर ए सुपन स्युं ? पग इहां एहवि थोति ॥ ३॥
ह न्वागुत्रिय ! सामला, सुपन तणा जे अर्थ,
शास्त्र अनुसार हु कहु, नवि दालु अमे व्यर्थ ॥ ४ ॥

देशी—मनमोहनां जिनराया

तुम घरणीम गजपनि दीठो, तेतो शास्त्रे कयो गरीठोर।
कुंवर थास्ये लाडकडा, हार सुपनप्रभार थास्येर।
गज पर बसीने दान, थकि अनमिय सवे विमानर। ॥१ कुं०

दोय कारण छे ए सुपने, देवे जो प्रभावे ए सप(न?)नेरे। कुं०
छत्रपति थाये ए पुत्र के, छत्रपति धर्मनुं सूत्ररे। कुं०॥२॥
जो राज राजेसरी थास्ये, सर्वदेशनो ईश सुधामरे। कुं०
जो छत्रपतिनुं पद पामे, तो देश विहार सुठामरे। कुं०॥३॥
गुरु तब ते जाणो गणराज, तेपरि प्रेमसें शिरताजरे। कुं०
देवनारूप जन चाकरीये, सिद्ध बालकने घणी पालवीयेरे। कुं०॥४॥
दान देस्ये ते विद्यादान, बुद्धि अभयदान निदानरे। कुं०
जिन ओछव करता इन्द्र, दीठुं वृन्दारक वृन्दरे। कुं०॥५॥
जिनशासननो होस्ये थंभ, विद्यानो होस्ये सर कुंभ। कुं०
चैत्य न्युतन पडिमा थापन, तेजस्वीमें तपननो तापनरे। कुं०॥६॥
दंपति कहे मुनिराज, सांभलता न धरस्यो लाजरे। कुं०
क्रोधभाव न आणस्यो चित्त, पुत्र तेजस्विमें आदित्यरे। कुं०॥७॥
तुम रांक तणे घर रत्न, रहेस्ये नही करस्ये यत्नरे। कुं०
दंपति मनमांहि चिंते, थायुं छे वोहरावानुं निमित्तरे। कुं०॥८॥
संवत सत्तर (४६)छेताला वरषे, जन्म्यो ते पुत्र छ(छे?) हरषेरे। कुं०
गुण निष्पन्न ते नाम निधान, 'देवचंद्र' अभिधानरे। कुं०॥९॥
वरस थया ते पुत्रने आठ, धारे ते विज्ञानना पाठरे। कुं०
कवियण भाखी त्रीजी ढाल, आगल वात रसालरे। कुं०॥१०॥

दूहा

अनुक्रमे विहार करता थका, आव्या पाठक तत्र,
'राजसागर शिरोमणि', अर्भक प्रसन्यो यत्र ॥ १ ॥

गुरु देखी हर्षित थया, वहुराव्यो पुत्र रतन,
धर्मलाभ गुरु तव दीये, करजो पुत्र जतन ॥ २ ॥
वाचक श्री 'राजसागरु', कोविदमं शिरताज
दिन केतलाएक गया पछी, मन चिंत्यु गुरुराज ॥३॥
दीक्षा दवी शिष्यने, शुभ महुरत जोइ जोस,
शुभ चोघडीए देखीने तो थाये सतोष ॥ ४ ॥
सघ सकलने तेडीने दीक्षानी कही वात
वचन प्रमाण करे तिहा, उलस्या सहूना गात्र ॥ ५ ॥
शुभ ओछव महोछवे, दीक्षा दीये गुरुराय,
सवत 'छपने' जाणीये, लघु दीक्षा दीये गुरुराय ॥ ६ ॥
श्री जिनचदसूरीश्वरें', वडी दीक्षा दीये सार,
राजविमल' अभिधा दीइ, श्रीजीनो घणो प्यार ॥७॥
'राजसागरजी य हितधरी, सरस्वतीकेरो मत्र,
आपु शिष्य 'देवचद ने', मनस कीधो तत्र ॥ ८ ॥
गाम 'वलाडु' जाणीये, 'वेणातट' सुभरम्य
भूमिगृहमें राखीने, साधन करे नारतम्य ॥ ९ ॥
थइ प्रसन्न सरस्वती, रसनाग्रे कीयो वास,
भणवानो उद्यम करे, श्री गुरुसाहाय्य उलास ॥ १०॥

देशी—यारी म्हारा साहिवा

देवचद्र अणगारने हो लाल शुभ शास्त्र तणा अभ्यासर,
दसीने ठरे लोयणा ।
प्रथम षडावश्यक भण हो लाल, क(ते?)पछी जैनतीनो वासर । दे०॥१॥

सूत्र सिद्धान्त भणावीया हो०, वीरजिनजोए भाख्या जेहरे। दे०
स्वमार्गमें पोषक थया हो०, टाले मिथ्यामतनुं गेहरे। २ दे०
अन्यदर्शनना शास्त्रनो हो०, भणवाने करता उद्यमरे। दे०
वैयाकरण पंचकाव्यना हो०, अर्थ करे करावे सुगम्यरे। ३ दे०
नैषध नाटक ज्योतिष शिखे हो०, अष्टादश जोया कोषरे। दे०
कौमुदी महाभाष्य मनोरमा हो०, पिंगल स्वरोदय तोषरे। ४ दे०
भाखा (भाष्य ?) ग्रन्थ जे कठिणता हो०,

तत्वारथ आवश्यकवृहद्वृत्ति हो। दे०
'हेमाचार्य'कृत शास्त्रनारे, हो०, 'हरिभद्र' 'जस' कृत ग्रन्थ चित्तरे।५दे०
षट्कर्मग्रन्थ अवगाहता हो०, कम्मपयडोये प्रकृति संबंधरे। दे०
इत्यादिक शास्त्रे भला हो०, जैन आम्नाये कीध सुगंधरे। ६ दे०
सकलशास्त्रे लायक थया हो०, जेहने थयुं मइ सुइ ज्ञानरे। दे०
संवत् सतर चुमोतरे (१७७४) हो०, वाचक 'राजसागर' देवलोकरे।७ दे०
संवत् सतर पंचोतरे (१७७५) हो०, पाठक ज्ञानधर(म) देवलोकरे।
मरट '(मरोट?)' ग्रामे गुरुये भलो हो ला०, 'आगमसार' कीधो ग्रन्थरे।
'विमलदास' पुत्री दोय भली हो०, 'माइजी' 'अमाइजी' शुभ पुण्यरे।८दे०
दोय पुत्रीने कारणे हो०, कीधो ग्रन्थ ते आगमसाररे। दे०
संवत् सतर सीतोतरे (१७७७) हो०, गुजरात आव्या देवचंदरे। ९ दे०
पाटण मांहि पधारीया हो०, व्याख्याने मिले जनवृन्दरे। १० दे०
कवियण कहे चोथी ढालमें हो०, कह्यो एह विरतंत प्रसिद्धरे। दे०
आगल हवे भवि सांभलोरे हो०, धर्मकरणीनी वृद्धिरे। ११ दे०

दूहा

पाटणमें देवचंदजी, जैनागमनी वाणि,
वाची भवीजन आगले, स्याद्वाद युक्त वखाण ॥ १ ॥
'श्रीमाली' कुलसेहरो, नगरशेठ विख्यात,
राय राणा जस आज्ञा करे, प्रमाण सर्वे वात ॥ २ ॥
नामे 'तेजसी' 'दोसीजी', धन समृद्धे पूर,
श्रावक 'पूर्णिमागच्छ' नो,—जैनधरमनुं नूर ॥ ३ ॥
कोविदमें अग्रेसरी, श्री 'भावप्रभसूरि',
पुस्तकनो संप्रदाय बहुल,—छात्र भण्या जिहा भूरि ॥४॥
ते गुरुना उपदेशथी, भराव्यो सहसकूट,
'तेजसी' 'दोसीने' घरे,- ऋद्धि समृद्ध अखूट ॥ ५ ॥
ते सेठ 'तेजसी' घरे, 'देवचद्र' मुनिराज,
तव तिहा शेठ प्रत्ये कहे, हे देवाणुप्रिय आज ॥ ६ ॥
सहसकूटना सहस जिन, तेहना जे अभिधान,
गुरु मुखे तमे धार्या हस्ये, के हने धारस्यो कान ॥७॥
मीठे वयणे गुरु कहे, सामलोयु तत्र सेठ,
स्वामी हु जाणु नहीं, चमत्कृति थइ दृढ ॥ ८ ॥
एहवे अवसरे तिहा हता, सवेगी शिरदार,
'ज्ञानविमल सूरिजी', तिहा गया शेठ उदार ॥ ६ ॥
विधिस्युं वाद्री पुछीयु, सह(स)कूट सहस्रनाम,
आगमें थी पृथकता, निकासी सुभधाम ॥ १० ॥

'ज्ञानविमलसूरि' कहे, सहसकूटनां नाम,
अवसरे प्राये जणावस्युं, कहेस्युं नाम ने ठाम ॥११॥
सकलशास्त्रे उपयोगता, तिहां उपयोग न कोइ,
आगम कुंची जाणवी, ते तो विरला कोइ ॥ १२ ॥

ए देशी :—माहरी सहीरे समाणी ।

एक दिन श्री 'पाटण' मझार, 'स्याहानो पोलि' उदार रे ।
सहसजिननो रसीयो, 'देवचन्द्र' वयणे उलसीयो रे ॥ १स०॥ टेक ॥
ते पोलि चोमुखवाडो पास, सहुनी पूरे आस रे ॥स०॥१॥
सतरभेदी पूजा रचाणी, प्रभु गुणनी स्तवना मचाणी रे ।स०।
'ज्ञानविमल सूरि' पूजामें आव्या, श्रावकने मन भाव्या रे ॥स० २॥
तिहां वली यात्राये 'देवचन्द्र', आव्या बहुजनने वृन्द रे ।स०।
प्रभुने प्रणाम करीने बेठा, प्रभुध्यान धरे ते गरीठा रे ॥स० ३॥
एहवे तिहां शठ दर्शन करवा, संसार समुद्रने तरवारे ।स०।
प्रश्न करे शेठ 'ज्ञानविमलने', सहसकूट नाम अमलनेरे ॥स०४॥
वहु दिन थया तुम अवलोकन करतां, इम धर्मनां कार्य किम सरतांरे।स०
प्राये सहसकूटना नामनो नास्ति, कदाचि कोइ शास्त्रे अस्तिरे ।स० ५।
ज्ञानसमसेर तणा झलकारा, देवचन्द्र बोल्या तेणिवाररे ।स०।
श्रीजी तुमे मृषा किम बोलो, चित्तथी वात ते बोलोरे (खोलोरे)॥स०६॥
प्रभु मन्दिरमें यथार्थनी व्यक्ति, किम उपजे श्रावक भक्तिरे ।स०।
तुमे कोविदमें कहेवाओ श्रेष्ठ, अयथार्थ कहो ते नेष्टरे । ॥स०७॥

तव 'ज्ञानविमलजी' ग्च्छा बोल्या, तुम शास्त्र आगम नत्रा खोल्यार ।
तमे ना मम्म्थऊीयाना वासी, तुमे वाक्य बालोन निमामार ।।म०८।।
शास्त्र अभ्यास कर्या हाय जेहने, पूछीये वाक्य त तहनर ।म०।
तुम एह वात्तामा नहा गम्प, अमे कहीये त तुम निमभ्येर । ।।म ६।।
इम परस्पर वाद करता, तव शठ बोल्या हर्ष भरमार ।स ।
श्राजा नम अयथर्थ न बोलो, एह ज्ञानना करवा निचालोर ।।स०१०।।
'ज्ञानविमल कह सुणो 'देवचद', तुमने चर्चानो उपछद्दर ।स०।
जो तुम नोला छो तो तुमे लावो, सहसकूट जिन नाम सभलावोरे ।।११।।
तव दवचद' कह सुगुरु पसाये, सत्य युक्ति हुन न खसायरे ।स०।
तव दवचन्जा' शिष्यने साहम, जोइ लावो सहसजिननु नामरे।।स०१२।।
सुविनाम सूक्ष्म विद्वान, गुरुभक्तिमाहा नियानरे ।स०।
'मनरूपजी रजोहरणओ, पत्र आपे गुरजीने तत्ररे । ।।स०१३।।
'ज्ञानविमलसूरि तब वाची एह 'सड(र?) तरे' मारो फाचारे ।म०।
सत्कुलगुरुनो एह छ शिष्य, जहना जगमाह छ अभिरुयर ।।स० १४।।
शास्त्रमयाश्रये सहसनाम, मासयुक्त त नाम सुठामरे ।स ।
मौन रहीन पुछ नान तुम कहना शिष्य निशानर ।स० १५।
उपाध्याय' राजसागरजोना शिष्य, मिठा वाणी जेहवो इक्षुर ।म०।
नम्रना गुण करा वाल ज्ञान 'देवचद्र' न अप्या मानर ।स० १६।
तुम वाचकता चैतनना कात्रा, तुमे जैनना थभ छा गाजार ।म०।
आदि घर छे त(न?)मार भव्य|तुमे पण किम न हाय कष्यर ।म०(७।
इणिपर परस्पर युक्ति मिळीया गठ तजसा ना कारज फलीयार ।
सहमकूटना नाम अप्रसस्ति(द्धि?)देवचद्रे कीधा प्रमसिर । (प्रसिद्धि)

प्रतिष्टा तिहां कीधी भव्य, ओच्छव कीधा नवनव्यरे । स० ।
'क्रियाउधार' कीधो 'देवचंद्र', काढ्या पाप परिग्रहफंदरे ।स० १६।
ढाल कही ए पांचमी रुडी, ए वात न जाणस्यो कूडीरे । स० ।
कवियण कहे आगल संबंध, वली सोनुंने सुगंधरे ।स० २०।

दोहा ।

क्रिया उद्धार 'देवचंदजी', कीधो मनथी जेह,
ए परिग्रह सवि कारिमो, अंते दुःखनुं गेह ॥ १ ॥
नव नंद नी नव डुंगरी, कीधो सोवनराशि,
साथे कोइ आवी नहीं, जूठी धरवो आसि ॥ २ ॥
धन धन श्री 'शालिभद्रजी', धन धन धन्नो सुजात,
अगणित ऋद्धिने परिहरी, ए कांइ थोडी वात ॥ ३ ॥
बत्रीस कोटिसोवनतणी, 'धन्नो' काकंदी जेह,
मूकी श्री जिन 'वीरनी', दीक्षा लीधी नेह ॥ ४ ॥
देवचंद मनमें चिंतवे, हुं पामर मनमांहि,
मूर्छा धरुं ते फोक सवि, सत्य प्रभु मारग चांहि (मांहि ?) ॥ ५ ॥
संवत 'सतरसत्यासीये', आव्या 'अमदावाद,'
लोक सहु तिहा वांदवा, आव्या मन आल्हाद ॥ ६ ॥
'नागोरीसरा(य)' जिहां अछे, तिहां ठवीया मुनिराज,
निर्लोभी निष्कपटता, सकल साधुशिरताज ॥ ७ ॥
साधु श्री 'देवचंदजी', स्यादवादनो युक्ति,
जीवद्रव्यना भावने, देखाडे ते व्यक्ति ॥ ८ ॥

तेहवे देशना सामलो, श्रावक श्राविका जह।
वाणी चल आषाढ सम, वरसे ध्वनि घन गेह ॥ ६ ॥
पापस्थान अढार छे, ते मूको भविजन्न,
जिनवर भाख्या जे अछे, ते सुणीये एक मन्न ॥ १० ॥

ढाल—अलगी रहेनी ए देशी

वीर जिणेसर मुखथी प्रकास, पापस्थान अढार,
तेहथी दूर रहो भवि प्राणी, मु(मु?)णीये आगार अणगार ॥ १ ॥
जिनवर कहओ, कहना, २ जिनवर कहेजी। टक।
पापथानिक पहिलु तुम जाणो, जीवहिंसा नवि करीये,
बेंद्री तेन्द्री चौरिंद्री पचद्री, वध मा मन नवी धरीय ॥ २ ॥ जि० ॥
एकेंद्रियादिक अनतकायादिक, तेहना करो पचखाण,
एकेंद्रीय ता ससारि नी करणो, अनुमोदना नवि आण ॥३ ॥ जि०॥
अणगारी न सर्वनी जयणा, षट्कायाना त्राता,
कोइ नावन दु ख नवि दव, उपजावे बहु साता ॥ ४ ॥ जि० ॥
मरि कहना दुख उपजे सहु न मार किम नवि होय,
रद्रध्याने नरकगति पाम्यो, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति जोय ॥ ५ ॥ जि० ॥
मृषावाद पाप थानिक बीजु जुठु नवी बोलीजे,
वैर निगारें (विषवाद) मृषा वचन बोले पतीयारो किम कीजे ।६ जि।
झुठ बोल्याथी 'वसु' भूपतिनु, सिंहासन भुइ पडीयु,
काल करीन दुरगति पाहनो, षुठ वयण त जडीयु ॥ ७ ॥ जि ॥
झुठु मिठु लाग जनन, कडुया फल छ तेह,
आगारा अणगारि मुखथी, झुठ न बोलस्यो रह ॥ ८ ॥ जि० ॥

त्रीजुं थानिक कहे जिनवरजी, नाम अदत्तादान,
अणदीधी वस्तुनी जयणा, धरवानो करो स्यान ॥ ६ ॥ जि० ॥
चोरी व्यसने दुरगति पामे, तेहनो कोइ न साखी,
चोरद्रव्य खातां नृप जो जाणे, जिम भोजनमां माखी ॥ १० जि०॥
तृण जाच्युं कल्पे साधुने, नवि ले अदत्तादान,
चोर तणो वली संग न कीजे, इम कहे जिन वर्धमान ॥११ जि०॥
पापस्थानक चोथुं भवि जाणो, ब्रह्मचर्य मनमां धारो,
रूपवंत रामा देखीने, मन नवि कीजे विकारो ॥ १२ ॥ जि० ॥
विषयी नर रामाए राचे, ते दुःख पामे नरके,
लोह पुतली धखावे अंगने, आलिंगावे धरके ॥ १३ ॥जि०॥
विषवल्ली सदृश छे ललना, तेहनो संग न कीजे,
मनमां कपट चपट करे जनने, शुभ प्राणी किम रीझे ॥ १४ ॥जि०॥
रावण मुंज आदे देइ भूपा, नारी थी विगुआणा,
सीता सुदर्शन सोल सतीना, जगमे जस गवाणा ॥ १५ ॥जि०॥
स्त्रीसंगे नव लाख हणाइ, जीवतणी बहुराशि,
ब्रह्मचर्य चोखुं चित्त न धरे तो, पामे नरकनो वास ॥ १६ ॥जि०॥
पांचमुं थानिक परिग्रहनुं, करीये तेहनो प्रमाण,
ग्रन्थो नही ते निग्रन्थ कहीये, निःद्रव्ये मुनि सुजाण ॥ १७ ॥जि०॥
क्रोध मान माया लोभ जाणो, राग द्वेष कलह न कीजे,
अभ्याख्यान पैशुन रति वर्जो, अरति परपरिवाद न लीजे । १८ जि०
पापथानक अढारमुं भाखुं, मिथ्यात्वशल्य नवि धरीये,
सत्तरे थी ए भारे कहीये, मिथ्यात्वे केम तरीये ॥ १६ ॥जि०॥

मिथ्यात्वशल्य काढीने प्राणी, समकितमाहि भलीये,
जिनवर भापित वचन स(र)द्दीये, भव भव फेरा टलीए ॥२०॥जि०॥
नैगम संग्रह आदे देइ,—सप्तनयनी (ने?) (सप्त) भगी,'
तेहनी रचना करता गुरुजी, अपवादने उत्सगी ॥ २१ ॥जि०॥
च्यार निक्षेपे सूत्र वाचना, नाम द्रव्य ठवण भाव,
कुमति ठवणादिकने छवेरे, किम निक्षेप जमाव ॥ २२ ॥जि०॥
जीव अजीव पुण्य पाप आदे देइ, 'श्री नवतत्त्वनी' वाचा,
भेद भेद करीने भविने, समजावे अर्थ ते साचा ॥ २३ ॥जि०॥
गुणठाणा चतुर्दश कहीये, मिथ्या साम(स्वाद?)न मीस्से,
ए आदि प्रकृतियो वधी, कर्मग्रन्थथी लहीस्ये ॥ २४ ॥जि०॥
देशना वाणी देवचद्र भाखे, भवियणने हितकारी,
छठी ढाल ए कवियणे भाखी, सुगुरु मल्या उपगारी ॥ २५ ॥जि०॥

दूहा

भगवइ सूत्रनी वाचना, साभळे जनना वृन्द,
वाणी मिठी पियुप सम, भाखे श्री देवचद ॥ १ ॥
'माणिक्लालजी' जाणिभी, दुढकनो मन पाम,
तेहने गुरुए बुझव्यो, टाली मिथ्यात्वनी का(वा?)स ॥ २ ॥
नौ(नू?)तन चैत्य करावीने, पडीमा थापी तासि(आवा)स,
देवचद उपदेशथी, ओछव हुया उलास ॥ ३ ॥
श्री शातिनाथनी पोल' मे, भूमिगृहमे बिंब,
सहसफणा आदे देइ, सहसकोट जिनबिंब ॥ ४ ॥

तेह्नी प्रतिष्ठा तिहां करी, धन खरचाणां पूर,

जैनधरम प्रकासीयो, दिन दिन चढते नूर ॥ ५ ॥

संवत सतर ओगणीस (एगन्याऐंशो?) १७७६ में, चातुर्मास खंभात,

तिहांना भविने बुझव्या, जेह्ना (बहु) अवदात ॥६॥

ढाल—रसीयानो देशी

श्री देवचंद्र मुनींद्र ते जैन नो, स्तंभ सदृश थयो सत्य । सुज्ञानी,
देशना में श्री 'शत्रुंजय' तीर्थनो, महिमा प्रकाशे नित्य । सु० ।

तीर्थ महिमा शत्रुंजयनी सुणो ॥ १ ॥

श्री सिद्धाचल महिमा मोटकी, श्री ऋपभ जिणंदनी वाणी। सु० ।
मुक्ति गमननुं तीरथ ए अछे, सास्वत तीर्थ प्रमाण ।सु० । २ ।तीरथ०।
दु:खम आरो पंचमो जिन कह्यो, एकविंसति सहस वर्प । सु० ।
वार योजन श्री शत्रुंजयगिरि, एह्नुं कुंण कहे रहस्य ॥३॥ ती० ॥
कांकरे कांकरे साधु सिद्ध थया, भरते कीयोरे उद्धार ॥ सु० ॥
'कर्माशा (ह)' आदे देइ जाणीए, सोल उद्धार उदार ॥ ४ ॥ ती० ॥
तीर्थ माहात्म्यनी प्ररूपणा गुरु तणी, सांभले श्रावकजन्न । सु० ।
सिद्धाचल उपर नवनवा चैत्यनी, जीर्णोद्धार करे सुदिन्न ।सु० ५ ती०
कारखानो तिहां सिद्धाचल उपरे, मंडाव्यो महाजन्न । सु० ।
द्रव्य खरचाये अगणित गिरि उपरे, उलसित थायेरे तन्न । सु०।६ ती०
संवत सत्तर(१७८१)एकासीये, ब्यासीये त्र्यासीये कारीगरे काम। सु०
चित्रकार सुधानां काम ते, दृपद् उज्वलतारे नाम ॥सु०॥७॥ ती० ॥
फिरीने श्री गुरु 'राजनगरे' भलां, तिहां भविने उपदेश । सु० ।
विनतो 'सुरति' वंदिर नी भली, चोमासानीरे विशेप ।सु०। ८ ।ती०।

श्री 'देवचंद्रजी' 'गुरुनि' मंदिर, कीधा महोत्सव उदार । मु० ।
'पंथासिघ' 'ऊद्याभाय' 'सन्नायीय', आव्या शुद्धिकरण ने भंडार मु ९
'पालीताणा' प्रवेश करी भक्ते, खरच्यौं द्रव्य भरपूर । मु० ।
'ऋषभनाथ' चैत्य 'शत्रुंजय' शिखर, प्रतिमा 'देवचंद्र'नी भूरि ।मु०१०नी ।
पुनरपि श्री गुरु 'राजनगर' प्रवे, आव्या चोमासु ए सार । मु० ।
संवत 'सत्तर(१८)अग्यारोत्र' माहि, पदिन माहि शिरदार ।मु०११नी०
वाचक श्री 'दीपचंद्रजी' प्रवे, उन ए)नी ख्यातिनी (?)करावी । मु० ।
आषाढ़ सुदि बीज दान ते आगीये पुद्गला स्वर्ग प्रयान ।मु ।१२नी ।
'तपगच्छ' मांहे जितीय शिष्यभाग, श्री 'विवेकविजय मुनींद्र । मु० ।
भगवा उत्तम करता विनया पगु उत्तम भगार देवचंद्र' ।मु०१३नी०
गुरुभक्ति मन आण 'विवेकजी', निजमनिमें निमाद्रिन । मु० ।
विनयादिक गुण श्री गुरु देखीने, 'विवेकजी' प्यार मन्न ।मु०१४नी ।
अमरगादमे गच्छमये भगो, 'आणंदराम' साद श्रेष्ठ । मु० ।
रत्नभंडारी ना नपस्वी अहना मनमोर इन्द । मु । १५ ।नी०
श्रीगुरु वन्दी आणंदराम ने चवा थापर नित्य । मु० ।
पच्चाण ते आत्या गुरु आण आणंदनी गुरुपरि प्रान्ति ।मु०१६ नी०
'कवियण' भाग्या सातमा ढाल ए पंचम आरामांहि । मु० ।
एहवा पुरुष थोडा प्रभुमार्गना, प्रकाश करवाने उच्छाहि । मु०१७नी०

दूहा

शाह श्री 'आणंदरामजी', गुरुनो गुरुता देखि,
भंडारी रत्नसिंघ आगले प्रशंसा करी सुविशेष ॥ १ ॥

गुरु ज्ञानी शिरोमणि, जिनधर्मे वृषभ समान,

'मरुस्थल' थी इहां आवीआ, सकलविद्यानु निधान ॥ २ ॥

'रतनसिंह' गुरु वांदवा, आव्यो आलय तास,

नय उपनय संभलावीने, मन प्रसन्न कर्यु तास ॥ ३ ॥

देशीः—धन धन श्री ऋषिराय अनाथी

पूजा अरचा 'रतन भंडारी', करता श्रीजिनवरनीरे ।

श्री 'देवचंद्रजी'ना उपदेशथी, शिवमंदिरनी निसरणीरे ॥१॥

धन धन ए गुरुरायने वयणे, जिनशासन दीपाव्योरे ।

पंचम आरे उत्तमकरणी, गुजरातिनो सो (सु?) वो नमाव्योरे । टेक२

विंव प्रतिष्टा वहुली थाये, सत्तर भेदी पूजारे ।

भंडारीजी लाहो लेता, ए गुरु सम नही दूजारे ॥धन० ॥३॥

विधि योगे ते 'राजनगर'में, मृगी उपद्रव व्याप्योरे ।

गुरुने भंडारी सर्व व्यवहारी, अरज करी सीस नमाव्योरे ॥धन०॥४॥

स्वामी उपद्रव 'राजनगर'में, थयो छे सर्व दुःख कर्त्तारे ।

तुम वेठा अमे केहने कहीये, तुमे छो दुःखना हर्त्तारे । ॥धन० ।५।

जैनमार्गना मंत्र यंत्रादिक, करीने खीला गाड्यारे ।

मृगी उपद्रव नाठो दुरि, लोकना दुःख नसाड्यारे । ॥धन० ।६।

जिनशासननो उदय ते करता, दुःखम आरे 'देवचंद'रे ।

प्रशंसा सवले शाशन केरी, टाल्यो दुःखनो दंदरे । ॥धन०।७।

एहवे समे 'रणकुंजी' आव्या, वहुलुं सैन्य लेइनेरे ।

युद्ध करवा 'भंडारी' साथे, आव्यो नगारु देइनेरे । ॥धन०।८।

'रतनसिंघ' भंडारी तत्पिण, आव्यो श्री गुरु पासेरे ।

कांइ करणो दल वहोतज आयो, में छां थांके विस्वासेरे । ॥धन० ।९।

फिकर मन करो 'भंडारीजी', प्रभुजी आछो करस्येरे ।
जीत वाद थाहरो अन होस्ये, करणी पार उतरस्येरे ॥धन०॥१०॥
चमत्कार श्री जिन आम्नायनो, गुरुजीये ते दीधोरे ।
फतह करीने आव्यो वहिला, थाको कारज सीधोरे ॥धन०॥११॥
'रतनसघजी' सैन्य लेइने, युद्ध करवाने साहमोरे ।
'रणकुजी' माथे तोपखाने, चाल्यो न करे खामोरे ॥धन०॥१२॥
परस्परे युद्धे 'रणकुजी' हार्यो, थई भडारी नी जीतरे ।
ए सर्व 'देवचद्र' गुरुपसाये, हेमाचार्य कुमारपाल प्रीतरे ॥धन०॥१३॥
'धोलका वासी सेठ 'जयचद', 'पुरिसोतम' योगीरे ।
गुरुने लावी पाये लगाड्या, जैनधर्मनो भोगीरे ॥धन०॥१४॥
योगिंद्र एक गिर 'पुरुसोत्तम'ने, (नो?) मिथ्यात्व शल्यने काढ्योरे ।
तुझविन जिनधर्म्म मार्गमां, श्रुनिय मन तस वाल्योरे ॥धन०॥१५॥
पचाणट' पालीताण आव्या 'छतुये' 'सत्ताणुये' 'नवानगर'रे ।
ढढक लोग देवचद्र जीत्या चैत्य चाल्या सर्व झगरेरे ॥धन०॥१६॥
नवानगर चत्य ज मांग ढुढक जे हता लोप्यारे ।
अचा पूजा निवारण कारी त सघला फिरी थाप्यारे ॥धन०॥१७॥
परवरा गाम म ठाकुर बुझव्या गुरुनी आज्ञा मानेरे ।
रसिया आठमी ढाल त रुची ए बात न जाणो कुडिरे ॥धन०॥१८॥

दोहा ।

तत्रना अधोशने, रोग भगंदर जेह ।
टाल्यो ततखिण गुरुजिइं, गुरु उपर बहु नेह ॥ २ ॥
संवत 'अष्टादश च्यार'में, 'भावनगर' मझार ।
मेता 'ठाकुरसी' भलो, ढुंढकनो बहु पास । (प्यार ?) ॥ ३ ॥
श्री 'देवचंद्रे' बुझवी, शुभमार्गिनो वास,
तत्रना ठाकुर तणी, मत कीधी जैन पास ॥ ४ ।
संवत 'अष्टादश च्यार मे, 'पालीताणो' गाम ।
मृगी टाली गुरुजीये, श्रीगुरुजीने नाम । ॥ ५ ॥
संवत 'अष्टादश' 'पंच' 'षष्ठ'में, 'लींबडी' गाम उदार ।
'डोसो वोहोरो' साहा 'धारसी', अन्य श्रावक मनोहार ॥ ६ ॥
साहा श्री 'जयचंद' जाणीये, साहा 'जेठा' बुद्धिवंत ।
'रहो कपासो' आदि देइ, भणाव्या गुरुइं तंत ॥ ७ ॥
गुरुइं सहु प्रतिबोधीया, जैनधर्ममें सत्य ।
गुरु उपगार न वीसारता, धर्मे खर्चे वित्त ॥ ८ ॥
'लिंबडी' 'ध्रागंद्रा' गाम ए, अन्य 'चुडा' वली गाम;
प्रतिष्टा त्रिण थइ बिंबनी, द्रव्य खरच्या अभिराम ॥ ९ ॥
'धांगद्रे' जिनबिंबनी, थइ प्रतिष्ठासार,
'सुखानंदजी' तिहां मल्या, 'देवचंद्र'नो प्यार ॥ १० ॥

देशी :— ललनानी छे ॥

संवत 'अढारने आठमें', गुजरातिथी काढ्यो संघ ।ललना०।
श्रीगुरुना गुरु उपदेशथी, शत्रुंजयनो अभंग ॥ ल० ॥ १ ॥

गुरुवयणा ते सद्दहा ॥ऋ॥
गिरि नगर उच्छव थया, खरच्या बहुला द्रव्य ।
पूजा अरचा बहुविधि, अनुमोद त भव्य ॥ ल० ॥२ गुरु ॥
समा सारठ जातरा, करता ते भविजन । ल० ।
'अगदूना' 'नव' 'दशमें', श्री गुजराति चोमास ॥ ल० ॥३ गुरु० ॥
संवत 'दश अगदूनें', 'कवरासाहाजीइ' मध । ल० ।
श्री शत्रुंजय तार्थनो, साथे पधार्या देवचन्द्र ॥ ल० ॥४ गुरु ।
साह 'माताया 'लाल्चद', जाणीइ जैनमारगमें प्रवाण । ल० ।
श्राविका अवल ते भक्तिमा, दानेश्वरामा नहीं खीण ॥ल० ॥५ गुरु ॥
॥६॥
सघमें श्री 'देवचन्द्रजी , अन्य व्यवहाराया साथ । ल० ।
श्री शत्रुंजय गिरि आवीया, लवा धर्मनु पाथ ॥ ल० ॥७ गुरु ॥
प्रतिष्ठा जिनबिंबनो गुरुजिइ किघी तत्र । ल० ।
साठी सहस्र द्रव्य खरचीयो गुरु वचनें ते यत्र ॥ ल० ॥८ गुरु ॥
संवत 'अग्यार इग्यार म, प्रतिष्ठा लींबनी' मध्य । ल० ।
'वखाण श्रावक दुढकी वयध्या खरची रद्दि ॥ ल० ॥९ गुरु०॥
चैत्य कराया सुन्दर जिन भवाना ठाठ । ल० ।
प्रभाविक पुण्य देवचन्द्रजी , धन्य एहनी मात ॥ल० ॥१० गुरु०॥
शिष्य सुविनीत पास भला, श्री 'मनरुप जी दक्ष । ल० ।
'विजयचन्द' बुद्धिये प्रवल्ना न्याय शास्त्रना पक्ष ॥ल ॥११ गुरु०॥
वादा अनेक ते जीताया, गच्छ चोरासीना साथ । ल० ।
भग तर्कवादी मलो, श्री 'देवचन्द्रनो हाथ ॥ल० ॥१२ गुरु ॥

'मनरुपजी' ना शिष्य दोउं, 'वक्तुजी' 'रायचन्द' । ल० ।
गुरुभक्ति आज्ञा धरे, सेवामें सुखकन्द ॥ ल० ॥ १३ गुरु० ॥
संवत 'अढार ना वारमें', गुरु आव्या 'राजद्रंग' । ल० ।
गछनायकने तेडावीआ, महोछव कीधा अभंग ॥ ल० ॥१४ गुरु०॥
'वाचकपद' 'देवचन्द'ने, गछपति देवे सार । ल० ।
महाजने द्रव्य खरच्यो वहु, एह संबंध उदार ॥ल० ॥१५ गुरु०॥
नवमी ढाल सोहामणी, कवियण भाखी एह । ल० ।
एक जीभे गुण वर्णतां, कहितां नावे छेह ॥ ल० ॥ १६ गुरु० ॥

॥ दूहा ॥

वाचक श्री 'देवचन्द्रजी', देशना पीयूप समान;
जीव द्रव्यना भेदस्युं, नय उपनय प्रधान ॥ १ ॥
ग्रंथ भला 'हरिभद्र' ना, वाचक 'जस' कृत जेह;
'गोमटसार' 'दिगंवरो', वाचना करे हित नेह ॥ २ ॥
'मुलताने' 'देवचन्द्रजी', वली अन्य 'वीकानेर';
चोमासां गुरु तिहां करी, ज्ञानतणी समसेर ॥ ३ ॥
नवाग्रन्थ ज्हेने कर्या, टीका सहित तेह युक्त;
'देसनासार' 'नयचक्र', शुभ 'ज्ञानसार'नी भक्ति ॥ ४ ॥
'अष्टकटीका' युक्तिथी, 'कर्मग्रंथ' वली जेह;
तेहनी टीका आदि देइ, ग्रन्थ कर्या वहुनेह ॥ ५ ॥
'राजनगरे' 'देवचन्दजी', 'दोसीवाडा' मांहि;
थोका लोक व्याख्यानमें, सांभलता उछांहिं ॥ ६ ॥

एकदिन वायुप्रकोपथी, वमनादिकनी व्याधि,
अकस्मात उत्पन्न थइ, शरीरे थइ असमाधि ॥ ७ ॥
शास्त्र मरण दोउ कह्या, पहिल मरण छे जेह,
बाल मरण तो दुसरो, उत्तम पण्डित मृत्यु वेह ॥ ८ ॥
तब शरीरनि क्षीणता, (क्षीणता?) शिथिल थया अंगोपाग,
बुद्धि करीने जाणीई, अनित्य पदारथराग ॥ ६ ॥
पुद्गल नो अनित्यता, अनादिनो स्वभाव,
मूरख तेपरि रंग धरे, पण्डित धरे विभाव ॥ १० ॥
निज शिष्योने तेडीने, दे शिक्षा हितकार,
मुझ अवस्था क्षीण छे, ए पुद्गल व्यवहार ॥ ११ ॥

ढालः—निंदलडी वैरण हुय रही, ए देशी

शिष्य शिरोमणी जाणीई, 'मनरूपजी' हो वाचक गुणवंत,
चतुर चाणाक्य शिरोमणि, गुरु उपर बहु भक्तिवंत,
धन धन ए गुरु वंदीए ॥ १ ॥
धन्य एहनी चतुराइने, गुरु बेठा हो श्रावक करे सेव,
पदकज सेवे जेहना, आज्ञा माने हो नित नित मेव ॥ २ ध० ॥
विनयी विचक्षणे पण्डिते, गुणालकृत हो जेहतु गात्र,
श्रीगुरु मनम चिंतवे, मुझ 'मनरूप' हो शिष्य घणु सुपात्र ।३। ध०।
'मनरूप' शिष्य विद्यमानता, 'रायचन्दजी' हो दुजला पूज्य,
गुरुसेवाम विनयी घणु, विद्याना हो जेह जाणे गुह्य । ४ । ध० ।
श्री 'रूपचंद' शिष्य सुशीलता, 'विजयचंदजी' हो पाठक गुणयुक्त,
विद्या भर हस्ति मलपतो, मेघध्वनि सम हो उद्घोषणा छंद,
द्वितीय शिष्य 'विजयचंदजी', तर्कवादे हो जीत्या वादीवृन्द । ५ ।ध०।

तस सीस दोय सुसीलता, पूज्य पूजा हो 'सभाचंद' 'विवेक',
गुरुनो प्रेम शिष्य उपरे, गुरु विद्यमाने हो वादी कीया भेक ॥६५०॥
शिक्षा देवे उपाध्यायजी, सर्वशिष्यने हो कहे धारी प्रेम,
समयानुसारे विचरज्यो, पापबुद्धि हो नवि धरस्यो वेम ॥७५०॥
पग प्रमाणे सोडि ताणज्यो, श्री संघनी हो धारज्यो तमे आण,
वहिज्यो सूरिनी आज्ञा, सूत्र शास्त्रे हो तुमे धरज्यो ज्ञान ॥८५०॥
तूज समरथ छो मुज पुठे, मुझ चिंता हो नास्ति लवलेस,
सपरिवार ए ताहरे खोले छे, हो मुक्या सुविशेष ॥६५०॥
तव 'मनरूप' जी गुरु प्रत्ये, कहे वाणी हो जोडी हाथ,
गुरुजी तूमे वडभागीया, पामर अमे हो पण शिर तुम हाथ ॥१०५०॥
सकल शिष्य भेला करी, गुरुजीये हो सहुने थाप्यो हाथ।
प्रयाण अवस्था अम तणी, वाणी केहवी हो जेहवो गंगापाथ ॥११५०॥
दशवैकालिक उत्तराध्ययननां, अध्ययनने सांभले गुरुराय।
यथार्थ सर्व मन जांणता, अरिहंतनो हो ध्यान धरे चित्तलाय ॥१२५०॥
संवत 'अढार बारमे', 'भाद्रपद' मासे हो 'अमावस्या' दिन,
प्रहर एक रजनी जातां, देवगति लहे 'देवचंद्र' धन धन्य ॥१३५०॥
मोटे आडंबरे मांडवी, चोरासो गच्छना हो श्रावक मल्या वृन्द,
अगर चंदने काष्टे भली, चिता रचिता हो महाजन सुखकंद ॥१४५०॥
प्रतिपदाए दहन दीयुं, गुरु पूठी द्रव्य घणो खरचंत,
तिथियो जमाडि वहोलता, जाणे अषाढो हो घने करी वरसंत ॥ १५५०॥
ए देवचंद्रना वयणथी, द्रव्य खरच्या हो अगणीत सुभठाम,
घा धन खरचाइयुं, एहवा गुरुना हो कीधा गुणग्राम ॥१६५०॥

दशमी ढाल सोहामणी, नाम धरीयु हो गाया देवविलास।
आसन्न सिद्धि जे थया, कोइक भवे होस्ये मुक्तिनो वास। १७ ध०

दूहा

मात आठ भव एहवा, जा घरसें एह जीव,
मात बाल्यकाल विध्वसना धर्म यावनम सदीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये, द्रव्यथकी विराप,
मान आठ भव उलघीने, शिव कमगने पग्न ॥२॥
प्रभु मारग विन्तारवा, द्रव्य भावथी शुद्ध,
विश्व आल्हादकारी थयो, जिनशासना वृद्ध ॥३॥
श्री जिनबिंबनी थापना, करवा निज सुबुद्धि,
च्यार निक्षेपा युक्तस्यु, स्याद्वाद भरे शुद्ध ॥४॥
एक पाइए साच सकल, तस चाले करामात,
गाजी मद ए जैनना, मिथ्यात्वी काया महात ॥५॥

रागः—धनाश्री पांमी ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचद्र कविराय स्वर्गेरे (२) पहोता ते सुभ ध्यानथीरे ।१।
सूरय (सूर्य?)चद्र ने इद्र अवधिर (२) दखी मन चिंत एहवु रे ।२।
जिनशासननो थभ देवचद्र (२) अमरपुरीमें अवतर्यारे ।३।
देश दशमा वात पोहातार (२) सामली भवि विलखा थयारे ।४।
कल्पतरसम एह देवचदर (२) सरिखा पुन्य थोडा हस्यर ।५।
मस्तकें मणि हती जह गुरुनेरे (२) दहन समय उछली पडीर ।६।
ते गइ पृथ्वी मध्य कोइनर (२) हाथ ते आवी नहीर ।७।
महाजन शिष्य समुदाय भला थईरे(२)स्तुप कराव्यो गुरुतणार ।८।

प्रतिष्टा करी तत्र पादुकारे (२) पूजा प्रभावना वहु विधिरे ।६।
केतले दिन वाचक 'मनरूप' रे २) स्वर्ग गति गुरुने मिल्यारे ।१०।
'रायचंद' शिष्य निधान गुरुतारे (२) विरह खम्यो जाये नहीरे ।११।
मन चिंते 'रायचंद' ए सविरे (२) अनित्यता श्री गुरुये कह्योरे ।१२।
पल्योपम पुरव आयु ते पण रे (२) पूरां थयां शास्त्रे कह्यारे ।१३।
आ पण प्राकृत जीव जुठारे (२) स्नेह धरवो ते मूढ़तारे ।१४।
तित्थयर गणधर जेह सुरपत्तिरे (२) चक्री केसवराम एहनेरे ।१५।
कृतांते संहार्या सर्व का गणनारे (२) इयर जननी जाणवीरे ।१६।
इम मन चिंती रायचंद गुरुनीरे (२) स्तवना नामनी मन धरेरे ।१७।
गुरु सरखो नही इष्ठ दीवोरे (२) गुरुइ ज्ञान देखाडीयुंरे ।१८।
गुरु पुठे 'रायचंद' पद्धतिरे (२) चलवे व्याख्याननी संपदारे ।१६।
गुरु जेहवी किहांथी बुद्धि गुरुनारे (२) ज्ञान बिंदु किंचित स्पर्शतारे।
जैनशैलीमां प्रवीण 'रायचंद्र' रे (२) गुरुपसाये तादृश थयारे ।२१।
मनमां नही शंक्लेश कोइथीरे (२) वागवाद कोइथी नवि करेरे ।२२।
सुविहितमार्गनो जाण 'रायचंद' रे (२) शीलादिक गुण संग्रह्योरे ।२३।
आठ मां मोहनीकर्म व्रतमें रे (२) चोथु व्रत जीतवुं दोहिलुंरे ।२४।
शील तणेरे प्रभाव संकट (सवि)टले (२) नासे तत्क्षिण ए थकीरे ।२५।
जनमां जेहनो सोभाग्य अक्षयरे (२) रिद्धि वृद्धि अणगणिततारे ।२६।
एक दिन श्री 'रायचंद' कविनेरे(२)कहे अम गुरु स्तवना करोरे ।२७।
अमे जो करीयें स्तव एह अणवटेरे (२) स्वकीर्त्ति करवी अयोग्यतारे
ते माटे कहयुं तुम्ह स्तवनारे (२) तुम बुद्धि प्रमाणे योजनारे ।२६।
'कवियणे' 'देवविलास' कीधो (२) मन हर्षित उल्लस्योरे ।३०।

दशमी ढाल सोहामणी, नाम धरीयु हो गायो देवविलास ।
आसन्न सिद्धि जे थया, कोइक भवे होस्ये मुक्तिनो वास । १७ ध०

दुहा

मान आठ भव एहवा, जा धरसें एह जीव,
भाव वाल्यकाल विध्वसना धर्म यावतम सदीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये द्रव्यथकी विशष,
सात आठ भव उलघाने, शिव कमलाने पत्त ॥२॥
प्रभु मारग विस्तारवा द्रव्य भावथी शुद्ध
विश्व आल्हादकारी थयो, जिनवाणीनी वृद्ध ॥३॥
श्री जिनबिंबनी थापना करवा निज सुबुद्धि,
च्यार निक्षेपा युक्तस्यु, स्याद्वाद भरे शुद्ध ॥४॥
एक पाइए साचे सकल, तस चाले करामात,
गाजी मद ए जैननो, मिथ्यात्वी कीया महात ॥५॥

राग:—धनाश्री पांमी ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचद्र ऋषिराय स्वर्गेरे (२) पहोता ते सुभ ध्यानथीरे ।१।
सूरय (सूर्य?)चद्र ने इद्र अवधिरे (२) देखी मन चिंते एहवुरे ।२।
जिनशासननो थभ देवचद्ररे (२) अमरपुरीमें अवतर्यारे ।३।
देश दशमा वान पोहोतीरे (२) साभली भवि विलखा थयारे ।४।
कल्पतरुसम पद देवचदर (२) सरिखा पुरुष थोडा हस्यर ।५।
मस्तकें मणि हती जद गुरुनेर (२) दहन समय उछली पडीर ।६।
ते गइ पृथ्वी मध्य कोइनर (२) हाथे त आवी नहार ।७।
महाजन शिष्य समुदाय मेला थइरे (२) स्तुप कराव्यो गुरुतणार ।८।

कीयो 'देव विलास' शुभदिनेरे (२) जयपताका विस्तरी रे । ३१
संवत १८०५'अढार पचोस आसोसुदिरे'(२)'अष्टमी' रविवारे रच्योरे
स्तोकमें देवविलास कोधोरे (२) किंचित् गुण ग्रहीने स्तव्योरे । ३३
घोहोलो छे अधिकार जाणीरे (२) ग्रंथ थाये मोटो घणोरे । ३४
भणस्ये 'देवविलास' सामग्र (२) तस घरे कमला विस्तरेरे । ३५

कलस

श्री 'वीर' जिनवर 'सोहम' गणधर, 'जंबु' मुनिवर अनुक्रमे,
'खरतरगच्छ' उद्योतकारक, श्री 'जिनदत्त' सूर्योपमे ।
तास पाट 'जिनकुशल' सूरि, 'जिनचंद्र' (१) सूरि तसपटे ,
'युगप्रधान' नो बिरद जेहनो, नामथी दुःख कटे ॥ १ ॥
गच्छ स्तंभक उपाध्यायजी, 'पुण्यप्रधान' (२) प्रधानता ,
सुमति धारी 'सुमति' (३) पाठक, 'साधुरंग'(४) वाचक भणा ।
श्री 'राजसागर' (५) उपाध्यायजी, 'ज्ञानधर्म' (६) पाठक थया ,
सुकृती 'दीपचंद' (७) पाठक५, 'देवचंद्र' (८) पाठक जय जया ॥२॥
'मनरूप' वाचक (६) 'विजयचंद्रजी', पाठकनो पद भाग्यता ,
'मनरूप' पदपंकज मेरुगिरिवर, 'रायचंद' (१०) रवि उद्गता ।
सुज्ञाननायें विनयवंते, बुद्धि युक्ति सुरगुरु ,
चंद्र सूर ध्रु तार तारक, रहो अविचल जयकर ॥ ३ ॥
इति श्री देवचंद्रजीनो निर्वाण रास संपूर्ण

॥ श्री जिनलाभ सूरि गीतानि ॥

ढाल—ऊंचो-नीची सरवरियेरी पाल, परदेसी लहरूमें ।

(१)

आज सुहावो जी दीह, आज नें वधावोजी अम्ह घर आंगणेजी ।
अंग उमाहो जो आज, सद्गुरु है आया आणन्द अति घणे जी ॥१॥
आवो हे सहियर साथ, सजि सजि हे सोल शृङ्गार सुहामणा जी ।
जंगम तीरथ एह, वंदन कीजइ हो छीजइ दुख घणा जी ॥२॥
धन धन सोरठ देश, धन धन गाम नयर ते जाणियइ जी ।
जिहां विचरै गच्छ राण, भाण प्रतापी है सुजस वखाणियइ जी ॥३॥
धन 'पंचाइण' तात, धन 'पद्मा दे' हो मात महीतलै जी ।
'बोहित्थ वंश' विख्यात, कुल उजवालण पूज जी इण कलें जी ॥४॥
सवि सिणगार्या है हाट, पोलि रचाई हो च्यारु फावती जी ।
वंदे सकोइ जीह, श्री जिन-शासन महिमा दीपती जी ॥५॥
मिलीया हे महाजन लोक, उच्छव मंड्यो हो अति आडम्बरे जी ।
दे मन वंछित दान, याचकजन धन धन जस उचरै जी ॥६॥
गोरी गावे जी गीत, फरहर गयणंगणि धज फरहरइ जी ।
कोतिल वलि गज वाजि, खुरिय करंता हो आगल संचरै जो ॥७॥
दुन्दुभि ढोल दमाम, झल्लरि भुंगल भेर नफेरीयां जी ।
वाजै वाजित्र सार, फूलड़े विछाई हो 'बीकपुर' सेरिया जी ॥८॥
हीर अनें वलि चीर, माणिक मोती हो वारीजें घना जी ।
पथरीजे पटकूल, मुनिपति आवै हो गज गति मलपता जी ॥९॥
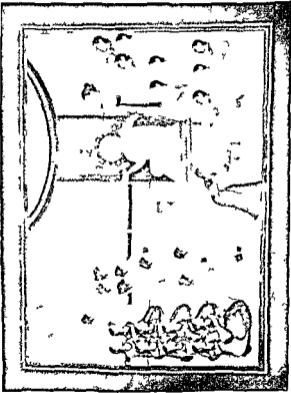
श्री जिनलाभसूरिजी (बाबू विजयसिंहजी नाहर के सौजन्य से)

(३)

जिण शासन शिणगारा, वंदो खरतर गणधार हे ।

सहियां सद्गुरु वेग वधावो ।

सद्गुरु वेग वधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावा हे ॥स०॥१॥

धन धन 'मारू' देश, धन थलवट मांडल वेश हे ॥स०॥

धन 'पंचाइण' तात, धन धन 'पद्मादे' मात हे ॥स०॥२॥

'बोहित्थ' वंश सवायो, जिहां पुरुष रत्न ए जायो हे ॥स०॥

'मांडवो' नगर मझार, होय रह्या जय जयकार हे ॥स०॥३॥

घुरय निसाणे छाई, वांटै श्री संघ वधाई हे ॥स०॥

गोरी मंगल गावें मोत्यां, भर थाल वधावें हे ॥स०॥४॥

श्री 'जिनभक्ति' सुरिन्दा, पाट थाप्या जाणे इन्दा हे ॥स०॥

तिलवट चढते नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥

लघु वय चारित लीनो, गुण देखी गुरु पद दीनो हे ॥स०॥

सद्गुरु हुंती सवायो, जिण खरतर गच्छ दीपायो हे ॥स०॥६॥

पूरवली पुण्याइ, एतो मोटी पदवी पाइ हे ॥स०॥

पंच महाव्रत धारो, थांरो रहणीरो वलिहारी हे ।स०॥७॥

रूपे देव कुमार, एतो लबधि तणा भण्डार हे । स० ।

पालै पंचाचार, गुरु गोतम रै अवतार हे । स० ॥८॥

....।

मीठो सद्गुरु वाणी, सांभलता चित्त समाणी हे । स० ॥ ९ ॥

'श्री जिन लाभ' सुरिन्द, प्रतपो जिम सूरिज चंद हे ।स०।

चित धरि अधिक जगीश, इम 'वसतो' दे आशीस हे ॥स० ॥१०॥

——※——

पूज पधार्या हे पाट अमिय समाणी हो वाणी उपदिसैं जी।
सुणि सुणि श्रवण सहेज बहु नर नारी हे हियडउ उल्हसै जी ॥१०॥
जा शशि सायर सूर जा धुर मेरु महीधर थिर रहैं जी।
श्री 'जिनलाभ' सूरीश, ता चिर प्रतपो हो मुनि'माणक'कहै जी ॥११॥

(७)

एक सन्देशो पथी माहरो, जाइनें वीनवजे करजोड। गरुआ पूजजीहो
महिर करीनइ गच्छपति आविजै, वादणरी म्हाने कोड ॥ग०॥१॥
वहिला पधारो 'थलवट' देशमें, श्री संघ जोवैं थारी वाट ।ग०।
ढोल न कीजै हो पूज इण वात री, साथै मुनिवर थाट ॥ग०॥२॥
'कच्छ' धरा सु हो पूज्य पधारि नैं, नाइमक्या इण ठाइ ।ग०।
म्हे पिण जाण्यो जिण थानें राखिया, किवही मे विलमाइ ॥ग०॥३॥
'असल्मरा' श्रावक जोइने, पूज रह्या लोभाइ ।ग०।
मुंह मीठा सु मनडो मोहियो जी, दूजा नावै दाइ ॥ग०॥४॥
म्हा तो कागल माहिवा जी मोकल्या, लिख लिख अरज अछेह ।ग०।
तौ पिण पाछौ जा(ब)व न आवियो, पूज खरा निसनेह ॥ग०॥५॥
मनमें ऊमाहो गच्छपति छै घणु, मुणिवा थाहरी वाणि ।ग०।
नाम तुम्हांणो विण नहीं वीसरु, वडावौ हिन आणि ॥ग०॥६॥
पाधेयर मानीजै माहरी वीनति, श्री खरतर गच्छ ईश ।ग०।
'बीकाणै' चौमासो कीजियै, श्री 'जिनलाभ' सूरीश ॥ग०॥७॥
अरज अम्हांणी पूज्य अवधारिज्यो, सूरीसर सिरि इंद ।ग०।
बकर जोडी त्रिकरण भाव सु, वंदै मुनि 'देवचंद' ॥ग०॥८॥
॥इति श्री पूज्यजी री भास सम्पूर्णम् ॥ लिखित पं० जीवन० छोटै
स्याला मध्य कोठारिया रै खण मध्ये ॥ शुभ भवतु, कल्याण मस्तु ॥

(३)

जिण शासन शिणगारा, वंदो खरतर गणधार हे।
सहियां सद्गुरु वेग वधावो।
सद्गुरु वेग वधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावा हे ॥स०॥१॥
धन धन 'मारू' देश, धन थलवट मांडल वेश हे ॥स०॥
धन 'पंचाइण' तात, धन धन 'पद्मादे' मात हे ॥स०॥२॥
'वोहित्थ' वंश सवायो, जिहां पुरुष रत्न ए जायो हे ॥स०॥
'मांडवी' नगर मझार, होय रह्या जय जयकार हे ॥स०॥३॥
घुरय निसाणे छाई, वांटै श्री संघ वधाई हे ॥स०॥
गोरी मंगल गावें मोत्यां, भर थाल वधावें हे ॥स०॥४॥
श्री 'जिनभक्ति' सुरिन्दा, पाट थाप्या जाणै इन्दा हे ॥स०॥
निलवट चढतै नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥
लघु वय चारित लीनो, गुण देखी गुरु पद दीनो हे ॥स०॥
सद्गुरु हुंती सवायो, जिण खरतर गच्छ दीपायो हे ॥स०॥६॥
पूरबली पुण्याइ, एतो मोटी पदवी पाइ हे ॥स०॥
पंच महाव्रत धारो, थांरी रहणीरी वल्लिहारी हे ॥स०॥७॥
रूपे देव कुमार, एतो लब्धि तणा भण्डार हे। स०।
पालै पंचाचार, गुरु गोतम रै अवतार हे। स० ॥८॥
....।
मीठो सद्गुरु वाणी, सांभलता चित्त समाणी हे। स० ॥ ६ ॥
'श्री जिन लाभ' सुरिन्द, प्रतपो जिम सूरिज चंद हे।स०।
चित धरि अधिक जगोश, इम 'वसतो' दे आशीस हे ॥स० ॥१०॥

—※※—

(४)

* श्री जिनलाभ सूरि निर्वाण गीतम् *

ढाल—आदि जिणिंद मया करो एहनी ।
देश सकल सिर सौभतो, थलवट सुथिर सुजाणो रे ।
 जिहा 'विक्रमपुर' परगडौ, तिहा प्रगट्या मुनि भाणो रे । १ ।
गुणवन्ता गुरु वंदीये । आकडी० ।
सुमती शाह 'पचायण', 'पद्‌मादेवी' नन्दा रे ।
 'वोहिथ' वश त्रिभुवन, लाल अमोल अमदा रे । २ गु० ।
श्री 'जिनभक्ति' सूरीसर, श्री खरतर गछराया रे ।
 तासु सयोगे आदर्यो, सजम शोभ सवाया रे । ३ । गु० ।
अरथ सहित सदगुरु दीयउ, 'लक्ष्मीलाभ' सुनामो रे ।
 वरस 'अढार चउडोत्तरै', पाम्यौ पाम्यौ पद अभिरामो रे ।४।
श्री 'जिनलाभ' सूरीसरू गछनायक गुणरागी रे ।
 पचम काले परगडा, श्रुतधर सीम सोभागी रे । ५ । गु० ।
देश विदेशे विचरता, बहु भविया प्रतिबोधी रे ।
 सकल कलुपता टालता, आनम धरम विरोधी रे । ६ । गु०,
नगर 'गुढै' गुरु आवीया, 'चउतीसै' चउमासै रे ।
 तिहा निज समय प्रकाशने, पहुता सुर आवासै रे । ७ । गु० ।
चरण कमलकी थापना, अनिमयवंन विराजै रे ।
 दास 'क्षमाकल्याण' नौ, वदन हुमो शुभ काजै रे । ८ । गु० ।
इति श्री जिनलाभ सूरि सद्‌गुरु सिझाय (पत्र १ तत्कालीन, संग्रहमें)

॥ जिनलाभसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीत ॥

(१)

ढाल—आज रो सुज्ञानी स्वामी जोर बण्यो राज ।

'जिनचंद्र सूरि' गुरु वंदियें जी राज, वंदियें वंदियें वंदिय जी राज जि०
सहु गच्छपति सिर सेहरोजी राज, खरतर गच्छ सिणगार ।म्हांराराज ।
श्री 'जिनलाभ' पटोधरूजी राज, 'ओस वंश' अवतार ।म्हां।१।जि०।
लघु वय संयम आदर्योजी राज, 'मरुधर' देश मझार । म्हांरा०।
अनुक्रम गुरु पद पामियाजी राज, सूत्र सिद्धंत आधार ।म्हां०२।जि०
देश घणा वन्दावनांजी राज, गया 'पूर्व कें देश' । म्हां०।
'समेत शिखर' 'पावापुरी' जी राज, कीनी जात्र अशेष ।म्हां।३।जि०।
चौमासो कीनो तिहां जी राज, 'अजीमगंज' मझार ।म्हां०।
भव्य जन कुं प्रतिबोधताजी राज, मोहो जे नगर उदार ।म्हां०जि०४।
आचरज पद शोभता जी राज, छत्तीस गुण अभिराम । म्हां०।
सुमत पांच कुं पालता जी राज, तीन गुपतिका धाम ।म्हां०।जि०।५॥
छ काय का पीहर भलाजी राज, सात महाभय वार । म्हां० ।
आठ प्रमाद महाबली जी राज, दूर किया सुविचार । म्हां ।जि०।६॥
श्रावक 'बीकानेर' का जी राज, वीनति करै वारो वार । म्हां ।
पूज जी इहां पधारियें जी राज, महर करी गणधार । म्हां ॥जि० ७॥
'वच्छावत' कुल दीपताजी राज, 'रूपचंद' जी की नंद । म्हां० ।
'केसर' कूखे ऊपनाजी राज, राज करो ध्रुव चंद । म्हां० ॥जि०।८॥
वरस 'अठार पचास' में जी राज, 'वद वैसाख' मझार । म्हां० ।
'चारित्र नंदन' वीनवइ जी राज, 'आठम' तिथि 'गुरुवार' ।म्हांजि०९।

(२)

ढाल म्हारा सहिया हो अमर वधावो गज मोतिया०

म्हारा पूजजी हो श्री जिनचन्द्र सूरि राजिया खरतर गच्छरा भाण।
म्हारा पूजजी हो दिन दिन तुम चढती कला प्रतपोजी कोडि कल्याण
श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टधर ॥ आंकणी ॥१॥
म्हा० धन धन धन वेला घडी धन सायल सुप्रमाण।
नरसण सन्त क निरखस्या सुणस्या सुगुरु नी वाण ॥२॥म्हा॥श्री ॥
म्हा० पूरव नें पुण्ये पामियो श्री सद्गुरु नो पाट।
गाट गण कार सोभता बतावे धर्म वाट ॥३॥म्हा०॥श्री०॥
आम वंश आत दीपतो बच्छावत वलि गोत्र।
पिता रूपचन्द गणनिलो मात वेमरदे पुत्र ॥ ४ ॥ म्हा ॥ श्री ॥
म्हा मरुधर देश सुहामणो गुढा नगर मझार।
म्हा० श्री जिनलाभ सन्थ दियो सूरि मंत्र गणधार ॥म्हा०॥श्री॥५॥
म्हा मन सकल उत्सव कियो वरत्यो जय जयकार।
म्हा मुख चन्द्र गज गामिनी मंजि मंजि सोल श्रृङ्गार ॥म्हा०॥६॥
म्हा चन्द्र चन्द्र चढता कला दीपत विरुद गच्छराज।
म्हा गौतम ज्यु गुणनिधि सरी प्रतपो अविचल राज ॥म्हा०श्री॥७॥
म्हा प्राण सुधारस वरसता हरखे भवि जन मोर।
म्हा धमगुरु रम देसना नासै करम कठोर ॥म्हा०॥श्री०॥८॥
म्हा वर्धमान गुरु विचरता श्री जिनचन्द्र सूरीश'।
म्हा ज्ञान दरसण अलजयो पूरो मनह जगीश ॥म्हा०॥श्री०॥९॥

म्हां० 'सिन्धु देश' में दीपतो, 'हालां नगर' निमेव।
म्हां० शुद्ध मन श्रावक श्राविका, देव सुगुरु करै सेव ।।म्हां०।।श्री०१०
म्हां० धन धन ग्राम नगर जिके, जिहां विचरै गच्छराण ।
म्हां० धन श्रावक ने श्राविका, श्री मुख संभलै वाण ।।म्हां०।श्री०।११
म्हां० अम्ह मन हरख घणो अछै. सद्गुरु सुणवा वाण ।
म्हां० साधु समक्षे परिवर्या, आवो श्री गच्छराण ।।म्हां०।।श्री०१२।।
म्हां० श्रीमुख कमल निहारवा, अम्ह मन छै वहु आश ।
म्हां० श्री सद्गुरु हिव पूरजो, आवेज्यो चउमास ।।म्हां०।।श्री०१३।।
धन दिन ते सफलो घड़ी, मुख नी सुणस्यां वाण ।
म्हां० सद्गुरु सेवा सारस्यां, जीवत जन्म प्रमाण ।।म्हां०।।श्री०।।१४।।
म्हां० संवत 'अढार चौतीस' में, 'माधव' मास मझार ।
म्हां० वर्त्तमान सद्गुरु तणा, गुण गायां निस्तार ।।म्हां०।।१५।।श्री०।।
इम वहुविध वीनति करी, अवधारो गच्छराय ।
म्हां० "कनकधर्म" कहै वंदणा, अवधारो महाराय।।म्हां०।।१६।।श्री०।।

श्री जिनहर्षसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे

श्रीजिन सौभाग्यसूरि भास।
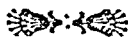
ढाल—घोड़ी तो आइ थांरा देसमें एहनी देशी

'करणा दे' कूखे ऊपना, सद्गुरुजी पिता 'करमचंद' (वि)ख्यात हो।
गच्छ नायक 'सौभाग्यसूरि' हो सद्गुरुजी ।आ०। ॥१॥
श्री'जिनहर्ष' पाटोधरु सद्गुरुजी, श्री'जिनसौभाग्य' सूर हो॥२॥ग०
चौठी वातण चालीया सद्गुरुजी, थे वचनां रां सूर हो ॥ग०॥३॥
उवां तो कूड़ कपट कियो सद्गुरुजी, थे कूड़कपट सुं हुवा दूर हो॥ग०४
'वीकानेर' पधारज्यो सद्गुरुजी, थांसूं कौल कियो 'रतनेश'हो॥ग०५
थांका पुण्य थांके खनै सद्गुरुजी, पुण्य प्रबल जग मांहि हो॥ग०॥६॥
'वीकानेर' पधारिया सद्गुरुजी, थांसुं एकांत किया 'रतनेश' हो॥ग० ७
भलांइ विराजो पाटियै सद्गुरुजी, थे म्हांरा गुरुदेव हो ॥ग०॥८॥
तखत दियो गुरु वचन थी सद्गुरुजी, श्रीसंघ मिल'रतनेश' हो॥ग० ९
नोवतखाना वाजिया सद्गुरुजी, वाज्या मङ्गल तूर हो ॥ग०॥१०॥
गोत्र 'खजानची' दीपता सद्गुरुजी, 'लालचंद' वुधवान हो॥ग०॥११॥
महोच्छव कीनो अति भलो सद्गुरुजी, दीनो अढलक दान हो॥ग०१२॥
ड़ वरस लगे पालज्यो सद्गुरुजी, वड़ खरतर गच्छ राज हो॥ग०१३
कोठारी' वंश दीपावज्यो सद्गुरुजी, ज्यां लग सूरज चंद हो ॥ग१४
जानै वांदां नहीं सद्गुरुजी, थे म्हांरा गच्छराज हो ॥ग०॥१५॥
ंवत् 'अढारै वाणवें' सद्गुरुजी, 'सुदसातम' गुरुवार' हो॥ग०॥१६॥
मिगसर' पाट विराजिया सद्गुरुजी, खूब थया गहगाट हो॥ग०॥१७॥

॥ इति श्री भास सम्पूर्णम् ॥

पाटोधर पांव पधारिया, सूरीश्वर सिरताज ।सु०।
गहरो गुमानी ज्ञानी गच्छपति, म्हांरी मानी अरज महाराज॥सु०६॥
जालम 'खरतर' राजवी गुरु, साचो गच्छ सिणगार ।सु०।
भलके हे सहियां चंपो भालमें, मैं तो दीठो अजब दीदार ॥सु०॥१०॥
सूरज गच्छ चौरासिया, थानै भलाइ कहै वड़ भाग ।सु०।
आज सवाइ अभिमानमें, म्हारो रीझयो मन घणो राग ॥सु०॥११॥
अमीय रसायन आपरो, मीठी वाण मुणिन्द ।सु०।
तखत तपे जिनहर्ष रै, श्री 'जिनमहेन्द्र' सुरिन्द ॥सु०॥१२॥
दिलभर दर्शन देखनै, सफल करै संसार ।सु०।
'राजकरण' नितराजरे, पाय लागै हर्ष अपार ॥सु०॥१३॥

(२)

आज वधाई आवियो म्हांरे, मारू देश मझार हो राज ।
दीधी वधाई दोडनै म्हांरे, पूजजी आप पधारो हो राज ॥
आज वधावो हे सखी, गहरो गच्छपति गज मोतीड़े हो राज॥१ आ०
मांगी दूं वधावणी तोने, पथीड़ा लाख पसाव हो राज ।
चले संघ जोतां वाटड़ी, थे तो आवी आज सुणाय हो राज॥२॥अ०॥
वण थट हरिया वागमें, एतो भलहलीयो जश भाण हो राज ।
आवो हे सहेली आपे निरखस्यां, एतो खरतरगच्छ रो राणहो राज॥३आ०
.... ।
धवल मङ्गल करण ढोलमें ऐतो जंगी ढोल घुराया हो राज ॥आ०॥४॥

महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्

श्रेयस्कारि सतां यदाशु चरितं, सामोदमाकर्णितं ।
कर्णाभ्यां सततं मतं मतिभृतां, सद्भूत भावान्वितम् ।।
विभ्राणास्तदनन्त कांति कलिताः कारुण्य लीलाश्रिताः ।
श्रीमत्पाठक राजसोमगुरवस्ते संतु मोदप्रदाः ।।१।।
येषां चारु मुखोद्गताः सुललिता वाचो निशम्योल्लस-
द्रूपं वीक्ष्य पुनः प्रमोद जनकं लावण्य लीलागृहम् ।।
प्राप्तानंद कदंबकेन मनसा स्वस्य श्रुतीनां दशा-
मष्टानांच विनिर्म्मितं फल युतां मेने ध्रुवं शाश्वतः ।।२।।
चित्तं सर्वं सुपर्वणामपि विशद्वाचस्पतेर्भाषितं ।
माधुर्येण तिरश्चकार सहसा नादीनवं यद्वचः ।।
शास्त्रासक्तधियां सदैव सुधियां चेतश्चमत्कारकृत् ।
दुर्वादि द्विरदोष दर्प दलने शार्दूल विक्रीडितम् ।।३।।शा० छंद।।
प्राप्त प्रदोपोदयमंकगर्भितं ? चंद्रं दधच्चारु तयैकमम्बरम् ।
आमोद संदोह मनारतं मतं चैतन्य भाजां वितनोति चेतसि
(यदितिशेषः) ।।४।।
संभाव्यते तन्मधुरं निराश्रवं नित्योदयं तद्द्वितयं विराजत् ।
श्रीराजसोमोत्तम नाम विश्रुते यत्रास्पदे किं खलु तस्य वर्णनम् ।।५।।
वंदे समग्रावयवानवद्यतां वीक्ष्यानुरक्तैरिव पेशलैर्गुणैः ।
हित्वामिथो द्वेषमलंकृत स्थितीन् योगीन्द्र वंशाहितलक्षणान्गुरून् ।।६।।
इन्द्रवंशावृत्तम ।।

विशद गुण निधान साधुवर्ग प्रधान ।
कृत सुमत विधान सत्कृतौ सावधानम् ॥
धृतिरुचिर विधान, सर्व विद्या दधान ।
गुरमनघ विधान प्राप्यत सन्निधानम् ॥७॥
पद्यवध ॥
प्रणमन गुरुभक्त्या भक्तलोका विशुद्धे-
रति निभृत यशोभि शोभमान विमानम् ॥
विजित निखिल लोकोद्दाम कामस्य जेतु ।
स्फुर शुभ मति माला मालिनी यस्य वृत्ति ॥८॥युग्म॥
मालिनीवृत्तम् ॥
इत्थ श्रीराजसोमाख्या महोपपद पाठका ।
सस्तुता सतु विद्वान क्षमा कल्याणकाङ्क्षिणाम् ॥९॥
इति विद्यागुरूणामष्टकम् । प० रायचन्द्रजिद्धर्षचन्द्र जित्कृतऽष्टक-
मिद लिखित प० सुस्यालचन्द्रेण (पत्र १ महिमा० व० न० ७४)

वाचनाचार्य-अमृत धर्माष्टकम् ।
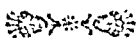
श्रीवाचनाचार्यपद प्रतिष्ठा गणीश्वरा भूरिगुणैर्गरिष्ठाः ।
सत्य प्रतिज्ञामृतधर्म संज्ञाः जयन्तु ते सद्गुरवो गुणज्ञाः ॥ १ ॥
गणाधिप श्रीजिनभक्तिसूरि, प्रशिष्य संघात सुविश्रुतानाम् ।
येषां जनिः श्रीमति वृद्धशाखे उकेश वंशेऽजनि कच्छदेशे ॥ २ ॥
भट्टारक श्री जिनलाभ सूरयः श्रीयुक्त प्रीत्यादिम सागराश्च ये ।
आसन् सतीर्थ्याः किल तद्विनेयतामवाप्य यैः प्राप्तमनिंदितं पदम् ॥३॥
शत्रुंजयाद्युत्तम तीर्थयात्रया सिद्धांतयोगोद्वहनेन क्षारिणा ।
संवेग रंगाहत चेतसा पुनः पवित्रितं यैर्निजजन्म जीवितम् ॥ ४ ॥
जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरेण्य हेम्नः कलशैर्विराजितः ।
व्यधापि(यि?) संघेन च पूर्व मंडले येषां हितेषामुपदेशतः स्फुटम् ॥५॥
प्रभूतजंतून् प्रतिबोध्य ये पुनः स्वर्गंगता जेसलमेरुसत्पुरे ।
समाधिना चंद्र शराष्टभूमिते संवत्सरे माघ सिताष्टमी तिथौ ॥ ६ ॥
स्थानाङ्ग सूत्रोक्त वचोनुसाराद्विज्ञायते देवगतिस्तुयेषाम् ।
यतो मुखादात्म विनिर्गमोभूत्साक्षात्तु विज्ञानभृतो विदंति ॥ ७ ॥
एवं विधाः श्रीगुरवः सुनिर्भरं कृपापराः सर्वजनेषु साम्प्रतम् ।
क्षमादि कल्याण गणि प्रति स्वयं प्रमोदकृद्द्राग् ददतु स्वदर्शनम् ॥८॥

इति श्रीमदमृतधर्म गुरूणामष्टकम् ।

उपाध्याय क्षमा कल्याणाष्टकम् ।

(१)

चिद्व्ये पारज्ञ स्फुरदमल पद्मे न्द्र मुग्धो,
मुदानंत ध्यायो मुनि गणवरो मारशमन ।
सदा सिद्धान्तार्थ प्रकटन परो वाक्पति सम,
क्षमाकल्याणोऽसौ नयनमुनिगामी भवतु मे ॥१॥
गुरो तव्रविदर्शन मदीय मानसं मुद ।
भरत्ययैव केकिना गिरौ पयोद लोकनम् ॥२॥
महोज्ज्वयदीयगा निपीय कर्ण सपुटैं ।
भवन्ति मोदसयुता जना सुशर्म भागिन ॥३॥
तप पुज्ज युतोऽजस्र ध्यान संमग्न चेतस ।
क्षमाकल्याण सन्नाम्नो गुरुन्वन्दे गुरुयुतीन् ॥४॥
गुरु ज्ञानप्रद नौमि सद्धर्माचार चचुर ।
यदक्षि करुणा दृष्टे पूतोऽधर्मी भवत्वर ॥५॥
विराम विपदा शश्वत्स्मरता भूमि मण्डल ।
वन्दाम् नर मन्दारमुपास गुर पत्कजं ॥६॥
मोह मास्थत्सदा सेव्योद्धाक् सद्गुनेर्मया ।
योयं गायेय वर्णाभ सौजन्याद् द्वनौचिर ॥७॥
काम मोह राग रोष दुष्ट दात्र वारिदस्य ।
दर्शनं जनाघहारि अस्तुमे सुपाठकस्य ॥८॥
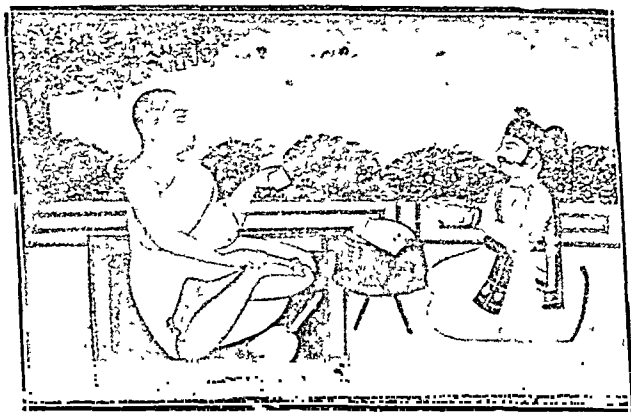
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी

(श्रीहरिसागरसूरिजीकी कृपासे प्राप्त)

यद्वाणी मुदमातनोति कृतिनां, पूतात्मनां नित्यशः ।
सद्बीजंवृपशालिनः सुरसरिन्नीराञ्जुना सन्ततं ॥
योगारूढ़ मुनीद्र मानस सरो वासं विधाय स्थिता ।
तां पीत्वा जलदाम्बु चातक इवहृन्मे यथाहृष्यति ॥६॥

---

* परलोक गतानां श्री गुरूणां स्तवः *

(२)

सर्व शास्त्रार्थ वक्तृणां, गुरूणां गुरु तेजसाम् ।
क्षमा कल्याण साधूनां, विरहोमे समागतः ॥१॥
तेनाहं दुःखितोजऽस्रं विचरामि महीतले ।
संस्मृत्य तद्गिरोगुर्वीं, धैर्य्य मादाय संस्थितः ॥२॥
वीकानेर पुरं रम्ये, चातुर्वर्ण्य विभूपिते ।
क्षमाकल्याण विद्वांसो, ज्ञान दीप्रास्तपस्विनः ॥३॥
अग्न्यद्रि करि भू वर्षे, (१८७३) पौष मासादिमे दले* ।
चतुर्दशो दिन प्रांते सुरलोक गतिंगताः ॥४॥युग्मं ॥
वन्देहं श्रीगुरून्नित्यं भक्ति नम्रेण वर्ष्मणा ।
मदुपकार कृताः श्रेण्यः स्मर्यन्ते सततं मया ॥५॥
गृहं पवित्री कुरुमे दयालो, गुरो सदापाद सरोजन्यासैः ।
लुनीहि जाड्यं मनसिस्थितं वै, संस्कारवत्या च गिरा सदात्वं
श्रीःस्तात् सतां सदा ॥६॥

---

* कृष्ण (प्रथम) चतुर्दशी प्रांते ।

सेवक सरूपचन्दरो कह्यो

उपाध्याय जयमाणिक्यजीरो छंद

दोहा

सरस सबुध दिये शारदा, सुहाला मप्रसाद(द?) ।
गुण गाउं 'घमडो' जती, बुध समपो वरदाइ ॥ १ ॥
चैत्य प्रसाद चिणाविया, कर जिण इधका कोड ।
बहु कूटा लग नाम चड, हुवे न किण सु होड ॥ २ ॥
जैन धरम धारया जुगत, साझण शील सनाह ।
'हररवद' पाट 'जीवण जी' हुवा, सिंघ सहु करै सराह ॥३॥
खरतर वश ओपम खरा, वाचे सकल बखाण ।
पण धारी 'जीवणदास' पट, साचो 'घमड' सुप्रमाण ॥ ४ ॥

॥ छंद जाति रोमकंद ॥

पण धारीय 'जीवणदास' तणे पट, थाट धरे 'घमडेश जती ।
सरसत सकल उक्त समापण, नीत पण दीयण सुमन नीती ॥
जम वाण सचाण सचाण सहवाचे, परदश प्रवेश कीरत कती ।
नर नार उच्छाव करै व्हो नारद, वारद ज्यु इधकार भनी ॥१०॥
सवत् 'अढार वरस पचीस हीं' मास 'वैशाख सुद छठ' मोती ।
परवाण वासाण पतस्ठा हो पुरत, पेरव रह दस दस पती ॥
नीरख परख करै बहु नाईक, वाइक पढै कवराव वती ॥ १० ॥

ज्ञा अरचा मंड पाट पटंवर, शजत झालर मंत वनी ।
नरानो पेम न कोई पचपै, न्यात कहै धन धन नीती ॥
बडुवा रस कोलै नार बखाणो, जस जोर हुवो ज्यूं छंद केनी ॥५०॥
कर कोड महोड करै कम कोरन, ध्यान धरै को ग्यान धनी ।
दीये दान घणा मनमान मल्हारे, पुत्र गणेसुर पाट धनी ॥
इंवकार करै जीणवार सुजाणे, आगम कोइण छंद दर्शी ॥ ५० ॥

॥ कवित्त ॥

खरतर गच्छ जस खटण, पाट उजवाल वडे प्रब(ण?) ।
'हरखचंद' हुआ हैत, वर 'जीवण' जी वाटण ॥
'सुन्दरदास' सपूत, वले 'वल्लपाल' वखाणु ।
'दीपचंद' दरियाव ओपमा 'अरजन' जाणुं ॥
'जीवणदान' पुठ खटण सुजस, वड शाखा जिम विस्तरी ।
परवार पुन 'घमंडेश' रो, रवि जितरो अविचल रही ॥१॥
॥ श्री ॥ ३० ॥ श्री जयमाणिक्य जीरो ए कवित्त छै ॥

॥ जैन-न्याय ग्रन्थ पठन सम्बन्धी सवैया ॥

स्याद् वाद जे (जय?) पताका 'नयचक्र' 'नै (नय?) रहस्य'
'पंचअस्तिका यं' 'रत्नआकरावतारिका' ।
कठिन 'प्रमेय कौल मारतंड' 'सम्मति' सुं,
'अष्टसहस्त्री' वादि गजकी विदारिका ।
'न्याय कुसुमाञ्जलि' जु 'तरकरहस्यदीपी(का)',
'स्याद्वाद्-मंजरी' विचार बुद्धि धारिका ।
केइ 'किरणावली' से तर्क शास्त्र जैन मांझि,
कहा नैयायिकादि पडो शास्त्र पारका ॥१॥

❀ ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह ❀

द्वितीय विभाग

(खरतरगच्छको शाखाओ सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य)

वेगड खरतरगच्छ गुर्वावली

पणमिय वीर जिणद चद, कय सुकय पवेसो ।
खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पभणेसो ।
तसु पय पकय भमर सम, रसजि गोयम गणहर ।
निणि अनुक्रमि सिरि नेमिचद मुणि, मुणिगुण मुणिहर ॥ १ ॥
सिरि उद्योतन' 'वर्द्धमान', सिरि सूरि 'जिणसर' ।
थभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडिय परमेसर ।
'जिणवल्लह' 'जिनदत्त' सूरि, 'जिणचद' मुणीसर ।
जिणपति' सूरि पसाय वास पट्ट सूरि 'जिणेसर' ॥ २ ॥
भवभय भजण 'जिणप्रबोध', सूरिहिं सुपमसिय ।
आगम छद प्रमाण जाण, तप तेउ दिवायर ।
सिरि 'जिन कुशल' मुणिद चद, धीरिम गुण सायर ॥३॥
भाव(ठ)—भंजण कप्प रुक्ख, 'जिन पद्म' मुणीसर ।
सव सिद्धि बुद्धि समिद्धि वृद्धि, 'जिणलब्धि' जइसर ।
पाप ताप सताप ताप, मलयानिल आगर ।
सूरि शिरोमणि राजहस, 'जिणचद' गुणागर ॥ ४ ॥

वोहिय श्रावक लाख साख, सिव मुख सुख दायक ।
महियलि महिमामाण जाण तोलइ नहु नायक ।
'झंझण' पुत्त पवित्र चित्त, कित्तिहिं कलि गंजण ।
सूरि 'जिणेसर' सूरि राउ, रायह मण रंजण ॥ ५ ॥
'भीम' नरेसर राज काज, भाजन अइ सुंदर ।
वेगड नंदन चंद कुंद, जसु महिमा मंदर ।
सिरि 'जिनशेखर सूरि' भूरि, पइ नमइ नरेसर ।
काम कोह अरि भंग संग जंगम अलवेसर ॥ ६ ॥
संपइ नवनिध विहित हेतु, विहरइ मुहि-मंडलि ।
थापइ जिणवर धम्म कम्म, जुत्तउ मुणि मंडलि ।
जां गयणंगणि 'चंद सूरि', प्रतपइं चिर काल ।
तां लग सिरि 'जिणधम्म सूरि', नंदउ सुविशाल ॥ ७ ॥

॥ श्री जिनेश्वर सूरि गीत ॥

सूरि शिरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम अवतार हो ।
सद्गुरु तु कलियुग सुरतरु समो, वंछित पूरणहार हो ॥ १ ॥
सद्गुरु पूरे मनोरथ मनतणा, आपो आणंद पूर हो । सद० ।
विघन निवारो वालहा, चिन चिंता चकचूर हो ॥ सद० ॥ २ ॥
तु 'वेगड' बिरुद वडो, 'छाजहडा' कुल छाज हो ।
गच्छ खरतर नो राजियो, तु सिणगार वर साज हो ॥सद०॥३॥
सद् गुरू 'मालू' तणो, गुरु नो लीयो पाट हो ।
सम वरण ! लागो सहु, दुरजन गया दह वाट हो ॥सद०॥४॥
आराधी आणद सु, बाराही नि राय हो ।
धरणेन्द्र तिण परगट कियो, प्रगटी अति महिमाय हो ॥सद०॥५॥
परनो पूर्यो 'खान' नो, 'अणहिल वाटड' माहि हो ।
महाजन बद्र मुकावीयो, मेन्यो संघ उछाह हो ॥सद०॥६॥
'राजनगर' नड़ पागुयाँ, प्रतिबोध्यो 'महमद' हो ।
पद ठवणो परगट कियो, दुख दुरजन गया रड हो ॥सद०॥७॥
मोंगड मोंग वसारिया, अति ऊचा सममान हो ।
धोंगड माइ पावसइ, घोडा दीघा दान हो ॥सद०॥८॥
सवा कोटि धन खरचीयो, हरख्या 'महमद शाह' हो ।
बिरुद दियो वेगड तणो, प्रगट थयो जग माहि हो ॥सद०॥९॥

गुरु श्रा (सा?) वक बहु वेगड़ा, वलि वेगड़ पतिशाह हो ।
विरुद धर्यो गुरु ताहरो, तुझ सम बहु कुण थाय हो ॥सद०॥१०
श्री 'साचउर' पधारीया, मुं (पुं)हता गच्छ उछरंग हो ।
'वेगड' 'थूलग' गोत्र वे, मांहो मांहि सुरंग हो ॥सद०॥११॥
'राडद्रही' थी आवीया, 'लखमसीह' मंत्रीस हो ।
संघ सहित गुरु वंदीया, पहुंती मनह जगीस हो ॥सद०॥१२॥
'भरम' पुत्र विहरावीयो, राखण कुल नी रीत हो ।
च्यार चौमासा राखीया, पाली धर्म नी प्रीत हो ॥सद०॥१३॥
संवत 'चउद त्रीसा' समे, गुरु संथारो कीध हो ।
सरग थयो 'सकतीपुरे', वेगड धन जस लीध हो ॥सद०॥१४॥
पाटे थाप्यो 'भरम' नें, कर अधिको गहगाट हो ।
थूंभ मंडाव्यो ताहिरो, जा 'जोसा(धा?)ण' री वाट हो ॥सद०॥१५॥
लोक खलक आवे घणा, दादा तुझ दीवाण हो० ।
जे जे आस्या चिंतवइ, ते ते चढ़इ प्रमाण हो ॥सद०॥१६॥
पट पुत्री उपर दियो, 'तिलोकसी' नइ पुत्र हो ।
पूर्यो परतो मन तणो, राख्यो घर नो सूत्र हो ॥सद०॥१७॥
तूं 'झाझण' सुत गुण निलो, 'झबकु' मात मल्हार हो ।
'जिणचंद्र' सूरि पाटइ दिनकरु, गच्छ वेगड सिणगार हो॥सद०॥१८॥
स(ह)गुरु 'जिणेसर सूरजी', अरज एक अवधार हो ।
सदगुरु उदय करेज्यो संघ मइं, बहु धन सुत परिवार हो ।सद०।१६।
'पोस सुदि तेरस' नइं दिनइं, यात्रा कीधी उदार हो ।
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिंद नइं, करज्यो जयजयकार हो ।सद०.२०।

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥

राग:—मारू

आज फल्यो म्हारइ आगलोरे, परतग सुरतरु जाण ।
कामधेनु आवी घर रे, आज भले सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे
श्री जिणचद्र सूरिंद' पधार्या पूजजी रे ।
श्री चद्र कुलांबर चंद पधार्या, श्री खरतर गच्छ नरिंद ।पू०॥१॥
श्री वगट गच्छ इद पधार्या पूज्यजी रे ।
ढोल दमामा वाजीया रे वाज्या भेर निसाण ।
सुमति जन हरषित थया रे, कुमति पड्यो भंडाण ॥ प० ॥२॥
घरि घरि गूडी उछलइ रे, तलीया तोरण बार ।
पारवड़ी कानइ कीया रे, वेगड गच्छ जयकार ।गच्छ खरतरजी३
सूहव बधावो मोतीयइ रे, भर भर थाल विशाल ।
खोटा कूड कदाग्रही रे, ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥
वडइ नगर 'साचोर' मइ रे, श्री पूज्य आयो माण ।
तारा ज्यु झाखा थया रे, खोटा अ(?)र अजाण ॥ प० ॥ ५ ॥
पाटि विराज्या पूजजी, सुललित वाण (वखाण) ।
अशुद्ध प्ररूपक मयलड़ा रे, त्याना गलीया माण ॥ प० ॥ ६ ॥
'बाफणा' गोत्र कुल तिलार, शाह 'रूपसी' नो नद ।
"श्री जिन समुद्र ' पदइ पूज्यजी रे, प्रतपो ज्यु रविचद ।प०॥७॥
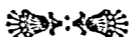
॥ जिनसमुद्र सूरि गीतम् ॥

ढाल—कडखउ, राग गुंढ रामगिरि सोरठ अरगजो

सुधन दिन आज जिन समुद्र सूरिंद आयो, सूरिंद आयो ।
चडो गच्छराज सिरताज वर वड वखत,
तखत 'सूरत' मइं अति सुहायो ॥ १ ॥
आवीयइं पूज्य आणंद हुआ अधिक,
इन्द्रि पिण तुरत दरसण दिखायो ।
अशुभ दालद्र तणी दूर आरति टली,
सकल संपद मिली सुजस पायो ॥ २ ॥
उदय उदयराज तन सकल कीधो उदय,
वान वेगड गछइ अति वधायो ।
जांचकां दान दीधा भली जुगत सुं,
सप्त क्षेत्रे वलि सुवित्त वायो ॥ ३ ॥
सवल साम्हो सजे स गुरु निज आणीया,
शाह 'छतराज' मनमइ उमायो ।
गेहणी सकल हरपइ करी गह गही,
विविध मणि मोतीया सुं वधायो ॥ ४ ॥

पूज पद ठवण सघ पूज पर भावना,
करे निज वश 'छाजहड' सुभायो।
गग गुण दत्त राजड जिसा कृत करी,
चद रग सुजस नामो चढायो ॥ ५ ॥सु०॥
छहा वरणा दीयइ दान दानी छतो, कलियुगइ करण साचो कहायो।
सगुरु 'जिनसमुद्र सूरिंद' गौतम जिसौ,
धरमवतइ खरइ चित ध्यायो ॥ ६ ॥
चतुर जिण चतुर विध सघ पहिरावीया,
जगत मइ सुजस पडहो बजायो।
मूल धर्म मूल पद चित मइ धारता,
जन शासन तणो जय जगायो ॥ ७ ॥
गुरु 'जिनसमुद्र सूरिंद' साचो गुरु,
शाह 'छत्रराज' सेठइ सवायो।
विहु वड शाख प्रौ जेम वाधो सदा,
गुणीय 'माइदास'' इम सुजस गायो ॥८॥सु०॥

खरतरगच्छ पिप्पलक शाखा

॥ गुरु पट्टावली चउपइ ॥
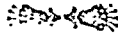
समरुं सरसति गोतम पाय, प्रणमुं सहिगुरु खरतर राय ।
जसु नामइं होयइ संपदा, समरंता नावइ आपदा ॥ १ ॥
पहिला प्रणमुं 'उद्योतन' सूरि, बीजा 'वर्द्धमान' पुन्य पूरि ।
करि उपवास आराहि देवी, सूरि मंत्र आप्यो तसु हेवि ॥२॥
वहिरमाण 'श्रीमंधर' स्वामि, सोधावि आव्यउ शिर नामि ।
गोतम प्रतइं वीरइं उपदिस्यउ, सूरि मंत्र शुधउ जिन कह्यउ ॥३॥
श्री 'सीमंधर' कहइ देवता, धुरि जिन नाम देज्यो थापतां ।
तास पट्टि 'जिनेश्वर सूरि', नामइं दुख वली जाइ दूरि ॥४॥
'पाटण' नयर 'दुलभ' राय यदा, वाद हूओ मढपति स्युं तदा ।
संवत 'दस असीयइ' वली, खरतर विरुद दीयइ मनिरली ॥५॥
चउथइ पट्टि 'जिनचंद सूरिंद', 'अभयदेव' पंचमइ मुणिंद ।
नवंगि वृति पास थंभणउ, प्रगटयउ रोग गयुं तनु तणउ ॥६॥
श्री 'जिनवल्लभ' छट्ठइ जाणी, क्रियावंत गुण अधिक वखाणी ।
श्री 'जिनदत्त सूरि' सातमउ, चोसठि योगणी जसु पय नमइ ॥७॥
बावन वीर नद्यो वलि पंच, माणभद्र स्युं थापी संच ।
व्यंतर बीज मनावी आंण, थूंभ 'अजमेरु' सोहइ जिम भाण ॥८॥
श्री 'जिनचंद्र सूरि' आठमइ, नरमणि धारक 'दिल्ली' तपइ ।
तास शीस 'जिनपति' सूरिंद, नवमइ पट्टि नमुं सुखकंद ॥९॥
'जिन प्रबोध 'जिनेश्वर सूरि', श्री 'जिनचंद्र सूरि' यश पूरि ।
वंदु श्री 'जिनकुशल' मुणिंद, कामकुंभ सुरतरु मणिकंद ॥१०॥

चउदसमइ 'जिनपद्म सूरि', 'लब्धि सूरि' 'जिनचंद' मुणीश ।
सतर(स)मइ 'जिनोदय' सूरि, श्री 'जिनराज सूरि' गुण भूरि ॥११॥
पाटि प्रभाकर मुकुट समान, श्री 'जिनवर्द्धन सूरि' सुजाण ।
शीलइ सुदरसण जंबु कुमार, जसु महिमा नवि लाभइ पार ॥१२॥
श्री 'जिनचंद सूरि' वीसमइ, समता समर (स) इद्रो दमइ ।
वदो श्री 'जिनसागर सूरि', नाम पसाइ विघन सवि दूरि ॥१३॥
चउरासी प्रतिष्ठा कोद्ध, 'अहमदाबाद' थुभ सुप्रसिद्ध ।
तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', श्री 'जिनहर्ष सूरि' सुख पूरि ॥१४॥
पचवीस मइ 'जिनचंद्र सूरिंद', तेज करि नइ जाणइ चंद ।
श्री 'जिनशील सूरि' भावइ नमो, संकट विकट थकी उपसमउ ॥१५॥
श्री 'जिनकीर्त्ति' सूरि सुरीश, जग थलउ जसु करइ प्रशस ।
श्री 'जिनसिंह' सूरि तसु पट्टइ भणु, धन भावइ समरता घणु ॥१६॥
वर्त्तमान वदो गुरुपाय, श्री 'जिनचंद' सूरिसर राय ।
जिन शासन उदयउ ए भाण, वादी भंजण सिंह समाण ॥१७॥
ए खरतर गुरु पट्टावली, कीधी चउपइ मन नी रली ।
ओगणत्रीश ए गुरुना नाम, लेतां मनवछित थाये काम ॥१८॥
प्रह उठी नरनारी जेह भणइ गुणइ रिद्धि पामइ तेह ।
'राजसुंदर' मुनिवर इम भणइ, संघ सहु नइ आणंद करइ ॥१९॥
इति श्री गुरु पट्टावली चउपइ समाप्त ॥ श्रा० कीडाइ पठनार्थे ॥
मो० द० द० ॥

यह पट्टावली श्री जिनचंदके शिष्य प० राजसुंदरने देवकुल पाटनमें स० १६६६ वैशाख वदि ६ सोम श्रा० योभणदे के लिये लिखी है। (देवकुल्पाटक तृतीयावृत्ति पृ० १६)

शाह लाधा कृत

श्री जिन शिवचंद सूरि रास

(रचना संवत १७९५ आश्विन शुक्ल पंचमी, राजनगर)

दूहा :—

शासन नायक समरीये, श्री 'वर्द्धमान' जिनचंद ।
प्रणमुं तेहना पद युगल, जिम लहुं परिमाणंद ॥ १ ॥
'गौतम' प्रमुख जे मुनिवरा, श्री (सोहम) गणराय ।
'जंबू' 'प्रभवा' प्रमुखने, प्रणमंता सुख थाय ॥ २ ॥
श्री वीर पटोधर परमगुरु, युगप्रधान मुनिराय ।
यावत 'दुपसह सूरी' लगें, प्रणमुं तेहना पाय ॥ ३ ॥
तास परंपर जाणीये, सुविहित गच्छ सिरदार ।
'जिनदत्त' ने 'जिनकुशल' जी, सूरि हुवा सुखकार ॥ ४॥
तस पद अनुक्रमे जांणीये, 'जिन वर्द्धमान सूरिंद'।
'जिन धर्म सूरी' पाटोधरू, 'जिनचंद सूरी' मुणिंद ॥ ५ ॥
'सिवचंद सूरि' जाणीये, देश प्रदेश (पाठा० प्रसिद्ध) छे नाम ।
खरतरगच्छ सिर सेहरो, संवेगी गुणधाम ॥ ६ ॥
तस गुण गण नी वर्णना, धुर थी उत्पति सार ।
नाम ठाम कही दाखवुं, ते सुणज्यो नर नारि ॥ ७ ॥

ढाल (१)—श्रेणिक मन अचरज थयो । ए देशी ।
मरुधर देश मनोहरू, नगर तिहा 'भिनमालो' रे ।
राजा राज करे तिहा, 'अजित सिंघ' भूपालो रे मरु० ॥१॥
गढ मढ मंदिर शोभता, वन वाडी आरामो रे ।
सुखीया लोक वसे तिहा, करे धरमा ना कामो रे ॥मरु०॥२॥
तेह नगर माहे वसे, साह 'पदमसी' नामो रे ।
'ओश(वाल)वंश साखा वडी, 'राका' गोत्र अभिरामो रे॥मरु०॥३॥
तस घरणी 'पदमा' सती, श्राविका चतुर सुजाणो रे ।
सुत प्रसव्यो शुभ योग(ति) थी, 'सिवचद' नाम प्रमाणो रे ।मरु०॥४॥
कुमर वधे दिन दिन प्रतइ, सेठजी हृदय विमासे रे ।
पूत निसाले मोकलू, अध्यापक नें पासे रे ॥ मरु० ॥ ५ ॥
भणी गुणी प्रोढा (पाठा० मोटा) थया, बोले मधुरी भाषो रे ।
ससारिक सुख भोगना, कुमर नें नहीं अभिलाषो रे ।मरु०॥६॥
इणे अवसर गुरु विचरता, तिणहीज नगरीमे आव्या रे ।
श्री जिनधर्म सूरिंद' जी, श्रावक जन मन भाव्या रे ।मरु०॥७॥
पइसारो महोछव करी, नगर माहे पधरावे रे ।
श्रावक श्राविका तिहा मिली, गीत ज्ञान गुण गावे रे ।मरु०॥८॥
धन धन ते दिन आज नो, धन ते वेला जाणो रे ।
जगे दिन सद्गुरु वांदीयइ, कीजिये जन्म प्रमाणो रे ।मरु०॥९॥

दूहा—थिर चित जाणी परषदा, गुरुजी दीये उपदेश ।
जीवाजीव स्वरूप ना, भाख्या सकल विशेष ॥ १ ॥

वाणी श्री जिनराज नी मीठी अमीय समाण।
दीधी सदगुरु देशना, रीझ्या चतुर सुजाण ॥ २ ॥
शाह 'पदमसो' कुंअरे, धर्म सुणी तिणि वार।
वयरागें चित वासीयो, जाणी अथिर संसार ॥ ३ ॥
कुमर कहे श्री गुरु प्रते, करजोड़ी मनोहार।
दीक्षा आपो मुझ भणी, उतारो भवपार ॥ ४ ॥
जिम सुख देवाणुप्रिये, तिम कीजे सुविचार।
अनुमत लेइ कुमरजी, हवे लेसे संयम भार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—जी रे जी रे स्वामी समोसर्या०। ए देशी०।

अनुमति द्यो मुझ तातजी, लेसुं संजम भारो रे।
ए संसार असार मां, सार धरम सुखकारो रे। अनु०। १।
वचन सुणी निज पुत्र नां, मात पिता दुख पावे रे।
संयम छै वछ दोहिलुं, सु होय नाम धरावे रे। अनु०। २।
अति आग्रह अनुमति दीयइ, मात पिता मन पावै रे।
उ छव सुं व्रत आदरे, संघ चतुरविध सावै रे। अनु०। ३।
संवत 'सतर त्रहसठे', लीधे दीक्षा मन भावे रे।
'तेर वरस' ना कुमर पणे, नरनारि गुण गावै रे। अनु०। ४।
मन वच काया वश करी, रंगे चारित्र लीधो रे।
पाले व्रत निरमल पणे, मनह मनोरथ सीधो रे। अनु०। ५।
मासकल्प तिहां किण रही, श्री पूज्य कीधो विहारो रे।
गाम नगर प्रतिबोधता, करता भवि उपगारो रे। अनु०। ६।
कुमर भणे अति उलटे, गुरु पासै मन खांते रे।
ज्ञानावरणी क्षय उपशमे, भणीया सूत्र सिद्धान्तो रे। अनु०। ७।

व्याकरण नाममाला भण्या, वलि भण्या काव्य ना मन्थों रे।
न्याय तर्क सवि सोधीया, धरता साधुनो पथोर। अनु०। ८।
गीतारथ गणधर थया, रायक चतुर सुजाणो र।
वयरागें मन भावना, पाळे श्री गुरु आणो रे। अनु०। ६।

दूहा—पाट योग जाणी करी, श्री गुरु करे विचार।
पद आपू 'सिवचंद'ने, तो होय जय जयकार ॥ १ ॥
निज समय जाणो करी, श्री गुरु कीध विहार।
उदयपुर' पाउधारीया, उच्छव थया अपार ॥ २ ॥
निज देहे बाधा लही, समय (पाठा० सयमे) थया सावधान।
अणशण आराधन करी, पाम्या देव विमान ॥ ३ ॥
संवत 'सतर छहोतरे', 'वैशाख' मास मझार।
'सुदि सातम' शुभ योगे तिहां, आपु (प्यु) पद श्रीकार ॥४॥
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' नें, पाटे प्रगट्यो भाण।
श्री 'जिनचंद सूरीसरू', प्रतपे पुण्य प्रमाण ॥ ५ ॥

ढाल ३—नींदलडी वयरण हुइ रही। ए देशी०।
भावे हो भवियण सांभलो 'सिवचंन्द्जी'नोहो (भलो) रास रसालके।
जे नित गावै भाव सु, तस वाधे हो घर मंगळ मालके ॥ १ ॥
अवसर लाहो लीजिये। आकणी०।
श्रावक 'उदयापुर' तणा, पद महोत्व हो करवा मन रंग वें।
समय लही निज गुरु तणो, धन खरचे हो धरमे दृढ रंग वें। अ०।२।
दीसी भिन्नु सुत लिखे (समे) कर, वीनति हो कुशल सघ एमके।
रे हरे श्रीगुरु नो अवसर कीहा, अमो करसु हो पद महोछव प्रेमके।३।

संवत 'सतर छीउत्तरे', मास 'माधव हो सुदि सातम' सारके ।
राणा 'संग्राम' ना राज्य में, करे उछव हो श्रावकतिण वार के ।अ०।४।
श्री संघ भगति करे अति भली, वहु विधना हो मीठा पकवानके ।
शाल दाल घृत घोल सुं, वली आपे हो वहु फोफल पानके ।अ०।५।
पहेरामणी मन मोद सुं, 'कुशले' 'जोये' हो कीधा गहगाट के ।
जस लीधो जगमें घणो, संतोषीया हो वली चारण भाट के ।अ०।६।
श्री 'जिनचंद' सूरीश्वरू, नित्य दीपे हो जेसो अभिनव सूर के ।
वयरागी त्यागी घणुं, सोभागी हो सज्जन गुणे पूर के । अ० । ७ ।
तिहां शिष्य 'हीरसागर' कीयो, अति आग्रह हो तिहां रह्या चौमासके ।
श्री गुरु दीये धर्म देशना, सुणतां होये हो सुख परम उलासके ।अ०।८
धरम उद्योत थया घणा, करे श्राविका हो तप व्रत पचखांण के ।
संघ भगति परभावना, थया उछव हो लह्या परम कल्याण के ।अ०।९।

दोहा—चातुर्मास पूरण थये, विहार करे गुरु राय ।
'गुर्जर देश' पाउधारिया, उछव अधिका थाय । १ ।
संवत 'सतर अठोतरे' कर्यो क्रिया उद्धार ।
वयरागे मन वासीयउ, कीधो गछ परिहार । २ ।
आतम साधन साधता, देता भवि उपदेश ।
करता यात्रा जिणंदनी, विचरे देश विदेश । ३ ।
जस नामी 'सिवचंद' जी, चावुं चिहुं खंड नाम ।
संवेगी सिर सेहरो, कीधा उतम काम । ४ ।

ढाल (४):—नयरी अयोध्या थी संचर्या ए देशी।

गुर्ज्जर देश थी पधारीया ए, यात्र करण मन लाय। मनोरथ सविफल्या ए,
'शत्रुंजय' गिरवर भणी ए, भेटवा आदि जिन पाय, मनो०। १।
चार मास झाझेरडा ए, रह्या 'विमल गिर' पास। मनो०।
कल्याणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस। मनो०।२।
तिहां थी 'गिरनारे' जइ ए, भेटीया नेमि जिणंद।
'जुनेगढ' यात्रा करी ए, सूरी श्री 'जिनचंद'। म०। ३।
गामाणुगामे विहरता ए, आवीया नयर 'खभात'। म०।
चोमासु तिहां किण रह्या ए, यात्रा करी भली भाति। म०। ४।
चरचा धर्म तणी करे ए, अरचे जिनवर देव। म०।
समझु श्रावक श्राविका ए, धरम सुणे नित्य मेव। म०।५।
तप पचखाण घणा थया ए, उपनो हरख अपार। म०।
तिहां थी विचरता आवीया ए, 'अहमदाबाद' मझार। म०।६।
बिम्ब प्रतिष्ठा घणी थइ (पाठा० करी) ए, वली थया जैन विहार। म०।
ते सवि गुरु उपदेश थी ए, समझ्या बहु नर नारि। म०।७।
तिहां थी 'मारुवाड' देश मा ए, कीवी 'अर्बुद' यात्र। म०।
'समेत सिखर' भणी संचर्या ए, करता निरमल गात्र। म०।८।
कल्याणक जिन वीसना ए, वीसे टुंके तेम (पाठा० ताम)। म०।
यात्रा करी मन मोद सु, वाध्यो अति घणो प्रेम। म०। ६।

दोहा—'समेतसिखर' नी यातरा, कीधी अधिक उछाह।
श्री पार्श्वनाथ जिन भेटीया, नगरो 'बणारसी' माह।१।

'पावापुरी' में पाउधारीया, जिहां श्री वीर निर्वाण।
'चंपापुरी' मांहे वांदीया, श्री वासपूज्य जिनभांण। २।
'राजग्रही' वैभारगिरि, यात्रा करी संघ साथ।
'हथीणापुर' जिन वांदीया, शांति कुंथु अरनाथ। ३।
'दि(दं)ली' चौमासुं रही, करता यात्र विशेष।
विहार करतां पुनरपि, आव्या वली 'गुर्जर देश'। ४।

ढाल (७):—पाटोधर पाटोये पधारो। ए देशो।

जिन यात्रा करी गुरु आव्या, श्रावक श्राविका मन भाव्या।
पटोधर वांदीये गुरुराया, जस प्रगमे राणाराया। प०। १। आं०।
'भणसाली' 'कपूर' ने पासे, तिहां 'सिवचंद' जी चौमासे। पटो०।
जस प्रणमें राणा राया, पटोधर वांदीये गुरुराया। आंकणी०।
देशना दीये मधुरी वाणी, सुणतां सुख लहे भवि प्राणी। पटो०।
वांचे 'भगवती' सूत्र वखाणे, समझ्या तिहां जाण सुजांण। प०। २।
ज्ञान भगति थइ अति सारी, जिन वचन की जाऊं बलिहारी। प०।
मली श्राविका जिन गुण गावे, भरी मोती ए थाल वधावे। प०। ३।
गहुंली करे गुरुजी नें आगे, शुद्ध बोध बीज फल मांगे। प०।
श्रावक करे धर्म नी चरचा, जिहां जिन पद नी थाये अरचा। प०।४।
नव कल्पे कीधो विहार, शुद्ध धरम तणा दातार। प०।
ईति उपद्रव दूरें कीधो, 'सिवचंदजी' ये यश लीधो। प०। ५।
पुनरपि मन मांहे विचारे, करूं यात्रा सिद्धाचल सार। प०।
'राजनगर' थी कीधो विहार, करी यात्रा 'सेत्रुंज' 'गिरनार'। प०।६।

निद्रा थी रहा 'दीवे' चोमासुं, जेहनुं धरमें चित वासुं।प०।
पुनरपि 'सिद्धाचल' आवे, गिर फरस्या मन ने भावे। प०।७।
यई यात्रा जिनेश्वर केरी, गुरु मुगति रमणी कीधी नेरी। प०।
जिनगुण निरख्या नित्य हेरी, टाली भव भ्रमण नी फेरी। प०।८।
'घोघे' थन्दिर जिन वाद्यां, करो करम तणी गति मद्दी।प०।
'भावनगरे' देव जुहार्यां, दुख दालिद्र दूरे निवार्यां। प०।६।

दोहा।

सवत 'रातर चोरासुयें', 'माह' मास सुखकार।
'भावनगर' थी आवीया, नयर 'खम्भात' मंझार ॥ १ ॥
गुर गुणरागी श्रावके, दीधो आदर मान।
गुरुजी दीये धर्म देशना, तात्विक सुधा समान ॥ २ ॥
द्वेष करी (पाठा० धरि) कोइ दुष्ट नर, कुमति दुर्भवी जेह।
यवनाधिप आगल जइ, दुष्ट वचन कहे तेह ॥ ३ ॥
सुणीय वचन नर मोकल्या, गुरुनें तेडी ताम।
यवन कहे अम आपीये, तुम पासे छे दाम ॥ ४ ॥
दाम अमे राखु नहीं, राखुं भगवन नाम।
कोप्यो यवनाधिप कहे, रोंचो एहनो चाम ॥ ५ ॥
पूरव वयर सयोग थी, यवन करे अति जोर।
ध्यान धरे अरिहंत सुं, न करे मुख थी सोर ॥ ६ ॥
सचित कर्म विपाकना, उदयागत अवधार।
सहे परिसह 'शिवचन्द्रजी', ते सुणजो नरनार ॥ ७ ॥

ढाल (६) :—वैवे मुनिवर विहरण पागुर्याजी। एदेशी०।
'जिनचन्द सूरी' मन माहे चिन्तवेरे, हवे तुं रखे थाय कायर जीवरे।

गह थी नरग निगोद मांहे घणींरे, तेतो वेदन सही सदीवरे ॥ १ ॥
धन धन मुनी सम भावे रह्या रे, तेह नी जइये नित्य वलिहार रे।
दुःकर परीसह जे अहियासने रे, ते मुनी पाम्या भव नो पाररे॥ध २॥
'खंधग' मुनीना जे शिष्य पांचसैरे, पालक पापीयें दीधा दुःखरे।
घाणी घाली मुनीवर पीलीयारे, ते मुनि(प्रणम्या)अविचल सुख रे॥धन०॥३
'गजसुकमाल' मुनी महाकालमें रे, स्मसाने रहीया काउसगजो।
'सोमल समरे' शीस प्रजालियोजी, ते मुनि प्रणम्या (पाठा० पाम्या)
सुख अपवर्ग जो ॥ध०॥४॥
'सुकोशल' मुनिवर संभारीयेजी, जेहना जीवित जन्म प्रमाण रे।
वाघणे अंग विदार्यु साधुनुंजी, परिसह सही पहुंता निरवाण हो॥ध५॥
'दमदन्त' राजऋपि काउसग रह्याजी, कौरव कटक हणें इंटाल जो।
परिसह सही शुद्ध ध्याने साधुजी रे, ते पण मुगते गया ततकाल जो
॥ध०॥६॥
'खंधग' ऋपिनें खाल उतारतांजी, कठीन अहीयासें परिसह साधु जो।
ते मुनी ध्यानें कर्म खपावीनेजी, पाम्या शिवपद सुख निरवाध जो
॥ध०॥७॥
इत्यादिक मुनिवर संभारताजी, धरता निजपद निरमल ध्यान जो।
जड चेतन नी भावे भिन्नताजी, वेदक चेतनता सम ज्ञान जो॥ध०८॥
तत्वरमण निज वासित वासनाजी, ज्ञानादिक त्रिक शुद्ध जो।
जडता ना गुण जडमें राखताजी, जेहनी आगम नैगम बुद्धजो॥ध०॥९॥
पुदगल आप्पा (थप्पा) लक्षणे जी, पुदगल परिचय कीनो भिन्न जो।
अन्त समय एहवी आतमदशाजी, जे राखे ते प्राणी धन्न जो ।ध०१०।

कोपातुर यवने रजनी समे जी, दीधा दुख अनेक प्रकार जो ।
तोहे पण न चन्या निज ध्यान थी जी, सहेता नाडी दंड प्रहार जो।११
हस्त चरण ना नख दुरे कीया जी, व्यापी वेदन तेण अनेक जो ।
हार्यो यवन महादुष्टात्मा जो, जो राखी पूरव मुनी नी टेक जो ।प०१२
जिम जिम वेदन व्यापे अति घणीजी, तिम मम वेदे आतमराम जो ।
इम जे मुनिवर सम(ता) भावे रमे जी, तेहने होज्यो नित परणाम जो

दूहा :—प्रात समय श्रावक सुणी, पासे आव्या जाम ।
यवन कहे झगडो थइ, ले जाउ निज धाम ।१।
'रूपा वोहरा' ने घरे, तेडी लाव्या ताम ।
हाहाकार नगरे थयो, दुष्ट ना मुख थया स्याम ।२।
'नायसागर' नीझामना, नीरखि परिणिनि शाति ।
उत्तराध्यन आदे बहु, संभलावे सिद्धात ।३।
सकल जीव समाविनइ, सरणा कीधा च्यार ।
सल्य निवारी मन थकी, पचख्या चारे अहार ।४।
अणशण आराधन करी, चडते मन परिणाम ।
समनावत धीरज गुणे, साध्यु आतम काम ।५।
चोथु व्रत कोइ आदरे, कोइ नीलवग परिहार ।
अगडी नीम केइ उचरे, केइ श्रावक व्रत वार ।६।
सघ मुख्य 'सिवचन्द' जी, वचन कहे सुप्रसिद्ध ।
'हीरसागर' ने गठ तणी, भलो भलामण दीध ।७।
संवत 'सनर चोराणुये', वैशाख मास मझार ।
षष्ठि दिन कविवार तिहा, सिद्ध योग सुखकार ।८।

प्रथम पोहोर मांहि तिहां, धरता जिननुं ध्यान ।

काल करी प्रायें पहुता पाम्या देव विमान ॥६॥

ढाल ७ :—माइ धन सुपन तु, धनजीतो तोरी आस । ए देशी०

धन सीरक हरखा, धन धन तस परिवार ।

जेणें परिग्रह मदो ने, पाम्युं जग मांहि नाम ॥१॥

बलिहारी तोरी बुद्धि ने, बलिहारि तुम ज्ञान ।

जेणें आगम भाखें, आराध्युं शुभ ध्यान ॥२॥

बलिहारी तुम कुल ने, बलिहारी तुम देश ।

शासन अजुआल्यो, कहुयाल्यो निज वेस ॥३॥

गुरु कुमर पणें रह्या, तेर बरस घर वास ।

शिष्य विनय पणें रह्या, तेर बरस गुरु पास ॥

गच्छनायक पदवी, भोगवी, बरस अढार ।

आयु पूरण पाली, बरस गुमालीस सार ॥४॥

धन धन 'शिवचन्द्रजी', धन धन गुरु अवतार ।

इम थोके थोके, गुण गावे नर नार ।

करे श्रावक मली तिहां, मांडवी मोटे मंडाण ।

कंचनमय कलसे, जाणें अमर विमाण ॥५॥

तिहां जोवा मलीया हिन्दु मलेछ अपार ।

गाय भवल मंगल, दीये ढोल घणा दमकार ॥

जय जय नन्दा कहे, दीये दंडा रव सार ।

भेर भूगल वाधे, नरणाइ रणकार ॥६॥

वली अगर उखेवे, मोवन फुले वधावे ।

इम उछव थाने, वन मांहि लेइ आवे ॥

सुकडने अगर सुं, कीधो देही संस्कार ।

निरवाण महोछव, इणि परे कीधो उदार ॥७॥

पुरुषोत्तम पूरो, सूरो सयल विवेक।
जेणे गछ अनुवाली, राखी धर्मनी टेक ॥
तिहां शुभ करावी, श्रावके उछव कीधो।
वली पारण भरावी, 'रूपे वेहरे' जस लीधो ॥८॥
तिम 'रामनगर' में, शुभ करी अति सार।
तिहां पगल्या पाल्या, 'बहिरामपुर' मझार ॥
अति उछव थाये, भावि कर नर नार।
इम गुरुगुण गावें, तस घर जय जयकार ॥९॥
अति आग्रह कीधो, 'हीरसागर' हित आणी।
करी रासनी रचना, साते ढाल प्रमाण ॥
'करया मति गछपति, सद्‌गुरु 'लाधो' कविराय।
तिण रास रच्यो ए, सुणत भणत सुखदाय ॥१०॥

कलश:—

इम रास कीधो सुजस लीधो, आदि अन्त यथा सुणी।
'शिवचन्द्रजी' गछपति केरो, भावनो भवि गुणमणी ॥
संवत 'सतरमें पचासु' 'आसो' मास सोहामणो।
'सुदि पंचमी' सुरगुरु वार, ए रच्यो रास रलीयामणो ॥
निरवाण भाव उल्लास धरने, 'राजनगर' माहे कीयउ।
कहे स्तुड़जा 'लाधो हीर' आग्रह थी, रास एह करी दीयउ ॥१॥
इति श्री शिवचन्द्रजी ना रास समाप्त ॥छ॥ प० ५ नि० म० ला० ॥
प्रति नं० २ पुष्पिका लेख—
सम्वत् १८४० ना आसु वदि ४ दिने श्री मुजनगर मध्ये लिखित। गाथा १०५ लिखत दयाचन्द गणिना लिखित श्रीबृहत्खरतर-गच्छ सम शाखाए श्रीगच्छेश श्रीगानि प्रसादात् वाच्यमान हेतवे। जब महीधर आ छे जां लग धान सूर, ता लग ए पोथी सदा रहे जो ए सुख पूर ॥ श्री रस्तु। कल्याणमस्तु ॥। श्री श्री
(पत्र ६ अजरसे विद्वद् मुनिवर्य लब्धि मुनि जी द्वारा प्राप्त)

आद्यपक्षीय (खरतरगच्छीय) आचार्यशाखा

जिनचंद सूरि पट्टधर श्री जिनहर्ष सूरि गीतम्
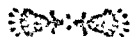
सखि देख्यउ हे सुपनउ मइं आज, श्री गच्छराज पधारिया ।
सखि सगळां हे माथां सिरताज, श्री 'जिनहरख' सूरीश्वर ॥१॥
सखि चालइ हे फरती गज गेलि, ढेल तणी पर ढलकती ।
सखि म्हांका सद्गुरु मोहनवेलि, वाणि अमीरस उपदिसइ ॥२॥
सखि सजती हे सोलह शृंगार, ओढी सुरंगी चूनड़ी ।
सखि शीसइ धर कलश उदार, मोत्यां थाल वधामणउ ॥३॥
सखि जुगवर चवद विद्या रा जाण, जाणी तन्त मारइ जगइ ।
सखि मानइ हे सहु राजा राण, पाटइ श्री 'जिणचंद' रइ ॥४॥
सखि दीपइ 'दोसी' वंश दिणन्द, 'भगतादे' उयरइ धर्यो ।
सखि जीवउ 'भादाजी' रउ नंद, 'कीरतवर्द्धन' इम कहइ ॥५॥

लघु आचार्य शाखा

॥ श्री जिनसागर सूरि गीतम् ॥

श्री संघ करइ अरदास हो, बेकर जोडी आपणी भावसु हो । पूज्यजी ।
पूर मननी आस हो, एकरसउ वद्दावउ आविनइ हो ॥ पू० ॥ १ ॥
नइ जाणउ अथिर संसार हो, संयम मारग 'लघुवय' आदर्यो हो ।पू०
आगम नउ भण्डार हो, ज्ञान प्रवीण क्रिया नी खप करइ हो ।पू०।२।
नु साधु शिरोमणि देखिहो, पाट तणइ जोगि 'जिनचंद सूरि' कह्योहो।
नइ राखी जगमइ रेख हो, पाट बइसता उपसम आदर्यो हो ।पू०॥३॥
ए काल तणउ परभाव हो, गुण करता पिण अवगुण उपनइ हो ।पू०।
न्तूर भजइ निज भाव हो, विषधर सुख विण माहि जाता ममा हो ।पू०४
नगर 'अहमदावाद' हो तेणी मागस दोष दिखाडियो हो । पू० ।
धरम नाडइ परमाद हो, निकलंक कनक तणी परि नू थयो हो ।पू०५।
थयउ सबला जस सोभाग हो, चिहुं खंड कीरति पसरी चौगुणी हो।
तुम्ह ऊपरि अधिको राग हो, चतुर विचक्षण धरमी माणसा हो ।पू०६।
जे वचइ मणिका काच हा, ते मी कोमत जाणे पाचिनी हो । पू० ।
कदाग्रही मिथ्या वाच हो, कुगुरु न छडइ सुगुरु न आदरइ हो ।पू०७।
नू शीलवन्त निलोंभ हो, श्री 'जिनसागर सूरि' सुगुरु तणी हो ।पू०।
'जयकीरति' करइ सुगोम हो, अविचल मरु तणी परे प्रतपज्यो हो ।८।

——*——
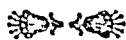
॥ श्री जिनधर्म सूरि गीतम् ॥

१ ढाल :—सोहिलानी

आया श्री गुरु राय, श्री खरतर गच्छ राजिया।
श्री 'जिन धर्म सुरिन्द', मङ्गल वाजा वाजिया ॥१॥
पेसारे मंडाण, 'गिरधर' शाह उच्छव करइ।
'बीकानेर' मझार, इण विध पूज जी पग धरइ ॥२॥
श्री 'संघ' साम्हो जाइ, आणी मन उल्लट घणे।
लुलि लुलि वांदइ पाय, सो दिन ते लेखे गिणै ॥३॥
सिर धर पूरण कुंभ, सूहव आवै मलपती।
भर भर मोती थाल, वधावे गुरु गच्छपती ॥४॥
पग पग हुवे गहगाट, घर घर रंग वधामणा।
झालर रा झणकार, संख शब्द सोहामणा ॥ ५ ॥
कीधी प्रोल उत्तङ्ग, नर नारी मन मोहनी।
नाना विधि ना रंग, तिण कर दीसइ सोहनी ॥६॥
सिणगार्या सब हाट ऊंची गुडी फरहरइ।
दूधे वूठा मेह, याचक जण यश उच्चरइ ॥७॥
प्रथम जिणेसर भेटि, आया पूज उपासरे।
सांभलि गुरु उपदेश, सहुको पहुंता निज घरे ॥८॥
सोहलानी ए ढाल, मिल मिल गावे गोरड़ी।
'ज्ञान हर्ष' कहे एम०, सफल फली आज मोरडी ॥९॥

२ ढाल :—बिछुआनी

महिर करो मुझ ऊपरै, गुरुआ श्री गणधार रे लाल।
'भणशाली' कुल सेहरो, मात 'मिरगा' सुखकार रे लाल ॥१॥म०॥
सुन्दर सूरति ताहरी, दीठा आवै दाय रे लाल।
मधुकर मोह्यो मालती, श्रवरन को सुहाय रे लाल ॥ २ ॥ म० ॥
सूर गुणे करि सोहता, षट् जीव ना प्रतिपाल रे लाल।
रूपे वयर तणी परे, कलि गौतम अवतार रे लाल ॥ ३ ॥ म० ॥
साधु संघाते परिवर्या, जिहा विचरै श्री गुरु राय रे लाल।
सुख सम्पति आणन्द हवइ, वरते जय जय कार रे लाल ॥४॥म०॥
श्री 'जिनसागर सूरि' जी, सइं हथ थाप्या पाट रे लाल।
श्री 'जिन धर्म सूरीश्वरु', दिन दिन हवइ गहगाट रे लाल ॥५॥म०॥
'राजनगर रलियामणो, पद महोछव कीयो सार रे लाल।
'विमला दे' ने 'देवकी', गुण गण मणि आधार रे लाल ॥ ६ ॥ म० ॥
गच्छ चौरासी निरखिया, कुण करै ए गुरु होड रे लाल।
'ज्ञानहर्ष' शिष्य वीनवै, 'माधव' वे कर जोड रे लाल ॥ ७ ॥ म० ॥

जिनधर्मसूरि पट्टधर जिनचंद्रसूरि गीतम्।
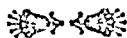
१—देशी दरजणरा गोतरी ॥

सुणि सहियर मुझ वातड़ी, तुझ नै कहुं हित आणी। हे वहिनी।
आचारज गच्छ रायनी, सुणिवा जइयइ वाणि। हे वहिनी ॥१॥
सूरतड़ी मन मोही रह्यउ ॥ आंकड़ी ॥
सदगुरु वेसी पाटियइ, वाचै सूत्र सिद्धान्त। हे वहिनी।
मोहन गारी मुंहपत्ति, सुन्दर मुख सोहन्त। हे वहिनी ॥२॥
गहूंली सद्गुरु आगले, करियै नवनवी भांति। हे वहिनी।
सुगुरु वधावां मोतीये, मन मांहि धरि खांति। हे वहिनी ॥३॥
वैसी मन विहसी करी, सांभलां सरस वखाण। हे वहिनी।
भाव भेद सूधा कहै, पण्डित चतुर सुजाण। हे वहिनी ॥४॥
साधु तणी रहणो रहइ, पाले शुद्ध आचार। हे वहिनी।
सूरि गुणे करि शोभतो, श्री खरतर गणधार। हे वहिनी ॥ ५ ॥
'वुहरा' वंश विराजतो, 'सांवल' शाह सुविख्यात। हे वहिनी।
रतन अमूलिक उर धर्यो, 'साहिबदे' जसु माता। हे वहिनी ॥ ६ ॥
श्री 'जिनधर्मसूरि' पाटवी, श्री 'जिनचन्द्रसूरीश'। हे वहिनी।
अविचल राज पालो सदा, पभणै 'पुण्य' आशीस। हे वहिनी ॥ ७ ॥

लिखितं सम्वत् १७७६ वर्ष वैसाख सुदी १२ भौमे।

जिन युक्ति सूरि पट्टधर जिनचंद्र सूरि गीतम्।

पूजजी पधार्या मारू देशमें, दूधां वूठा जी मेह। गुणवन्ता हो गच्छपति।
श्रीसंघ वांदे हो अधिक उच्छाह सुं ...

गुरु वन्दो हो गच्छपति, श्रीजिनचन्द्र सूरि सुखकन्द ।। आंकड़ी ।।
मिलि मिली आवो हे सगर सहेलिय, भरि मा नयड थाल ।गु०।
वन्दन आव्या हे खरतर गच्छ धणी, जीव दया प्रतिपाल ।।२।।गु०।।
मन मान्हले हो मान्हा संघरे, मन धरि अधिक आणन्द ।गु०।
बाजा बाजे हो गाजे अम्बरे, गच्छपति ना गुण वृन्द ।।३।।गु०।।
गुणियण गावै हो गुण पुनमा तणा, बोले मुख जै जै वाद ।गु०।
कीरति धरी हो गंगाजल जिसी, दस दिसि करै कल्लोल ।।४।।गु०।।
घर घर कीजे हो हरखे गहुंली, दीजै वंछित दान ।गु०।
सूहव गावै हो मङ्गल सोहला, गिड़. घू घू घुग निसाण ।।५।।गु०।।
नर नारी ना हो परिकर बहु मिले, वंदण भणी विशेष ।गु०।
आय विराज्या हो पूजजी पाटिय, दे धरम उपदेस ।।६।।गु०।।
नवरस मास सुधारस वरसतो, गरजतो जलद समान ।गु०।
सुणतां लागे हो स्रवण सुहामणा, इमी म्हारे पूजजी रा वाण ।।७।।गु०।।
नित नित नवला हो हरख वधामणा, पूरव पुण्य प्रमाण ।गु०।
जिण दिसि दरस हो पूज्य समोसरे, तिण दिस नवे निधान ।।८।।गु०।।
पंचाचार हो पूज्य सदा धरे, पूज्य सुमति गुपति सोहन्त ।गु०।
गुण छत्तीस हो अति विराजता, पूज भविजन मन मोहन्त ।।९।।गु०।।
चन्द ज्युं दीसे हो नित चढती कला, 'जिन युक्तिसूरि' नी रे पाट ।गु०।
जो गौयम जिम बहु लब्धे भर्यां, सोह मुनिवर थाट ।।१०।।गु०।।
धन 'बीलाडा' हो संघ सगाहव, पूज रह्या चौमास ।गु०।
जिन शासन नी हो थई प्रभावना, सफल फली सहु आश ।।११।।गु०।।
मात "जमोदा" हो नन्दन जाणिय, 'भागचन्द' सुत सुविचार ।गु०।
पुण्यवन्त हो जगम अवतर्या, गोत्र 'रीहड' सिणगार ।गु०।
पूज प्रतपो हो ज्या रवि चन्द्रमा, हो पूज जीवो कोड़ वरीस ।गु०।
इम नित्र मनस हो हरख धरी घणो, 'आलम' दे आसीस ।।१३।।गु०।।

।। इति श्री पूज्यजी गीतम् ।।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

तृतीय विभाग

(तपागच्छीय ऐतिहासिक काव्य संचय)

॥ शिवचूला गणिनी विज्ञप्ति ॥

शासनदेव ते मन धरिए, चउवीस जिन पय अणुसरीए।
गोयमस्वामि पसाचलुए, अमें गा(इ)सि श्री गुरुणी विवाहलुए ॥१॥
'प्रागट' वंश सिंगारुए, 'गेहा' गण गुणह भंडारुए।
दानिहिं मानिहिं उदारुए, जसु जंपय जय जयकारुए ॥ २ ॥
तसु घरणी 'विल्हण दे' मति ए, सदाचार संपन्न शीयलवती ए।
जिणहि जाया वयरागरु ए, स्रो रयणहिं गुण मणि आगरुए ॥३॥
कुंअर गुणह भंडारुए, 'जिनकीरति सूरि' सा वीरुए।
'राजलच्छि' वहन तसु नामुए, लीह पवतणि करु पणामुए ॥४॥
'सिवचूला' सति सिंगारुए, जसु विसनर जगि उदारुए।
रुप लावण्य मनोहरुए, तप तेजिहिं पाव तिमिर हरुए ॥५॥
चारित्र पात्र गुरु जाणिए, श्री गच्छह भार धुरि आणीए।
तिणे अवसर श्री संघ मन रुलीए, विचार जोइ ते मनि रुलीए ॥६॥
'महत्तर' पद उच्छाहुए, तत्रखिण पतउ 'महादे' साहूए।
विनव्या श्री गुरुराउए, मउ मनि घणउ उमाहूए ॥७॥
किउ पसायो श्री संघ मिलीए, आणंदिउ नाचइ वली वलीए।
लिखुम न 'वैशाखुए' 'चउद त्र्याणुइ' ति पहिले पाखीए ॥८॥
'मेदपाट' महोत्सव करीए, 'देउलपुरी' जंग सुवि (चि?) विस्तरुए।
आवइ श्रीसंघ दह दिशि तणाए, आवरा जइ साहमा अति घणाए ॥९॥

कवि गुणविजय कृत

विजयसिंहसूरि विजयप्रकाश रास

प्रथमनाथ पृथ्वी तणो, प्रणमुं प्रथम जिणंद ।
माता 'मरु देवी' तणो, नन्दन नयणानन्द ॥१॥
'सीरोही' मुख मण्डणो, दुख नो खण्डणहार ।
'ऋषभदेव' साहिब सबल, वांछित फल दातार ॥२॥
गजगति जिनपति जे धरइ, गज लांछन निसदीस ।
'हीर विजयसूरि' हाथस्युं, थे थाप्यो जगदीस ॥३॥
'अजितनाथ' जग जीपतो, दौलतीकर दीदार ।
'ओसवंश' नइ देहरइ, जपतां जय जयकार ॥४॥
'शांति' शांतिकर सोलमो, परम पुण्य अंकूर ।
नगर शिरोमणि 'शिवपुरी', सूहवि शिर सिन्दूर ॥५॥
'कमठ' काठ थी काढ़िओ, जिणि जलतो भुजङ्गिद ।
लाख च्युंआलीस घर धणी, ते कीधो 'धरणींद ॥६॥
ते दुख चिन्ता चूरणो, पूरण पूरइ आस ।
प्रहउठि प्रभु प्रणमिइ, श्री'जीराउलि' पास ॥७॥
शासन साहिब सेवीयइ, समरथ साहस धीर ।
'बंभणवाडि' मंडणो, वीर वाड महावीर ॥८॥
वचन सुधारस वरसती, सरसति दिउ मति माय ।
'कमल विजय' गुरु पद कमल, प्रणमुं परम पसाय ॥९॥

'हीर' पाटि 'जेसिंगजी', पाटि प्रगट जगीस ।
श्री'विजयदेव' सूरिसर, जीवो कोडि वरीस ॥१०॥
तिणि निज पाटि थापीओ, कुमति मतगगज सीह ।
'विजयसिंह सूरीसरु', सकल सूरि सिर लीह ॥११॥
रास रचु रलीयामणो, मनि आणी उल्लास ।
'विजयसिंह सूरि' तणो, सुणयो 'विजय प्रकाश' ॥१२॥
सावधान सज्जन सुणो, पहिला दिउ दुइ कान ।
राहानी पृथ्वी वही, विधाना छइ दान ॥१३॥

ढाल :—राग देशाख ।

अढार कोडा कोडि सागर जेह, युगला धरम निवारक जेह ।
'ऋषभदेव' हुआ गुण गेह, धनुष पचसइ सोवन देह ॥१४
'आदीश्वर' नि सुत शत एक, भरतादिक नामि सुविवेक ।
आप पाट 'भरतसर' आप्यो, 'वहली देश 'बाहूबलि' थाप्यो ॥१५॥
'मरत' तणा अठाणु भाइ, तमा एक'मरुदेव' सवाई ।
तिणि निज नामि वसाव्यो देश, तद भणी भणियइ 'मरु देश' ॥१६॥
ईति अनीति नहीं लवलेश, धर्म तणो ते कहिइ देस ।
चोर चरड नी न पडइ धाडि, ... ॥१७॥
वडा वडा जिहा छइ व्यवहारी, सतूकार करइ अनिवारी ।
मोग तीरथ नी जिहा सेवा, मोतीचूर मिठाइ मेवा ॥१८॥
राजा पिण जिहा धरम करावइ, परमेसर नी पूजा मडावइ ।
सहजि जीव अमारि पलावइ, आहडा उपरि नवि आवइ ॥१९॥
सूर सुभट मानी मुछाला, करि झलकइ करवाल कराला ।
व्यापारी दीसइ दु दाला, घरि घरि सुभिख सुगाला ॥२०॥

देस मोटो तिम मोटा कोस, भोला लोक नहीं मनि रोस ।
वोलइ भाषा प्राहिं अटारी, कडि वांधइ वहु लोक कटारी ॥२१॥
लोक धरइ हाथि हथिआर, वाणिग पणि झूठा झूझार ।
रण विढतां पणि पाछा पग नापइ, साहमो साहमणिं नइ थिर थापइ॥२२
कपट विहूणी वोलइ गाढ़िइं, गरढो पणि जिहां घुंघट काढ़इ ।
विधवा पणि पहरइ करि चूडि, राव रसोइ रांधइं रूड़ी ॥२३॥
प्रहो पाहुणइं सवल सजाइ, राय रांणा नी परि भुंजाइ ।
पाटभक्त मनमां नहीं द्रोह, स्वामिभक्त स्युं अधिको मोह ॥२४॥
पुण्यवन्त प्राहिं नहि खुंट, वाहण साहण चढ़वा ऊंट ।
जिहां थाकइ तिहां लिइ विश्राम, चोर चखार तणुं नहीं नाम ॥२५॥
लोक लाख लीलाइं चालइ, सोना रूपी (या) हाथि उछालइ ।
दुस्मन नइ सिर देवा दोट, मोटा 'मारूआडि' नवकोट॥२६॥
प्रथम कोट 'मंडोवर' ए ठांम, हव (णां) 'जोधनयर' अभिरांम ।
वोजो 'अर्बुद' गढ ते जाण्यो, त्रीजो गढ़ 'जालोर' वखाण्यो ॥२७॥
चोथो गढ ते 'वाहडमेर', पांचमो 'पारकरो' नहीं फेर ।
'जेसलिमेरि' छठो कोट, जिणि लागइ नहिं वइरी चोट ॥२८॥
'कोटडइ' सातमो कोट वडेरो, आठमो कोट कह्यो 'अजमेरो' ।
कोइ 'पुष्कर' कोइ कहइ 'फलवद्धी', नवकोटी 'मारू आडि' प्रसिद्धो ॥२६

दोहा

धन 'मंडोवर' मरुधरा, जिहां 'मंडोवर' 'पास' ।
'गुणविजइ' कहइ प्रभु पूजतां, पूरइ मननी आस ॥३०॥
आज सफल दिन मुझ हु(य)उ, अवहुं हु(य)उ सनाथ ।
'गुणविजय' कहइ जव मुझ मल्यो, 'फलवधि' 'पारसनाथ' ॥३१॥

ढाल :—चौपाइ ।

'मरू' मण्डल माहि 'मेडतु', दालिद्र दुख दूरि फेडतउ ।
तेहनी कीरति जग मा घणी, एहवी लोक वात मइ सुणी ॥३२॥
जिन शासन माहि बोल्या बार, चक्रवर्ती 'भरतादिक' उदार ।
तिम शिव सासनि चक्री होइ, च्यार उपरि अधिका वलि दोइ ॥३३॥
तेमा धुरि मानधाता' भण्यो, चक्रवर्ती ते सूलि जण्यो ।
तव माता पहुती परलोक, राजलोक सघलइ तब शोक ॥३४॥
किम ए बाल वृद्धि पामस्यइ, इंद्र कहइ मुझ लिधा(श्रा?) वसइ ।
तिण कारणि 'मानधाता' कयउ, चक्रवर्ती पहलिउ गहगह्यो ॥३५॥
दान देवा घरि साम्हो जाय, ते मोटो हुउ महाराय ।
कोडा कोडि बरस तसु आय, प्रजा तणु पोहर कहवाय ॥३६॥
कृत युग मा त (हुयउ) प्रसिद्ध, इन्द्रइ राज्य थापना किद्ध ।
तिणि नगर वास्यु 'मेडतु', लीलाइ लखमी तेडतु ॥३७॥
'मेडतु'ते 'मानधाता पुरी', जेहथी लाजी 'अलकापुरि' ।
जे माटइ तिहा धनपति एक, इणि नगरि धनवन्त अनेक ॥३८॥
लोक वात एहवो साभलि, माच्यु ते जाणइ केवली ।
'मेडता' नी महिमा अति घणी, तिण वेला 'मेडतीआ' घणी ॥३९॥
चउपट चहुटा केरि ओलो, गढ मढ मन्दिर मोटी प्रोलि ।
घरि घरि उछरंग कल्लोल, बाजइ मादल भुगल ढोल ॥४०॥
चिहु दिसि सजल सरोवर घणा, दराणो जेठाणी तणा ।
कुडल सरवर सोहामणु, जाण कुण्डल धरणी तणु ॥४१॥

गाजइ गयवर हय (व)र घट्ट, व्यवहारीआं तणा गज घट्ट ।
वनवाडी ओपइ आराम, पासइ 'फलवधि' तीरथ ठांम ॥४२॥
देश देश ना आवइ लोक, दादइ दीठइ नासइ सोक ।
परता पूरइ 'पास कुमार', राति दिवस उघाडा बार ॥४३॥
इस्युं तीरथ नहीं भूमीतलइं, माणस लाख एक जिहां मिलइ ।
पोस दसमी जिन जन्म कल्याण, 'मेडता' पासि इस्युं अहिनाण ॥४४॥
'मेडतुं' दीठइ मन उलसइ, देवलोक ते दूरि वसइ ।
'मेडतुं' देखी लंका खिसी, पाणी आणइ 'वाणारसी' ॥४५॥
शिखर बद्ध ऊंचा प्रासाद, नन्दीश्वर स्युं मांडइ वाद ।
सतरभेद पूजा मंडाण, रसिया श्रावक सुणइ वखाण ॥४६॥
महाजन नि मनि मोटी दया, रांक ढोक उपरि बहु मया ।
ठामि २ तिहां सत्रुकार, तिणि नगरी नित दय दयकार ॥४७॥
तेणि नगरि महाजन मां वडो, 'चोरवेडिया' कुल नुं दीवडो ।
'ओसवाल' अति अरडकमल्ल, साह 'मांडण' नन्दन 'नथमल्ल' ॥४८॥
तस घरि लक्ष्मी वासो वसइ, रूपि रति पति नइ ते हसइ ।
नाथू नइ घर गज गामिणी, 'नायक दे' नामि कामिनी ॥४९॥
मणि माणक मोटा मालिआ, सोना रूपां नी थालियां ।
सालि दालि सखरां सांलणां, उपरि घल घल घी अति घणां ॥५०॥
'फुलां' दादी दिइ बहु दान, साहमी साहमणि नइं सन्मान ।
साधु साधवी घरि आवंती, पाणी नी परि घी विहरंति ॥५१॥
मीठाई मेवा भरपूर, चोआ चंदन अगर कपूर ।
'नायक दे' नवयौवन नारिं, 'नाथू' सुख विलसइ संसारि ॥५२॥

पुण्यइ पामी ऋद्धि अपार, जग जण जपइ जै जैकार।
'सालिभद्र' मम सुख भोगवइ, सुरिति समाधि दिन जोगवइ ॥५३
'नायक दे' नइन दुइ जाया, सकल कला गुण सहजि भण्या।
'जेमो' नइ 'ऋसौ' तिस नाम, 'दशरथ' घरि जिम 'लखमण' 'राम'।५४।
त्रीजो सुत जायो तिण वलि, मात तात पुहती मनरली।
'मेड़ता' माहि हुआ आणंद, 'कर्मचंद' नामइ कुल चंद ॥ ५५॥
'रूपचंद' चोथा नुं नाम, 'पचायण' ते पंचम ठाम।
'नाथू' ना नंदण गुण भर्या, जाणिकि पांच पांडव अवतर्या ॥५६॥

दोहा—

पांडव पांचइ माहि जिम, विचलो सुत सिरदार।
तिम 'नाथू' नंदन त्रिहि, 'कर्मचंद' सुविचार ॥५७।
विक्रम 'सवत सोलमइ' उपरि 'च्युंआलीस'।
शाके 'पनर नवोतरइ' पूरइ सजन जगीस ॥ ५८॥
उजल पखि फागुण तणइ, बीज दिवसि रविवार।
उत्तर भद्र पदा तणइ, चोथा चरण मझार ॥ ५९॥
राजयोग रलीयामणइ, काम रमइ नर नारि।
'कर्मचंद' कुंअर जयो, जगि हुआ जय जयकार ॥६०॥
कर्क लग्न मूरति भवनि, निहा गुरु उंचइ ठामि।
बट्ठो निणि तूठो दिइं, गुरु पदवी अभिराम ॥६१॥
त्रीजइ राहु सु मत्रीउ, कन्या राशि निवास।
भाई सुत बलि दीपतो, दुसमन थाइ दास ॥६२॥
रवि कवि बुध ए आठमइ, कुंभि लगन वइठ।
नवमई भवनि केतु कुज, पूरण चंद्र पइट्ठ ॥६३॥

मेखिं शनि नीचउ कह्यउ, दशमइ भवनि उदार।
पणि फल उचा नुं दिइं, केंद्र ठामि सुखकार ॥६४॥
ए शुभ वेला अवतर्यो, 'कर्मचंद' सुखकंद।
सुखि समाधि वाधतुं, वीज थकी जिम चंद ॥६५॥

ढाल :—राग गौडी।

इक दिन इम चिंतइ, नायक दे भरतार,
सुख सेजिं सूतो, जाग्यो रयणि मझार।
मइं पूर्व भव कांइ, कीधां पुण्य अपार,
तेणिं सही पाम्यां, सुख सघला संसार ॥ ६६ ॥

मुझ मंदिर मइडी, मणि माणक ना हार,
नित नवां पहरवा, नित नवला आहार।
नितु २ घर आवइ, अरथ गरथ भंडार,
वलि पाम्या परिघल, पुत्र कलत्र परिवार ॥ ६७ ॥

इणि भवि नवि कीधउ, सूधो श्री जिन धर्म,
विप (य) रसि हुंसी, कीधा कोड कुकर्म।
'धन्नो' 'कयवन्नो', 'सालिभद्र' सुकमाल,
जोउ धर्मिइ तरिया, वलि 'अवंति सुकमाल' ॥ ६८ ॥

ए विपय तणि रसि, प्राणी नइं वहु रंग,
जिम नयण तणइ रसि, दीवइ पडइ पतंग।
रागि करि वेध्यो, वींध्यो वाण कुरंग,
अम्बाडी पाडइ, करिणी मद मातंग ॥ ६९ ॥

खारा नइ खोटा, मीठा मधुरा भक्ष,
काचा नइ कोरा, कंद मूल अभक्ष।
रयणि भोयण घण, परदारा गम(न) किद्ध,
तोहि तृपति नहीं मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध ॥७०॥
ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस,
विण साबू पाणी, उज्जल करस्यइ वेस।
निशि विण आव्यइ जे मइ कीधा बहु पाप।
ते मुझ मनि जाणइ, जिम मा आगइ बाप ॥ ७१ ॥
कोइ सुगुरु मिलइ सु निज पातिक आलोउं,
गुरु वाणी गंगा, पाप तणा मल धोऊं।
एहवइ 'मेडता' मा, आव्या बड अणगार।
श्री 'कमल विजय' गुरु, सकल शास्त्र भंडार ॥ ७२ ॥
साह 'नाथू' हरख्या निरखी तस दीदार,
धन २ ए मुनिवर तपा गछ शृङ्गार।
जाव जीव एहनि द्रव्य सात आहार।
मीठाइ मेवा, विगइ पंच परिहार ॥ ७३ ॥
ए गुरु संवेगी, वैरागी धन धन्न।
ए मोटो पंडित, ठाणे पचावन्न।
आवी वंदी नइ, कही 'नायक दे' कंत।
गुरुजी आलोयण आपो, मुझ एकंत ॥ ७४ ॥
चलता पंडित कहइ सुणि सु 'नाथूसाह',
आलोयण लेयो, जब बइठ गठताह।

आलोयण नी विधि, गीतारथ समझाइ ।
दिइं अगीतार्थ तु, साम्हो पाप भराइ ॥ ७५ ॥
आलोयण काजि, वीस वरस पढखीजइ,
तिम जोअण सातसइ, गीतारथ शोधीजइ ।
तिणि कारणि तप गछ नायक गुरु निं पासि ।
लेयो आलोयण, अवसरि मनि उल्लासि ॥७६॥
वलतु तव बोलइ, 'नायकदे' नु नाथ ।
ते दूर देशान्तरि, छइ तपगछ ना नाथ ॥
तुम्हे पणि गछ मांहि, मोटा पण्डित राय ।
देस्यो आलोयण, तउ छोडुं तुम्ह पाय ॥७७॥
तव 'कमल विजय' गुरु, शास्त्र शाखि सव जाणी ।
'नाथू' मति दीठी, धर्म राग रंगाणी ॥
आलोयण दीधी, (मनधरी) बहु जगीस ।
उपवास छट्ठ वहु, अट्ठम तिम एकवीस ॥७८॥
'नायक दे' नायक, जोडी दुइ निज पाणी ।
तव बोलइ करस्युं, ए प्रमाण तुम्ह वाणी ॥
वलि तुम्ह पसायइं, हु(य)उ निर्मल प्राणी ।
आज थकी अभिग्रह, ठामि भात नइ पाणी ॥७९॥
आलोयण करतां चेत्यो, चतुर सुजाण ।
पूछइ निज नारी, तिम भाइ 'सुरताण' ॥
मुझ कह्युं करी नइ, लीजइ संजम जोग ।
जेहथी पामीजइ, अजरामर सुर भोग ॥८०॥

दोहा ।

साह 'साडण' कुल जलधि तुं, हस्तिमल 'नयमङ्ड' ।
विषम विषय रसि नवि छल्यो, चोम्हड चित्त छयल ॥८१॥

तिन कुटम्ब तेडी करी, 'नत्थू' कहइ निरधार ।
तुम्हे सहु(हुव)उ इकमना, लेस्युं संयम सार ॥८२॥

'कर्मचन्द' कुअर प्रमुख, सहु कहइ ए वात ।
अम्ह प्रमाण छउ तातजी, न करूं धर्म विघात ॥८३॥

जिम आलोयण अवसरि, मिल्या सुगुरु निकलङ्क ।
तिम हरि गछ नायक मिलउ, तो व्रत ल्युं निशङ्क ॥८४॥

ढाल राग तोडी:—

इसा अवसरि 'लाहुर' सहरि करि, दुइ चउमासि ।
'जिनसेन सूरि' 'मेडतइ', आव्या जिन कामी ॥

'नाथू' पञ्चइ पुत्र लेइ, गुरु नइ वंदावइ ।
'कर्मचन्द' मुख चन्द, देखि गुरुजी बोलावइ ॥८५॥

गछपति जपति ए उदार, बालक शुभ लक्षण ।
जे चारित्र लेस्यइ सही, तो थास्यइ विचक्षण ॥

नाथू' साह चो भाव, सभलि मुनि नाथ ।
हरख्या चित माहि ज्यु, चडउ चिंतामणि हाथ ॥८६॥

गुरु कहइ 'नथू' साह ! सुणो, चौमासा माहि ।
'हीरजी' दर्शन तणइ हेतु, पहुचुं उत्राहिं ॥

'कर्मचन्द' कुअर कुटम्ब सहु, साथ समेला ।
समय लेइ तु आवयो, थायो अम्ह भेला ॥८७॥

सीख देइ 'मेडता' थकी, 'सादड़ी' पधारइ ।
पर्व पजूसण पारणइ, 'राणपुर' जोहारइ ॥
जंगम थावर तीर्थ दोइ, मिलिआ 'वरकांणइ' ।
'जालोरउ' संघ वंदवा, आव्यो जग जाणइ॥८८॥
'कमल विजय' गुरु तिहां चउमासि, पूज्यना पग वंदइ ।
'वीझो' वानु संघ रंगि, नाचइ नव छंदइ ॥
तिहां थी गुरु 'जेसंघजी', 'सीरोही' आवइ ।
अनुक्रमि साम्हो संघ आवि, 'पाटण' पधरावइ ॥८६॥
पुण्यवन्त 'पाटण' प्रसिद्ध, नगरी सिरताज ।
तिहां 'हीरजी' निर्वाण जाणी, रहइ 'तप' गछ राज ॥
हवइ सुणउ जे 'मेडतइ', हुआ मंडाण ।
चारित्र लेतां 'कर्मचन्द्र', उदयउ जग भांण ॥६०॥
जीमणवार जलेबीइं, बहु गाम जीमाडइ ।
'नायक दे' पति पांति खंति, करि मोटी मांडइ ॥
सोना रूपा ना कचोल, थाली सुविशाली ।
सालि दालि शुचि सालणां, घल घल घी नाली ॥६१॥
दही करम्बउ घोल झोल, उपरि तम्बोल ।
नागरवेलि सोपारी पारी, यलि कुंकम रोल ॥
चन्दन केसर छांटणा, माणस लख मिलीया ।
वागा लाल गुलाल जाणि, केसूडा फलिआ ॥६२॥
मिल्या महाजन मांडवइ, वइठा बहु टोला ।
चालीसां दिवसां लगइ, लीधा वन्नउला ॥

देव तणी घन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणी तेडया ।
साहमी साहमिणी सविभाग, करि पातक फेड्या ।६३॥
मगणाणां सब हाट पाट, पहुता घउरासी ।
रूडो गूडो बहुल तेम, नेजा उल्लासी ॥
'मेटनीआ' म हराण तेणि, दीपा नीसाण ।
वाजइ मङ्गल तूर पूर, पडइ कुमरां त्राण ॥६४॥
धवल गीत गाई अपार, गोरी गुण उ(ओ?)री ।
'कर्मचन्द्र' मुखचन्द्र देखि, नाचंति चकोरी ॥
भट (ट्ट) भोजिग बहु भट्ट नट्ट, बोलइ बिरदाली ।
हंस मंत्र गेलन्ति रम्य, कर देता ताली ।६५।
'कर्मचन्द' कुअर उदार, शृङ्गार करावइ ।
निम विटु बाधव मात तात, 'सुरताण' सुहावइ ॥
माथइ मउड विमाल भाल, कुण्डल दुइ दीपइ ।
हियडइ मोती नग (उ) हार, गंगाजल जीपइ ॥६६॥
बाजू बंधन बहरखा, कर कङ्कण जडीआ ।
दीस्या लेवा काम मत्त, सिंधुर गिरि चढिआ ॥
बोल्इ इम गुण लोक थोक, परदेसी पाथू ।
छत्रीसे वरसे उयड़ा, धन २ ए नाथू ॥६७॥
धन २ कुअर 'कर्मचन्द', धन २ ए भाइ ।
धन २ शाह 'सुरताण' धन, 'नायक' दे माइ ॥
भुगल भेरि नफेरी नाद, वाजइ सरणाइ ।
एक भगइ ए 'वस्तुपाल', ए'भोज' सवाइ ॥६८॥

थानकि २ थाकणे, दीजइ जे मागइ ।
पंच वर्ण दयां भरी, वलि चालइ आगइ ।
कप्पड कीधा कोट चोट, दमामे दीधी ।
'ओसवाल' भूपाल धन, इम कीरति कीधी ॥९९॥
याचक नइं धन कन कनक दान, देइ दालिद्र खंडइ ।
इम आडम्बर परिवर्या, आव्या वन खंडइ ।
त्रिण प्रदक्षिण समोसरण, विधिस्युं गुरु वंदइ ।
'कर्मचंद' सकटुंब लेइ, चारित्र आणंदइ ॥१००॥

दोहा:—

'कर्मचंद' रवि ऊगतइं, तप गण गयण उद्योत ।
दुरित तिमिर दूरि किआ, तिम कुमती खद्योत ॥ १ ॥
'मांडण' कुल मंडण करइ, 'मरुमंडलि' उलास ।
संवत 'सोलइ बावनइ, बीज' दिवसि 'माह' मास ॥ २ ॥
'जेसौ' थिर थापी घरे, तिम 'पंचायण' पुत्र ।
छती ऋद्धि छांडी लिउं, छइ (६) माणसे चारित्र ॥ ३ ॥

ढाल राग धन्याश्री:—

तिहां थी ते मुनि चालइ, विषय कषाय नइ पालइ ।
आव्या गूजर देस, पाटणि कीद्ध प्रवेस ॥ ४ ॥
'विजयसेन' सूरिराय, प्रणमि पातक जाय ।
ते छइ नइं (६) दीधी दिक्षा, ग्रहणा सेवना शिक्षा ॥५॥
'नेमिविजय' 'नाथू' जाण, 'सूरविजय' 'सुरतांण' ।
'कर्मचन्द' मुनि नाम, 'कनकविजय' गुणधाम ॥ ६ ॥

'केसा'मुनि तणुं नाम, 'कीर्त्ति विजय' अभिराम ।
'कपूरचन्द' ते कहि(य)इ, 'कुंअरविजय' मुनि कहि(य)इ ॥७॥
सयम्भ मा सिरदार, 'कनक विजय' अणगार ।
ए मोटउ महाभाग, श्रीआचारज लाग ॥ ८ ॥
पोतानुं पटधारी, 'विजयदेव' गणधारी ।
तेहनइ ते शिष्य दीनो, जडिउ कनक नगीनो ॥ ६ ॥
'कनक विजय' मुनि चेलो, कल्पलता तणु वेलो ।
'विजयदेवसूरि' पासि, सगला शास्त्र अभ्यासि ॥ १० ॥
गुरु नु पास न मुकइ, विनय वडा नो न चूकइ ।
नाममाला नइ व्याकरण, कीधा कठ आभरण ॥ ११ ॥
जोतिष तर्क विचार, जाणइ अग इग्यार ।
'पण्डित' पदवी विशिष्टा, 'सोल सत्तरि' प्रतिष्टा ॥ १२ ॥
'विसा' 'वदो' वित्त वावइ, 'अम्हदावाद' मोहावइ ।
खरची अति घणी आथि, 'विजयसेन सूरि' हाथि ॥१३॥
'जेसिंग' नुं निरवाण, 'खमाइति' जग भाण ।
पाटि पटोधर पूरो, विजयदेव सूरि' सूरउ ॥ १४ ॥
'जेसिंगजी' पाट दीपइ, तेजि सूरज जीपइ ।
पूगइ सघ जगीस, 'श्रीविजयदेव सूरीस' ॥ १५ ॥
मलउ भटारक भावइ, 'पाटणि' चउमासु आवइ ।
सोल तिहुतरा वर्षि, 'लाली' श्राविका हर्षी ॥ १६ ॥
प्रौढ प्रतिष्टा ते मडइ, दानि दालिद खडइ ।
पोस वहुल छट्ठि सार, नहीं जिह्वा दोष अढार ॥१७॥

'श्रीविजयदेव' सूरिंदइ, सकल संघजि आणंदइ ।
'कनकविजय' कविराय, कीधा श्री उवझाय ॥ १८ ॥
इम जे गुरु नि आराधइ, ते सुख संपति साधइ ।
'विजयदेव' गणधार, भूतलि करइ विहार ॥ १९ ॥
साहि 'सलेम' उदार, करवा सुगुरु दीदार ।
'मांडवगढ़' गुरु तेड्या, कुमति ना मद फेडया ॥ २० ॥
देखी 'तपगछ नाह', खुसी भयो पातिसाह ।
जगगुरुके पटि पूरे, वड़े 'विजय देव' सूरे ॥ २१ ॥
शाहि 'जहांगीरी थापइ, नाम 'महातपा' आपइ ।
चंइके गुरु मोटे, तोडि करइ तेहु खोटे ॥ २२ ॥
गुहिरा निसाण गाजइ, पातिशाही वाजा वाजइ ।
मिलीया 'मालवी' संघ, 'दक्षिणी' श्रावक संघ ॥ २३ ॥
पांभरी दोइ पग लागा, केइ केसरि आदिइं वागा ।
मिसरू मलमल साड, पगि पटकूल विछाइ ॥ २४ ॥
वींटी वेढ़ गांठोडा, वलि दीधा घणा घोड़ा ।
श्रावक श्राविका आवइ, मोती थाले वधावइ ॥ २५ ॥
लोक लाख गुरु पूजइ, तेहना पातिक धूजइ ।
गुरुजी नइ पटि दीवउ, 'विजयदेव' चिरंजीवउ ॥ २६ ॥

दोहा

'विजय देव' गुरु गाजता, 'गूजर' देशि विहार ।
अनुक्रमि करता आविया, 'सोरठ' देश मंझार ॥ २७ ॥
'विमलाचल' तीरथ वडउ, सकल तीर्थ शृंगार ।
जिहां श्री'ऋषभ' समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार ॥२८॥

'गुणविजय' कहइ श्री'सिद्धगिरि', ध्यान धरत गत पाप।
दशहत्या कीधी जिहां घणी, 'बाहुबलि' नुं बाप ॥ २९ ॥
जे नर घरि बइठा करइ, श्रीशत्रुंजय जाप।
'गुणविजय' कहइ तेहना टलइ, सहस पल्योपम पाप ॥ ३० ॥
'गुणविजय' कहइ शत्रुंजय तणी, आखडी मोटो मर्म।
लाख पल्योपम संचिया, टलइ निकाचित कर्म ॥ ३१ ॥
'गुणविजय' कहइ 'विमलाचलि', पंचकोडि परिवार।
चैत्री दिन केवल लह्यउ, 'पुण्डरीक' गणधार ॥३२॥
'गुणविजय' कहइ जग मा वडा, 'शत्रुंजय' 'गिरिनारि'।
इक गिरि 'आदिसर' चढ्यउ, इक शिरि 'नेमि' कुमार ॥ ३३ ॥

ढाल—राग सामेरी

'शत्रुंजय' जिनवर वंदइ, गुरुजी निज पाप निकंदइ।
दुइ 'दीव' करी चोमास, पूरी 'मोरबी' आस ॥ ३४ ॥
'हीरजी' नी परि पूजाणो, जिहां 'तप गछ' केरो राणउ।
'गिरनार' देखी(दु:ख) मेल्हइ, राजलि (वि?) राना जिन भेटइ ॥३५॥
वलि 'नवइ नगरि' गुरु आवइ, सामहिआ संघ करावइ।
जाणी दुइ सहस वखाणी, इक साम्हेलि खरचाणी ॥ ३६ ॥
तिहां थी वलि (चलि?) पूज्य पधारइ,' शत्रुंजय' देव जुहारइ।
'संमइनि' अति उल्लासि, तिहां थी आव्या चउमासइ ॥ ३७ ॥
तिहां जिण प्रतिष्ठा सार, रुपइआ चउद हजार।
खरच्या 'खमाइत' माहि, श्रीमन अधिक उछाहि ॥ ३८ ॥

तिहां थी आव्यउ उल्लासइ, 'सावली' नगरि 'माह' मासि ।
'अजुआली छट्ठि' वखाणी, ...॥३९॥
तीन मास लगइ गुरु मौनी, अमारि पलावइ 'सोनी' ।
संघ मुख्य 'रतनसी' साह, लीधो लखमी नु लाह ॥ ४० ॥
श्री'कनक विजय' उवझाय, वखाण करइ मुनिराय ।
पालइ निज गुरुनो आण, थास्यइ ते तपगछ भाण ॥४१॥
गुरुजीह विधानिं बइठा, पातक पायालिं पइठा ।
छट्ठ(अ)ठ्ठम करइ अनेक, उन्नपवस (उपवास?) घणा सुविवेक ॥ ४२ ॥
आंबिल करी धवलइं धानि, पूरव दिसि बइसइ ध्यानि ।
पचखाण जणावा माटिं, आपइ अक्षर लिखी पाटि ॥ ४३ ॥
श्रावक तिहां अगर कपूर, उगाहइ परिमल पूर ।
इण परि आचारय मंत्र, आराधइ पूज्य पवित्र ॥ ४४ ॥
वैसाख मास जब आवइ, सुहिणइ सुर वात जणावइ ।
वाचक निं निजपट आपउ, गछ भार 'कनकजी' नइ थापउ ॥४५॥
ए वाणि सुणी गुरु हरख्या, जिम शीतल जल थी तरस्या ।
मह(य)लि बहु मंगल कीजइ, गुरु आया 'आखातीजइ' ॥४६॥
आवइ तिहां संघ अपार, अंग पूजा ना अंबार ।
दुख दालिद दूरी गमाया, याचक घर सुभर भराया ॥४७॥
'सावली' नइ 'इडरि' जुइ, प्रासाद प्रतिष्ठा हुइ ।
'राय' देशि शोभा लीधी, गुरु दोइ चौमासी कीधी ॥४८॥
हवइ 'राजनगरि' गुरु आवइ, चउमासुं संघ करावइ ।
बीजुं 'बीबीपुर' मांहि, गुरु चतुर चउमासं चाहइ ॥४९॥

'पारनि पुंजाउत' आवइ, 'सीरोही' मोह चढावइ ।
अभिनव चद्यो 'तेजपाल', प्रागवंश तिलक 'तेजपाल' ॥५०॥
राय 'अखयराज' बडइ धीर, तेहनि घरि जेह वजीर ।
ते शाह तिहा किणि आवइ, गुरुनि वंदइ मनि भावइ ॥५१॥
करइ यात्र 'विमलगिरी' केरी, जिणि भाजइ भवनी फेरी ।
आवइ 'कमीपुर' फेरी, दमकारइ ढोल नफेरी ॥५२॥
पूज्य जी नइ कहइ परधान, एतलुं दिउं मुझनि मान ।
घरि मेल वधारो मानो, गुरुराज कहयुं ए मानो ॥५३॥
गुरु कहइ अम्ह मनि नहीं लेस, टालउ तुम्हें सयल किलेस ।
तिहा लिखित भाखित करि लीधा, माहि मह्लू को नि दीधा ॥५४॥
ए लिखित थकी जे चूकइ, तेहनि जगदीसर मुकइ ।
माहो माहि मेल कराव्यउ, पुण्यइ भंडार भराव्यउ ॥५५॥
आचारज 'विजयाणंदि', गुरु जी वाद्या आणंदइ ।
श्री 'नदीविजय' उवझाय, जेहनु मोटउ महवाय ॥५६॥
'धनविजय' 'धर्मविजय' नाम, वाचक हुइ अति अभिराम ।
इत्यादिक मुनि जग जाण्या, पुणि गुरु चरणे आण्या ॥५७॥
साह कहइ 'सीरोही' पधारउ, वलि वीनति ए अवधारो ।
'तेजपाल' सीरोही आवइ, 'श्रीविजय देव' गुण गावइ॥५८॥

दोहा

'राजनगर' थी विचरता, करता संघ कल्याण ।
'गजदेसि' गुरु आविया, जिहा राजा 'कल्याण' ॥५९॥
'विजयदेव सूरि' वड वचन, वाचक पच समेलि ।
'ईडरगिरि' शिर 'ऋषभ जिन', भेटयइ हुइ रंग रेलि ॥६०॥

'इडरगढ़' मुख मंडणउ, साहिब सुख दातार।
'गुणविजय' कहइ मंगल करउ, 'सुमंगला' भरतार ॥६१॥
'रायदेश' रलिआमणउ' 'ईडरगढ़' सिरदार।
घरि २ उत्सव अति घणा, फाग रमइ नरनारि ॥६२॥

ढाल—फागनी

तपगछको गुरु राजीयो, रमइ पुण्यनुं फाग ।ललना।
परणी समता सुन्दरी, जिनआंणा वर वाग। ललनां
पुण्य फाग गुरु जी रमइ ॥६३॥
पहिलुं पाप पखालवा, नेम तप निर्मल नीर ।ल०।
चुआं चंदन चित भलुं, छांटइ चारित्र चीर ॥ल०।पु०।६४॥
परंपरा आगम वडउ, चढवा तुंग तुरंग ।ल०।
ज्ञान ध्यान नेजा घणा, लीला लहरि तरंग ॥ल०।६५॥
सकल संघ सेना मिली, वाजइ जग जस ढोल ।ल०।
वाचक पंडित उंबरा, सूरा साधु अडोल ॥ल०। पु० ।६६॥
इक दिनि गुरुनि वीनवइ, 'तपागछ' परिवार ।ल०।
एक अम्हारी वीनति, अवधारउ गणधार ।ल० ।पु० । ६७॥
तपगछ मेल तुम्हे करी, कीधुं उत्तम काज ।ल०।
हवइ एक इहां थापीइ, आचारिज युवराज ॥ल०।पु०।६८॥
आज अंबा रायण फल्या, आयउ मास वसंत।
चंपक केतक मालती, वासंती विकसंत ॥ल०।पु०।६६॥
तिम अम्ह आशा वेलडी, सफल करउ मुनिराज ।ल०।
'कनकविजय' वाचक वरु, करउ पटोधर आज ॥ल०।पु०।७०॥

चल्या गढ भूपति भगइ, मोड महूरत शुद्धि ।ल०।
आचारय वाचक वलि, वलि सोमो बहु बुद्धि ॥ल०।पु०।७१॥
मन मान्युं महूरत मल्युं, शकुनादिक नी शाखि ।ल०।
'अनुराधी छट्ठि' अति भली, वदि मास 'वैशाखि' ॥ल०।पु०।७२॥
गुरुजी नइ सहु वीनवइ, ए छइ दिवस पवित्र ।ल०।
सोमवार सुहामणा, रूडु पुष्य नक्षत्र ॥ल०।पु०।७३॥
'ईडर'संघ शिरोमणि, 'सोनपाल' 'सोमचन्द' ।
अधिकारी सा 'सूरजी', सुत 'सादूल' अमंद ॥ ल० पु०।७४॥
'सहसमल' 'सुन्दर' भला, 'सइजू' 'सोमा' जोडि ।ल०।
'धन जी' 'मनजी' 'ईंदुजी', 'अमीचंद' नहि खोडि ॥ल०।पु०।७५॥
वासी 'राजनगर' तणा, सघवी 'कमलसीह' । ल० ।
'पारिख' 'अहमदपुर' तणा, 'वेला' सुत 'चापसीह' ।ल०।पुण्य०।७६।
'पारिख' 'देवजी' 'सूरजी', 'थान सींग' 'रा(य)सींग' । ल० ।
साह 'भामा' 'तोन्हा' भला, साह 'चतुर्भुज सिंघ' ।ल०।पुण्य०। ७७।
'जागा' 'जमू' 'जेटा' भला, भाई गुरु ना होइ । ल० ।
'कोठारी' 'मंडण' सुगो, 'वछराज' रहिआ जोइ ।ल०।पुण्य०।७८।
'कर्मसीह' नइ 'धर्मसी', 'तेजपाल' समउ न कोइ । ल० ।
'मलयराज' राचा वरू, मंत्री 'समरथ' सोइ ।ल०।पुण्य०।७९।
मंत्रि 'लखू' नइ 'सीमजी', 'भामा' 'भोजा' जोइ ।ल०।
'फडिआ' 'मालजी' 'भागजी', 'लला' 'चोथिआ' दोइ ।ल०।पुण्य०।८०
'गांधी' 'वीरजी' 'मेघजी', तिम वलि 'वारजो' साह ।ल०।
'देवकरण' 'पारिख' 'जसू', उ करडि उछाह ।ल० पुण्य०।८१।

'भाणजी' शाह 'सूरजी', तिम वली 'तेजपाल' ।ल०।
इत्यादिक 'इडर' तणउ, मिल्यउ संघ सुविशाल ।ल०।पुण्य०।८२।
'द्यावड' संघ सहु मिल्यो, 'अहिम नगर' नुं संघ ।
'सावली' नुं संघ सामठउ, 'पदमसिंह' 'चांपसीह' ।ल०।पुण्य०।८३।
साह 'नाकर' सुत हवि तिहां, 'सहजू' साह उदार ।ल०।
दानि मानि आगलउ, 'ईडर' शोभाकार ।ल०।पुण्य०।८४।
शिणगारी निज घर घणुं, तेड्या 'तपगछ' नाथ ।ल०।
पट्ट देवानिं कारणिं, संघ चतुर्विध साथि ।ल०।पुण्य०।८५।
इण अवसरि वोलविआ, 'धर्मविजय' उवझाय ।ल०।
'लावण्यविजय' नामइं वलि, वारू वाचक कहाय ।ल०।पुण्य०।८६।
वर चारित 'चारित्रविजय', वाचक कुल कोटीर ।ल०।
चोथा पण्डित परगडा, 'कुशलविजय' वजीर ।ल०।पुण्य०।८७।
'कनकविजय' वाचक तुम्हो, तेडउ एणिं आवासि ।ल०।
तव ते च्यारे मलपता, पुहता वाचक पास ।ल०।पुण्य०।८८।
ऊठउ तुम्ह तुठउ गुरु, निज पद दिइं सुविवेक । ल० ।
विजयवंत वाचक वदइ, गुरुनिं शिष्य अनेक ।ल०।पुण्य०।८९।
तुम्हे कहउ छउ ते सही, पणि तुम्ह पुण्य अपार । ल० ।
लछि आवती लीजीइं, गुरुजी द्यइ गछ भार ।ल०।पुण्य०।९०।
इम गुरु चरणे आणिया, माणस देखइ थाट ।ल०।
'होरइ' जिम 'जेसिंघजी', तिम थाप्या गुरु पाटि ।ल०।पुण्य०।९१।
वास थाल तव आणीउ, सा० 'सहजू' अभिराम ।ल०।
वास ठवइ गुरुजी करइ, 'विजयसिंह सूरि' नाम ।ल०।पुण्य०।९२

'कोरनिविजय' 'लावण्यविजय', वाचक पद दोइ दीद्ध ।

आठ विबुध पद थापीआ, मया सुगुरु इम कीद्ध ।ल०।पुण्य०।६३।

श्रीफल करी प्रभावना, जीमण वार अवार ।

सम्भूदो 'सहजू' तिहां, खरची पंच हजार ।ल०।पुण्य०।६४।

'कल्याणमल्ल' राय रखिआ, 'इडर नगर' मझार ।ल०।

सा० 'सहजू' उत्सव करइ, वरत्यो जयजयकार ।ल०।पुण्य०।६५।

वलि ज्येष्ठ माहि तिहां, बिम्ब प्रतिष्ठा एक । ल० ।

सा० 'रहीआ' उत्सव करइ, खरचइ द्रव्य अनेक ।ल०।पुण्य०।६६।

बीजइ पखवाडइ वली, अमराउत जस लिद्ध ।ल०।

'पारिख' 'देवजी' नो घरि, पूज्य प्रतिष्ठा किद्ध ।ल०।पुण्य०।६७।

सवंत 'सोल इक्यासो(य)इ', उत्सव हुआ आणंद ।ल०।

'विजय देव सूरि' थापीआ, 'विजयसिंह' सूरिंद ।ल०।पुण्य०।६८।

धवल मगल दिइं कुल वहू, वाजइ ढोल नीसाण ।ल०।

'विजय देव' गुरु पाटवी, प्रगटिउ नव गछ भाण ।ल०।पुण्य०।६६।

गुरु आचारज जोडली, 'इडरगढ' चउमासि ।ल०।

राय 'कल्याणइ' राखीआ, पहुचाडो मन आसि ।ल०।पुण्य०।२००।

दोहा :—

एहवइ 'सोर (ही)' थकी, तडइ सा 'तेजपाल' ।

'आबू' पूजं पधारिइ, चैत्र मास सुर साल ।।१।।

तेह वोनति मन धरी, गुरुजो करइ विहार ।

सघ लोक बहुला मिलइ, उत्सव करइ अपार ।।२।।

साम्हा आवइ 'साहजा', 'दोसी' 'जोया' जोडि ।

सवंशी 'मेहाजल' मिली, गुरु पूजइ कर जोडि ।।३।।

गुरु उपरि करइ लूंछणा, साह दिइं तरल तुरंग।
घणा संघ स्युं गुरु करइ, 'आबू' यात्रा जंग ॥४॥
'गुण विजय' कहइ जग जस लि(य)उ, धन २ 'विमल' नरिंद।
जिण 'अबुय' गिरि थापीउ, 'मरु देवी' नुं नंद ॥५॥
'अर्बुद' गिरि तीरथ करी, 'बंभणवाडि' वीर।
सुगुरु 'सीरोही' आविया, जाणे अभिनवो'हीर' ॥६॥
चौमासुं गुरुजी करइ, 'सीरोही' सुखठाम।
'तेजपाल' शाह प्रमुख सहु, संघ करइ शुभ काम ॥७॥
विजय दसमी दिन दीपतुं, 'विजयदेव' गुरु पास।
'विजयसिंह सूरी' तणो, गायउ 'विजय प्रकाश' ॥८॥

राग :—धन्याश्री।

महावीर जिनपाटि धुरंधर, स्वामि 'सुधर्मा' सोहइजी।
'जंबू' 'प्रभव' 'शय्यंभव' सूरीय, 'यसोभद्र' मन मोहइजी ॥
इम अनुक्रमि 'जगचंद्र' महामुनि, च्युंआलीसमि पाटिजी।
'तपा' विरुद तस राणइ थाप्युं, मेदपाटि 'आघाटि ॥९॥
तिणि तप गणि गुणवन्तिं पाटिं, 'देवसुंदर' सुखकारीजी।
पंचासम पाटिइं गुरु सुन्दर, 'सोमसुन्दर' गणधारीजी ॥
तेह थकी छपन्नमि पाटिं, 'आणंदविमल' मुणि इंदोजी।
'तपागछ' जेणि निरमल कीधउ, जिसो आसोइ चंदोजी ॥१०॥
सत्तावनमि पाटि परम गुरु, 'विजयदान' वैरागीजी।
अट्ठावनमि पाटि हीरो, 'हीरजी' गुरु सोभागीजी ॥

प्रद्युम्नसूरि पाटि पुरन्दर, 'विजयसेन' गछ धोरीजी ।
पाटि माहिमइ 'विजयदेव' गुरु, गुण गावइ सुर गोरीजी ॥११॥
'हीर' 'जेसंगजी' पट्ट दीपावइ, 'विजयदेव सूरि' मोटांजी ।
पूजा नाम कर्म मद घमिंड, भागइ मद गछ लेहांजी ॥
तस पट दीपक रवि परि जीसो, छठ 'विजयसिंह' सूरीसोजी ।
इक्कसट्ठमि पाटि पुरुषोत्तम, पूरइ मन जगीसोजी ॥१२॥
'सांडलामोभा' धरि इवि, 'मोरांदी' सुत पावउजी ।
'ऋषभदेव' प्रभु पाय पसावई, 'विजयसिंह सूरि' गावोजी ॥
'कमल विजय' जय महित पहित, 'विमल विजय' गुरु चेलोजी ।
'गुणविजय' पण्डित पय पयपइ, वाधइ तपगछ वेलोजी ॥१३॥
इति श्रीविजयसिंह सूरि विजय प्रकाश नाम रासि (संपूर्ण)
(पत्र ११ श्री तत्कालीन लिखित, जयचंद भण्डार वं० न. ६६)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
चतुर्थ विभाग

(विभाग नं० १ की अनुपूर्ति)

कवि पल्ह विरचिता

जेसलमेर भाण्डागारे ताड़पत्रीया खरतर पट्टावली

॥ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः ॥
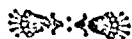
जिण दिट्ठइ आणंदु१ चडइ अइर२ रहसु चउगुणु ।

जिण दिट्ठइ झड़हड़इ पाउ तगु निम्मल हुइ पुणु ॥

जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठ पुव्वुकिउ नासइ ।

जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पणासइ३ ॥

जिण दिट्ठइ हुइ सुइ४ धम्ममइ अबुहहु काइ उइखहु५ ।

पहु नव फणि मंडिउ 'पास' जिणु 'अजयमेरि' किन पिक्खहु६ ॥१॥

मयण मकरि धरि धणुहु वाण पुणि पंच म पयडहि ।

रूविण७ पिम्म पयावि चंभ हरि हरु मन(त) विनडहि ॥

रूउ८ पिम्मु ता बाण मयण ता दरिसहि थणुहरु ।

नम(व) फणि मंडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु ॥

---

१ आनंद, २ अहरहस, ३ पनासइ, ४ सुइ, ५ उइ खहहु, ६ पिक्खहहु, ७ भूविण, ८ भूउ

जइ पडिहसि 'पास' जिणिंद बसि नाणवत९ निम्मल रयण।
न सु धणुहरु बाण न रूव१० नहि न रूय११पिसु हुइ हइमयण ॥२॥
नम (व) फणि 'पास' जिणिंदु गढिउ अन्नलि जु दिट्ठउ।
'अजयमरि' 'सभरि१२नरिंदु' ना नियमणि तुट्ठउ॥
कचणमउ अइ१३ कलसु सिहरि साणउ रक्खविअउ।
जणु सुतरणि तउ१४ तवइ तिव्वु (त्थु) आयामि सउअउ॥
जा वुक्कमिसिण ढक्कारविग कर१५ उज्झिभवि फरहरइ धय१६।
'जिणदत्तसूरि' धर धम(व)लि जसि नाणसिद्धि सुर भुयणि१७ भय॥३
'देवसूरि पहु' 'नमिचंदु' बहु गुणिहि पसिद्धउ।
'उज्जोयणु' तह 'वद्धमाणु' 'खरतर' वर लद्धउ॥
सुगुरु 'जिणसरसूरि' नियमि 'जिणचंदु' सुमज्झमि१८।
'अभयदेउ' सव्वगु नाणि 'जिणवल्लहु' आगमि॥
'जिणदत्तसूरि' ठिउ पट्टि नहि जिण उज्जोइउ जिण वयणु।
मारइद्धि परिरिक्खवि परिवरिउ मुत्ति महग्घउ जिव१९रयणु ॥४॥
घणुहर धयवड२० वरिय मारि सिंगार सुसज्जिय।
साहम्मिण गुडगुडिय पच(व)र पडिम निमज्जिय॥
नि(नि)यड (रू)अ तअ गालिय२१ पिम पडिकार निग्गत्तिय।
रइ रणरह सुच्चलिय२२ गम्य माणिण म अमन्निय२३॥
करि कडयड२४ मुणि महिवड्ढि रद्दिय रूवय सपुन्न भय।
'जिणदत्तसूरि सीहइ' भयण मयण करहि२५ घइ विहडि गय ॥५॥

९ रुय, १० भूव, ११ भुय १२ संभारि, १३ अइ, १४ तओ, १५ कर उज्झिवि, १६ धर, १७ भवणि, १८ समयमि, १९ जिम २० धरय, २१ आगलिय, २२ सुचलिय, २३ मइ अन्निय, २४ कडयड, २५ इकर पियड,

व तलप्फ भीसणह धम्म धीरिमसुरिम२६ सुविसालह ।
संजम सिर भासुरह दुसहद(व)य दाढ़ करालह ॥
ताण नयण दारुणह नियम निरु२७ नहर समिद्धह ।
कम्म कोय(व)निट्ठरह२८ विमलपह पुंछ पसिद्धह ॥
उपसमण उयर२९ धर दुव्विसह गुण गुंजारव जीहह ।
'जिणदत्तसूरि' अणुसरहु पय पावक-रडि-घड-सीहह ॥६॥
जर-जल-बहल-रउद्दु लोह-लहरिहिं गज्जंतउ ।
मोह मच्छ उच्छलिउ कोव कल्लोल वहंतउ ॥
मयमयरिहिं परिवरिउ वंच बहु वेल दुसंचरु ।
गव्व३० गरुय गंभीरु असुह आवत्त भयंकरु ॥
संसार समुद्दु३१ जु परिसउ जसु पुणु पिक्खिवि डरियइ ।
'जिणदत्तसूरि' उवएसु सुणि पर तरंडइ३२ तरियइ ॥७॥
सावय किवि कोयलिय केवि खरह३४ (य?) रिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खियइ३५ मूढ़ नियं वित्ति विरुद्धिय ॥
दरहिं न किंपि परत्र३६ वेविसु परुप्परु जुज्झहिं ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्टंतरु वुज्झहिं ॥
'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय पउम मच्चु३७(गव्वु) नियमणि वहहिं
संसार उयहि उत्तरि पडिय 'तिनहु'३८ तरंडइ चडि तरिहि ॥८॥
तव-संजम-सयनियम-धम्म-कंमिण वावरियउ ।
लोह-कोह मय-मोह तहव सव्विहि परिहरियउ ॥

---

२६ सुवि, २७ सनहर, २८ निट्ठुरह, २९ उपर, ३० गंध, ३१ समुद्दु, ३२ सुणिव, ३३ सुतरियइ, ३४ खरतरिय, ३५ लक्खियहिं, ३६ परत्त, ३७ सच्चु, ३८ जिनहु

विसम छंदलक्खणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह ।
'जिणवल्लह' गुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ॥
अन्निहि वि गुणिहि सपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु धर ।
'जिणदत्तसूरि' 'पर पल्हभ(?)णु तत्तवंतु सलहियइ धर ॥६॥
वक्खाणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आरहियइ त 'वीरनाहु' फइ 'पल्हु' पयासइ ॥
धम्मु तु दय रुजुत्तु जेण परगइ पाविज्जइ ।
पाउ त अणगडियउ जु वद्दिणु मलहिज्जइ ॥
जइ ठाउइइ त उत्तिमु मुणिवरहवि (पवर वसहिहो चउर नर ।
तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर 'खरतर सिरि' 'जिणदत्त' वर ॥१०॥

१ इति श्री पट्टावली पद् पद्यानि । सवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पद्ये ११ तिथौ श्री मह्रारानगर्या श्री खरतर गच्छे विधिमार्ग प्रकाशि वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणा शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि ।

२ इति श्री पट्टावली ॥ सवत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयिराज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसतिवासि जिनदत्त सूरीणा शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिना लिखिता ॥ शुभं भवतु श्री सत्पार्श्वनाथाय नम सिद्धिरस्तु ॥

विद्वत् शिरोमणि जिन वल्लभसूरिजी
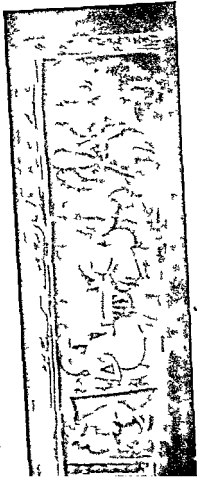
(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताड़
पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित)

॥ श्री नेमिचन्द्र भण्डारि कृत ॥

जिन वल्लभ सूरि गुरु गुणवर्णन
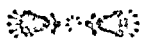
॥६०॥ पणमवि सामि वीरजिणु, गणहर गोयमसामि ।
सुधरम सामिय तुलनि, सरणु जुगप्रधान सिवगामि ॥१॥
तित्थु रणुद्ध म मुणिरयणु, जुगप्रधान क्रमि पत्तु ।
जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मलउ चरित्तु ॥२॥
सु सुहगुरु गुणकित्तणइ, सुरराओवि असमत्थो ।
तो भत्ति-भर तर लिओ, कहिउ कहिसु हियत्थु ॥३॥
कइ भवसायर दुहपवरु, पइ पत्तउ मणुयत्तु ।
कह जिणवल्लहसूरि वयणु, जाणिउं समय-पवित्तओ ॥४॥
कह सुबोह मणउल्लसिय, कइ सुद्धउ सामन्नु ।
जुगसमिला नाएण मइए, पत्तउ जिण-विहि-तत्तु ॥५॥
जिणवल्लहसूरि सुहगुरुहे, वलिकिज्जउ सुरगुरुराय ।
जसु वयणे विजाणियइ, तुट्टइ कम्म-कसाय ॥६॥
मूढा मिल्लहु मूढ पहु, लागहु सुद्धइ धम्मि ।
जो जणवल्लहसूरि कहिओ, गच्छहु जिम सिवघरंमि ॥७॥
अथीर माय-पिय-बंधवह, अथार रिद्धि गिहवासु ।
जिणवल्लहसूरि पय नमओ, तोडइ भव-दुह-पासु ॥८॥

परमप्पपय न वेवि गुरु, निम्मल धम्मह हुंति ।
मन्त्र निद्दस पुर मन्निया, जे जिणवयण मिलंति ॥६॥
गुरु गुरु गाइवि रंजियइं, मूढा लोउ अयाणु ।
न मुणइ जं जिण आण विणु, गुरु होइ सत्तु समाणु ॥१०॥
जिम मरणाईय माणुमह, कोइ करइ गिरछेओ ।
न मुणइ ज जिण-भासियओ, तिम कुगुरुह संजोओ ॥११॥
हुडा अवसप्पणि भसम गहु, दूसम काल किलिट्ठु ।
जिणवल्लहसूरि भट्टु नमहु, जण उसुत्तु न सिट्ठउ ॥१२॥
जो निह कुगुरु आइयउ, नहि त भत्ति करंति ।
विरला जोइवि जिणवयणु, जहिं गुण तहिं रच्चंति ॥१३॥
हाहा दूसम काल वलु, गड-वक्खण जाइ ।
नामेगइ सुविहिय नणइ, मित्त वि वयरिओ होइ ॥ १४ ॥
निदि चेंडाहि विहउ नमओ, सुमुणिय परम उआह ।
दिवउइ जिण विहिवु पर, अनुमुद्दउ गुण जाइ ॥१५॥
जं जिणवरु पहु हालियउ, जणु रंजियइ हयासु ।
मो वि सुगुरु पणमनह, कुट्टिल हियइ हयासु ॥ १६ ॥
मरिय मर जिओ वीर जिणु, इवि उसुत्त लवेगु ।
कोडाकोडि सागर भमिओ, किं न मुणहु मोहेण ॥१७॥
नव मजम मुत्तेण मउ, मद्धरि सहउउ होइ ।
सो वि उसुत्तलवेण सउ, भव-दुह लक्खइं देइ ॥ १८ ॥
माया मोह चण्ड जण, दुल्हउं जिण विहि-धम्मुं ।
जो जिणवल्लह सूरि फरिओ, सिग्घं देइ शिव संमुं ॥१६॥

संसओ कोइ म करहु मणि, संसइ हुइ मिच्छत्तु ।
जिणवल्लहसूरि जुग पवरु, नमहु सु त्रिजग-पवित्तु ॥२०॥
जई जिणवल्लहसूरि गुरु, नय दिठओ नयणेहिं ।
जुगपहाणउ विजाणियए, निछई गुण-चरिएहिं ॥२१ ॥
ते धन्ना सुकयत्थ नरा, ते संसार तरंति ।
जे जिणवल्लहसूरि तणिय, आणा सिरे वहंति ॥ २२ ॥
तेहिं न रोगो दोहग्गु तहु, तह मंगल कल्लाणु ।
जे जिणवल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि संझ सुविहाणु ॥२३॥
सुविहिय मुणि चूडा-रयणु , जिणवल्लह तुह गुणराओ ।
इक्क जीह किम संथुणेउं, भोलओ भक्ति सुहाओ ॥ २४ ॥
संपइ ते मन्नामि गुरु, उग्गइ उग्गइ सूर ।
जे जिणवल्लह पउ कहहि, गमइ अमग्गउ दूरि ॥ २५ ॥
इक्क जिणवल्लह जाणियइ, सट्ठुवि मुणियइ धम्मुं ।
अनसुहु गुरु सवि मनियइ, तित्थ जिम धरइ सुहंमु ॥२६॥
इय जिणवल्लह थुइ भणिय, सुणियइ करइ कल्लाणु ।
देओ वोहि चउवीस जिण, सासय-सोक्खु-निहाणु ॥ २७ ॥
जिणवल्लह क्कमि जाणियइ, हिवमइ तसु सुशीसु ।
जिणदत्तसूरि गुरु जुगपवरो, उद्धरियउ गुरुवंसो ॥२८॥
तिणि नियपइ पुण ठावियओ, वालओ सींह किसोरु ।
पर-मयगल-वल-दलणु, जिणचंदसूरि मुणीसरु ॥ २९ ॥
तस सुपट्टि हिव गुरु जयओ, जिणपति सूरि मुणिराओ ।
जिणमय विहिउज्जोय करु, दिणयर जिम विक्खाओ ॥३०॥

पारतंतुविहि विमयसुह, वीरजिणेसर वयणु।
जिणवइ सूरि गुरु दिन्न कहओ, मिच्छइ अन्नुन्न कवणु ॥३१॥
धन्न तइ पुरवर पट्टणइं, धन्न ति देस विचित्त।
जहिं विहरइ जिणवइसुगुरु, दसण करइ पवित्त ॥३२॥
कवण सु होमइ देमडओ, कवण सु निहि म सुहुत्त।
जहिं वंदिसु जिणवइ सुगुरु, निसुण सुगम्मइ वत्त ॥३३॥
सन्नुद्धार कंमु इउ पालि सुदइढ मम्मत्तो।
नेमिचंद इम विनवइण, सुगुरु-गुण-गण-रत्त(त्तो) ॥३४॥
नंदउ विहि जिण मंदिरहिं, नन्दउ वि द समुनाओ।
नंदउ जिणपत्तिसूरि गुरु, विहि जिण धम्म पमाओ ॥३५॥

इति नेमिचंद भडारि कृत गुरु गुणवर्णन ॥

कवि ज्ञानहर्ष कृत

श्रीजिनदत्तसूरि अवदात छप्पय

———*———

..........................वत ज्ञान रिक्ख थिर ॥२१॥

जनम भयउ भ्रातकउ, नामदियउ चाचक ताकउ ।
दुआदस वरस जब भए, कर्यउ राज 'कनवज' अ्वाकउ ॥
चढे 'सीह' 'द्वारिका', जाति करणण कुं निश्चल ।
लयउ कुंयर 'आसथान', राणी जादुंकउ अटूल ॥
राव 'वरनाथ' साहसीक मणि, जाति चले 'सीह' 'द्वारिका' ।
'ज्ञानहर्ष' लहे पंचसै सुहड़, परभु पर दल मारका ॥२२॥
अस्सुवार सइ पंच लेहु, 'सीहउ' यू चल्ले ।
पट्ट थप्पि लहु अनुज, सुहड़ संग रक्खे भल्ले ॥
सबहु सुं करि भिक्ख,....स 'द्वारामति' ढेरे ।
दिद्ध 'सींह' महाराज, सुप्भ(ब्भ?) महुरत सवेरे ॥
'आसथान' कुंवर आसाढ़ सिधि, लेहु संग दरकूच चलि ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ तिस वार विच, भयउ इक्क अचरिज्ज इलि ॥२३॥
'सिंह' आए 'मरुदेस', सुपन इक देख्यउ रानी ।
वृक्ष पाहर सब देस, हम्म अन्तरि वींटानी ॥
वयण सुणि 'सीह' यू, चोट वाही हुइ समुद्रां ।
दिवस ऊगत 'सीह' कहत, हुइगउ केर अपणउ जहां तहां ॥
मम करहु राणो क्रोध हम, नींद गमावण हेत हूय ।
ज्ञान ह॰ वदति तिस हेत करि, भए राव वर सब्ब भूय ॥२४॥

अत्र आख्यान कवित्त ।

'मारुयारि' कइ देसि, महिर 'पल्लीपुर' अस्सुं ।
तहा हइ पुर नाह, व(व?)भ 'जस्सोहर' दस्सुं ॥
'खरनगर' 'महेस', 'गुहिल वंशी' हइ राजा ।
मारण 'पल्लीनगर', चल्यउ सो करत दिवाजा ॥
तिनवार 'वभ जस्सोहरु', वदइ क्युहि 'पल्ली' रहइ ।
कोऊ रखु आणि आपाढ सिधि, 'ज्ञानहर्ष' कवि यू कहइ ॥२५॥
'पल्लिनगर' चउमास, रह खरतर गच्छ नायक ।
तिन गुरु कइ जस बहुत सुण्यउ, निप(प्र ?) लोका वाइक ॥
नाहउ नाम 'जिनदत्त सूरि', मंत्र धारी सूर वर ।
पच नदी पच पीर, साधि लिद्धउ सुर कउ वर ॥
'माणभद्द' जक्ख हाजर रहइ, खरउ खरउ सेवा करइ ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ गुरु कित्त बहु, पार न सुर गुरु नहु करइ ॥२६॥
गुरु पहुंचे 'मुलतान', पार पच आण नाम सुणि ।
पत्थर पार पीर, गुरु वरसे कचण मणि ॥
पीर मने गुरु पाइ सब पइसारउ कीनउ ।
मूयउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु ताउ दीनउ ॥
सहु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदात बहु ।
'ज्ञानहर्ष' कहत 'जिणदत्त' को, करत दव कोरत सहु ॥२७॥
गुरु करत वखाण घर आगे चउसठि गिणी ।
छोटेसे पाटल, आइ बइठी तिहा जोगिणि ॥

चउसठि तिय कइ रूप, आई गुरु छलवइ कुं।
गुरु यू तिण कूं छली, लेहु उठा पटलइ कुं ॥
पट्टले रहे आसण चढ़े, करामत गुरुकी वड़ी।
'ज्ञानहर्ष' कहत कर जोड़ि कर, रही देव चउसठ खड़ी ॥२८॥
करहु दूर पाटले, गुरु हारे हम तुम्ह पइ।
चाहोजइ कछु बात, लेहु गुरु यू तुम हम पइ ॥
कहइ गुरु हम साधु, लोभ ममता नहीं करनां।
परतिख भइ तब देव, रूप बहु चउसठि भइनां ॥
वर सात दइत हरखित भइ, सहु लोगां सुणतां समुख।
'ज्ञानहर्ष' कहत अवदात यउ, परसिध हइ सब लोक मुख ॥२९॥
हइ हइ देव वर सत्त, नाम गुरु लेतां विजुरी।
परइ नहीं किस परइ, प्रथम अयउ वर यइ सगरी ॥
गाम नगर मणिमत्थ, एकु हुइगउ तुम्ह श्रावग।
तुम श्रावग 'सिन्धु' गयउ, खाट ल्यावइ व्यापारग ॥
वर चउथउ भूत प्रेत ज्वर, आधि व्याधि सबही टरइ।
'जिणदत्तसूरि' मुखि जप्पतां, 'ज्ञानहर्ष' कवि उच्चरइ ॥३०॥
चोर धाड़ि संकट्ट मिटति, गुरु नामे पञ्चम वर।
छट्ठउ जलहुं तरइ, जउ लूं मुख समरइ सद्गुर ॥
सातमउ वर सावत्री, ऋतु नावइ खरतर की।
अयउ वर दे पग परी, बात सहु कही कइ उरकी ॥
समरतां आइ खड़ी रहइ, वीर बावन्ने परवरी।
'ज्ञानहर्ष' कहत निस नित्ति प्रतइ, करइ नृत्य चउसठ सुरी ॥३१॥

'उज्जेनी' गुरु गए, देखि थाभइ गुरु हरस ।
जप्यउ मन्त्र करि ध्यान लिद्ध पोथी आकरखे ॥
तिस बिच सोवन सिद्ध गुरु बहु विद्या पाइ ।
'चित्तौर' कइ भण्डार, तक्ष गुरु जाइ रखाइ ॥
उस पोथी की बात 'कुंयरपाल' राजा सुणी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ 'पाटणनगर' नवउरउ असवारा धणी ॥३२॥
'कुंयरपाल' जिनधर्म, हइ श्रावक पूनम गच्छ ।
श्रावक सर्व बुलाइ सब नायक खरतर गच्छ ॥
गुरु यू कु तुम लिखउ, हेम सिंघ पोथी आवइ ।
कागद संघ दरहाल, भेज पोथी मगावइ ॥
गुरु लिख्यउ वचन पोथी परइ, छोर न पोथी बाचनी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ भण्डार बिच रख्ख कइ पोथी पूजनी ॥३३॥
गुरु 'कुंयरपाल' कउ, हेम' नामइ आचारिज ।
तिण पइ पोथी धरी, छोरि बाचउ गुरु आरिज ॥
कहत गुरु हम बनइ अ्या छोरी नवि जावइ ।
साधवी गुरु की भइन, छोरिता औरंग गमावइ ॥
पुस्तकि उडि भण्डार बिच, 'जेसलमेरम' कइ परी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत तिम ज इगा, रखवइ बहु चउसठ सुरी ॥३४॥
परक्रमणइ बिच बीज, परत रख्खी गुरु ततखिण ।
बिक्रपुर परो सूगी, गमी गुरु स्तोत्र सज्यउ भण ॥
पनरइसइ गुरु नहा महेसरी डागा लूण्या ।
परनाये श्रावक, ... ॥

१७वीं शताब्दी लि० (इस प्रतिका सातवा मध्य पत्र हमारे संग्रहमें)

—*—
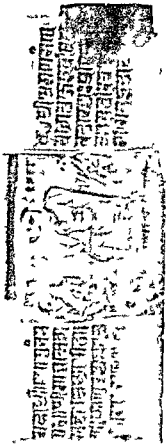
श्री जिनेश्वर सूरिजी

(श्री जिनपति सूरि शिष्य)

कवि सोममूर्त्ति गणि कृत

श्रीजिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास ।

—— ❋ ——
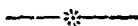
चिंतामणि मण१ चिंतियत्थे,२ सुहियइ३ धरेविणु पास जिणु ।
जुगपवरु 'जिणेसरसूरि' मुणिराउ,थुणिसु हउं४ भत्ति आपण३५गुरु १।
निय हियइ६ ठवहु वर ७मोतिय हारु, सुगुरु-'जिणेसरसूरि' चरियं ।
भविय जण जेण सा मुत्ति वर कामिणी, तुम्ह वरणंमि उक्कंठियए८ ॥२
नयरु 'मरुकोटु' मरुदेसु सिरिवर मउडु, सोहए९ रयण कंचण पहाणु ।
जत्थ वज्जंति नय भेरि भंकारओ,१० पडिउ अन्नस्स११ हियए
धसक्को१२ ॥३॥
कंत दसण कला केलि आवासु१३, महुर वाणी (य) अमियं झरंतो ।
रेहए तत्थ भण्डारिओ पुन्निमा,१४ चंद जिम 'नेमिचंदो' ॥४॥
सयल जण नयण आणंद अमिय-छडा, रूव लावण्ण सोहग्ग चंग१५ ।
पणइणी 'लखमिणी' तासु वक्खाणि,१६
पवर गुण गण रयण एग१७ खाणि ॥५॥

१c मणि, २c चि चियत्थे, ३c सुहियय, ४c इउ, ५a आपणउं, ६c हियय, ७a मोतिया, cमोतियं ८aइ, ९bसोहइ, १०aभंकारउ, ११cअ नय्-स्स, १२bcधसक्को, १३cआ तासु, १४cराउ पुनिम, १५cचंद, १६cवर-काणि, १७b एक थाणि ।

धार पचताल१८ विक्कम१९ संवच्छर, मगसिर सुद इगारसीए२० ।
'लखमा'ए कुंहि पुत्तु उपन्नु, नमिचंद कुल + दगउ [ए+] ॥५॥
'अथा'ए चिंहि सुमिणउ२१ दिन्नु,२२
गउ२३ अग्हाणउ२४ मगि२५ धरिविर२६ + ।
'अरडु'२७ नामु२८ तसु कियउ२९ पियरहि,
रग भरि गरूय-वद्धावणए३० ॥७॥

घात:—अत्थि पुहविहि अत्थि पुहविहि नयरु 'मरुकोटु',३१
भंडारिउ तहि३२ वसए 'नमिचंदु' गुण रयण सायरु ।
तस सत्था 'लखमिणि', पवर सील+[वंन] लावन्न मणहर ॥
तह३३ उप्पन्नउ पुत्तु वरो,३४ हरिचिणि३५ दवकुमारू ।
'अरडु' माउ३६ पयट्ठियउ,३७ हूयउ जय जय कारू ॥७॥
अन्नि३८ दिवसहो अरडु कुयरु, पभणइ३९ मायह४० आगइ धीर ।
इम समार दुसह४१ भंडार,
ना हउ४२ महिमसु४३ अनिदिह४४ असार४५ ॥ ६ ॥
परणिसु ए जम४६ सिरि वरनारी,
माइ माइए४७ मज्झु४८ मणह पियारी ।

१८b पचताल १९b विक्कम a विकम, २०b इकारसीए २१b सुमिणए २२b दीनु २३b c गइ २४b c अम्हारउ, २५a मगु b मनि २६b c धरवि २७b c अंबडो २८b नाउ, २९b किपउ, ३०b c वद्धावणए।
३१c गढकोटु ३२a सइ + ab प्रति, ३३c तस उपन्न, ३४a पुत्तवर, ३५a b रूविण ३६a नामु ३७a पयट्ठिउ, ३८b अन्निहि दिवसिहि अंबडु कमर c अन्निदिवसिहिउ अबडु कुमरो, ३९a पभणय ४०b मायां आगइ धीर (c रोह) ४१a b दुह ४२a c ना हउ ४३a मिल्हिसु ४४a मत ४५c अमारो ४६c सयमसिरि. ४७c माए b माइ. ४८b मुझ,

जाणु पसाहण वंछउ४९ सिक्खर,५०
वलिंचि न संमारंमि पडिज्जए५१ ॥ १० ॥

इहु निसुणेविणु 'अंबडु' वयणु, पभणइ माया संभलि लाडण ।
तुहु नवि५२ जाणइ बालउ भोलउ,
इहु५३ व्रतु होइसइ५४ खरउ५५ दुहिलउ ॥ ११ ॥

मेरु धरेविणु५६ निय भुयदंडिहि,५७
जलहि तरेवउ५८ अप्पुणि बाहहि५९ ।
हिंडेवउ असि धारहं६० उय(व?)रि, लोह चिणा चावेवा इणिपरि ॥१२॥

ना तुहु६१ रहि घर कहियइ लागि, जं तुह भावइ६२ वच्छ६३ तु मागि ।
किंपि न भावइ६४ विणु संजमसिरि,
माइ६५ भणइ जं रूडउ६६ तं करि ॥ १३ ॥

घात:—भणइ 'अंबडु' भणइ 'अंबडु' एहु संसारु ।
गुरु दुक्ख भरिपूरियउ,६७ माइ माइ ना वेगि मिल्हिसु६८ ।
परणेविणु६९ दिक्खसिरि,७० त्रिपिह भंगि हउं सुक्ख माणिसु ।
माइ७१ भणइ दुक्करु चरणु, तुह पुणि अइ सुकुमालु ।
कुमर भणइ दुकरह७२ विणु, नहु छलियइ७३ कलिकालु७४ ॥ १४ ॥

४९a वंछिर b वंछिओ, ५०a सिक्खए b सीक्षए, ५१a पडिजाय b पडीजए, ५२a तुह b तुहुं, ५३a एहु, ५४b होसइ, c होसए, ५५a खरओ दुहिलओ, ५६b c धरेवउ, ५७a मूयदंडहि, ५८c तरेवओ, ५९a अप्पण बाहइ c आपुण बाहुहि, ६०a धारा उयरि c धारहं उवरे ।

६१a तुह c तुहुं, ६२a भावि, ६३c वंछित. ६४c भावए, ६५c माय, ६६b.c रूयडउं, ६७b भरिपूरिवउ, ६८a मल्हिसु c मिल्हिसु, ६९b परिणेवा, ७०a दिक्खसिरे, ७१c माय, ७२a दुक्कर, ७३a छलिइ, ७४a किलिकालु,

तहि अगयारिय३ नीपजइ,४ झाणानलि पजलंति ।
तउ संवेगहि५ निम्मियउ, हथलेवउ६ सुमहुत्ति७ ॥ २३ ॥

इणि परि 'अंबडु' वर कुयरु८. परिणइ९ संजम नारि ।
वाजइ१० नंदीय११ तूर घण१२, गूडिय१३ घर घर बारि ॥२४॥

घात:—कुमरु चल्लिउ कुमरु चल्लिउ गरुय विच्छड्डू ।
परिणेवा दिक्खसिरि,१४ 'खेडनयरि' खेमेण पत्तउ१५ ।
सिरि 'जिणवइ' जुगपवरु१६ दिट्ठु(हु), तत्थ निय-मणहि१७ तुट्ठउ१८ ।
परिणइ संजमसिरि१९ कुमरु,२० वज्जहि नंदिय२१ तूर ।
'नेमिचंदु'२२ अनु 'लखमिणि'-हि, सच्चिउ२३ मणोहर पूर ॥२५॥

'वीरप्पहु'२४ तसु ठवियउ२५ नामु,२६
जिण वयणु२७ अमिय रसु झरंतो२८ ।
अह सयल नाण समुद्दु२९ अवगाहए,
'वीरप्रभु'३० गणि [निय+] गुरु पसाए ॥२६॥

कमि कमि 'जिणवइ सूरिहि'३१ पाटु,
उद्धरिओ३२ ['जिणेसरसूरि' नाम ।
विहरए भविय लोयंच पडिबोहए,
अवयरिउ] फिरि 'गोयम' गणिंदो ॥२७॥

३b.c अगियारोय, ४c नीपजए, ५b.c संवेगिहि, ६c हथ लेवउ, ७b.c सुमुहुत्ति, ८b कुमरु, c. कुमरो, ९a.c परिणइ, १०a.b वाजहि, ११a नंदी, १२b.c घणा, १३a गूडी । १४a दिक्खसिरि, १५a पत्तओ, १६bcजुगपवरो, १७bc मणिहि, १८a तुट्टओ, १९c संजमसिरी, २०c कुमर, २१a नन्दीतूर, b नन्दियत्तर, २२bc नेमिचंद,२३a b०च्च, २४a cवीरपहु, २५a ठवियओ, २६ bनाउ २७b श्रवण, २८a b झुरंता, c फिरि झरन्तो, २९c संमुद्द, ३०a b वीरप्रभ ×bप्रति, ३१a वय, ३२a उद्धरिणो, [२×] b c प्रति,

'अणुत्तुरिय'३३ जिम जिण भवण३४ मडियं,

महियलं निम्मियं जेहि जेहिं ।

सिरि 'वयरसामि' जिम निरय३५ धन्नइ कयाउ३६,

कारि अच्छरिय सुचरिय पहूणं ॥२८॥

घातः—गण जिणवर जेण जिणवर भुवण उत्तुंग ।
किरि भवियण वच्छारियइ, पुन्न हट्ट संठविय३७ पुरि पुरि ।
मणु दुग्गइ३८ उद्धरिउ, धम्मरयण णाणेण बहुपरि ॥
नाण चरण दंसण जुयइ, पत्ति विलासु३९ पहाणु४० ।
साहु राउ४१ सो धन्नियइ४२, 'जिणसरसूरि'४३ जगि४४ भाणु ॥२९॥
सिरि 'जावालपुरम्मि' ठिण्हि, जहि४५ निय अप्प समयं मुणेवि४६ ।
नियय४७ पट्ट मि मई रत्थि सठाविओ,

धागारिउ४८ 'पबोहमुत्ति'४९ गणि ॥३०॥

सिरि 'जिणपबोह सूरि'५० दिन्नु तसु नामु,

तउ भणिउ५१ सयल संघस्स अग्गे ॥

अम्ह जिम पहु नमउ५२ संघि,

जुगपवर 'जिणपबोहसूरि' ५३ गुरु ॥३१॥

३३a महुत्थि, ३४० भुवण, ३५a धन्नय, ३६b कय, ३७a संठिउ, ३८a दुगय बद्धरिय, cदुग्गइड दूरिउ । ३९b c विलास, ४०b पहाण, ४१a राय ४२a धन्नियइ, cधनियइ ४३c छरि, ४४a जग, ४५ b-c जे हि, ४६c मुय मुणेवि ४७b नियइ ४८ b धाणारी, ४९b प्रबोहमूत्ति, c प्रबोधमूर्ति ५०a जिण पबुह, b जिणप्रबह, cजिण प्रबोध, ५१a भणिउ, ५२b मानेवउ c मानेवओ, ५३b जिण प्रबोधइ सूरि, c जिणप्रबोधसूरि,

॥ कवि ज्ञानकलश कृत ॥

श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास

सति करणु सिरि संतिनाहु, पय कमल नमेवी।
कासमीरह मंडणिय१ देवि, सरसति सुमरेवी२ ॥
जुगवर सिरि 'जिणउदयसूरि', गुरु३ गुण गाएसु।
पाट महोच्छव४ रासु रंगि तसु हउ पभणेसु ॥ १ ॥
चन्द्र गच्छि सिरि वयर५साखि गुणमणि भंडारू।
'अभयदेवु'६ गुरु गहगहण, गरुय३७ गणधारू ॥
सरसइ८ कंठाभरणु [न(नी)य] जग नयणाणंदू।
'जिणवल्लह' सूरि चरण कमलु, असु नमइ सुरिंदू ॥ २ ॥
तासु पाटि हूंउ 'जिणदत्तसूरि', विहि मग्गह मंडणु।
तउ 'जिणचंद' मुणिंद रूवि, मयणह मय खंडणु ॥
वईय१० मयगल११ कुंभ दलणु, कठोर समाणु।
सिरि 'जिणपति मुणिंदु१२ पयड, महियलि जिम भाणु ॥ ३ ॥
तसु पय कमल मराल सरिसु१३ भवियण जण सुरतरु।
सु र 'जिणेसर' सूरि पुण्ण ल्च्छी पेटीहरु।
निम्मल सयल कला कलाव, पउमिणि वण दिणमणि।
सुगुरु सिरि 'जिणपबोह सूरि', पढियइ सिरोमणि ॥ ४ ॥

१b कसमीरह मंडणीय, २a समरेवो ३a गुरु ४a महोच्छव, ५b साख, ६a अभयदेव ७a पवि ७a गुरवउ, ८a सर स ९b वारि, १०b वाइय, ११a मंगल, १२b मुणिंद, १३b सुरिंद।

चंद धवल निय कित्ति धार१४, धवलियइ१५ बंभंडू ।
तयणु सुगुरु 'जिणचंदसूरि', भवजलहि तरंडू ॥
सिंधु देसि सुविहिय विहारु जिण,धम्म पयासणु ।
सुगुरु राउ 'जिणकुसलसूरि', जगि अखलिय सासणु ॥ ५ ॥

तासु सीसु 'जिणपद्मसूरि', सुरगुरु१६ अवतारु ।
न लहइ सरसति देवि, जासु विज्जा गुण पारु ॥
तयणंतरु विहि—संघ, नीरु-निहि१७ पूनिमचंदू ।
जिण सासणि सिंगारु हारु, 'जिणलब्धि' मुणिंदू ॥ ६ ॥

तासु पाटि जिणचंदसूरि तव तेय फुरंतउ ।
जलहर जिम घणु नाण नीरु,पुरि पुरि वरिसंतउ१८ ॥
'खंभनयरि' संपत्तु तत्थ, गुरु वयणु सरेई ।
गच्छ सिक्ख नियपट्ट सिक्ख१९, आयरियह देई ॥ ७ ॥

॥ घात ॥

गच्छ मंडणु गच्छ मंडणु, साल सिंगारु२० ।
जंगमु फिरि कप्पतरु,भविय लोय संपत्ति कारणु२१ ।
तव संजम नाण निहि, सुगुरु रयणु संसार तारणू ।
सुहगुरु सिरि 'जिणलब्धिसूरि', पट्ट कमल मायंडु२२ ।
झायहु २३सिरि, जिणचन्दसूरि', जो तव तेय पयंडु ॥८॥

१४b धार, १५b धवलिय, १६b सुरगुर, १७b निसमिहि, १८a वरसंतउ, १९a सिस, २०b सिणगारु, २१a कार ।२२b मायंडु, २३a झायह,

'रतनउ' 'पूनउ' संघवइ, सुहगुरु४१ तणइ पसाइ ।

पाट महोच्छवु कारवइ४२, हिइड़इ हरषु न माइ ॥१७॥

इणि४३ परि ए गुरु आएसि, सुहगुरु पाटिहि४४ संठविउ ।

तिहुयणि ए मंगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ ॥१८॥

वाजए४५ नंदिय तूर, मागण जण कलिरवु करए ।

सीकरि ए तणइ झमालि,४६ नंदि मंडपु जण मणुहरए ॥१९॥

नाचईए नयण विसाल, चंद वयणि मन रंग भरे ।

नव रंगिए रासु रमंति, खेला खेलिय४७ सुपरिपरे ॥२०॥

घरि घरिए वन्दरवाल,४८ गीतह झुणि रलियावणिय ।

तहि पुरिए हुयउ४९ जसवाउ, खरतर रीति सुहावणिय ॥२१॥

सलहिसु५० ए विहि समुदाय 'खम्मनयरि' बहु गुण कलिउ ।

दीसई ए दाणु दीयंतु, जंगमु सुरतरु करि५१ फलिउ ॥२२॥

संघवई ए 'रतनउ'५२ साहु, 'वस्तपाल'५३ 'पूनिग' सहिउ ।

घणु जिमए वंछिय धार, धनु वरिसन्तउ५४ गहगहिउ५५ ॥२३॥

अहिणवु ए कियउ विवेकु, रंगिहि५६ जीमणवार हुय ।

गरुईए५७ मनहि आणंदि, चउविह संघह५८ पूय किय ॥२४॥

'रतनिगु' ए 'पूनिगु' वेवि, दाणु दियंतउ नवि खिसए ।

माणिक ए मोतिय दानि, कणय कापडु५९ लेखइ किसए ॥२५॥

४१b सुहगुर, ४२b कारवइं, ४३b इण, ४४a पाटहि, ४५a वजए, ४६b जमालि, ४७b खेलखिलिय, ४८bचंदुरवाली, ४९aहुउ । ५०bसलाहिसुं, ५१b किरि, ५२ a रतन, ५३b वस्तपाल, ५४a वरसंतउ, ५५a गहगहए, ५६a रंगहि, ५७b गरुयइ, ५८b संघह' ५९a कापड,

'रामसिंहु' अ 'पूनसिंहु'६० बंधि, बंधव प्रीतिहि६१ संमिलिय६२ ।
हालिहि६३ अ संघह भार, निय निय६४ पूरहि मनि रलिय ॥२६॥

॥ घात ॥

नहि६५ जि उच्छवि नहि जि उच्छवि, रल्ह पमणूए ।
घर मंगल धवल६६ झुणि, कमल नयणि नच्चहि६७ रस भरि ॥
नहि 'मालिहगु' घुरि धवलु६८, दियह दानु 'गुणराजु' अनुसरि ।
मागण जण कलियगु करइ, पमणिय विसि मुणिंदु ।
पाट ठवणि गुरुगुरु६९ मला,७० संघि मयणि आणंदु ॥२७॥
संघु मयलि आणंदु, दंसण नाण चारित धरो ।
सिरि'जिणचंद्र' मुणिंदु, अउ दीठउ नयणिहि७१ सुगुरो ॥२८॥
घरि घरि मंगल चार, मयिय कमल पडिबोह करो ।
संजमसिरि उरि हार, उदयउ ७२ सुहगुरु महमहरो ॥२९॥
'मालूय'७३ मात सिंगार, 'रूदपाल' कुल मंडणउ ।
'धारलदेवि' मल्हार, सुहगुरु भव दुह खंडणउ ॥३०॥
जिम जिण विजय वियारि, जडणनगि७४ जिम कप्पतरो ।
सुरगिरि गिरिहि मझारि, जिम चिंतामणि मणि पवरो ॥३१॥
जिम धणि धनु भंडारू, फल्हइ माहि जिम धम्म फलो ।
गज माहि गज सार, कुसुम माहि जिम वर-कमलो ॥३२॥

६०a पूनिग, ६१a प्रीतहि, ६२a संमिलय ६३b हालहि, ६४a निउ निउ, ६५a तह, ६६a धवलु, ६७b नचंति, ६८a धवल, ६९b सुहगुरु, ७०b तणइ, ७१a नयणहि । ७२b उदय, ७३b माल्हय, ७४b विजि,

जिम माणससरि हंस, भाद्रव घणु दाणेसरह७५।

जिम गह मंडलि हंसु, चंद७६ जेम तारा—गणह७७ ॥३३॥

जिम अमराउरि इन्दु, भूमंडलि जिम चक्कधरो।

संघह माहि मुणिंदु, तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरो ॥३४॥

नवरस देसण वाणि, घणु७८ जिम गाजइ गुहिर सरे।

नाणु७९ नीर वरिसंतु८०, महिमंडलि विहरइ सुपरे ॥३५॥

नंदउ विहि८१ समुदाउ, नंदउ सिरि 'जिणउदयसूरे'।

नंदउ 'रतनउ' साहु, सपरिवार 'पूनिग' सहिउ८२ ॥३६॥

सुहगुरु गुण गायंतु, सयल लोय वंछिय लहए।

रमउ रासु इहु रंगि, "ज्ञान-कलस" मुनि इम कहए ॥३७॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास समाप्त ॥

७५b दाणेसरहु, ७६b चांदु, ७७b तारागणहु, ७८a धण, ७९a नाण, ८०b वरसंतु, ८१b विह, ८२b सहियउ।

॥ उपाध्याय मेरुनन्दन गणि कृत ॥

॥ श्री जिनोदयसूरि विवाहलउ ॥

सयल मण वछिय१ काम कुम्भोवम,
पास पय-कमलु पणमेवि भत्तिर ।
सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु वीवाहलउ,
सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति ॥१॥

इकु३ जगि जुगपवरु अवरु नियदिक्खगुरु,
थुणिसु हउं तेण निय ४ मइ बलेण, ।
सुरभि किरि कचण दुद्ध५मकर घणं,
सखु किरि भरीउ गगाजलेण ॥२॥

अत्थि 'गूजरधरा' सुंदरी सुदरे६,
उरवरे रयण हारोवमाण ।
ल्हच्छि केलिहर नयरु 'पल्हणपुर' ७
सुरपुर जेम सिद्धाभिहाणं ॥३॥

तत्थ मणहारि ववहारि चूडामणि
निवसए साहु वरु 'रूदपालो'८ ।
'धारल'९ गेहिणी तासु गुण रेहिणी,
रमणि गुणि१० दिप्पए जासु भालो ॥४॥

१a c d वछिय, २b भत्ते, ३b एकु, ४b मय, ५d सुद्द, ६b सुदरा, ७b पल्हणपर, c पल्हणपुर, ८d रुद्दपालो ९d धारलदेवि, १०a गणि,

तासु कुच्छो सरे पुन्न जल सुभरे,११

अवयरिउ कुमरवरु १२ रायहंसो ।

'तेर पंचहुत्तरे' सुमिण संसूईउ,

आयउ१३ पुत्तु निय कुल वयंसो ॥५॥

करिय१४ गुरु उच्छवं सुणिय जय जयरवं,

दिन्नु तसु नामु सोहग्ग सारं ।

'समरिगो' भमर जिम रमइ निय सयण-मणि,१५

कमलवणि दिणि रयणि १६ बहु पयारं ॥६॥

लोय लोयण दले अमिउं वरसंतउ१७

वद्धए शुद्ध१८ जिम बीय चंदो ।

निच्चु१९ नव नव कला धरइ गुणनिम्मला,

ललिय लावन्न सोहग्गकंदो ॥७॥

घातः—

अत्थि 'गुज्जर' अत्थि गुज्जर, देसु सुविसालु ।

जहि२० 'पल्हणपुरु' नयरो, जलहि जेम नर रयणि मंडिउ ।

तहिं निवसइ साहु—वरो २१, 'रूदपालु' गुणगणि२२ अखंडिउ२३ ।

तसु मंदिरि 'धारल' उयरे, उपन्नउ सुकुमारु ।

'समर' नामि सो समर जिम, वद्धइ रूपि अपारु२४ ॥८॥

११b सोभरे, १२b कुमरवर c. कुमरुवरु, १३b जाइउ c.d जायउ, १४d करिउ, १५b सयलगणि d. अंगणि, १६b बोह, १७b.c.d अमिय वरिसंतउ, १८ सुद्ध । १९c.d. नित्तु, २०b तहिं, २१b.cसाहवरो, २२b गणह,२३b अखंडिय, २४.d रुवि अमरु,

अह अवर वासरे 'पल्हणे-पुर' वरे,
भविय जण कमल वण वोहयंतो ।
पत्तु सिरि 'जिण कुशलसूरि' सूरीवमो
महियले मोह तिमर हरतो ॥९॥

वद्धए भत्ति रंगेण उक्कंठिउ 'रूदपालो', परिवार जुत्तो ।
धम्मर२५ उवएस दाणेण आणदए, सादर सूरिराउ विन्नत्तोर२६ ॥१०॥

अह सयल लक्खण जाणि२७
सुवियक्खण, सूरि दट्ठूण२८ 'समर कुमार' ।
भवय तुह नंदणो नयण आणंदणो,
परिणओ२९ अम्ह दिक्खाकुमारि ॥११॥

इय भणिय पत्तु गुर 'भीमपल्लीपुर'
त वयणु३० रयण जिम 'रूदपालो' ।
धरिवि ३१ निय चित्ति सयणिहि आलोचए,
न सुख्व३२ सुणय सोजि बालो ॥१२॥

नयणु ३३ निय जणणि उच्छंगि निवडेवि,
मडए ३४ रडडी विविह परि ३५ ।
भणइ 'जिणकुसलसूरि' पासि जा अच्छए,
माइ परिणाव मू ३६ सा कुमारि ३७ ॥१३॥

२५d धम्म २६b c d विनत्ता, २७b c d वाणि २८a दट्ठूण, २९b c d परिणउ, ३०b वयण, ३१b । धरवि, ३२b d सख्व । ३३। नयण, ३४। सवए, ३५। । पर, ३६ जाणइ (परिणाविं)सु, ३७b कुमारो,

माइ भणइ निसुणि वच्छ भोलिम ३८ धणो,
तउं नवि ३९ जाणए ४० तासु सार ।
रूपि न रीजए मोहि न भीजए,
दोहिली जालवीजइ अपार ॥१४॥
लोभि न राचए मयणि न माचए,
काचए चित्ति४१ सा परिहरए ।
अवर नारी अवलोयणि४२ रूसए,
आपणपइं४३ मयिं४४ सत वरए ॥१५॥
हसिय४५ अनेरीय वात विपरीत, तासु तणी छइं घणी सच्छ ।
सरल४६ सभाव४७ सलुणडा वाल,४८
कुणपरि रंजिसि४९ कहि न वच्छ ॥१६॥
तेण कल कमल दल कोमल५०हाथ, वाथ५१ म वाउलि देसितउं ।
रूपि अनोपम उत्तम वंश५२, परणाविसु वर नारि हउं ॥१७॥
नव नव भंगिहिं पंच पयार५३, भोगिवि भोग वल्लह कुमार ।
क्रमि क्रमि अम्ह कुलि कलसु५४ चडावि,
होजि संवाहिवइ५५ कित्तिसार ॥१८॥
इय जणणि वयण सो कुमरु निसुणेवि,
कंठि आलंगिउं५६ भणइ५७ माइ ।
जा ५८सुहगुरि कहि माजि मूं मु (म?) नि रही,
अवर भलेरीय न सुहाइ५९ ॥॥१९॥

३८b भूलिम, ३९b तं, ४०d. ४१a विति, ४२b अवलोयणे, ४३b पय, ४४d रूपि, ४५b इसी ४६b सरण ४७a सप्माव, ४८। थाला, ४९b रंजसि, ५०d कोमला, ५१d वाम, ५२d वह, ५३d पयारइ, ५४b कलस, ५५b संघाहिव, ५६b आलिंगिय ५७b भणय, ५८c जास, ५९b. सहाए ।

तउ कुमर निच्छय जाणि पानेवि,
ढाड्ढ्या नयणि नीर झरंती।
करिन मइ६० वाउ उ दुज्झ माइ६१ भावइ,
अच्छाएइ६२ गद्द गद्द सरि भणती ॥२०॥

॥ घात ॥

अन्न वासरि अन्न वासरि, तम्मि नयरंमि।
'जिणकुसलु ६३ मुणिंद वरो, महियलंमि विहरतु पत्तउ।
तहि वइइ६४ भत्ति भरि, 'रुद्दपालु' परिवार जुत्तउ॥
गुरु पिक्खवि 'समरिगु ६५ कुमरो६६ आगहिउ६७ नियचित्ति।
भणइ अम्ह दिक्खाकुमरि परिणावउ६८ सुगुरुवि ॥२१॥
तव सुवयणु स व सुवयणु, घरिवि नियचित्ति।
निय मंदिरि आविय3, 'रुद्दपालु', सयणिहि विमासइ।
न जाणि कुमर वरो, आग्रहेग६६ निय जणणि भासइ॥
म् परिणावि न दिक्खसिरि७० माइ भणइ वरनारि।
कुमर भणइ विणु दिक्खसिरि अवरन मनइ७१ महारि ॥२२॥

॥ भास ॥

अह भणवि 'समरिग निच्छउ ७२
कारावइ७३ वय मानइयो तउ७४।

६ तउ, ६१b मवि ६ म्झि, ६२a अच्छर, ६३b कुसल, ६४ वइय ६५ समरय ६६ कुमर, ६७ आगोदिव ६८ परिणावइ, ६९b आग्रहेमि ७ b दिक्खसिरि, ७१ मनइ ।७२b निच्छओ ७३c कारविवि ७४b तपो

मेलिय७५ साजण७६ चालइ नियपुरे,७७
धवल७८ धुरंधर जोत्रिय रहवरे ॥२३॥
चालु चालु हल सही७९ वेगिहिं८० सामहि,
'धारल' नंदण वर८१ परिणय महि ।
इम पभणंतिय सुललिय सुन्दरी,
गायइं८२ महुर सरि गीय८३ हरिस८४ भरि ॥२४॥
क्रमि क्रमि जान पहूतिय,८५ सुहदिणि,
'भीमपली पुरे'८६ गुर८७ हरसिउ मणि ।
अह८८ सिरि वीर जिणिंदह मंदरि,
मंडिय वेहलि८९ नंदि सुवासरि९० ॥२५॥
तरल९१ तुरंगमि चडियउ लाडणु,
मागण वंछिय दाण दियइ घणु ।
कील्हूय९२ अण९३ वरिसउ 'समरिग' वर,
जिम 'सरसई'९४ किरि 'कालिग' कुमर ॥२६॥
आविउ जिणहरि वरु मणहरवउ,
दीख कुमारिय सउं९५ हथलेवउ९६ ।
'जिणकुसलसूरि' गुरो आपुण पइ जोसिउ९७,
होमइ झाणानलि९८ अविरइ विउ ॥२७॥

७५c मिलिय. ७६d साजय, ७७d नियपुर, ७८c धवलु, ७९c हलि सिहि. ८०b वेगइ. ८१b वरु. ८२b गाइ. c गाइहि d. गायहि, ८३d, ग्रीय. ८४b हरसि, ८५d पहूविय, ८६b भीमपल्लीय, ८७b गुरु. ८८b अम्हिहि. ८९b वेहिकि. c.d वेहकि, ९०b सुवासरे. dसुवारि ९१c तुरलु. ९२bकल्हूय: ९३b अणु. ९४d सरसय,९५b सं० ९६b हथिलेवओ. ९७b.c जोसिय. ९८d कालानलि

वाजइ मगल तूर गुहिर सरि,

दियइ धवल वर नारि विविह परि।

२०९९ परि 'तेर तियासिय'१०० वच्छरि,

'समरिगु१०१ लाडण१०२ परिणइ१०३ वय१०४ सिरि।।२८।।

॥ घात ॥

तयणु१०५ चल्लवि तयणु चल्लवि, 'भीम चरपल्लि',

नामहणी जान सउ 'रूदपालु' आविउ सुवित्थरि१०६।

परिणाविउ दिक्खसिरि, 'समरसिहु'१०७ 'जिणउसल' सुहगुरि।।

जय जय रवु धणु८ उच्छलिउ ९ उद्धरिउ१० गुरु वसु।

'रूदपालु' अनु 'धारल्ह', नवइ जगि जस हंसु११ ।।२९।।

दिन्नु 'सोमप्पटो' मुणि नमु नासु, सवण आणदण अमिय जम१२।

जिम जिम चरण आचार १३ भरि सोहण,

सोह१ दिक्खसिरि तेम तेम ।।३०।।

पढइ जिनागम पमुह विज्जावली

रलिय १४सेविज्जए गुण गणहि।

अह ठविउ१५ वाणारिउ१६ जेसलपुरे',

'चउद छडुत्तरे'१७ सुहगुरहि १८।।३१।।

९९। इणि १००b विहासियइ १०१dसमरिग १०२bलाइण, १०३। परिणय १०४b वइ १०५b तयण। घयण १०६। वच्छरि।

१०७b समरसिंघु। समरसिंह ८b घण ९b उच्छलिय १०। उद्धरियउ ११b निच्छइ जइ जगि हंस, १२a जिम। जेम १३d आभार १४। सव्वजए १५। ठविय १६ वाणारिय १७b छडोत्तर, १८a गुरहि

सुविहियाचारि१९ विहारु२० करतंउ,

वाणारिउ गणि 'सोमप्पहो'२१ ।

दुविह सिक्खो२२ सुगीयत्थु२३ संजायउ,

गच्छ गुरु भार उद्धरण२४ सीहो२५ ॥३२॥

तयणु२६ 'जिणचंद सूरि' पट्टि, संठाविउ२७,

सिरि२८ 'तरुणप्पह' (आ) यरियराए२९ ।

'चउद पनरोतरे'३० 'खंभतित्थे' पुरे, मास 'असाढ़ वदि तेरसीए' ॥३३॥

सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरुय नामेण, उदयउ भाग सोभाग निधि ।

विहरए 'गूजर' 'सिंधु' 'मेवाड़ि',३१पमुह देसेसु रोपइ३२ सुविधि ॥३४॥

॥ घात ॥

नामु३३ निम्मिउ नामु निम्मिउ, तासु अभिरामु ।

'सोमप्पहु' मुणि रयणु३४ सुगुरु, पास सो पढइ अहनिसि ।

वाणारिउ क्रमि (क्रमि३५) हूयउ,

गच्छ भारु३६ धरु३७ जाणि गुण वसि३८ ।

सिरि 'तरुणप्पह' आयरिए३९ सिरि 'जिणचंदह' पाटि ।

थापिउ सिरि 'जिणउदय', गुरु४० विहरइ मुनिवर थाटि४१ ॥३५॥

१९b.d सुविहि आचारि, २०b विहार, २१a.c.d सोमपहो. २२a सिक्ख. २३b.c सुगियत्थ, २४b भारु d भारुद्धरण, २५a.c.d सहो, २६b तयण, २७। संताविउ, २८d सिर, २९b तरुणप्पह आयरिय. d. तरुणप्पहायरिय-राए, ३० पनोत्तरे ३१d सिन्धु मेवाड़ गूंजर. ३२b रोविधि ।

३३b तासु निमिउ (२) नामु अभिरामु. c तासु नियउ (२) नामु अभिरामु. d मालु निम्मिउ (२) नामु अभिरामु. ३४b रयण, ३५b.d

गट्टि

पच पइट्ट४२ जिणि४३ मोस तेवीस,
चउद साहूणि घण सघवइ रहय ।
आयरिय उवज्झाय वाणारिय४४ ठविय,
मह महत्तरा पमुह पयि४५ ॥३६॥
जेण रजिय मणा भणइ ४६ पडिय जणा,
वलि वलि धूणिवि४७ नियसिराय४८ ।
कटरि गामीरिमा४६ कटरि वय धीरिमा,
कटरि लावन्न मोहग्ग जायं ॥३७॥
कटरि गुण संचिय५० कटरि इद्रिय जय, कटरि सवेग निव्वेय रग ।
वापु देसण कला वापु मइ निम्मला, वापु लीला कसायाण भगं ॥३८॥
तस्स५१ एह५२ गुण गण जेम तारायण,
कहिउ किम सकउ५३ एक जीह ।
पारु न५४ पामए सारया देवया,
सहस मुहि भणइ जइ रत्ति५५ दीह ॥३९॥

॥ घात ॥

अह अणुक्काम अह अणुकमि, पत्तु विहरतु ।
सिरि 'पट्टणि' सूरिवरो, पवर सीसु जाणेवि नियमणि ।
'बत्तीसइ भद्दवइ५६ पढम, पक्खि इक्कारसी' दिणि ॥

४२a पइट्ठ b पइट्ठा, ४३b 1 जिण, ४४b वाणारिय, ४५b पय d पइ ४६b भणय, ४७1 धूणिविमिय, ४८a cd सिराइ ४९b-c1 गम्भीरिमा ५०a c सञ्चयं, d सम्भय, ५१b तास ५२b पह c d पहु ५३b सकए ५४a पार ५५a रति b राति ५६b c d भद्दवए

सिर 'लोगहियायरि' यर५७ अप्पिय५८ निय पय५९ सिक्खा६० ।
संपत्तउ सुरलोयि६१ पहु, वोहेवा सुर लक्खा६२ ॥४०॥

धन्न६३ सो वासरो पुन्न भर भासुरो,
साजि६४ वेला सही अमिय ६५वेला ।
जत्थ निय सुहगुरु भाव कप्पतरू,
भत्ति गाइज्जए हरिस हेला६६ ॥४१॥

सहलु६७ मणुयत्तणं ताण लोयाण, लहइ ते सुक्ख संपत्ति भूरिं ।
सुद्ध६८ मण संठियं थूभ६९ पढ़िमट्ठियं,
जेय झायंति 'जिणउदयसूरिं' ॥४२॥

एहु सिरि 'जिणउदयसूरि' निय सामिणो,
कहिउ मंइ चरिउ७० अइ मंद७१ वुद्धि ।
अम्ह सो दिक्ख गुरु देउ सुपसन्नउ,
७२दंसण नाण४चारित सुद्धि ॥४३॥

एहु गुरु राय वीवाहलउ जे पढइ,
जे सुणइ७३ जे थुणइ जे दियंति ।
उभय लोगेवि ते लहइं७४ मणवंछियं,
"मेरुनंदन"७५ गणि इम भणंति ॥४४॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि गच्छनायक वीवाहलउ समाप्त ॥

५७b लोगह आयरिय d लोगहिं आयरिय ५८b आपिय ५९b नियनिय d नियमय ६०b c b सिक्ख ६१b सुरलोय d सुर-लोइ ६२b c d लक्ख ६३a d धनु ६४b साज ६५a d वेल ६६a हेल ६७b सहल d सुहल ६८d सुहमणि सठियं ६९d थुवि ७०d चरिउ ७१b इय ७२d देसण ७३a जे गुणइ जे सुणंति c d जे गुणइ जे सुणइ जे दि-यंति (d देयन्ति) ७४b लहय ७५b मेरुनन्दण ।

॥श्रीजयसागरोपाध्याय प्रशस्तिः॥

सवत् १५११ वर्षे श्री जिनराजसूरि पट्टालङ्कार श्रीमज्जिनभद्र सूरि पट्टालङ्कार राज्ये ॥

श्री वज्रयन्त शिखरे, लक्ष्मीतिलकाभिधो वर विहार ।
'नरपाल' सघपतिना, यदादि कारयितुमारेभे ॥ १ ॥
दर्शयति नदाचाम्बा, श्रीदेवी दवना जन समक्षम् ।
अतिशय करपतक्षणा, 'जयसागर' वाचकेन्द्राणाम् ॥ २ ॥
'सेरीपकाभिधाने', ग्रामे श्री पार्श्वनाथ जिन भवने ।
श्री शेष प्रत्यक्षो येपा पद्मावती सहित ॥ ३ ॥
श्री 'मडपाट' देशे, नागद्रह' नामक शुभ निवेशे ।
नवखण्ड पार्श्व चैत्ये, सन्तुष्टा शारदा येपाम् ॥ ४ ॥

तथा श्री 'जिन कुशल सूरि' प्रमुख, सुप्रसन्न देवतानाम् पूर्व दशवर्त्ति राजद्रह' नगरोदण्ड विहारादि । स्यानोत्तर दिग्वर्त्ति नगर-कोटादि' स्थान पश्चिम दिग्वर्त्ति वलपाटक 'नागद्रह'-दिपु । राज सभा समर्थ निर्जित पूर्व भट्टाद्यनेक वादि स्तवरमाणा । विरचित 'सन्देह दोलावली वृत्ति' लघु 'प्रथ्वीचन्द्र चरित्र' 'पच पर्वी ग्रन्थ रत्नावली प्रमुख मेदा वृषभनाथ स्तव श्री 'जिन वल्लभ सूरि' कृत 'भावारिवारण स्तव वृत्ति' ।सस्कृत प्राकृत बन्ध स्तवन सहस्राणाम् स्यापितानेक सघपतीना कवित्व कला निर्जित सुर गुरूणा पाठिता-नेक शिष्य वर्गाणाम् इत्यादि—

॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि फागु ॥
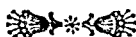
न०— १ (त्रुटक)

खिणि वाजित्र घुम घुमइ ए, गयणंगण गाजइ।
छल छल छपल कंसाल ताल, महुरा-रवि वाजइ ॥ २८ ॥

भास—आवइ कामिणी गहगहिय, गावइ मङ्गल चार।
खेला खेलइ अमिय रसि, हरिषिउ संघ अपार ॥ २९ ॥

अहे क्रमि क्रमि आगम वेद छन्द, नाटक गण लक्खण।
पञ्च वरिस विज्जा विचार, भणि हुअ वियक्खण ॥

पण्डिय मुणि तिणि गुरि पसाउ, करि "कीरतिराउ"।
वाणारी (स) पदि थापिउ, ए सो पयड़ पभाउ ॥ ३० ॥

नयर 'महेवइ' हेव तेम, जिणभद्द" सूरिन्द।
उवझाया राय थापिउ ए, 'कीत्तिराय' मुणिन्द ॥

घरि घरि उच्छव बहुय रंगि, कामिणि जण गावइं।
'हरषि' 'देवल' देवि ताम, मनि हरषि (म) न मावइं ॥ ३१ ॥

धारइ अङ्ग इग्यार सार, सुविचार रसाल।
टालइ दोष कषाय जाय (ल?), उवसम-सिरि माल ॥

जिण शासन जे अवर, बहुय सिद्धन्त प्रसिद्धि।
ते जाणइ सवि भेय वेय, वपु दे पिग बुद्धि ॥ ३२ ॥

॥ भास ॥

'सिन्धु' देश 'पूरव' पमुह बहु विह देस विहार ।
करइ सुगुरु दया हरस, वरिसइ सुह फल कार ॥ ३३ ॥
अह कमि समि 'नेमलखेर' नयरि, पहुंतउ विहरन्तउ ।
'खितिसार' उवझाय चन्द, तत तेउ पुरन्तउ ॥
सिरि 'जिनभद्रसूरि' सुणिय, पात्र आवा तिस कोयउ ।
मोन्ड उलटि 'कित्तिरयणसूरि', नाम प्रसिद्धउ ॥ ३४ ॥
सो सिरि 'कीरतिरयण सूरि' भविअण पडिबोहइ ।
लखधिवन्त महिमानिवास, जिण शासनि सोहइ ॥
खरतर गच्छि सुरतरु जेम, वछिय सामहर ।
वादिय मयगल मान तिमिर, भर नास दिनेसर ॥ ३५ ॥
एरिस सुहगुरु तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ ।
तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, बहु बुद्धि लहीजइ ॥
ए फागु रङ्ग रगि रमइ, ते मास वसन्त ।
तिहि मणिनाण पहाण किति, महियल पसरन्ते ॥ ३६ ॥
॥ इति श्री कीर्त्तिरत्नसूरि वराणां फागु समाप्त ॥

॥ छ ॥ शुभं भवतु श्री संघस्य ॥ छ ॥
॥ लिखितं जयध्वज गणिना ॥

॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि गीतम् ॥

न०—२

नवनिधि चवद रयण आवइ, तसु मन्दिर सम्पति रिति(द्धि?) पावइ ।
दूझै कामगवी भावै, श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरि' जे ध्यावै ॥ न । आं० ॥
सुरतरु अंगणि सफल फले, सुर-कुंभ सिरोमणी हेली मिलइ ।
जागती जोति अमृत सघलै, दुख दारिद दोहण दूर हलै ॥१ । न० ॥
अविहड उछ्रट उछव घणा, थिण द्रविण एवत्थण कामुकणा ।
पसरइ महियल विमल गुणा, चंगइ गुरु ध्यावो भविक जणा ॥२न०॥
महिम प्रतीति सुधर लगइं, डाइण साइण कवहु न लगै ।
प्रीति सुं नीति वधइ त्रिजगइं, नहु नंदि चलइ तसि पूठि अगइं ॥३न॥
श्री 'संखवालह' वंस वरइ, 'देपा' सुत 'देवल' दे उयरइ ।
दीक्षा'वद्ध'नसूरि'गुरइं, संजम वासिरि उ(ध?)रियउ धवल धुरइं॥४न॥
आचारिज करणी वृनणा,' जिन भुवन पयट्ठण पद ठवणा ।
सीस नांदि मालारुहणा, गुरु पीर न होइ इगरि-सणा ॥ ५ । न० ॥
मूत(ल?) 'महेवइ' थिर ठाणइ, पगला 'अरबुद-गिरि' 'जोधाणे' ।
पूज करइ जे इकठाणइ, ते सदा सुखी सहुको जाणे ॥ ६ । न० ॥
दीप दिवस अतिसइ सोहइ, सुर नाद संगीत भुवण मोहइ ।
झिग मिग दीप कली वोहइ, गुरु जां मलीउ एरकाव व कोहइ ॥७न०॥
प्रगट प्रभाव प्रताप तं(प,इ, नर नारि नमी कर जोड़ जपइ ।
अवलाह सा(सव?)वला धार धपइ, श्री'खरतरगच्छ प्रभुता सुमपइ॥८न॥

दीण हीण दुखिया सरणै, विपुला कमला सथ वर परणइ।
असुभ करम आरति हरणइ, जे लीन चतुर सदगुरु चरणै ॥ ६ न ॥
कुटंब कलत्र सुत मर्यादा, चाल्हइ सुभ कारिज अप्रमादा।
भोग संयोग सुजस वादा, करि 'कीर्त्तिरत्न' सदगुरु दादा ॥१०न०॥
भाग सुभाग सुमति सगइ, सुभ देस सुवास वसे रंगइ।
पाप संताप न के अंगइ, न्हानो गुरु ध्यान लहरि गंगइ ॥ ११ नव०॥
चरट चचाट उपग अरी, उप (भूत?) पलीत आनीत बुरी।
धावंति दूट कटक मरी, नासे तत्खण गुरु नाम करी ॥ १२। न० ॥
साम विलास उल्हास सवहु, आनन्द विनोद प्रमोद लहु।
भोगवइ सुर समृद्धि महु, सुप्रसन्न सुदृष्टि सुगुरु पहु ॥१३। नव०॥
सुहगुरु थ(स्त?)वणा पढइ गुणइ, वाचता आपण वयण(वयण?)सुणइ।
कुशल मगल वसु थ(पु?)ण्य थुणइ, श्री 'साधुकीरति' पाठक पभणइ॥१४॥

॥ इति श्री कीर्त्ति रत्न सूरि गीत ॥

नं०—३

'कीर्त्तिरत्न सूरि' वंदिय, मूल महूरे थान।
सयसिया सिर सहरो, 'संखवाल' कुलभान ॥ १। की० ॥
संवत 'चवद उपरें, उगुणपचासें' जाम।
जन्म थयो 'दीपा' घर, 'देवल दे' उल्हाम ॥ २। की० ॥
'देल्हे' कुमर हित नेम ज्यु मूकी निज घर वास।
'तसठे' संयम लियो, श्री 'जिनवर्द्धन' पास ॥ ३। की०॥

वाचक पद हिव 'सत्तरे', 'असिये' पाठक सार ।
आचारज सताणवें 'जेसलमेर' मंझार ॥ ४ । की० ॥
सुर नर किन्नर कामिणी, गुण गावे सुविशाल ।
साधु गुणे करी सोहता, हार विचे जिम लाल ॥ ५।की०॥
पगला 'अरबुद गिरि' भला, 'जोधपुरे' जयकार ।
'राजनगर' राजे सदा, थुंम सकल सुखकार ॥ ६ । की०॥
जसु माथे गुरु कर ठवै, ते श्रावक धनवंत ।
सीस सिद्धान्त सिरोमणी, 'राजसागर' गरजन्त ॥७ ।की ॥
अणसण लेइ रे भावस्युं, संवत् 'पनर पचीस' ।
अमर विमाने अवतर्या, श्री 'कीर्तिरत्न सूरीस' ॥ ८ ।की०॥
अमीय भरै भल लोयणे, तुं मुझ दे दीदार ।
पाठक 'ललितकीर्त्ति' कहे, दिन प्रति जय-जयकार ॥९॥

न०—४

श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरिंद' तणी, महिमा वाधइ जग मांहि घणी ।
धरि ध्यानै धावइ भूमि-धणी, महियल मुनिजन सिर मुगट मणि ॥१॥
तेजे कर जिम दीपइ तरणी, सदगुरु सेवा चिन्ता हरणी ।
भंडार सुवन सुभर भरणी, कमला विमला कांमित करिणी ॥२॥
अड वडीया संकट उद्धरणी, वरदायक जसु शोभा वरणी ।
घर पावै नर सुघरि घरणी, प्रेमइं अधिकइ तरिणी परिणी ॥३॥
सव दोहग दूरइ संहरणी, फोटक न हुवइ धरिणी फिरणी ।
अग(ल?)गी अटवी थांनक डरणी, साचउ तिहां गुरु असरण सरणी ॥४॥
साहि सरोमणि 'देप' घरै, 'देवल दे' जनम्यो उवरि धरो ।

संवत 'गुणपचास तरो', श्री 'सराल' कुल सहसकरो ॥५॥
संवत 'चबदे त्रयसठि' वरसे, 'आसाढ़ इग्यारीस' बहु हरसें ।
श्री 'जिनराधन सूरि' गुरु पासें, सयम लीयो मन उल्हासें ॥६॥
'जिनवड' वाचक पद गुरु पायउ, 'असीयइ' उवझायक पद आयउ ।
'सताणयइ' वरसे दीयउ, आचारिज श्री 'जिनभद्र' कीयो ॥७॥
'लखउ' 'रूढइ' तिहा मन लाइ, 'जेसलगिर' पुर तिहा किण जाई ।
'मा(हो)व सुकल दसमी' आइ, महोछव करि पन्वी दिवराइ ॥८॥
'पनरइ पचवीसइ' तिण वरसइ 'आसाढ इग्यारस' बहु हरसें ।
अणसण लीयो मन नै हरसे, सुभगति पामी सुरवर सरसइ ॥९॥
'वीरमपुर' वयनें वानें, थप्यो थिर थूभ भला थानइ ।
महायउ सहु को नइ मन मानइ, जस सोभा जग सगलो जानें ॥१०॥
ममुरया सद्गुरु सानिधकारी, सकलाप सजन जन साधारी ।
नगर सुर वे) वर नें नरनारी थूभ आज जात्रा धारी ॥११॥
भूत प्रत न भय नासइ, जजाल सत्र दूरइ जावइ ।
गणि चन्द्रकीर्ति गुरु गुण गावें श्री 'कीरतिरत्नसूरि' ध्यावइ ॥१२

॥ इति गुरु गीतं ॥

कवि सुमतिरंग कृत

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि (उत्पत्ति) छन्द

नं०— ८

सुमति करण सारद सुखदाइ, सांनिध कर सेवकां सदाइ।
'कीर्त्तिरत्न सूरिन्द' कहाइ, उत्पति तास कहण मति आइ ।१।
'जालंधर' देसैं सवि जांगे, 'संखवालो' नगरी सुख मांगे।
'कोचर' साह संसार वखांणे, दे देकार घर खाणें दानें ॥२॥
दोय घर घरणी दौलति दावे, कांमणि लघु सुत एक कहावे।
'गेल्ह' रीति सुजस रहावैं, पिता प्रेम धरि करि परणावें ॥३॥
आधी राति 'रोलू' अङ्गण, डस्यो साप काले जम डंडण।
मूवो जांणि ले चाल्या दङ्गण, सन्मुख मिल्या'खरतर गच्छ' मंडण ।४।
'जिनेश्वर सूरि' कहै गुण जाणी, विषधर भख्यो लोक सुणि वाणी।
खरतर करो जिम ए सही जीवे,'कोचर' खरतर हुवो 'तदीवे ॥५॥
जहर कहर गुणणी करि जावे, सावधांन हुआ सहि सुख पावे।
आप पगें (गेल्ह) घर आवे, खरें राग खरतरा कहावें ॥ ६ ॥
दूहा—नेरं सें तेरोत्तरे,'कोचर' खरतर किद्ध।
आदि प्रासाद प्रतिष्ठियो, सूरि जिनेश्वर सिद्ध ॥ ७ ॥
'कोचर' साह 'कोरटें' वसियो, सत्तूकार दीये जस रसीयो।
कुलगर (गुरु ?) आय घणें ही कसीयो,
खरतर विरुद थकी नवि खसीयो ॥ ८ ॥

'रोलू' सुत दोय वड़ा रसीला, 'आपमल्ल' 'देपमल्ल' असील।
'देप' घरे 'देल्हदे' वाला, चार सुत जनम्या चौसाला ॥६॥

॥ छन्द मोतियदाम ॥

'लखो' तिम 'भादो' 'केल्हो' साह, 'देल्हो' चोथो गुणे अगाह।
'लखा' नैं लिखमी तूठी ऐह, परिया तिण सात तणो वर देह ॥१॥
'बीमल्हपुर' वसियौ 'लखो' वाम, 'जेसाणै' 'भादो' करै विलास।
'मेहेवै' 'केलो' मोटी माम, चोथो तिण चारित लीधो आम ॥२॥
चवदै गुण पचासैं' जम्म, धर्यो तिण बालक वय थी धम्म।
तेरै वरसे जब हुयो तेह, 'राडद्रह' मान्यो राखण रेह ॥३॥
'चवदैसे तेसठे' चाल्या चूप, विवाह करण जग रायण रूप।
खीमज थल के पासै जान, आवी नैं उतरी तिण थान ॥४॥
सरली एक खेजडी देखी मोर, जुवाने जानी माह्यो जोर।
इण ऊपर वरछी काढ कोय, परणावु पुत्री मेरी तोय ॥५॥
रजपूतें एकण कहियो आम, 'केलै' नैं मेवक लीधी ताम।
उन्नाली वरछी नाखी एम, तीर तणी पर काढी तेम ॥६॥
आनरै निहा जोर आयो असमान, परलोक गयो ते छूटा प्राण।
'देल्हे' सो देखी मन दिलगीर, नर भव अथिर ज्युं डाभै नीर ॥७॥
'खेमकीरति'वादै मन (बैठो) खात,भागी सहु मन(को)तन की भ्रान।
साह सगा सहुनै समझाय 'जिनवर्द्धनसूरि' पासे जाय ॥८॥
दीक्षा तब लीधी 'देल्हे आप, पुराणा तोडण पाप सन्ताप।
मामा ते पारख मोटे मन्न, धरा सहु आखे धन हो धन्न ॥९॥

इग्यारह अंग पढ्या इण रीत, गोतम स्वामी ज्यूं वीर वदीत ।
वणारस कीयो गुरु गुरु वार, 'चवदेसैसत्तरे' चित्त विचार ॥१०॥
'जेसाणें' खेतरपाल को जोर, उथापी मांड्यो बाहिर ठौर ।
आचारज क्षेत्रपाले मेल, भट्टारक काढ्या गच्छ थी ठेल ॥११॥

दोहा—'नाल्है' साह निकालनै, थाप्यो 'जिनभद्र सूरि' ।
दोस दियौ को देवता, भावी मिटै न दूर ॥१२॥
'पींपलीयो' गच्छ थापीयो, शुभ वेला सुभ वार ।
'साहण' सा   सत करी, वादी वाद विचार ॥१३॥
'जिनवर्द्धन सूरि' जांण के, शिष्य सदा सुविनीत ।
आप दिसा आग्रह कियो, गुरु गच्छ राखण रीत ॥१४॥
आधी राते आवि क, वीर कही ए वात ।
आउखो गुरुनो अल्प, मास छ ।   कहात ॥१५॥
'महेवे' में सांमठी, च्यार करी चौमास ।
'जिनभद्रसूरि' बोलाविया, आवो हमारे पास ॥१६॥
अनुमानें करि अटकल्यो, उदयवंत गच्छ एह ।
आवि मिल्या आदर सहित, पाठक पदवी देह ॥१७॥
'चवदैसे असी' वरस, पाठक पदवी पाय ।
'जिनभद्रसूरि' 'जेसलनगर', तेडाव्या तिहां जाय ॥१८॥

॥ छन्द सारसी ॥

लखपति 'लखो' साह 'केल्हो', 'महेवे' थीं आविया ।
'जेसलमेरें' करी वीनती, पूज्य नै विधि वंदिया ॥
"जिनभद्र सूरैं' मया करकै, 'चवदैसैसताणवें' ।
'कीर्त्तिरत्नसूरि' आतीय, तीम पदवी [illegible]

वटु रास्च कीया दान दीया, विविध लखमी वावरी।
'भरवाल' साचा विरुद राखै, धर्मराग हीयै धरी ॥
'मेनुज' सघ कराय साथै, मघ सहुको प्रम धरै ॥२॥की०॥
'मरुमेरै' 'गिरनार' 'गोडी', देस 'सोरठ' सचरी।
चिनलाय चैत्यप्रवाडी कीधी, लाहिणा जिहा तिहा करी।
घर आय घणा धमड सेती, मघ पूज करी लवै ॥३॥की०॥
आचारजा मु अरज करिने, चतुरमासक राखिया।
गोत्रजा कुलगुरु दूर कीधा, भेद आगम भाखिया।
नमझावीया सिद्धान्त सुवचन, वाणि जाणी अमी श्रवै ॥४॥की०
'माल्ने' थट्टा' 'मिंध' सनमुख, 'सखवाल(चा)'मन आवजो।
थाट भगत हुइज्यो सुगुरु भाख्यो, गच्छ—फाट मे नावजो।
दीक्षा न लेज्यो,स्वपद पिण, इल्ट्र ओपद(व?)मत खरै॥५॥की०॥
'कोरै' 'जमलमर' दहरा, करावजो गुरु इम भणे।
नगर चोहटा थकी जिमणै, पास वसज्यो धन घणै।
मीख मान मानै साह सहुको,सुखी हुइ इह परभवै ॥६॥की०॥
पचास एक शिष्य पडित, 'कीरतिरतनसूरि'नै।
गुरु गुण गौतम जेम गिणियै, सुगति सुमति जगीसनै।
नामअंप जेहन मीस उपरि, करै तसु दालिद्र गमै ॥७॥की०॥
कलस—आऊखा नै अतपक्ष अणसण पाली नै,
सवत 'पनरपचीस', मन वैराग वाली नै।
'वैसाख सुदि पचमी', सुगुरु सुरलोक सिधाइ।
थुभ कीयै उद्योत हुवो, जिनभवनह माह।
सुखकार सार शृगार मणि, "सुमतिरग"मानिध सदा।
रखवाल बाल गोपाल कू, वाट घाट यत्रा तदा ॥८॥

नं०—६

सोहे गुरु नगर 'महेवे', परचा पूरै नित मेवे । सो० ।
'संखवाल' कुले गुरु राजै, 'दीपचन्द' पिता वर छाजै हो ॥ १ सो०॥
'देवल दे' जसु वर माता, जनम्या ढेलाख्य विख्याता हो । सो० ।
'चवदैसय तेसठ वरसे,' 'आषाढ वदी' शुभ दिवसै हो । २ । सो० ।
'इग्यारसे', दीक्षा लीधी 'जिनवरधन सूरे' दीधी हो । सो० ।
तप जप कर करम खपाया, नवि राखी कांइ माया हो । ३ । सो० ।
नामे जसु नावै रोगा, सुख संपत पामे भोगा हो । सो० ।
'जिनभद्र सूरि' तेडाया, 'जेसाण नगर' में आव्या हो । ४ । सो० ।
'चवदसै सताणवे' वरसै, सूरि पद दीधो मन हरसै हो । सो० ।
संवत पनरेसे पचीसे, 'वैशाख पंचम' शुभ दिवसै हो । ५ । सो० ।
ईसाणैं सद्गुरु पहुंता, मनमें शुभ ध्यान ज धरता हो । सो० ।
साइण डाइण वेताला हो, भूत प्रेत न आल जंजाला हो ६ । सो० ।
सद्गुरु गुण पार न पावै, मुनिजन वर भावना भावे हो । सो० ।
'जयकीर्त्ति' सदा गुण वोले, सद्गुरु गुण कोइ न तोले हो । ७ । सो०

नं०—७

'कीर्त्तिरतन' सुरीन्दा, वंदे नरनारी ना वृन्दा हो ।सद्गुरु महिरकरो।
महिर करो गुरु मेरा, हुंतो चरण न छोड़ूं तेरा हो । स० । १ ।
नगर 'महेवे' राजे, सेवतां सब दुख भाजे हो । स० । २ ।
वंछित पूरण दाता, नित करिजो संपति साता हो । ३ । स० ।
नव नव देसमें सोहे, पूरै परचा जन मोहे हो । ४ । स० ।

चोरादिक भय वारे, सेवक ना कारिज सारे हो । म० । ५ ।
बंध्या पुत्र समापे, निरधनीयां धन सब आपे हो । ६ म ।
अलगा थी यात्री आवे, देवंना चरण सुहावे हो । म० । ७ ।
इम अनेक गुणधारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो ।८।म०।
'सदारंग गुणधामी', 'सवाई दसम' पटधामी हो । म० ।९ ।
गाम 'गढाला' थप्या, सेवक ना संकट काप्या हो ।१०म।
नागु प्रमाद करायो, देसा में सुजस सवायो हो । म० । ११ ।
'जयकीरति' गुण गावे, मन वंछित पद पावे हो ।म०।१२।

नं०—८

सदगुरु चरण नमो चितलाय, जिण भेट्या दुख दालिद जाय ।
आज करो रे उछाह, सद्गुरु चरण कमल आगे । आ० ।
नगर 'महेवै' 'श्रीपमल' माह, 'देवलदे' घरणी जनम्यां सुनाह ।आ१।
संवत् 'चवदे गुणपचास', 'इल्ह' नाम दियो शुभ जाम । आ० ।
यौवन वय आव्यो तिण वार, कीनी सगाई हर्ष अपार । आ०।२
ज्ञान सझाय करी रे तैयार, चलता आव्या 'राढद्रह' बार । आ० ।
तिहां इक सोमस्थल सुविशाल, जा निच सोहे समीय रसाल । ३ ।
तिण ही ठामे उतरी जान, रंग रली कीना सनमान । आ० ।
तिणे इक ठाकुर बाह्यो बोल, इण पर बरछी काढे तोल । आ० । ४ ।
देवु पुत्री तिणे परणाय, ऐसो वचन सुण्यो चितलाय । आ० ।
'फल्हे' रो सेवक अठे ताम, काढी बरछी छूटा प्राण । आ० । ५ ।
'इल्हे' दीठो ए चिरतंत, सद्गुरु वचने भागी भ्रन्त । आ० ।
'नेसटे' शुभ संयम लीद्ध, श्री 'जिनरघन सूरि' दीध । आ० ६ ।

नेम तणी परे छोडी रिद्ध, जगमें सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
इग्यार अंग हुया जाण, तेजे करी प्रतपे जिम भांण । आ० । ७ ।
गौतम स्वामी ज्युं करय विहार, प्रतिबोधे सहु नर ने नार । आ० ।
सिंघे तेडाव्या 'जेसलमेर', सद्गुरु आया सुर नर घेर । आ० । ८ ।
'सताणवे' सूरि पदवी जास, श्री 'जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
तप जप तीरथ उग्र विहार, करतां आव्या 'महेवे' वार । आ० । ९ ।
सिंघ सकल पेसारो कीन, गुरें पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
संवत् 'पनरेसे पचवीस', वदी वैशाख पंचमि शुभ दीस । आ० । १० ।
अणसण कर पहुंतां सुरलोक, नर नारी सब देवे धोक । आ० ।
गुरु परचा जग सगलै पूर, दुखिया आपे सुख भरपूर । आ० । ११ ।
विरुद कहंता नावे पार, इण कलि में सुरगुरु अवतार । आ० ।
नगर 'महेवे' मूलगो थान, ठाम ठाम दीपे परधान । आ० । १२ ।
'कीर्त्तिरतनसूरी' गुरुराय, महिर करो ज्युं संपति थाय । आ० ।
'अठारेंसे गुण्यासीये' वास, 'वदि वैशाख दसमी' परगास ।आ०।१३।
रच्यो प्रासाद 'गडालय' मांहि, दोय थान सोहे दोनूं बांह । आ० ।
सुगुरु चरण थाप्या घणे प्रेम, सुजस उपायो 'कांतिरतन' एम ।आ०।१४।
भलै दिहाडो उग्यो आज, भेटया सदगुरु सार्या काज । आ० ।
'अभैविलास'री विनती एह, नित प्रति करजो आनंद अछेह ।आ०।१५

न०—८

वधारो कुल वेल, महिर मेघमाला मंडे ।
वित्त वादल विस्तार, दुख दालिद्र विहंडे ।
दोलत कर दामिनी, सुवाय संचारी ।
गुण गरजारव करे भरं, सरवर नरनारी ।
वाल सुगाल तत्काल कर, संखवाल घर घर सही ।
'कीतिरत्नसूरि' कीजीयै, गरथ अरथ गुण गहगही ॥१॥

श्री जिनलाभ सूरि विहारानुक्रम

(सं० १८१५ से सं० १८३३)

॥ दोहा ॥

गच्छ नायक लायक गुण, सागर जेम गम्भीर ।
निज करणी कर निरमला, जाणे गंगा नीर ॥१॥
नपमो नालारर तणी, गच्छपति किसी गरज ।
आसगायत आपणा, इण परि करैं अरज ॥२॥
पाच बरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधते ढाण ।
गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, बड वखनी 'बीकाण' ॥३॥
"५बाण १चन्द्र ८वसु १शशि" वरस, सरस भलौ श्रीकार ।
शुभ वेला 'बीकाण' सु, वारु कियौ विहार ॥४॥
सधन घरे समझू सफल, घण श्रावक जसु वास ।
गुणवन्तो 'गारब शहर', तिहा कीधौ चौमास ॥५॥
आठ मास तिहा था उठे, वदावी थल देश ।
'जेसाणै' गुरु जाय नैं, परगट कियौ प्रवेश ॥६॥
च्यार वरस लगि चाहसु, नित नित नवलै नेह ।
बड वरानी श्रावक जिके, जतने राखै जेह ॥७॥
तिहा तीरथ छै 'लौद्रवौ', जूनौ जगहि वदीत ।
तिहा प्रभु पारस परसिया, सहसफणा शुभ रीत ॥८॥
सीरव करे तिहा थी सुमन, पुलिया पच्छिम देस ।
सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासस ॥९॥

विधि सुं गौड़ी—राय नै, वांदी कियौ विहार।
गच्छपति चलि आया गुढे, चौमासौ चित धार ॥१०॥
रहि चौमासो रंग सुं, विहलौ करै विहार।
माती धरा महेवची, वंदावी निण वार ॥११॥
नगर 'महेवै' आय नैं, नमिवा नाकोड़ो पास।
जाये कीध 'जलोल' में, चित चोखै चौमास ॥१२॥
मिगसरमें वलि मलपिया, गज ज्यूं श्री गुरुराज।
आवै 'आबू' अरचिया, जगनायक जिनराज ॥१३॥
जस खाटै दाटै पिशुन, डर दुयणां पग दीव।
'घीलाड़ै' वहु रंग सुं,चतुर चौमासौ कीध ॥१४॥
'खेजड़लै' नै 'खारियै', रहिया वलि 'रोहीठ'।
पिशुन किया सहु पाधरा, धरमें होता धीठ ॥१५॥
'मंडोवर' महिमा घणी, 'जोधाणै' री जोड़।
मुनिपति आया 'मेड़तै', हित सुं तिमरी होड़ ॥१६॥
च्यार महीना चैन सुं, झाझे जतने जार।
'जैपुर' आया जुगति सुं, सहिर वड़ै श्रीकार १७॥
सहिर किनां सागे सरग, इलमें वसियौ आय।
वरस थयौ वासर जितौ, वासर घड़ी विहाय ॥१८॥
हठ कीधौ घण हेत सुं, पिण नवि रहिया पूज।
मुनि-पति जाय 'मेवाड़' में, वरतायौ नामूंज ॥१९॥
'उदयापुर' हुंती अलग, कठिन अठारै कोस।
'रिसहेस' नै रंग सुं, नमन कियौ निरदोष ॥२०॥
चलता 'उदयापुर' वले, गहिरा कर गहगाट।
वीनति घणै विराजिया, 'पालीवालै' पाट ॥२१॥
अटकलता आसो अवस, निरख विचै 'नागौर'।
पिण मन वसियो पूज रै, सहिर भलो 'साचोर' ॥२२॥

तिण वरसे 'सूरत' ना, अमपति अवसर देख ।
निहावें सद्गुरु तुरत, लायक मूकी लेख ॥२३॥
दया धर्म देखी घणी, ऊपजतो उग देस ।
सुमति गुपति संभालता, पुर तिण कीध प्रवेश ॥२४॥
मरम धर जुग श्रावकें, करता नव नव कोड ।
सुपरें सेवा साचवी, हित सुं होडा होड ॥२५॥
कर राजी श्रावक सकल, जग सगलें जस दाट ।
'राजनगर' आया रहण, वहता पगवट वाट ॥२६॥
तिहा पिण नालेंवर तुरत, उच्छव करें अपार ।
दोय वरस लगि राति दिन, सेवा कीधी सार ॥२७॥
मन थिर कर साथे थई, श्रावक सहु परिवार ।
महुजनी सेवा करें, गुरु चढिया गिरनार ॥२८॥
उतर तिहा थी आविया, 'वेलाउल' वंदाय ।
महिमा मोटी 'माडवी', पूजत सद्गुरु पाय ॥२९॥
कोडी धज तिण नगर म, लखपति तणा लगार ।
सहु श्रावक सुखिया जिहा, वारधि सु विवहार ॥३०॥
वरस लगें तिहा वावर्यो, धन अगिणत धर्म काज ।
चौथे दिन 'भुज' चालिया, राजी हुए गुरुराज ॥३१॥
'भुज' तणे श्रावक भलो, सवा कीध सवाय ।
भाग वर्ली जिहा सचरें, थट सगला तिहा थाय ॥३२॥
इण विधि अढ्ढारें वरस, दीन (दिन दिन?) नव नव दस ।
परचिया श्रावक प्रवल, वाणी तणे विगप ॥३३॥
हिव वहिला विनती सुणो, करिज्यो पूज प्रयाण ।
'बीकानेर' वधाविज्यो, सेवक अपणा जाण ॥३४॥

श्री जिनराजसूरि गीतम्

ढाल:—कपूर होवइ अति उजलुंए।

गछपति वंदन मनरली रे, गरुओ गुणह गंभीर ।
'श्रीजिनराजसूरीसरू' रे, सवि गछ कइ सिरि हीर रे ।१।

वंदउश्री 'जिनराजसुरींद' । आंकणी ।

श्री 'जिनसिंघसूरि' पटोधरू रे, उन्नतिकार महंत ।
चारित्र चंगइं मन रमइ रे, सेवइ भविजन संत रे ।२।वं०।

'जेसलमेर' जिनंद नी रे, कीधो प्रतिष्ठा चंग ।
'भणसाली' 'थिरू' तिहां रे, धन खरचइ मन रंग रे ।३।वं।

'रूपजी' संघवी 'सेत्रुंजइ' रे, आठमउ कीध उद्धार ।
'मरुदेवीटुंकइ' भलउ रे, चउमुख आदि विहार ।४।वं०।

मोटी मांडी मांडणी रे, देहरा प्रोलि प्राकार ।
सबल महोछव तिहां सजी रे, प्रतिष्ठा विधि विस्तार रे ।५।वं०।

चित चोखइ सा(ह) 'चांपसी' रे, 'भाणवडइ' भल भाव ।
सुगुरु प्रतिष्ठा तिहां करी रे, जस बोलइ जन आवि रे ।६।वं०।

संघपति 'आसकरण' सही रे, ममाणीमइ कीध प्रसाद ।
बिंब महोछव मांडीया रे, 'मेडता' महा जस-वाद रे ।७।वं०।

धन 'खरतर' गछि दीपता रे, श्रावक सब गुण जाण ।
आण मानइ गछराज नी रे, तेजइ जाणे भाण रे ।८।वं०।

'धरमसी' नन्दन दिन दिनइ रे, दीपइ जिम रवि चंद ।
'हरषवलभ' वाचक कहइ रे, आपइ परमाणंद रे ।९।वं०।

श्री जिनरतनसूरि गीतम्

ढाल:—विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली।

श्री 'जिनरतनसूरिंद' तणी, महिमा जागइ जग माहि घणी।
जसु सेवा सारइ स्वर्गधणी, मन वंछित पूरण देव मणी।१।

जसु नामइ न डसइ दुष्टफणी, टलि जायइ अरियण जुडूया अणी।
अहिनिसि जे ध्यायइ सुगुरु भणी, तसु कीरत वाधइ सहस गुणी।२।

निरमल मन सील सदा धारी, पट काया तणौ रक्षाकारी।
कलियुग मइ 'गौतम' अवतारी,गुण गावइ सहु को नरनारी।३।

घसि केसर चंदन सुविचारी, फल ढोवइ नेवज सोपारी।
विधि जे वंदइ आगारी, ते लच्छि तणा हुवइ भरतारी।४।

जसु जन्म नगर 'सेरुणाए', तिहां वसइ 'तिलोकसी' साहगण।
गोत्रइ अति निरमल लूणीयाण, तसु घरिणी 'तारादे' विधि जाण।५।

जसु उयर सरोवर हंसाण, तिण जायउ पुरस्रतनाण।
सोलह सइ सत्तरि वरमाणं, पुनवंत पुरष दीवाण।६।

चउरासीयइ चारित लीधउ, गुरुमुख वचनामृत अमीय पीधउ।
सुभकारिज सतरइसइ कीधउ, सहगुरु सइहथि निज पट दीधउ।७।

सतरइसइ इग्यार सही, श्रावण वदि सातमि सुगति लही।
पग पूजण आवे जे उमही, गुरु आस्या पूरइ त्या सबही।८।

उग्रसेनपुरइ' सदगुरु राजइ जसु थूभ तणी महिमा छाजइ।
'खरतर' श्री संघ सदा गाजइ गुरु ध्यानइ दुरसोहग भाजइ।९।

श्री 'जिनराजसूरीस' तणउ, पाटोधर श्री 'जिनरतन' भणउ।
महियल मइ सुजस प्रताप घणउ, प्रहसमि ऊठी नित नाम थुणउ।१०।

एहवा सदगुरु नइ जे ध्यावइ, चिंत चिंता तास सवे जावइ।
दिन दिन चढती दउलति पावइ, 'जिनचंद' सगुरुना गुण गावइ।११।

इति श्री जिनरतनसूरि गीत (संग्रह, ६३ प्रति नं० १३)

श्री दयातिलक गुरु गीतम्

राग—आसावरी

सरद ससी सम सुहगुरु सोहइ, सयल साधु मन मोहइ।
देसना वारिद जिम बरसइ, जन मयूर चित हरसइ रे।१।
भाव स्युं भवीयण जण पणमउ, 'श्री दयातिलक' रिपराया।
दीपंता तपकरि दिणयर जिम, नरवर प्रणमइ पाया रे।१।भा०।
नवविध परिग्रह छंडि भली परि, संयम स्युं चितलाया।
दोप वयाल निरंतर टालइ, मनमथ आण मनाया रे।२। भा०।
पंच महाव्रत रंगइ पालइ, पंच प्रमाद निवारइं।
नितु नितु सील रयण संभालइ, भव सायर थी तारइ रे।३।भा०।
चरण करण गुण सुहगुरु धारइ, आठ करम कुं वारइ।
क्रोध मान मद तजइ मुनीसर, मुनिवर धर्म संभारइ।४।भा०।
"श्री क्षेमराज' पाटइ अति दीपइ, वादि विबुध जन जीपइ।
वांणो श्रवणि सुहाणी छाजइ, खरतर गछि गुरु राजइ रे।५।भा०।
"वाल्हादे' उरि मानसरोवर, रायहंस अवयरिया।
'वच्छा' कुल मंडण ए सुहगुरु,गुण गण रयणे भरिया रे।६।भा०।
पूरव मुनि नी रीति भली पार, आगम करिय विचारइ।
जाणि करी सूधीपरिए गुरु, गुण गरुआना धारइ रे।७।भा०।

इति श्री गुरु गीतं। (पत्र १ संग्रहमें)

वा० पदमहेम गीतम्

---*---

ढाल:—निलमइ ऋद्धि समृद्धि मिली, ए ढाल ।

'पदमहेम' वाचक वंदइ, ते भविषण दिन-दिन चिरनंदइ ।
सुरतरु सम वहि गुरु कहियइ, जसु नामइ मन वंछित लहियइ ।१।प०
'गोलरछा' वसइ छाजइ, खरतर गछि सुरमणि जिम राजइ ।
आगम अरथ तणा जाण, पालइ जिणवर केरी आण ।२।प०
छुत्रय जे संयम लीणउ, उपसम रस मधुकर जिम पीणउ ।
सुमति गुपति मइमइ पालइ,वलि दोष बयालिस नितु टालइ ।३।प०
चरण करण सत्तरि सार, वलि धरइ महाव्रत ना भार ।
ध्यान विनय सिझाय करइ, इम असुभ करम मल दूरि हरइ ।४।प०
(श्री) जिन वचनइ अनुसारइ, देसन करि भविषण नर तारइ ।
निरमल शील रयण पालइ, पूरव मुनि मारग उजवालइ ।५।प०
युगप्रधान 'जिणचद, गुरु, त्रिहुं महियलि महिमा पवरु ।
धन ते जिण सय-हथि दिख्या, सीखामी वलि संयम सिख्या ।६।प०
धन 'चोल्हा' जसु कुलि आयउ, धन धन 'चांपादे' जिण जायउ ।
'तिलककमल' गुरु धन्न जयउ,जसु पाटइ दिनकर जिम उदयउ ।७।प०
व्रत मइ तीस वरिस जोगइ, विहरी दिन दिन वधतइ जोगइ ।
ससि रस काय ससि वरिसइ,आया 'वाल्हसीसर' चित हरिसइ।८।प०
अन्त समय जाणि नाणइ,वलि करि आराधन मुह झाणइ ।
पहर छ अणशण पाली, माया ममता दूरइ टाली ।६।प०

पंच परमेष्ठि तणइ ध्यानइ, विरुई गति मिगली करि कांनइ ।
अस्मावसि भादव मासइ, मध्यानइ पहुता सुर वासइ ।१०।प०।
भाव भगति गुरु पय पूजइ, तसु आस्या रंग रली पूजइ ।
पुत्र कलत्र धन परिवार, गुरु नामइ दिन दिन जयकार ।११।प०।
उदय सदा उन्नति कीजइ, परतिख दरसन भगतां दीजइ ।
महियलि महिमा विस्तारउ, सेवकनइ साहिब संभारउ ।१२।प०।
चित्त तणी चिंता चूरउ, सुख सम्पत्ति मन चिंतित पूरउ ।
'सेवकसुन्दर' इम बोलइ, तुझ सेवा सुरतरु सम तोलइ ।१३।प०।
इति श्री पदमहेम गणि वाचक गीतं, मं. रेखाँ पठनार्थं ।।शुभं भवतु।।

चन्द्रकीर्त्ति कवित ।

पामीजै परमत्थ अत्थ पिण सयणा पावै,
पामीजै सब सिद्धि ऋद्धि पिण आफे आवे ।
पामे सीस सकज सखर सुख सेज सजाई,
पामे तेज पडूर वलि बल बुद्धि वड़ाई ।
कहि 'सुमतिरंग' सुण प्राणिया, अहि २ गुरु गुण गाइये,
श्री 'चन्द्रकीर्त्ति' सदगुरु जिसा, प्रभु इसा कद पाइये ।।१।।
संवत सतरे-सात पोप वदी पडिवा पहली ।
अणशण लेइ आप, वली उत्तम मति वहिली ।।
नगर 'विलाडै' मांहि, कांम गुरु अपणो कीधो ।
गीत गान गावतां, सुगुरु नो अणसण सीधो ।।
शुभ ध्यान ज्ञान समरण करि, सुर सुलोक जइ संचरै ।
वदै 'सुमतिरंग' हियडा विचै. घडी घडी गुरु संभरै ।।२।।

विमल सिद्धि गुरुणी गीतम् ।

गुरुणी गुणवन्त नमीजइ रे, जिम सुख सम्पत्ति पामीजइ रे।
दुख दोहग दूरि गमीजइ रे, परभवि सुर साथि रमीजइ रे ॥१॥
जसु जन्म हूओ 'मुलताणइ' रे, प्रतिबूधा पिण तिण ठाणइ रे।
महिमा सहु कोइ वखाणइ रे, दुक्कर किरिया सहिनाणइ रे ॥२॥
काकउ कलिमइ अवतारी रे, 'गोपो'लगुरुय ब्रह्मचारी रे।
तिगरइ प्रतिबोधइ दिख्या रे, मनमाहि धरी हित सिख्या रे ॥३॥
'विमल सिधि' वड वयरागइ रे, बालक वय उपसम जागइ रे।
'लावण्य सिधि' गुरुणी सगइ रे, चारित लीधउ मन रगइ रे ॥४॥
आगम नइ अरथ विचारइ रे, परवीण चरण गुण धारइ रे।
मिथ्या मत दूरि निवारइ रे, कुमती जन नइ पिण डारइ रे ॥५॥
मद मच्छर मु की माया रे, जिण कीधी निरमल काया रे।
तप जप सजम आराधी रे, नरभव निज कारिज साधो रे ॥६॥
अणसण करि धरि सुद्ध झाणइ रे, पहुता परभव 'बीकाणइ' रे।
पगला अति सुन्दर सोहइ र, थाप्या थूंभइ मन मोहइ रे ॥७॥
श्री 'ललितकीरति' उवझायइ रे, परतिष्ठ्या शुभ वेलाइ रे।
सुख साता परता पूरइरे, सेवक ना सकट चूरइ रे ॥८॥
धन धन्न पिता जसु माया रे, 'भयनमी' 'जुगनादे' आया रे।
'मान्हू' वसय सुविसाला रे, कलिकालइ चन्दनवाला रे ॥९॥
मन शुद्धइ श्रावक आवी रे, वंदइ गुरुणी नइ आवी रे।
तसु मन्दिर दय दयकारा रे, नितु होवइ हरष अपारा रे ॥१०॥
'विमलसिधि' गुरुणी महीयइ रे, जसु नामइ वछित लहीयइ रे।
दिन प्रति पूजइ नर नारी र, 'विवेकसिद्धि' सुखकारी रे ॥११॥
इति विमलसिद्धि गुरुणी गीत ॥ समाप्त ॥

(पत्र १ संग्रहमें)

द्वितीय विभागकी अनुपूर्त्ति ।

श्री गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

दुहा :—

मन धरि सरस्वती स्वामिनी, प्रणमी 'गोयम' पाय ।
गुण गाइस सहगुरु तणा, चरिय 'प्रबन्ध' उपाय ॥१॥
'वीर' जिनेसर शासने, पंचम गणि 'सोहम्म' ।
'जंबू' अन्तिम केवली, तास पाटे अतिरम्म ॥२॥
तिण अनुक्रमे उद्योतकर, 'श्री उद्योतन सूरि' ।
'वर्धमान' वधते गुणे, वन्दो आणंद पूरि ॥३॥

ढाल फागनी :—

'जिनेश्वर' 'जिनचन्द्र' गुणागर, 'अभय' मुणीन्द ।
'जिनवल्लभ' 'जिनदत्त', युगोत्तम नमे नरीन्द ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनपत्ति', 'जिनेसर' संभारि,
'जिनप्रबोध' 'जिनचन्द्र''कुशल गुरु', हिव सुखकार ॥४॥
श्री'जिनपदम' विशारद, सारद करे वखाणि ।
'श्री जिन लब्धि' लब्धि गौतम सम, अमृतवाणि ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनेसर', 'जिनशेखर' 'जिनधर्म' ।
'श्री जिनचन्द्र' गणाधिप, प्रगटित आगम मर्म ॥५॥
'श्री जिनमेरु' सूरीश्वर, सागर जेम गंभीर ।
संवत पनर त्रिहुतरे, देवगति हुऔ धीर ॥६॥

ढाल:—अढियानी :—

तव आचारिज इद 'श्रीजेसिंह मुणींद' हिवे विमासियो ए।
भट्टारक पद ठामि, 'छाजेडा' कुलि काम,
बालक आपिसे ए, गुरुपद थापिस्याए ॥ ७ ॥

श्रावक जन सुविचार, मिलिया मन्त्री उदार,
बालक जोइये ए, परिजण मोहि (ये)ए।
'ओशवश' शृङ्गार, 'जूठिल' साव मझार,
मन्त्री 'भोदेवरू' ऐ, तसु देदागरूए ॥ ८ ॥

तसु सुत बुद्धि निधान, मन्त्री 'नगराज' प्रधान,
सावय जिनवरू ए, धर्मधुरन्धरू ए।
'नगराज' घरिणी नाम, 'नागलदे' अभिराम
'गणपति' साह तणी ए, पुत्रीसहु भणीए ॥ ६ ॥

तसु उरि जिस्या रतन्न, मन्त्री 'वच्छागर' धन्न,
कुमर 'भोजागरू' ए, चतुर हा सायरू ए।
मन आणी उछाह, जाणी धरमह लाह,
सघ आगल रहे ए, 'वछराज' इम कहेए ॥१०॥

ढाल:—उलालानी :—

महाजन सहित समासमण, 'वछराज' करीय निमासण,
उत्तम महूरत आणी, बत्तीस लक्षणो जाणी ॥११॥
'जयसिंहसूरि' उत्संगे, आप्या आपणे रगे,
'भोज' भाई तिणवार, हरख्या स्वजन अपार ॥१२॥

ढाल:—धवल एक गाहीनीः—

संवत पनर पइसठे जांण, शाके चवदे इकत्रीस सम,
मिगसर सुदि चउथी गुरुवार, रात्री गत घटीय इग्यार जनम ॥१३॥
पल इग्यारह ऊपरे तास उतरापाढ ऋण्य योग वृद्धि।
कर्क लग्ने गण वर्ग ग्रह योनि, जन्मपत्री तणी इसी सिद्धि ॥१४॥

ढाल:—उलालानी :—

पनर पंचुहतिरिवर्षे, विहर्या मन तणे हर्षे।
शुभदिन दीधीय दीख, सीख्या गुरु नी सीख ॥१५॥
दिनदिन वाधए ताम, बीज कलानिधि जाम।
क्रमे क्रमे विद्या अभ्यास, करेतसु सुहगुरु पास ॥१६॥
सूधो संजम पाले, मयण सुहड मद टाले।
रायहंस गति हाले, वयणे अमृत रसाले ॥१७॥

ढाल:—भमरआलीनी :—

'योधनगर' रलियामणो, तओ भ० राज करे 'गंगेव'।
'राठोड' वंशे सिरि तिलो, तओ भ०, रिद्धि जिसो सुरदेव ॥१८॥
छाजेड गोत्रे वखाणिये, तओभ०, गांगाओत्र 'राजसिंघ'।
'सता', 'पता' नोता गुरु तओ भ०, चोथनी आणि अलंघ ॥१९॥
चाचा'देवसूर'नंदनु तओ भमरालो०,'सता' पुत्र 'दुलहण''सहजपाल'।
('सहजपाल' सुत गुणनिलो—तो 'मानसिंघ' प्रथिवीराज'।
'सुरताण'' कसतूर दे' तणा तो भ० सारे उत्तम काज।
'सुरताण' सुत तीन भला, तो भ० 'जेत' 'प्रताप' 'चांपसीह'।
मात 'लीलादेवी' तणा, तीने सींह अबीह *)
मिली सकुटुम्ब विमासियो तो भमराली०,वीनव्यो'गंग महिपाल ॥२०॥

---

* किनारेकी नोट।

निसुण 'जेसराज' इम कहइ सो म०, सुगरयो श्री नाणन्द ।
गुरुवर मट मंडिम्या आ रे ! सो म०, मगाद तुम बोल्यद ॥२१॥
पामी मसु आगम हो, सो म०, पिहिदिसि मोकली लेख ।
संव लोक मद्द आवीया सो म०, यावद वजीय विशेष ॥२२॥
मनखेंव जिन धावयीं सो म०, आरिम कारिम रीत ।
कांती विगनि मोहानगी सो म०, सुहव गावे गीत ॥२३॥
लान दिवस अव आवियो सो म०, 'वहगाछि' 'पुण्यरत्नसूरि' ।
सूरि मन्त्र गुरु आपियो म०, वाजे मंगल तूर ॥ २४ ॥
'जिनसद सूरि' पाटे मयो सो म०, 'जिनगुणप्रभसूरि' नाम ।
गच्छ नायक पद थापियो सो म०, दिन-दिन अधिको माम ॥२५॥
संवत (१५८०) पनरसियामीए सो म०, फागुन मास सुचंग ।
धवल पाय गुरु वामर सो म०, सम्या मन लगे रंग ॥२६॥
संघ पूस करि हरमुं सो म०, मगाना दीधा दान ।
'रगराय' मेहल करें सो म०, आपे ते बहुमान ॥२७॥

ढाल:—वाहणरी :—

संवत् पनर पच्यासिय ए संघमाये मनुओं सुरयात्रा करी ए ।
'जार नयरे' आवृत्त सविसम सूसरेंग ॥२८॥
चउमासा चारद क्रम ए हूआ अतिशय गगनाय आकारण ऊमहाए ।
थान कर मिला एव,'नेमलसिंह' मन्त्री घणा ए ॥२६॥
धन धन वन्मा मास, धन धन त दिनु ए ।
चरण कमल गुरुराय तणा, जिम दिन भेटसुं ए ।
नामे हुए सव सिद्धि, मय मन भेटीसुं ए ॥३०॥
शासे जनम सुकयन्थ, सुगुरुना देशना ए ।
सुगना सूत्र विचार, नहीं कीजे मना ए ॥३१॥

'देवपाल' 'सदारंग', 'जीया' 'वस्ता' वरू ए।
'रायमल्ल' 'श्रीरंग', 'छुटा' 'भोजा' परू ए।
इण परे लघु समवाय, साखे लेख आवियो ए।
पठवायां 'जण पंच', सुजस तिहां व्यापियो ए ॥३२॥
विधि सुं वंदी पाय, सुगुरु ने वीनती ए।
करि आपी कर लेख, वदति उलसी छती ए ॥३३॥
मानसरे जिम हंस, पपीहा जलधरु ए।
तिम समरे तुम्ह नाम, दंसण सावय हरु ए ॥३४॥

ढालः—गीता छंदनी :—

हिवे शुभ दिन रे, गच्छपति गजपति चालता,
पुर ग्रामो रे वादी गय मद गालता।
मरुदेसे रे 'जेसलमेरु' महि मालता,
गुरु आया रे, पंच सुमति प्रतिपालता ॥३५॥
पालता पंचाचार अनुपम, धर्म सूधो भासीए।
आषाढ़ वदि तेरसी गुरु दिनि, संवत् पनर सत्यासीए।
परमट्टि विजय सुवेल वाजित्र, गीत गायति आविया
नर नारि सुं मोटे मंडाणे, पोपहशाले आविया ॥३६॥
नित नव नव रे, सरस सधा देसण श्रवे,
सेवय जण रे वंछिय आशा पूरवे।
राय रांणा रे, तप जप चारित्र गुण स्तवे,
गुरु इण परी रे चन्द्र गछ कुं सोभवे ॥३७॥
सोभवे पूनिमचन्द परगट, वदन नाशा सुर गिरू।
नवखंड नाम प्रसिद्ध सुणिये, तेज दीपे दिणयरू।
कलिकाल लब्धि निधान गोयम, जेम महिमा मंदिरू।
मोतीयां थाल भरी वधावे, सूहव रंभा अणु सुंदरू ॥३८॥

ढाल:—अंग दुवालस जांण, आण माने सवे,मुनिवर मोटा गछपती ए।
गुरुगुण धरे छत्रीस,खरो क्षमा गुणे, वदन कमल वसे सरसती ए।५०।
चारित चंगो देह, मोह महाभड, जे जग गंजण वस कीयओ ए।
चो कषाय मद अट्ठ, अंतर अरि दल,खंडी सुजस सदा लीयो ए।५१।
'जंवू' जेम सुशील, 'वयर स्वामी' वली, तिण ओपमे कवियण तुले ए।
आठ प्रभावक सूरि,जिनशासन क(ह)या,महिमा तसु समजण कलीए।५२
सायण डायण वीर बावन, ऋषिपति, सूरि मंत्र वले साधिया ए।
प्रगट्यो सदगति पंथ, रुंधिओ दुर्गति राहू साहू, संघ वाधिया ए।५३।

ढाल:—कोडी जाप एकासण तप सदा रे, करि इंद्री वश पंच।
सारणारे २ सीस समापी गण मुदा रे ।।५४।।
काल ज्ञान अने आगम वले रे, जाणी जीविय अंत।
खामे रे २ चोरासी लाख प्राणिया रे ।।५५।।
संवत सोलसे पंचावने रे, राध अट्ठमि वदी (सु)र।
वारे रे २ आहार त्रय अणसण निय मने रे ।।५६।।
संव साखि पचखाण इग्यारसे रे, आरुही डभ्रा संथारे।
भावे रे २ भरत तणी परिभावना रे ।।५७।।
पूजक निन्दक बिहुंपरि सम मने रे, अरिहंत सिद्ध सुसाध।
ध्याइरे २ पनर दिवश, जिनधर्म संलेखने रे ।।५८।।
सूत्र अरथ चिंतन चितलाईओ रे, आलोइय पडिकंत।
सुहगुरु रे २ कालमास, इम पंचतु (त्व) पाइयो रे ।।५६।।

वस्तु—वरस नउ र मास वलि पच, पन दिन ऊपरि तिहा गनिय।
सुदि नउमी वैशाख मात प्रहवि, हसीयो अमृत घरिय सोमवार।
सुरलोक वस जय र कार करति जन, गुण गावे सुर नारि।
श्रीजिनगुणप्रभसूरि' गुरु, सयल संघ सुहकार॥८॥
इम गच्छ नायक कम गुण रयण रोहण भूधरो।
सधार चारों तगवार सधवस म धोवरो।
'श्रीजिनेसर सूरिंद' पाटे, 'जिनगुणप्रभ सूरि' गुरो।
तसु पवर जिनेसर सूरि' जप, ऋद्धि-वृद्धि शुभंकरो॥९॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

ढाल:—सकल भविक जिन सामला र।
'मरुधर' देश महणा र, श्रीपुर 'बीकानेर'।
'रूपना शाह'वस तिहा र, धनकर जेम कुबेर
धनकर जम कुबर र साचा, 'रूपा दे' तसु घरणी साचा।
तासा पुत्र रतन्न जिण (जा)यो, मविदिन लुल लुल चरणे रायो।
ना हा 'जिनचंद' जा ना हा, तू जिन सासन सिणगारक।
गिरुआ गच्छपता हो तू तो संवेगी सिरदारक। सवे सुरपतोजी॥१॥
कल्पवृक्ष जिम वधता र सरव कला परवीन।
बालक वये घनना गिमा समता रस लवलीन रे।
समता रस लवलीन र जाणी मन सिना मन उल्लस आणी।
गुरुने विहराव शुभ वाणी, वन एह असवध धणी सुहाणी।२।
मनिसार विहरा करा र श्री जसलमेर गिरि आया।
वरजा ने देखा करा अपूरव प्रभु सुहाया।
श्री पूरव प्रभु सुणा रे भाइ, सेहय चारित्र दे सुखदाइ।
'वराजय' श्री नाम सवाइ आपणा विद्या सयल भणाइ।४।

अवसर जांणी आपियो रे, सहुं आपणो पाट।
श्रीसंघ 'जेसलमेर' में रे, कीधो अति गहगाट।
कीधो अति गहगाटो रे वंदो, 'श्रीजिणचन्द्रसूरि' गच्छ चंदो।
कुमति ना मन दूरे निकन्दो, मेरु तणी परे निंदो।५।
सोभागी जंबू जिसो रे, रूपे 'वयरकुमार'।
शीलै थूलभद्र सारिखो रे, लब्धे गोयम अवतारो।
लब्धे 'गोयम' अवतारो रे ऐसो, दूणको है कैसो.......।
सूरज आगे खजुओ जेसो, इण आगे सभ कुमती तैसो।६।
'श्रीजिनेश्वर सूरि' ने रे, पाट प्रगट भाण।
'वाफणा' गोत्र कला निलो, गच्छ 'वेगड़' सुलताण।
गच्छ 'वेगड़' सुलताण रे साचो, ओर कुमति कहावे काचो।
'महिमसमुद्र' गुरु चरणे राचो, कवियण इम गुरुना गुण वांचो।७।

नं० २ राग गौडी भावननी

परम संवेगी परगडो रे, चावो जस चिहुं खंडो रे।
चीतारे वडा छत्रपती रे, नाम जपे नवखंडो रे।
कहो किम वीसरे, ते गुरु जुगपरधानो रे।
'जिनचन्द सूरिजी' साधु सिरोमणि जाणो रे।१।
पंच महाव्रत पालता रे, करता उग्र विहार।
भविक जीव प्रतिबोधता रे, कूड न कपट लिगारो रे।का२।
सूधो धरम सुणावता रे, अविरल वाण वखाण।
मेघनणी परे गाजतो रे, साचा चतुर सुजाणो रे।का३।
सुधा संशय भांजता रे, प्रवचन वचन प्रमाण।
कुमति मनि कुं खंडता रे, धरता नित धर्मध्यानो रे।का४।
शुद्ध प्ररूपक साधुजी रे, हुंता धरम जिहाज।
गणियोंने [illegible]
क।५।

पहिन ना पालक घडा रे, दोनो तणा आधार।
तेहने तुरत तेडावियो रे, कीधो सु' किरतारो रे। क।६।
हंस तणी पर हालता रे, पंच सुमति प्रतिपाल।
ते गुरु सा सदया नहीं रे, वालपणी परिकालो रे।का७।
चन्द्रगच्छ ना चन्द्रमा रे, गच्छ 'खरतर' सिणगार।
वेगड विरुद धरण घडा रे, जिनशासन जयकारो रे।क।८।
गच्छनायक दीसे घणा रे, पिण कुण तारा मरोस।
तारागण मह प मिलो रे, कहो किम सूरि मरीखो रे। क। ६।
धन 'रूपा दे' मावडी रे, धन 'वाफणानो 'रे' वंश।
धन कुल 'भरत' नरेन्दनो रे, जिहा उपना गुरुराय हंसो रे।क।१०।
सुगुरु 'जिनेदवर सूरिजी' रे, थाप्या जिण निज पाट।
ठाम ठाम धर्म दीपव्यो रे, वरताव्या गह गाटो रे।का११।
संवत् सतर निरोतरे रे, भृगु तेरस पोर मास।
कर अणसण स्वर्ग गया रे, धर जिन ध्यान उल्हासो रे। का१२।
'श्री जिनचद्र सूरोन्द्र' ना रे, गुण गावे नर नार।
तिण धरि रँग वधामणा रे 'महिमसमुद्र' जयकारो रे।का१३।

श्री जिनसमुद्रसूरि गीतम्

राग:—तोडी:—

आज सफल अवतार। सखीरी।
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिश्वर भेट्यो 'वेगड' गच्छ सिणगार। स०। १।
श्री 'ओश वश' 'श्रीमाल' प्रमुख सहु श्रावक सिरदार।
आदर सहित सुगुरु आण्या, निज श्री 'सास 'नगर' मझार।२।
'श्री श्रीमाल' 'हरराज' को नंदन * जिनचन्द्रसूरि पटधार।
'महिमा हर्ष' कहे चिर प्रतपो, [illegible] जयकार।[illegible]

* अन्य

मस्तयोगी ज्ञानसारजी-हस्तलिपि

(मूल पत्र हमारे संग्रहमें)

॥ श्रीमद् ज्ञानसार अवदात दोहा ॥

उदैचन्द्र सुत ऊपज्यौ, लीयो विधाता लोच।
देवनरायण दाखवुं, को अजब गति आलोच ॥ १ ॥
अढारै इकडोतरै, छाक मैल री छांड।
मात जीवण दे जनमीया, सांड जात नर सांड ॥ २ ॥
वास जेगलै वैंत सुं, दीवां जनम उदार।
वरस वार वौली गया, वारोतरै री वार ॥ ३ ॥
श्री जिनलाभ सूरिसरू, भट्टारक भूपाल।
वीकानेरज वंदोयै, चढ़ती गति चौसाल ॥ ४ ॥
सीस वडाला वडमती, वडभागी वडरीत।
रायचन्द राजा ऋषि, प्रगट्यो पुण्य प्रवोत ॥ ५ ॥
तिण पाटै इण कलि तपै, जांण्यौ थो निरहेज।
वाये डम्बर वीखरै, तरुण पसारै तेज ॥ ६ ॥
प्रणमें सूरतसिंह पय, मिल्यो जनम रो मीत।
ज्ञानसार संसारमें, आखै लोक अदीत ॥ ७ ॥
सीस सदासुख साहरै, चलि आवै चौराज।
श्रवणे तो में सांभल्यो, आंणर दीठो आज ॥ ८ ॥
वावाजी वायक अखै, अखै राठोडो राज।
खरतर गुर सगला अखै, रतन अखै महाराज ॥ ९ ॥

कठिन शब्द-कोष

अ

अकयथ ९९ अकृतार्थ, निष्फल
अखियात २९८ चिरस्थायी
अखीणमहाणसि ३० वह शक्ति जिससे भिक्षान्न सैकड़ों लोगोंको खिलाने पर भी कम न हो जब तक कि लानेवाला स्वयं भोजन न करे।
अखोड ११९ अखरोट
अगडी ३३० नहीं किया हुआ, कठोर अभिग्रह।
अगंजिउ ३४ अपराजित।
अघोरा ९१ जो घोर (विकट) नहीं है।
अज्जवि १ आज भी।
अज्जुआली ३३१ उज्ज्वल।
अड ३३ आठ।
अडगनिया १९७ कानका आभूषण विशेष।
अडोल ३९९ अटल।
अढलक दान ३०१ प्रचुर दान।
अणगार ६२,१६६ घर रहित, मुनि
अणभिडिउ ३४ सामने नहीं हुआ, भिड़ा नहीं।
अणुक्कमि ३९८ अनुक्रम।
अणसरहु ३६७ अनुसरण करो।
अणुसरीए ३३९ अनुसरण।
अत्थय ३६८ अर्थ-अर्थ।
अत्थि ३७८ अस्ति, है।
अनडों २९८ अनम्र।
अन्नलि(गढिउ)३६६ अन्नल राजा-का गढ़।
अनिमिष ५९ बराबर, एकटक, देव।
अनेरिय ३९३ दूसरी।
अप्पियउ १६ अर्पित किया, दिया।
अबलिय १८ बलहीन।
अबुदहु ३६९ अबोध।
अवंझ ९ अवन्ध्य, सफल।
अभ्याख्यान २७९ मिथ्या कलङ्क।
अभिग्रह ३४९ प्रतिज्ञा।
अभिधा २७२ नाम।
अभिनवेरउ ९९ नया, अभिनव।
अभिहाण १७९ नाम।
अमग्गउ ३७१ कुमार्ग, मिथ्यात्व
अमलीमान ८९ निर्मल मानवाला

अमारि	१०२	अहिंसा।
अमी	४१०	अमृत।
अमीझरउ	१७०	अमृत झरनेवाले
अमूलिक	३३७	अनमोल।
अयरावइ	३२	ऐरावत, हाथी
अयाण	४०	अज्ञान, मूर्ख
अरगचा	८४	अरगचा
अरचा	१९८	पूजा
अरिरि	३२	अरेर
अर्भक	२७१	बालक
अलजयो	२९४	मनोरथ
अलजा	८७	विरहस्मरण, ओलूँआना
अलिम	८६	अलीक, अप्रिय, बुरा।
अलीय	१००	अलीक मिथ्या
अवगाहइए	६	अवगाहनकरना
अवझा	१७	अयोध्या
अवदात	१७-२६९	गुण, चरित्र, निर्मल।
अवधारी	२९९	स्वीकार करी
अवतरिउ	४२	अवतार लिया
अवगाह	३०	अन्त पुर, घेरा प्रतिबन्ध, रोकना।
अबल	३३	अबला, नारी
अवहरइ	१	दूर करता है
अविहड	१७८	अटल अविहड
असमाना	८४	असमान
असराल	९०	वक्र, जहरीला
असिणि	१८०	अश्विन
असिय	३२	अशित, भक्षित
असिव	७६	अमङ्गल
अहिनाण	३४५	अभिज्ञान, पहचान, निशानी।
अहियासने	३२९	वेदने, अनुभवने
अहिठाण		अधिष्ठान
अग	१८३	जैन शास्त्र
अगोल	७	पुत्र
अबाडी	३४७	हाथीकी अबारी (हौदा)
अंबाएवि	३०	अम्बा देवी

आ

आउखउ	३०	आयुष्य
आउखो	२५६, ४०९	आयुष्य
आएसि	३८७	आदेश
आकरा	१४८	अत्यन्त कठिन
आखडी	३१६	निषेधात्मक प्रतिज्ञा, व्रत
आखातीजइ	३९७	अक्षयतृतीया
आगर	८१	घर, निवास
आण, आणा	३७०, ३७१	आज्ञा
आणदिणि	१	आनन्ददायक (मैं)
आइशाकार	१०६	आज्ञाकारी
आनुपूरवी	१९६	कर्मका एक भेद, अनुक्रम

आपे ९७ देता है
आम ४०८ इस प्रकार
आम्नाय२७३,२८४ परम्परा, सम्प्रदाय।
आम्बिल ११९ तपस्या,(६विगयों का त्यागविशेष)
आयरिय २६ आचार्य
आरसे १९० प्रकार
आरा २८२ चक्र
आराहण ५५ आराधन
आरिज १६०,३७६ आर्य
आरूढउ १६६ चढ़ा
आलंगिउ ३९३ आलिङ्गन
आलि २४ व्यर्थ
आलीजा १०८ प्रेमी
आलोयण ३४८ आलोचन
आवतिया १०४ आ रहे हैं
आवर्त्त ३०० दोनों हाथ गुरु के पैरोंपर लगाकर अपने मस्तक पर लगानेकी वन्दन क्रिया।
आसन्नसिद्धि २९० निकट मोक्षगामी
आसंगायत ४१४ आश्रयवर्त्ती, आधीन

इ

इक्कह २३ एक-एक
इलि २५३,३७३ पृथ्वीपर
इसडे १९० ऐसे
इंटाल ३२९ ईंटोंसे
इंद्रा २८९ इंद्र

ई

ईति ३३७ धान्यादिको हानि पहुंचाने वाले चूहादि प्राणी।
ईर्या (सुमति) २६२ विवेकपूर्वक चलना

उ

उइग्यहु ३६९ उपेक्षा करना
उएस २०७ उपकेश,ओसवाल
उक्कंठिउ ३९२ उत्कण्ठितहुआ
उरेंग ३३१ सेना
उगमणे २८ उदय होनेपर
उच्छंगि ६८,२१९,२४४ गोद
उच्छरंग उत्साह, उत्सव
उजवालण २९३ उज्ज्वल करना
उज्जोइउ १, ३६६ प्रकाशित किया
उणइ ४१ उमने
उत्तंग ३३९ ऊंचा
उत्थपिय २९ उखाड़ा
उत्सूत्राविधि २६ उत्सूत्रऔरअविधि
उथप्पिय ४९ उखाड़ा

उद्वेग ४०४ उद्वेग
उद्गता २९२ उदय हुए
उद्घोषणा २८८ घोषणा, ढढोरा
उपदिसि ९४ उपदेशकर, कहकर
उपधान ८७ तप विशेष
उपनै ११ उत्पन्न हुए
उपशम ६२,१३०, ३२०,३२३ शान्ति
उपसमण ३६७ उपशमन
उप्पलु २७ उत्पल कमल
उबरन ३२ उदुम्बर
उभगउ १६२ उद्विग्न हुआ,
उम्मूलिय ३५ उन्मूलित किया
उयरइ३२३,४०३,२२ उदरमें
उल्ट १४५ हर्षोत्साह
उल्लास ३९२,४०६ प्रसन्नता
उवज्झाय२८,५६,५७ १३४,१३९, २३१,३५५, ३४०,४०२ उपाध्याय
उवसग्ग २० उपसर्ग
उसभ २ ऋषभ
उस्सासहि ४० आनन्दित, उत्साहित
उंबरा ८३ उमराव

ऊ

ऊगाहउ ५६ ढोकना, चढ़ाना
ऊनधां (या) २५८ उद्दक
ऊनविउ १४ उमड़ना
ऊभविय १८ ऊंचा किया जाना
ऊमाहो २२५ उमंग उत्साह

ए

एकरस्यु ३०२ एक बार
एगिस ३७ ऐसे
एषणासुमति २६२ एषणा समिति, निर्दोष आहार का ग्रहण।

ऐ

ऐरावण २६४ हाथी

ओ

ओठीड़ा ३०२ ऊंट सवार
ओलगइ ८४ सेवा करता है
ओसड १५४ औषध

क

कइ १ कृत, किया
कइयइ १५७ कब
कए १ करनेपर
कचकडउ ११४ वस्तु विशेष
कचोल ३५१ कटोरा
कज्जारभ ९ कार्यारभ
कटरि ३९८ आश्चर्य और प्रशंसा बोधक अव्यय
कटारिआ १८८ गोत्रका नाम
कट्ठु ३६५ कष्ट
कड़यड ३६६ कड़कड़ी आवाज

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
कणय	३८७	कनक, सोना, गेहूं
कणयाचल	३९	कनकाचल, मेरु
कथोपानइ	९३	वस्त्रविशेष, गुरुके चलनेके समय पैर धरनेके लिये वस्त्र बिछाया जाता है
कदाग्रही	३१६	दुराग्रही
कप्पड	३९३	कपड़ा
कप्पयरु	४०	कल्पतरु, कल्पवृक्ष
कप्पतरो	१७	" "
कप्पम्	१	कल्प, कथा
कमला	३९४	लक्ष्मी
कय	२१९	कृतः किया
कम्मपयडी	२६६,२७३	कर्म प्रकृति
करट	३८	हाथीका गंडस्थल
करटि	३८	हाथी
करंतउ	३९७	करता हुआ
कल्याणु	३७१	कल्याण
कवराव	३१०	कविराज
कव्व	१	काव्य
कव्वट्ट	३	कवित्त, काव्य
कषाय	३९३	क्रोध, मान, माया लोभ (४ संसार वृद्धि हेतु)
कसबोकी	१९७	जड़ाऊ, चित्रित
कहर	४०७	मौत
कंख	६४	चिन्ता, दुविधा
काउसग्ग	३२९	कायोत्सर्ग
कागल	१३३	कागज
काप्या	४१२	काटे
कामगवी	१२३,२९७	कामधेनु
कामकुंभोपम	८	कामकुंभके समान
कामित	९९,१२३	इच्छित
कारवइ	३८७	कराता है
कार्त्तस्वर	२६४	स्वर्ण !
कित्ति	३८९	कीर्त्ति
किन्न	१७	कृष्ण
किवाणि	३२	कृपाण
किसण	१	कृष्ण पक्ष
किंपि	३६७,३७९	किमपि, कुछ
किलिट्ठ	३४०	क्लिष्ट
कीलइ	११३	कीली
कुगह	१६	कुग्रह, दुष्ट ग्रह
कुच्छि	३९१	कुक्षि
कुडि	२८४	मिथ्या
कुगंति	१	कहना
कुंकउती	१७	कुंकुम पत्रिका
कुंट	३११	कोने
केदारा	१०४	राग विशेष
केरउ	१०४	का
केसूडा	३९१	केसूके फूल
कोटीर	३६१	श्रेष्ट, अग्रणी
कोड	३११	कौतुक
कोडि	८७,९९	कोटि
कोडीधज	४१६	करोड़पति
कोतिल	२९३	कोतल तेज घोड़े
कंचूअउ	१९७	कंचकी

कंठीर(व) ३८४ सिंह
कंरिनइ १२ कारकर
कंमिग ३६७ कर्म, कृत्य
कमाल ३,१६४ कामोंका बाद्य विशेष
क्रमि ३६० चलकर, क्रमसे
क्रिया उधार २७७ शुद्ध मार्गका उद्धार

ख

खड्गाँ १६३ खड्ग
खग ३५२ ''
खग ३११ प्राप्त करना
खपाया ४११ पूरे किए नाशकिए
खमाया २०९ क्षमा करवाया
खमाविनइ ३३० क्षमा करवाकर
खरइ ३७० सच्चा, खरा
खरहरथ ३६७ खरतर
खंनि ३८० ध्यान
खंति करवर ३४ क्षान्ति, तत्र
खम्यो २९१ सहन करना
खाटीजइ १६२ सचय करना, प्राप्त करना
खाटै ४१०,३१० स्थापित करना
खात ४०८ ध्यान, क्षान्ति
खान ९३ मुसल्मान सरदार
खामो २८४ कमी, त्रुटि
खिजमति २८२ खिदमत, सेवा
खिचवाल ४ क्षेत्रपाल
खिसए ३८७ हटना
खिडाला १९४ खाद्य वस्तु विशेष
खीरइ ३० क्षीर, दुग्ध
खेतरपाल ४०९ क्षेत्रपाल
खोणि ३६ क्षोणी, पृथ्वी

ग

गउड १०६ गौडी रागणी
गउ (इ) यडइ ३७ गिडगिडाना
गउरी १०४ गौरी
गच्छ २८६ समुदाय
गजगाह १६० हाथियोंकी घटा
गजगति गेलि १९९ हाथीकी चालके समान चलना
गजथाट १६८ हाथियोंका समूह
गणहरु २ गणधर
गय ३३ गज
गयणु २ गगन
गरिट्ठिउ ३३ गरिष्ठ, बडा
गरडी २४३ बूढा स्त्री
गरीग २७० बड़ा
गलथड १७५ महामारी
गलिय ३३ गल गया
गहगहइ ३४० प्रसन्न होना
गहगहिय ४०१ ,, होकर
गहगाट १६०,१६८, ३०१,३१० प्रसन्नता सूचक शोर

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
छटा	३७७	छटा, छांटा
छपदा	३९२	षट्पद्, छप्पय
छयल	१९०,३९०	रसिक
छलियइ	३७९	छलना
छविह	२८	छ प्रकार
छातिया	१०८	छाती, वक्षस्थल
ज		
जइणा	२८	यतना
जईसर	३१२	यतीश्वर
जईसु	१६	यतीश
जउख	८२	आनद, विश्राम
जगत्र	३१८	जगत
जगीश	८२,१०७,४१०	इच्छा
जत्थ	२८	जहा
जमाडि	२८९	जिमाकर
जम्पइ	१६३,३३९	कहता है
जम्बुय	३८	गीदड
जम्मक्खणि	३४	जन्मक्षण
जम्मु	२३	जन्म
जयतसिरी	१०९	रागका नाम
जयपत्तु	२	जयपत्र
जसु	३६९	जिसका
जाइणा	३७६	जाड
जागरि	१९३	जागरण
जान	४१२	बरात
जानउत्र	३८०	बरात
जानइ	३८०	बरातको
जामणहि	३१	यामिनी (रात्रि) में
जालवइए	११३	जलाना
जालवीजइ	३९३	सुरक्षित रखना संभालना
जाइ	३७०	जिसके
जिणवह	३६९	जिनवर
जिणवय	२९	जिनपति
जिणिंदु	३६६	जिनेश्वर देव
जीपइ	३९२	जीतता है
जीह	२९८	जिह्वा
जुग पवरु	३	युग प्रवर
जुग पहाणु	२२	युगप्रधान
जुगवर	२८	युगमेंश्रेष्ठउत्तम
जैत्र	९७	जय सूचक
जोइणि	२	योगिनी
जोडलो	३६२	युगल, जोडी
झ		
झानावरणी	३२३	कर्मका नाम, ज्ञानको आवरण करनेवाल-
झडहड	३६९	गिरना झडना
झाझ्हर	३३०	झांकी, आभास
झाझेरडा	१२०,३२६	अधिक, विशेष
झाडाया (ला)	१००	छुडाया
झाण	१	ध्यान
झायहु	३८९	ध्यावो
झालर	३११	झालर, वाद्य विशेष
झाला	३०२	जाति विशेष

झालिहि	३८८	संभलता
झीलता	६२	अवगाहन करना, नहाना, गरकाव होना
झुणि	३८७	ध्वनि
झोलउ	११३	झोली, झोला

ट

ट्ठियउ	२	स्थित

ठ

ठरे	२७२	ठण्डा होना
ठवणादिक	२८०	स्थापनादि ४ निक्षेपा
(पय) ठवणुछव	२१,२२	पदस्थापनोत्सव
ठविउ	२	स्थापित किया
ठविज्जय	३९	स्थापितकिया जाता है
ठविय	२७	स्थापितकरके
ठवीया	२७७	स्थापित किया
ठिकरि	१९४	ठीकरा

ड

डमडोलइरे	१६०	चंचल होना
डमर	९,१०४	उपद्रव
डाक डमाल	२६२	आडम्बर (झाकझमाल)
डांण	२६०,४१४	तेज
डोकरपणि	१६३	वृद्धावस्थामें
डोहइ	१९७	गिराना
डोहला	१९४,१८०	दोहद

ढ

ढक,बुक	१७	वाद्य विशेष
ढक्कारविण	३६६	ढक्का (वाद्य) के रव शब्दसे
ढणहण	३९४	झरझर
ढलकती	३३३	धीरे धीरे चलती हुई
ढाल	६०	रागकी रीति विशेष
ढीक	३४९	गरीब
ढूकडा	३००	पहुंचे, पास
ढेल	३३३	ढेलनी, मयूरी

त

तक्क	१	तर्क
तत्तवंतु	३६८	तत्त्ववान
तत्थ	३९०	वहां, तत्र
तपला	१४१	तपा गच्छीय
तयणु	३९९,३९६	तत्र
तयणंतरु	१६	तदनंतर
तरणि	३६६	सूर्य
तरतउ	१९७	तैरता हुआ
तरंडय	३६७	नौका
तलीया	३१६	विस्तृत
तव	३८९	तप
तसपटे	२९२	उसके पाटपर
तह	३७१	तथा
तहति	१९३	तथेति, ठीक है ऐसा

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
तइ	३७१	तमकै
तागरयो	२८९	पसारका
तिडाने	४१६	बुलाना, आमंत्रित करना
तित्थु	३६९	तीर्थ
तिय	३५	त्रिया, स्त्री
तियम	२९	त्रिदश, देव
तिउड	१२,२४,२७	तिलक
तिन्हो	१९२	"
तित्थु (त्थु)	३६६	तीव्र, तीर्थ,
तिमस्त	५	त्रिसंध्या
तिहुअण	२,६	त्रिभुवन
तिहुयणि	३८५	त्रिभुवनमें
तुगनणि	३३	ऊंचाई
तुगो	३१	रात्रि
तूठी	४०८	प्रसन्न हुई
तूगीया	२३५	पर्वतका नाम
तूर	३०१	बाजा
तगडार	१५९	तलवार वाला
तय	३८५	तेज
तारणवार	३१६	द्वार
थस्की	२७६	तड़ककर
थाड़ूकइ	२६२	दड़कता है, दहाड़ता है
त्रिकरण	९९,२९४	तीन करण (करना कराना अनुमोदन)
त्रिवली	१६४	तीन वलय वाद्य विशेष

थ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
थलवट	३९१	धन्नी प्रदेश, मरुस्थल
थयउ	१३३	हुआ
थाकगे	३५३	ठहराव
थाप्या	३३२	स्थापित किया
थानकि	३५३	स्थानमें
थापण	१६९	स्थापण, धरोहर
थापना	८९	स्थापना
थाल	१७९	बड़ी थाली
थिवर	२२०	स्थिवर
थुइ	३७१	स्तुति करता है
थुणइ	३९९,४००	" "
थुणवि	१	स्तुति करके
थुणस्सामि	२४	स्तुति करूंगा
थुणहि	१,३७१	स्तुति करते हैं
थुणि	३३	"
थुंभ	९७,२०७	स्तूप
थूभ	३२०,४०६	"
थाक	२६७	काम, बात

द

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
दखूण	३९१	देखकर
दमणा	१५२	फूल विशेष
दरसणिया	८१	दर्शनी (दर्शन शास्त्री)
(कमल) दलावल	९	कमलदलकी पंक्ति
दव्व	२८	द्रव्य
दमूडण	१५६	दमोरण

दंगणु	४०७	जलाना
दंसण	३८८	दर्शन
दाखवुं	३२१	कहूं
दादह	३४९	दादने
दिक्खा	३९	दीक्षा
दिणि	१	दिन
दिवाजउ	६७	शोभा
दिवांने	१४७	दरबार
दिवायर	७	दिवाकर, सूर्य
दिवायरु	२०	,,
दीठेली	१२	देखी हुई
दीदार	३०३,३४८	आंख, दर्शन
दीवंमि	१	दीपक
दुक्करु	३७९	दुष्कर
दीस	४१३	दिन
दुक्करकार	१६३,१६४	दुष्कर कारक
दुग्गय	४०	दुर्गति
दुट्ठदल	४	दुष्टदल
दुडवडी	१९९	जल्दी
दुत्तरि	३६७	दुस्तर
दुतारो	१६४	दुस्तार
दुरंग	१६७	किला, दुर्ग
दुल्लह	१९	दुर्लभ
दुविस्सह	३६७	दुर्विपय
दुसम	२६१	कठिन, बुरा
दुहेलउ	३७९	दुष्कर
देवाणुप्रिय	२६९,३२३	देवानांप्रिय
देशना	११६	व्याख्यान
[illegible]	[illegible]	,,

दोंकार	१६४	तबलेकीआवाज
दोगंदक	१९१	देवताकी जाति
दोहग्गु	३७१	दौर्भाग्य
दोहिला	१६३,३२३,३९३	दुष्कर
द्रंग	२६८	दुर्ग
द्रू(रु)यमणि	३३	रुक्मिणी

ध

धखावे	२७९	सलगावे,जलावे,
धनदाण	९१	धन देनेवाला
धणुहरु	३६५,३६६	धनुर्धर
धम्ममई	३३९	धर्ममति
धय	२२	ध्वजा
धवड	३६६	ध्वजपट ध्वजा
धवरावह	१९७	लडाना, प्यार करना
धवल मंगल	३६२,३८८	मंगल गायन
धाड़ि	३७७	डाका
धींगड	३१४	मोटे, जबरदस्त मजबूत, पुष्ट
धींगा	१९३	,,
धुयरय	३१	धुतरजः ?
धुरहि	३९	प्रथम आदिमें
धूतारी	३४८	धूर्त स्त्री
धोक	४१३	साष्टांग प्रणाम

न

नगीनो	३९४	जवाहिरात
नन्दी	१८३	सूत्र
[illegible]	३८४	नमस्कार करके

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
नयनिमल	३२	नीनिर्मे निर्मल
नयरि	१	नगर
नरभव	२४	मनुष्यभव
नरवय	२	नरपति
नवगीय	२९	नव ग्रैवेयक
नव्याणु	३२६	निनानवे ९९
नही	१०	नहीं
नाइमस्था	२९४	नहीं आसके
नाडय	१	नाटक
नाग	१,६,३८२	ज्ञान
नाणवन्त	३६६	ज्ञानी
नाणिहि	४९	ज्ञान रूपी
नाथगा	२९८	नाथ डालना, वशमें करना
नादौ	८०	आवाज
नान्हडियउ	१६३	छोटा
नामउ	१६६	नाम
नारिंग	३२	नारिंग, मोठा नीबू
निकाचिय	३५६	निविड रूपसे बन्धन
निगोद	३२९	अनन्त जीवोंका एक साधारण शरीर विशेष
निग्रंथ	२७०	परिग्रह रहित
निच्चु	२०१	नित्य
निज्जणवि	३५,३९	जीता
निज्जिणिउ	३१,४९	जीता
निगेल	५१,१२०	व्यर्थ
निदहइ	३६	परास्त करना
निब्भत	३३	निर्भ्रान्त
निय	१६	निज
नियमणि	३६७	अपने मनमें
नियमन	६२	निज मन
नियरू	१	निकर, समूह
निरीहो	१३	अनाशक्त
निरुवउ	३५	निश्चित
निलउ	६,१७५	निलय, घर
निल्ले	३१४, ३१६	"
निलवट	१८१, २९५	ललाट
निविड	१५५	घनिष्ट
निवास	१७९	स्थान
निष्पन्न	२७१	सम्पन्न
निसम्भे	२७६	सुनकर
निसाल	३२२	पाठशाला
निसियर	३३	निशाचर, राक्षस
निसुणवि	२१	सुनकर
निसुणेवि	३९३	"
निहतरइ	१५६	नोतरना, आमंत्रित करना
नीकउ	११८	अच्छा, भला
नीगमउ	२४	गमादो
नीझामता	३३०	पार पहुंचाता
नीलवण	३३०	लीलोती, हरियाली
नीवाणो	१३०	नीचा स्थान
नेआ	३५३	आते
न्यात	३११	ज्ञाति, जाति

न्हवरावइ १५७ नहलाता है

प

पउम ३६७ पद्म

पउमप्पवि १९ पद्मादेवी

पउमप्पह ३२ पद्मप्रभ

पइसरइ २ प्रवेशके समय

पखरिय ३२ पाखरना (प्रक्षरितः)

पगन्या २९७,३३२,४०५ पादुका

पचखाण ११३,३२६, ३५७ प्रत्याख्यान

पचख्या ३३० प्रत्याख्यान-क्रिया

पजूसण ३५१ पर्यूसण पर्व

पंचआचार ४९ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार।

पन्चंगि ३४० पांच अंग

पञ्च विषय ४९ पांच इन्द्रियों-के ५ विषय

पञ्चाणणु ३३ पंचानन, सिंह

पञ्चासम ३६३ पचासवां

पन्चुत्तर २९ पांचअनुतर विमान विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित, ५ सर्वार्थसिद्ध

पच्चक्खु १९ प्रत्यक्ष

पटंतर ३६७ उपमा

पटोधर १७६ पट (पद) को धारण करनेवाले

पटोला ९३ रेशमी वस्त्र

पडखीजई २४१ प्रतीक्षा करना

पडह ३,३१८ पटह बाजा

पडाग २२ पताका

पडिकमणउ १८२,१३३ प्रतिक्रमण

पडिकार ३६६ प्रतिकार

पडिपुन्न ८१ प्रतिपन्न, पूर्ण

पडिबिम्ब ४ प्रतिबिम्ब

पडिबोह २,१९,२७, ३८८,४०२ प्रतिबोध

पडिरवण १८ प्रतिरवसे, प्रतिध्वनिसे

पडीमा २८० प्रतिमा

पदूर ६८,७७,२९९ प्रचुर।

पणासइ २०,३६२ नाश करता है

पणासणु १६ प्रनाश करने-वाला

पत्त ४ प्राप्त

पतीठी १४१ प्रतिष्ठि

पतीनउ १४१ प्रतीति हुइ

पत्ति ३३ वृक्षके पते

पत्तु ३६१,३१२ पहुंचा, प्राप्त किया

पद्म १९७ पद्म कमल

शब्द	पद्य	अर्थ
पभगवइ	३९१	स्थापित करता है
पमगई	४०४	कहता है
पभणेसो	३१२	कहूंगा
पमुह	१,११८,४०२	प्रमुख, आदि
पमुहाणं	१	प्रमुखानो
पमाउ	२२	प्रमोद
पयड	१,२,१५,३१, ५१,२१५,३६५, ४०१,	प्रकट
पयडिय	३१२	प्रकृति
पयडिहि	३९	पाडिन्यमे
पयतलि	३७,६३	पद्तल, पगतली
पयन्ना (दप)	१८३	प्रकरण १०
पयार	३९१,३९३	प्रकार
पयावि	३६५	प्रजापति, प्रजापति
पयासइ	६,३६	प्रकाशित करता है
पयासगु	३८९	प्रकाशन करनेवाला
पयासिउ	२	प्रकाशित किया
पयंडु	३८९	प्रचण्ड
पगाढ	२९७,२९६,३६१	प्रधान, चतुर, कुशल
परगच्छी	१४१	अन्यगच्छीय
परघल	१००	खूब
परणाल्यिां	१३०	प्रणाली, परनाले
परत	२७६	पड़ती हुई
परस्थी	२८	परस्त्री
परत्र	३६७	परलोकमें
पन्वाली	८१	पन्वाली, पानी भरनेवाला
परपद	७	परिषद्
परि,पर	४१४,४०८	भांति, तरह
परिकर	३३८	परिवार
परिक्सित्ति	३६६	परिपदि
परिग्रह	२७७	धन,वस्तु संग्रह
परिघउ	३४७	खूब
परिणिति	३३०	प्रवृत्ति
परिवयां	२९९,३३६	परिवेष्टित, परिवार सहित
परिहरवि	१	छोड़कर
परस्पर	३६७	परस्पर, अन्योन्य
परं	४१३	भांति
पल्योपम	२९१ ३५६	कालका प्रमाण विशेष
पल्हम(?)णु	३६८	पल्हकवि कहता है
पवज्जति	१६४	प्रवर्त्त होते हैं
पव(य) इरत्ति	३१	रात्रिको प्रतिष्ठा
पवत्तणि	३३९	प्रवर्त्तिनी (पदविशेष)
पवर	३५९	प्रवर

पवरपुरि	१	प्रवर नगरी	पाडल	१५२	पाटल
पवरो	२२,३८८	प्रवर	पायरइ	८३	दिखाता है
पव्वय	२७	पर्वत	पायु	३०३	पथिक
पवित्तिय	१	पवित्र होकर	पारग्ग	४१०	सीधा
पसंसिज्जइ	१	प्रशंसा की जाती है	पांभरी	१९०,१९८,३२०	वस्त्रविशेष
पसाउ (य)	४,१७३	प्रसाद, कृपा	पारका	३११	पराया
पसायलु	३३१	प्रसादसे	पाव	६	पाप
पासद्ध	१	प्रसिद्ध	पावघोर	२०	भयानक पाप
पहु	२७	प्रभु	पास	३६१	पार्श्वनाथ
पहाण	२४,४०२	प्रधान	पासेस	४१४	पार्श्वनाथ
पहिलु	२७८	पहला	पिक्खइ	३६०	देखो !
पहु	१	प्रभु	पिक्खहि	३६०	देखो
पहुचउ	४०	प्रभूत, पहुंचा हुआ	पिक्खिवि	३६७	देखकर
पहुतगी	२१४	प्रवर्तिनी,पद-विशेष	पिच्छणय	२२	प्रेक्षणक, दृश्य
पहुचइ	४	प्रभवति, समर्थ होता है	पिच्छिवि	३३	देखना :
पहुविख्यउ	२	पृथिवी प्रसिद्ध	पिउ	४१०	भी, पर
पहुतिय	३९०	पहुंचा	पिम्म	३६१,३६६	प्रेम
पाखर	११३	पखान, हौदा	पिम्मु	३६०	,,
पाखयंठ	१७६	मज्ञ क्रिया	पिसुन	४१०	दुष्ट
पांगरउ	६४,८६,९८, १८८,३००,३१४	विहार करना	पीलीया	३२१	पीले (कोल्हूमें पील दिये)
पाट	१९८	पट, सुन्दर वस्त्र	पुणति	१	पवित्र करताहै
पाटोधर	१६६,२९४	पट्टधारक, पटका उद्धारक	पुरुगरु	२८८	पट्टकर्त्ताओंमेंएक
पाडइ	३४७	गिराता है	पुरउ	१०६	पूर्ण करो
			पुरंधिय	१९	बहुपरिवार या पुत्र, पतिवाली स्त्रियें
			पुरीसादाणी	२६४	पुरुषोंमें प्रधान, प्रसिद्ध

पुलिया	४१८	घरे
पुन्नुफिकड	३६९	पूर्ण कर
पुहवा	१७७	पुष्प
पुहवि	१	पृथ्वी
पूठे	१४८	पीछे
पूय	३८७	पूजा
पैसारो	४१३	प्रवेश
पैशुन	२७९	निन्दा
पैसारे	३०४	प्रवेश कराया
पोमड	१५४,१८२	पौषध
पो रहा	११८	प गर
पाहोती	२९०	पहुंचो
पौषधशाला	३०४	उपाश्रय
पथीड़ा	३०३	पथिक, यात्री
पकय	४९	पंकज
पंडिय	१	पण्डित
प्रघक	४१६	खूब
प्रजालियो	३२९	जलाया
प्रतई	१५६	तरफ
प्रतिबोधीयो	१४८	समझाया, ज्ञान दिया
प्रस्तावना	३३८	जिस कायके द्वारा प्रभाव पड़े
प्ररूपणा	२६९	कथन, वक्तव्य
प्रवरू	२६७	प्रवर
प्रगट्यो	३२२,२७१	पैदा हुआ
प्रह	३२०	पौ, प्रभात
प्रहफाटी	१३३	पौ फटी
प्रहसमि	९७	प्रभात समय
प्ररूपीयो	१४८	प्ररूपा, कहा
प्राईं	३४३	प्राय
प्रोल	३३९	प्रतोली, दरवाजा

फ

फरहर	२९३	फहरानेवाली पताकायें
फासुय	३१	फासू, प्रासुक
फुडवि	३६	स्पष्ट, व्यक्त, विशद।
फेड्या	३९२	नष्ट किये।
फाक	१४३,२७७	व्यर्थ
फोफल	६७	नारियल

ब

बईठ	३४६	बैठा
बजडाव्या	१४६	बजवाये
बड आरु	३२	बड़का फल
बडवखती	१२६,४१८	बड़भागी
बत्रीस	१५७	बत्तीस
बनाउला	३९१	बनाला
बरास	११८	कपूर निर्मित सुगन्धित द्रव्य
बरीस	३३८	वर्ष
बहरघा	३९२	बालूका गहना सुगन्ध
बंभ	३६६	ब्रह्म ब्राह्मण
बाकुडा	१२०	बाकड़े

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
बाजू बंधन	३९२	गहना विशेष
बाटडो	३०३	बाट, प्रतीक्षा, राह, मार्ग
बापीयडा	१३०	पपीहा
बाबोहा	२१३	पपीहा
बालाणए	३९	बाल्यावस्थामें
बालूड़ा	१६९	(प्यारे) बालक
बाल्हेसर	८६	प्यारा
बीकाग	४१४	बीकानेर
बींसूया	१६३	हुलाना, हवा डालना
बींटानी	३७३	वेष्टित हो गया
बुक्क	१७	वाद्य विशेष
बुल्लंति	१६७	बोलते हैं
बूठा	३३७	वर्षा हुई
बेकर	२९४, ३३४	दोनों हाथ
बेलाडु	२७२	बिलाड़ा ग्राम-का नाम
बेवि	३८७	दो, दोनो
बोहइ	२	बोधना, शिक्षा देना
बोहयंतो	३९२	बोध(ज्ञान) देते हुए
बोहिय	७	बोध देकर
ब्हो	३१०	बहु, बहुत

भ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
भण्डारउ	८९	भंडारा
भत्तिवंतु	३६८	भक्तिवन्त
भमिऊण	३०	भ्रमण करके
भराव्यो	२७४	भराया
भळके	३०३	चमके
भळहळीयो	३०३	चमका
भवणिठ्ठिय	१	भवनमें स्थित
भवियण	१,६७,११६,२६८,४०२	भविकजन, भव्य व्यक्ति
भवियगडु	२४,३१	,, ,,
भलेरीय	३९३	भला
भज्जा	३७८	भार्या
भंभी	१०९	वाद्य विशेष
भाखसो	८१	कैद, अंधेरी कोठरी
भाट	१६९	जाति विशेष
भाण	२९८	भानु, सूर्य
भांभल	३०४	पागल, भोली
भाठि	१९९	काष्ट, दुख
भासुरह	३६७	चमकता
भिछ	१	भिक्षा
भुंगल	२९३,३३१,३४४ ३९२	वाद्यविशेष
भूवलइ	३७	पृथिवीमें
भूंगळी	७९	वाद्य विशेष
भइरवी	१०९	भैरवी रागका नाम
भेक	२८९	मेंढक
भेय	४०१	भेद
भोजिग	१६९,३९२	भोजक जाति
भोयग	३४८	भोजन
भोलिम	३९३	भोलापन, अज्ञानता

म

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
मढडी	२५७	[illegible]

मउड ३५२ मौड, मुकुट
म ३६५ मत
मंख ३५२ चित्रपट दिखा-कर जीवन-निर्वाह करने वाली एक भिक्षुक जाति
मच्चु ३६७ मृत्यु
मढपति ३१९ मठाधीश
मणछिउ २ मन वाछित
मणयतु ३६९ मनुष्यत्व
मणमणा १९८ बालककी भाषा
मणिमथ ९५ शिरोमणि
मणु २ मन
मणुय २३ मनुज
मदान्ति ३६ वेदान्ती, वेदान्तज्ञाता
मद्दल १४४ तबला, वाद्य विशेष
मधुमाधवइ १०५ रागिणी
मनभितरि २७ मनके भीतर
मनरली ३४६ मनकी उमंग आनन्दित मनसे
मयगल ३७ मदगल, हाथी
मयण ३४ मदन
मयरहरो १६४ समुद्र
मलपिया ४१५ चले
मलहपनउ १५० चलता हुआ
मल्हार १७७ राग विशेष
मल्हारु १७ ,,
महलावइए ३४० व्यय करना
महन्वय ५ महाव्रत
मईमद ११ मुहम्मद
महाणसि ३० महानस रसोई
महियलि २८ महीतल पर
महिर ४११ मेहर, कृपा
महिराण १६७ समुद्र
महीयले ९ पृथ्वी तलपर
महुर ३९५ मधुर
महुअर ४९ मधुकर
महूय ३२ मधूक महुवा
मडए ३९२ माडना, रचना करना
माकद १५७ इन्द्र।
मागण ३८७ याचक
माणिण ३६६ गर्वसे
माडवइ ३५१ मडपमें
माडी १५७ बनाकर
मादल १६५,३४४ वाद्य विशेष
मायडु २३ मार्तण्ड, सूर्य
मारुणि १०५ रागका नाम, मरुस्थलकी
मालिया ३४५ महल
मालोवम १५ मालोपम
मिछत ११,३७ मिथ्यात्व
मितुवि ३७० मित्र भी
मिथ्यात्वशल्य २८० मिथ्यात्व रूपी शल्य
मिसरू ३५५ वस्त्र विशेष

मिठुं २७८ मीठा
मिस ३६६ मिश्र, युक्त
मुकीयो २५९ छोड़ा
मुक्खठलि २९ मोक्ष स्थल
मुक्या २८९ छोड़े
मुणइ २७० करता है
मुणिंद २, ३८९ मुनीन्द्र
मुणिचि ३६७ फककर
मुनियपय ७ मुनिका पद
मुरंगी ९१ मृदुअंगी-स्त्री
मुखमंडले ८ मुख मंडल
मुंहपत्ति ३३७ मुखवस्त्रिका
मूंछाला ३४२ मूंछोंवाला वीर
मूं ३९२ मुझे
मूंकी ४१६ छोड़कर
मेरउ १०४ मेरा
मेलिय ३९९ मिलकर
मेवड़ा ३२१,६३ दूत
मोकलूं ३२२ भेजूं
मोटिम, मोटिम्म ८९, १८९ गौरव,
मोरउ ९८ मेरा
मोस २६१ मृषा
मोहणवेलि १०८ मोहनेवाली वेल, मनोहर वेल
मोहरेयाजी ३०२ मोह रहे हैं।

य

यशनामिक २६४ यशस्वी
युगवर १७९ युगमें प्रधान

र

रज्ज ३९ राज्य
रंजवियउ २६६ प्रसन्न किया
रंजया ३६२ ,,
रज्जंति ३७७ राग करते हैं
रणइ ३८८ बजता है
रणकार ३३१ आवाज विशेष
रतनागर २८ रत्नाकर, शाह का नाम
रत्नावली १८० रत्नोंकीअवली (समूह)
रमझोल १५५ हर्षोल्लास
रमिज्जइ २४ रमण करना
रम्मा २५ रम्य
रयणागर ३२४ रत्नाकर
रयणायर ९ रत्नाकर
रयणाइ २३ रत्न
रलिआतो १४७ आनन्द
रलिय ३३, ३८८ उमंग
रली ११६, ४१२ उमंग, इच्छा, हर्ष
रलियावणिय ३०७ सुन्दर, मनोहर
रलियामणउ २, २३२, ३३६ सुन्दर, रमणीय
रह ६७, ३९९ रथ
रांक २७१ गरीब
रांधइ ३४३ रांधना, पकाना

रायस्य ३१ राजाके
रिक्षा १६६ रक्षा
रुडी १६३,२८८ अच्छी
रुणझणइ ८९ भड़गते हैं
रुद्धि २८६ ऋद्धि धन
रुलिय ३७ रुला पड़ गया
(रू) अ ३६६ रूप
रूडउ ३७९ सुन्दर,अच्छा
रूडा १६९ ,,
रूडी ३४३ ,, अच्छी
रूडु २६३ अच्छा
रूव ९, ३६६ रूप
रूवय ३६६ रूपक
रुविग ३६९ रूपसे
रूसण १५७ रोमकर
ऋषिमती १४१ तपाका उप नाम
रेलो १३१ प्रवाह
रेहिणी ३९० राहिणी
रोलू ४०७ न म

ल

लक्खणिम ३६८ लक्षणाके ज्ञाता
लखग १५७ लक्षण
लखगवन्तो १५९ लक्षणवन्त
लछि २९, ३६१ लक्ष्मी
लद्धिवर ३० उत्तम लब्धि
लबधिवन्त ४०२ लब्धि (शक्ति विशेष) सम्पन्न
लवण्ड १५८ लेवडे, द ढालकी पगडी
लख ३५१ बड़े बासपर खेल करनेवाली नटजाति
लाइक ३०४ लायक
लाखपसाव ३०३ एकदान विशेष
लाडकडा २७० प्यारा
लाडो ३०४ स्वामी
लाहिण ६४,६८,११९,४१० प्रभनिका
लिगार २५९ थाडा, किञ्चित
लिद्ध १४० लिया
लुल्लुल ३०२, ३६५ झुक झुककर
लूंछणा ३६३ न्यौछावर ?
लेखइ ३८७ हिसाब
लोइ २ लोग
लोकणरओ १०४ लोकोंका
लोह न ९२ लोभ नहीं

व

व(च)क्कु २ चक्र, मडल
वखनवन्त १९० भागवान
वछ ३२३ पुत्र
वछरि २१,२५,३९६ वत्सर, वर्ष
वडउ ३५९ बड़ा
वत्थु ३५ वस्तु
वदीत ९८, ४ ४ प्रसिद्ध
वद्धए ३९१ वृद्धि पाता है
वधारो ३५८ वृद्ध करो
वनभृङ्ग ९४ वनका भ्रमर
वनिया १५७ आभरण विशेष
वन्निजइ ३५ वर्णन किया जाता है।

वरतइ १६८ वर्तमान, वर्त रही हो

वरनोलइ १६५ वनोला

वरीय ६ वरकर, अङ्गीकार, स्वीकार

वलग्गि २९ अवलम्बनकर, पकड़कर

वल्लु २४९ प्रत्युत्तरमें, लौटना हुआ

वलि १७६, ४१५ फिर, लौटकर

वली २५७ फिर

वले ३०३ फिर

वसासि(वि)का ३६ वैशेषिक दर्शन

वसहि ४५ वसती

वसीट्ठी १४१ दूर!

वहिरमाण ३१९ विचरने वाले महाविदेह क्षेत्र के तीर्थङ्कर

वहिरउ १८ वहरा होगया

वहिला ४१६ जल्दी

वहुराव्यो २७२ वहराया, प्रदान किया

वहुरिवा ११४ लेनेको, लानेको

वहन्ति ३७१ चलता है?

वाइ १६ वादी

वाइक ३१० कथन योग्य! (प्रशंसात्मक काव्य)

वाइमल्ल १४२ नाम. वादियों में मल्ल

वाणाग्गिय १७ } वनाग्नि, वाचक
वाणारी(य)४०१ } वाचनाचार्य

वांदवा २६९ वंदना करनेको

वांदस्यां ३०० वंदना करेंगे

वादी ३७ वाद करनेवाला

वादीजीत २६६ वादियों को जीतनेवाला

वान ९२,१६६,३२८,४०६, शोभा

वांदवा २६९ वंदना करनेको

वांदस्यां ३०० वंदना करेंगे

वारउपंग १८३ १२ उपांग (आगमसूत्र)

वालीनें ४१० लाकर,

वावइ १३० बोना

वावरइ ३४० व्यय करना, उपयोग करना

वावरियउ ३६७, ४१६ व्यय किया

वाविय ३३ पापी

वावुं १५४ व्यय करूं

वास १ आवास, घर।

विगुभाणा २७९ विगोये गये

विग्घत्त १ विघ्नोंको

विचरियउ १६३ विहार करना, चलना

विज्ञावलीय ९ विद्याका समूह

विज्ञा १,४०१ विद्या

विट ३८ भांड

वित्तिकए १९ वृत्तिकर्ता

वित्थरि २७ विस्तारसे

विनडहि ३६५ विडम्बित करता है
विनाण ३३ विज्ञान
विन्नाणी १४, १६६ विज्ञानी
विप्फुरइ ५ प्रगट होना, स्फुरायमान होना, स्फुटित होना।
विभूषीय ४ विभूषित
विमासइ १६८,३९४ विमर्श करता है
विमासे ३२१ सोचकर
विन्हे ३१८ दोनो
विरदैत १९१ विरुदवाला
विवहप्परि ३१ विविध प्रकारसे
विविह २ विविध
विवह २७ विविध
विवाहलु ३३९ विवाह का काव्य
विश्वानर ८९ वैश्वानर
विषवाद १९० कलह, विरोध
विसहर ५६ विषधर
विहली ४१५ शीघ्र
विहाणु ३०१ प्रभात
विहि १ विधि
विहिमग्ग ३६ विधिमार्ग
विहूणा ८४ रहित
वींटी ३५५ वेष्टित किया
वीवाहलउ ३९० विवाहलो, वह काव्य जिसमें किसी विवाह

वृक्ष ३६६ वाद्य विशेष
वृन्दारक २७१ देवता
वेउव्विय ३३ विकुर्वना की
वेगड ३१३,३१४ विरुद और नाम
वेढ ३५५ लड़ाई
वेयावच्चसार ११५ वैयावृत्य रूपी सेवा
वेहलि ३९५ विलम्ब न करके, शीघ्र

श

शाश्वतो ३०० शाश्वत
शीयल ६२ शील
श्रवै ४१० श्रवना, गिरना टपकना, बरसना
श्रीकार ४१५ उत्कृष्ट, उत्तम
श्रुतज्ञाने २७० श्रुत (शास्त्रीय) ज्ञानसे

ष

षट्काया १०० छ शरीर,
षडावश्यक २७२ सामायकादि छ आवश्यक कार्य

स

सहहथ १४६ अपने हाथसे
सउच्छउ ३६६ सदा उन्नत
सक्कइ १,३९८ सकना, शक्त

सखरी ४१३ अच्छी
सखाइ १६० मित्रपना, मित्रता, सहायक
सगलो ४०६ सारा
सग्गहि,सग्गि ४,२६,३४ स्वर्गमें
संखेवि ५१ संक्षेपसे
संववइ १३,१८ संवपते
संघातइ १४२ साथमें
सचांण ३०१ वाज ?
संजम ६ संयम
संजुत्तु ३६८, संयुक्त, सहित
संझ ३७१ सन्ध्या
संठविउ ३८७ संस्थापित किया
संठाविउ ३९९ ,,
संठिउ १ संस्थित
संठियउ १ ,,
संतुट्ठ १ संतुष्ट
सट्ठु वि ३७१ सुष्ठु, श्रेष्ट
सतर १५४,१९६ सतरह
सतरभेदी २७५ ,, प्रकारकी
सत्तु ३७० सत्व
सत्थ ३६८ सार्थ, संघ
सदीव ३२९ हमेशा, सदैव
सद्दहणा ११४ श्रद्धा
सद्दहे २६८ श्रद्धा की
सद्दि २ शब्दसे
सनूर, सनूरी ६८, ८९ दीप्तमान, सुरूप, सुन्दर

संथारउ २०४,३१९ संस्तारक
संथुणिउ ९ संस्तव किया
सन्नाणइ २८ सद्ज्ञानसे
समकित ४९,१३०,२२९,२८० सम्यक्त्व
समग्ग २१ समग्र
समणइ ३१ श्रमण
समरणी १९९ माला
समर्यउ ९६ याद किया
समवडि ९४,१३४ समान
समवाय ९६ समूह
समापै ४१२ देता है
समिद्धइ ३६७ समृद्ध
समोभ्रम २५९ संभ्रम
समोसरे ३३८ समवसरे,पधारे
सम्मुखइ २०४ सामने
संपत्तु ३८९ पहुंचा
संपय २९ संप्रति
संवेग ११६ संसारसे उदासीनता, वैराग्य, मोक्षाभिलाषा,
संवेगी १७७,३२९ संवेगवाले
सयल ६,१३४,३३२,३९८ सकल
सरणा २५९ शरण
सरणाइ ३३१,३९२ वाद्य विशेष
सरभरि १४३ बराबरी
सरि ३९४ स्वर
सरे ३८९ स्वरसे
सलहिउ १३ प्रशंसित

मउहियइ ३५,९६,३६८,३८६ प्रशंसा की जाती है
सवट्ठसिद्धि २९ सर्वार्थसिद्ध (अनुत्तरविमानो)
सलूणड़ा ३९३ सलोने
सवि २७७ सब
सव्व ३० सर्व
सव्वरिय ३१ रातमें
ससहर ३५ शशधर, चंद्र
सहलउ २३,३७० सुगम
सहसकूट २७८ हजार शिखर-वाला मन्दिर
सहसक्करु १५ सूर्य, १००० किरणवाला
सहिए ९८ ठीक, निश्चय, हे सखी
सहियर २९३ सखी
सहुनट्ठिया ४८ सब नष्ट हुए
साचवउ १३३ सम्हालो
साचवी ४१६ सम्हाली
साता ४११ कुशल
साते ११७ सातों
सानिध ३४० सान्निध्य
साबू ३४८ साबुन
सामाइक १६१ १८२, सामायिक
सामि ३६९ स्वामी
सामेहले ३३८ सामेला नामक कृत्य, सामने
सावय ४,२२० श्रावक
सासग ८९ शासन
साहमीनी १५४ स्वधर्मी बन्धुकी
साहम्मिय २३ स्वधार्मिक
साहिय ४ साधन किया
साहुणि ३० साध्वी
सिंगवाला ६८ पालखी, वाहन विशेष
सिज्झइ ३० सिद्ध होजाना
सिद्धंत ३५ सिद्धांत, सिद्ध होना
सिझाय ११३ स्वाध्याय
सिरतिलौ ५८ सिरमौर
सिरि ३२ सिरमें
सिरीय ६ श्रीको (सं-जम रूपी लक्ष्मीको)
सिव १ शिव, मुक्ति
सिंधुया १०५ सिन्धुराग
सीखविय १३४ सिखाया
सीझइ १७९ सिद्ध होता है
सीलि ३४ शील
सीस, सीसि १२,१४५ शिष्य
सीह, सीहो १७६,३९७ सिंह
सुइ ३६९ श्रुति
सुकड ३३१ सुगन्धित द्रव्य विशेष

ह

हइमरुण २६६ हत मदन
हथलेवड ३१९ पाणिग्रहण संस्कार
हयांस, हयास ३७ हताश
हरि ९८ सूर्य
हरिस ३९९ हर्ष
हयाल्द्द १८२ हपुर्द
हारिय ३३ हार जाना
हिव ३७२ अब
हीचइ १५७ हींड (पर)
हीला ८१ अवहेला ?
हिलियइ ३७० निन्दा करता है
हुयगड ३७१ होगा
हुंसि ९९ हौंस, अभिलाषा
हुसेनी १११ रागका भेद विशेष
हुंडा अवपप्पणि ३७० हुंडावसर्पिणी, वर्तमान हीन समय
हुति ३७० से, की अपेक्षा
हेला ३९९ उच्च स्वर

विशेष नामोंकी सूची

फ

ब

शुद्धाशुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	आवि	अविदि
२	२	मगच्छिउ	मजिच्छिउ
२	३	दिवु	दिन्तु
२	७	चक्कु	चक्कु
३	१०	णिग	दिणणु
५	९	मट्ठमि	भट्ठमि
५	९	वैशाखाइ	वैशाखइ
५	१६	अवश्री	अवस्त
५	१९	मथिणिउ	मंथुणिउ
६	१२	वधानिउ	वधाविउ
६	१४	बाघइ	वाघइ
७	२२	अन्नं	अन्न
८	१७	वधागीउ	वधावीउ
१०	११	०ना जनन्न	०नी जिनवा
१०	१२	क्षार मीर	क्षीरैनीरै
१०	१२	स्नवयसुनग	स्नवयनुनग
१०	१४	गौंतम थोधधर्मा—	गौंतमथ्रीधधर्म
१०	१७	कलशराध्या	कलशराण्या
११	०	०वाहणु	०बाहणु
११	१३	मनइ	नमइ
१२	११	सामउ	सोमउ
१२	१२	कंवि	किंपि
१२	१४	ढाल	ढोल
१३	३	जिणप्रभु	जिणप्रभ
१३	४	जिणज्ञासण	जिणशासण
१४	११	निहि	नहि
१६	११	निहि	नहि
१७	१७	किन्नग	किन्न
१८	१३	वार	बार
१८	१७	जइसइ	अइसइ
१९	१४	बिबिबि	बिंबि
१९	१८	ज्ञा	ज्ञा
२०	६	सवणंजल	सवणंजलि
२०	८	जिग	जग
२०	११	अनुक्रमि	क्रमि
२०	१७	कण्डीर	कण्ठीरव
२१	१	संयवग	संयवग
२१	८	घत्ता	घत्ता
२१	१३	निद्दुपति	विद्दुपणि
२१	१९	वन्दि	वदि
२१	२२	पाद ठवण	पाठवण
२१	२२	कुकुवधिय	कुकुमपत्रिय
२१	२३	धच्छरि	वित्थरि
२२	१३	घत्ता	घत्ता

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१२	सहलउ किउ इत्थु कलि तिह	सहलउ तिहि किउ इत्थु कलि
२३	१४	सूर	सूरि
२४	५	विसम	विस
२४	१३	परकरिय	पक्खरिय
२५	१०	गच्छाहवइ	गच्छाहिवइ
२५	१७	जेता०	जिता०
२५	१७	इग्यारह	इग्यारहसय
२६	१	वह्साखयइ	वइसाख्यइ
२६	७	आसोज	आसोजवदि
२६	८	अनुतर	अनुतेर
२७	१	वत्थिरि	वित्थरि
२७	७	लोपआयरिय	लोगह आयरिय
२७	१६	सूरि	सूर
२८	८	रुदाउत सुखसंसि—	रुदाउत सुपसंसि
२८	९	पनरेतिरइ	पनरोतिरइ
२८	१०	रतनागरवरसि—	रतना पुन्निग उच्छव रसि
२९	६	सूरहि	
२८	१८	अठारहवी पंक्तिको	सोलहवीं पंक्ति पढ़ो
२९	१४	सुविह तह	सुविहि तह
३०	३	तिलउ	निलउ
३०	३	लद्विवर	लद्धिवर
३०	६	पख	पक्खी
३०	५	वहियं	विहियं
३०	५	पंचमि(धाउ)	पंचमियाओ
३०	८	उज्जेण	उज्जेणी
३०	१३	जिणदत्त	:जिणदत्त सूरि
३०	१३	सुपहु	सुपहू
३०	१४	विन्नाउ	विन्नाओ
३०	१८	सय	सोय
३०	१८	जवाईय	जु वाईय
३०	२१	फुग्गण	फग्गुण
३०	२२	वजयाणंदो	विजयाणंदो
३०	२२	निज्जणिय	निज्जिणिय
३१	५	ता(?)उन्हउं	ताउन्हउं
३१	६	ति(लि) हि	लिहि
३१	७	रमनरमणि	नरमणि
३१	८	जिणेसर(७वीं पंक्तिमेंपढ़ो)	
३१	८	नं दिन	नंदिन
३१	९	पवठ	पयठ
३१	११	अवहि	अविहि
३१	२२	स	स हंस
३२	३	पट्टु	पहु
३२	५	एने	एन
३२	८	बडआरुय	बडयारूअ
३२	१०	वंच	चंच
३२	११	नसि	निसि
३२	२०	वड़वि	चडवि
३२	२०	धिविहि	वितिहि
३३	१	गुडिर	गुडिय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	४	म(ाना)विय	टाविय
३३	५	पद	पयइ
३३	६	बलाम	बलोम
३३	११	सुणिदु उडारिय	मुणिदुउ हारिय
३३	१२	भागग सुणि	अणेगे गुणि
३४	१	गउहि	मज्झिहि
३४	१	घंदु	घट्टु
३४	६	वाण	घरण
३४	९	पग्गिमइ	पगिसइ
३४	१५	मगोम	उघोम
३५	३	निउञ्मणवि	निज्झिणि व
३५	५	पन्दुद्दगणु	पट्टुद्दगणु
३५	१८	त्रिम	तिम
३५	२१	आगाइ	अग्गइ
३६	१२	मत्रा	मत्र
३७	१३	नरनाइ	नरनाहा
३९	६	दुग्ग	दुगाम
३९	७	विगु	वित्त्
३९	१०	विन्नउं	विन्नविउ
३९	२०	निवारइ	निवारउ
४०	४	तूय	सुय
४०	५	दिजय	दिज्जइ
४०	६	०वित्ति	०चित्ति
४१	५	नंदि	नदि
४१	१२	लोहछिय	लोहिछय
४१	१४	वदेहि	वंदेइ
४२	३	तिहऊय०	तिहय०
४२	६	०विजय०	०विज्जय०
४२	६	मूर०	सुर०
४२	७	पहोरय	पहोरुप
४२	१०	कुम०	कुंभ०
४२	११	परंपरा०	परंपर०
४२	११	०मिग जो	०मिगं ओ
४२	१२	०ञगो	०जगो
४४	२	हंउ	हुउं
४७	७	देरउरि	देगाउरि
४७	१८	नदेन	नवीन
४८	३	गुरि	गुरो
४८	१४	गुरुगा	गुरूगां
५०	१२	सुवर०	सु वर०
५१	६	सुरहम	सुरहुम
५१	९	रुगइ	रूवइ
५३	७	पेवी	मग्वी
५३	९	पामदत्त	पामदत्त
५३	२०	सव नारी	सवइ नारी
५४	५	जणियइ	आणियइ
५९	२१	भेग्ता	भंग्ता
६३	९	अविया	आविया
६३	१२	हर्ष	हर्ष
६४	१७	घणो	घणी
७०	१	गौडा	गौड़ी
७३	१४	ऐकज	रोकज
७६	११	विधि	निधि
७७	१९	रि	सुरि
७७	१९	लगाइ	लगाइ ए

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	६	चिणचन्द	जिणचंद
९४	१७	कलाल	कलोल
९६	१	समय माद	समयप्रमोद
९६	१	समुलसा	समुलसी
९६	१८	पुप्प	पुप्य
१०४	२	गर्भित्	गर्भित
१०६	१२	१२(२)	(४२)
१०८	२१	जनचन्द	जिनचन्द
११०	८	जिणिंद	दिणिंद
१११	८	विने	विते
११२	९	विहु	चिहु
,,	२०	श्राज्ञा	आज्ञा
११२	२२	वारह	वारह
११३	१	करूणा	करुणा
११९	१३	प्रमु	प्रभु
११९	१९	जावड	जावड
११९	८	रिगमता	रिगमनी
११९	१०	गुणघा	गुणधी
१३०	८	छीतर	छीलर
,,	१३	उग्घाडा	उग्घाडा
१२१	९	दली	टाली
१२३	७	प्रथान	प्रधान
१२६	१६	चापडां	चोपडां
१२७	१९	जिन	जिम
१२८	६	पंच	पञ्च
,,	१९	असुश	जसु जश
१३०	१४	आसू आस	आ ़मास
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३१	१७	साचा	साची
१३२	८	(ज्ञा ?)	(ज्ञा !)
१३४	१०	सोलेतरइ	सोलोत्तरइ
१३६	२१	इथ	स्थ
१३८	१४	आ० यउ	आव्यउ
१४२	४	वाइमल्ल	चाइमल्ल
१४३	९	वावइ	वाजइ
१४६	२	०सुदर	सुन्दर
१४७	१८	०मुंदरों	सुंदरों०
१४८	७	पूठो	पूठी
१४९	६	जिरं	चिरं
१५४	१९	खिहाला	लिहाला
१५६	१२	सहू	साजन सहू
१५९	१९	लखत०	लखण०
,,	,,	०गेति	०गति
१६१	२	सदा	सदाजी
१६२	६	तो	ते
१६३	९	भोज	भोग
१६४	५	तूंगो	तुंगो
,,	६	कज्जगइ	कज्जगई
१७०	१०	पंच	पंच
१७१	१२	०निछ्म	निःछ्म
,,	,,	सूरिश्वरा	०सूरीश्वरा०
,,	१३	प्रबंध	प्रबन्धः
१७२	२०	शृङ्गार	श्रृङ्गार
१७९	२१	उवणउ	ठवणउ
१८०	२	वित	वित्त
[illegible]	[illegible]	[illegible]	काल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८८	१९	सावडार	सावडरि
१९०	६	दिन	दिनदिन
१९५	१०	सुर	सूरि
"	११	धारना	पारना
१९७	१८	०भा	०भी
१९८	२२	संपूर्णम	संपूर्णम्
१९९	५	आवालपुर	आघास्पुर
"	११	स्तथा	तथा
"	१२	द्वीपे	द्वीपं
"	१३	पुरं	पुरं
"	२०	प्रौढ प्र०	प्रौढ प्र०
"	१९	मास्ना	मास्ना
२००	६	स्वां	०स्त्वां
"	१०	सागरा	मागरा
२०१	४	देखिने	देखिने रे
"	१०	नूर	नूर रे
२०२	६	परमात्म	परमार्थ
२०३	६	घणु	घणु
२०९	६	ब	वा०
२१२	५	अधिक	अधिक
२१८	१६	मधुर	मधुर
२१९	४	अवले	अवर
"	४	ने (!) छइ	नेछइ
"	६	पद्धति	पद्धति
"	"	आइसर	अईसर
२२०	१६	देम	दम
२२१	१	दुर्बलिकापक्ष	दुर्बलिका पुष्प
२२१	१७	दुरयह	दुरियह
२२२	९	सुविहत्र	सुविहित
"	१३	क्यों	क्यों
२२७	६	नमइ	नमइ
"	९	सूरिश्वर	सूरीश्वर
२२८	८	संप्रति	संप्रति
"	१५	कुमइ	कुमर
२३०	१	थो०	ढाल —थो०
"	११	जिनरायो	जिनराजो
२३६	११	माइ	लाइ
२३७	६	डोडोलइ	डोडोलइ
"	७	अवमार	अवसर
२३९	३	बालावी	बोलावी
"	८	०विचइस	०विचमइ
"	८	मकी	मूकी
२४०	६	मोहणराग	सोहपगइ
२४१	६	पूज्य	श्रीपूज्य
"	८	सहेरउ	सेहरउ
२४२	४से१३ स०		स०
२४३	१५	श्रा०	श्रो०
२४४	१६	स्वग	स्वर्ग
२५३	१३	जाणिन	जाणिनइ
२५४	११	पादुका अधिक	पादुका
"	१२	घरि	अधिक घरि
२५६	९	लुलि	लुलि लुलि
२६०	७	०पाध्याय०	०पाध्याया०
२६३	६	मावता, रूडुख	खमावता, रूडुं

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६५	१६	प्रसाद	प्रमाद
२६७	३	आजान	आजानु
२७२	६	चीघडीए	चोघडीए
२७३	२१	कह्यो	कह्यो
२७४	३	स्याद्वाद	स्याद्वाद
२७५	१३	शठ	शेठ
२७६	११	सूलक्ष	सुलक्ष
२७८	२०	जडीयुं	नडीयुं
२८१	३	ओगणीस	ओगणीसी
२८४	४	आज्यो	आवज्यो
२८४	१०	पायो	पाये
२८८	१	व्याधि	व्याधि
"	१३	उपर	उपर हो
२८९	९	हाथ	वे हाथ
२८९	२२	धम	धर्म
२९०	२	भवे	भवे हो
२९०	२२	गुरुतणी	गुरुतणो
२९१	१४	शंक्लेश	संक्लेश
"	१४	बागवाद	वागवाद
"	१७	टले	टलेरे
"	२२	कीधो	कीधोरे
२९५	८	रह्या	रह्या
२९६	१२	पाम्यो पाम्यो	पाम्यो
२९७	४	वंदिय	वंदियें
२९७	१३	आचरज	आचारज
२९८	७	सद्गरु	सद्गुरु
२९८	१५	श्वंगार	श्रृङ्गार
३००	१३	थ्यांचो	थंभ्यो
३००	१४	ओलख्या	ओलख्या
३०२	८	रजण	रंजण
३०३	१५	पथीडा	पंथीडा
३०४	९	गच्छपति	गच्छपति
३०५	८	दशा०	दशा०
३०५	९	विनिर्मितं	विनिर्मिति
"	१३	०द्धि०	०द्धि०
"	१४	गर्ब्भितं	गर्भितं
३०६	५	०बन्ध	बन्धः
३०७	३	संज्ञाः	संज्ञा
"	५	उकेश	ऊकेश
"	"	कछ	कच्छ
"	१६	गुरुवः	गुरवः
३०८	९	महोक्कला	महोत्कलां
"	१४	दृष्टैः	दृष्टेः
"	"	भवत्वरं	भवत्परं
"	१८	गांगेयं	गाङ्गेय०
३०९	८	साधूनां	साधुनां
"	९	जऽस्त्रं	ऽजस्त्रं
"	१२	०स्तपखिनः	०स्तपस्विनः
"	१८	लुनोहि	लुनीहि
३११	३	जेती	जती
३१५	१	वहु	सहु
३१५	१२	जोसा (धा?)ण	जेसाण
३१६	६	पू०	प०
३१६	११	खरतरजू	खरतर ज०।प०
३२४	७	जाणो	जाणी
३२४	२२	रे हरे	एह रे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२६	६	जिणद	जिणद ।म०।
३२८	२३	'जिनचद	'शिवचद
३२९	११	रह्या	रह्या
३२९	२१	आप्या (थप्पा)	अप्या
३३२	६	थाप्या	थाप्या
३३५	१८	विघि	विधि
३३५	१६	वुठा	वूठा
३३७	१५	अमूलिक	अमूलिक
३३८	१५	निघान	निधान
३३८	१८	घद	घद
३३८	२४	हो पूज	पूज
३३९	२०	लिलप्रत	लिओ लग
३३९	२२	आवरा	आवए
३४०	४	शवचुला	शिवचूला
३४०	३	ना दि	नादि
३४०	२१	द्रपदि	द्रुपदि
३४१	८	म थाप्यो	जे थाप्या
३४१	१३	भुजिङ्गिद	भुजगिन्द
३४३	३	झठा	जूठा
३४३	४	विढतां	विढतां
३४४	८	निथा(धा?)व०	निधाव०
३४४	१७	घणी	धणी
३५१	६	'बीझो वा	० वीझावा'
३५२	१०	खग्र	खिग
३५३	१७	पाल्ह	बाल्ह
३५६	१८	पनारह	पनारह
३६१	९	बाल०	बाला०
३६२	१८	सी र (ही)	सिरोही
३६२	२३	जाडि	जाडी
३६३	१५	थाप्यु'	थाप्यु
३६३	१५	आघार्टि	आघारिजी
३६५	१५	धणुहरु	धणुहरु
३६५	१६	पक्खड्डि	पिक्खड्डि
३६६	१५	घणुहर	धणुहर
३६७	६	पावक रढि	पाव-करढि
३६७	१३	का थलिय	कोवलिय
"	१५	ववि	वेवि
३६८	१२	पये	पखे
३६९	५	ति-थुद्धरणु	तित्थुद्धरणु
"	१६	पतरह	पनरह
३७७	९	नयभेरि	जयभेरि०
३८४	९	[त (न)यण]	तयणु
३८८	१५	कप्पतरा	कप्पतरा
३९२	९	भवय	भविय !
३९४	३	०न सं	सउ
४००	२	पट्टालकार	पट्टालङ्कार०
"	७	०तरुग	०तरुणा
"	१०	'नागद्दह'	'नागद्रह'
"	१३	'राजह'	'राजगृह'
"	१७	स्तत्र	०स्वत्र०
४०३	५	हल	हलै
४०३	७	नहु	बहु
४०४	१८	धर	घर
४०५	५	थुम	थुभ
४०५	२०	फाटक	फोकट
४०५	९	राजमागर	राजसभा
४१५	६	जलोल'	'जमाव'
४१७	१७	बिब	बिंब
४७३	२०	दुर्पलिकापक्ष	दुर्बलिकापक्ष

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७३	२४	द्रगाडइ	द्रगाड्ढ
४७६	२९	नमचन्द	पुनचन्द
४७९	२५	महकोट	मरुकोट
४८१	१७	राजगृ(ह)ह	राजगृ(द्र)ह
४८२	८	लकेरह	लंघरह
४८५	२२	श्राधर	श्रीधर
४८६	२५	सावक्ति	मावलि
४८८	९	हपकुल	हर्पकुल
प्राक्कथन-प्रस्तावना			
III	११	विपय	विपय
IV	६	अपभ्रंश	अपभ्रंश
XVII	१	लिजली	खिलजी
XVII	७	जिनदत्तसूरि	जिनहंमसूरि
XVII	१७	१६२८	१६५८
XVIII	१४	भावनत्त-	भविमयत्त-
XXIII	११	भुद्रित	मुद्रित
सूची-अनुक्रमणिका			
II	७	राजसोमा	राजमोम
II	२३	सरि	सूरि
V	१३	सरि	सूरि
V	१५	अभयतिक-	अभयतिलक
VIII	१५	राजगमुद	राजसमुद्र
रासमार			
२	२२	शान्तिस्तव	शान्तिस्तव
८	१९	देहल्णदे	देल्हणदे
९	१४	जिनचन्द्र	जिनचन्द्र
१०	६	क्ल्याण	कल्याण

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१७	प्रतिबोध कर	प्रतिबोध प्रासकर
१७	१	मेरुमदन	मेरुनन्दन
१८	१	विद्याध्यन	विद्याध्ययन
१८	९	प्रास	प्राप्ति
१९	२	प०	पृ०
१९	१६	लोकहिता-चार्थ	लोकहिता-चार्य
२२	२२	सातड	मातउ
२४	१०	*	* फुटनोट पृ० २५
२५	८	*	×
२५	१३	क	को
२५	१५	अमकरण	आसकरण
२६	१४	चोसी	चालः०
२७	११	तेजसी	तेजमी ×
२७	१५	शुक्ला ९	शुक्ला ९ ×
२७	१९	घाहरु	थाहरु
२७	२२	×	*
२७	२२	तेजस	तेजसी
२७	२२	नी	नं०
२७	२२	सदामी	ससमी
२८	२२	क्षमणा	क्षामणा
३०	१५	सूर	सूरि
३१	१५	गुड़	गुढा
३२	२२	आव	आवू
३३	१	द्रव्य	द्रव्य व्यय
४०	६, ७...		७ औपधि

पृष्ट	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध
		निमित्त इल्दी	७१	१९ विरुद्ध	विरुद
		न त्र	७३	१० महोत्सव	पट्टोत्सव
४१	३ शिक्षा	दीक्षा	७६	२२ घर्व	घर्व
४९	१ लवि	लाकव	७७	१९ हरिसागर	हीरसागर
५३	११ मेनागज	मेनारज	७९	१८ हृवदन्त	दृवन्त
५३	१३ मम्यक्व	सम्यक्त्व	७९	२७ सरिजी	सूरिजी
५४	१ लक्ष्मोचद	लक्ष्माचद	८५	२१ चयकोति	जयकीर्ति
५८	११ कुशलनाभ	कुशलधीर	९०	६ चका	चूका
६४	६ सवरगग	संवग रग	९१	२२ छाटा	छाटे
६६	१८ श्याम	साम	९२	१७ मुन्दर	सुन्दर
६८	४ शय्यभद्र	शय्यभव	१ ४	६ चारित्र	चरित्र
७१	४ पट्टा	पट्ट	१०७	९ लाधशाह	लाधाशाह

हाल ही में "श्रीजिनरत्नसूरि निर्वाणरास' की एक प्रति उपलब्ध हुई है—जो हमारे संग्रह (नं० ३६१०) में है। उस प्रतिके पाठान्तर यहां लिखे जाते हैं —

पृष्ट	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध
२३४	९ जुगति	जगत
२३४	११ शाभामे	सोभागइ
२३४	१५ वान	भाग
२३५	१६ तणी	तिहाथी
२३५	२१ मोठ	सठ
२३६	१ वादिवि	वदा व
२३६	४ नगइउच्छव	उच्छवसघर
२३६	१ माह	लाह
२३६	१४ लाबास	जसवास
२३७	२१ यावक	श्रावक
२३७	२२ मुनि	मुख
२३८	६ श्रीपूज्यजी	सुबच श्री पूज्यजी

२३६ गाथा ४के बाद अतिरिक्त गाथा —

'पालना पाच सुमति, भावना
मन भाव रे।
जोधपुर नी संघ सगलौ, देव
क्षर बद्धावरे॥'

२३९ गाथा ११ वींका चतुर्थपाद —

"किण हा याची घात'

पृष्ट	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध
२३८	७ यइ	बहु
२३९	२ भूल तिका करो	मूल न का करो
२३९	६ अनवड्	अनवड
२३९	१८ विगत	वीनग
२४०	१० वखाण	विचार
२४०	११ आदिष्टइ	उपदिष्टइ

सम्पादकोंकी साहित्य प्रगति

(प्रकाशित लेखादिकोंकी सूची)

स्वतन्त्र ग्रन्थ	प्रकाशन स्थान	लेखक
विधवा कर्तव्य	अभय जैन ग्रन्थमाला पुष्प ४	अ०
सती मृगावती	,, ,, ,, ३	भ०
युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि	,, ,, ,, ७	अ० भ०
ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	,, ,, ,, ८	अ० भ०
अन्य ग्रन्थोंमें		
मूर्तिपूजा विचार	जिनराज भक्ति आदर्श ,, ६	अ०
पल्लीवालगच्छ पट्टावली	श्रीआत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रंथ	अ०
जिन कृपाचन्द्र सूरि गहुंली २२	गहूंली संग्रह	अ०
जिन कृपाचंद्र सूरि ,, ३	,, ,,	भ०
स्तवन ७	पूजा संग्रह अ० जै० ग्र०-पु-२	अ०
स्तवन ४	,, ,, ,,	भ०
प्रश्नोत्तर १८-९-३१	सादा अने सरल प्रश्नोत्तर भाग २	अ०
सामयिक पत्रोंमें		
बीकानेरके जैन मन्दिर,	आत्मानंद (गुजरांवाला) वर्ष ३ अंक ११.१२	अ०भ०
,, ,,	,, वर्ष ४ अंक १, २	,,
श्रीनगरकोटतीर्थ वीनति	,, ,, वर्ष ४ अंक १	भ०
बीकानेरके ज्ञान मन्दिर,	ओसवाल नवयुवक सं १९९० पो-मा०फा०,	अ०भ०
महत्तियाण जाति	,, ,, वर्ष ७ अंक ६	अ० भ०
ओसवाल जाति भूषण भैरूंसाह	,, वर्ष ७ अङ्क ७	अ०
ओसवाल वस्ती पत्रक	,, ,, वर्ष ७ अंक ११	अ०
जैन समाजके सामयिक वर्तमान पत्र,	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अंक १	अ०
मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र (यु० जिनचन्द्रसूरिसे उद्धृत)	,, वर्ष ८ अं० २	अ०भ०
कलकत्तेके जैन पुस्तकालय	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अं० ३	अ०
सती प्रथा और ओसवाल समाज	,, ,, वर्ष ८ अं० ९	अ०भ०
पूर्वकालीन ओसवाल ग्रन्थकार	,, ,, (प्रेषित)	अ० भ०
जैन साहित्यका प्रकाशन	ओसवाल सुधारक वर्ष २ अं० ३	अ०

लेखोंका हृदय जानेकी गजब करामात, ओम० सुधारक वर्ष २ अ० १९ अ०

महावीर जयन्तीकी सार्थकता ,, ,, वर्ष २ अ० २१ अ०

भ्रमात्मक इतिहास जैन सन् १९३० अ०

कविवर समयसुन्दर साहित्य जैन, पुस्तक ३३ अंक २३, २९ अ, अ०

पट्टावलियोंमें संशोधनकी आवश्यकता जैन पु ३३ अंक २८ अ०

अलभ्य ग्रन्थोंकी खोज (अपूर्ण प्र) जैन पु० ३३ अंक ४० अ०

सती थाव सम्बन्धी एक गम्भीर भूल, जैन पु० ३९ अंक अ० अ०

सा० मो० शाहकी महत्वपूर्ण भूल जैन १०।१२।३७ अ० अ०

भानुचन्द्र चरित्र परिचय जैनजागृति (मासिक) अ०

कविवर विनयचन्द्र जैनज्योति (मासिक) सं० १९८८ अंक ९ अ० अ०

पु डा फ्लिरम् जैन ज्योति सं० १९८८ अंक ११ अ० अ०

जैन कवियोंका हीयाली साहित्य ,, स० १९८९ अंक ३ अ० अ०

महाराष्ट्री और पारसी भाषामें दो स्तवन, जैनज्योति स० १९८९ अंक ७ अ०

बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा, जैनज्योति (साप्ताहिक) स० १९९० अ०

विचार प्रकाश ,, वर्ष १ अंक २८ अ०

स्थानक वासी इतिहास परिचय जैनध्वज वर्ष २ अंक ८ अ०

सती चन्दनबाला—आलोचना ,, वर्ष २ अंक १४ अ०

सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ जैनध्वज अ० अ०

प्रश्नोत्तर ३० जैनधर्मप्रकाश पुस्तक ४७ अंक ११ अ०

प्रश्नोत्तर ११, १४, १४, २६ जैनधर्म प्रकाश पुस्तक ४८ अंक ४५,८ अ०

प्रश्नोत्तर २०, २१ २५ ,, ,, ४९ अंक १,४ ६ अ०

प्रश्नोत्तर २७,२२,११,१५,१५,२० ८ ,, ,, ५० अ० १,२,५स९ अ०

प्रश्नोत्तर १९ ,, ,, ५१ अंक ६ अ०

प्रश्नोत्तर ३१ ,, ,, ५३ अंक ८,९ अ०

देवचन्द्रजी कृत अप्रकाशित स्तवनादि ,, ,, ४९ अंक ४ ८ अ०

,, ,, ,, ,, ,, ५० अंक ४,८ अ०

,, ,, ,, ,, ,, ५१ अंक ६ ७ अ०

मस्तयोगी ज्ञानसारजी कृत ४ पद ,, ,, ४८ अ०

साधु मर्यादा पट्टक जैन सत्य प्रकाश वर्ष २ अंक ३ अ०

श्री महावीर स्तव (कविता) ,, वर्ष २ अंक ४५ अ०

लुप्तप्राय जैनग्रन्थोंकी सूची जैनसत्यप्रकाश वर्ष २ अंक १०,११ अ०
दो ऐतिहासिक रासोंका सार ,, वर्ष २ अंक १२ अ०
(सौभाग्यविजय और तपा देवचन्द्र रासका)
युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि और सम्राट अकबर ,, वर्ष ३ अंक २-३ अ०भ०
दो खरतरगच्छीय ऐ० रासोंका सार ,, वर्ष ३ अंक ४,५ अ०भ०
(जिनसिंहसूरि, जिनराजसूरि रासका)
कोचरशाहका समय निर्णय ,, प्रेषित अ० भ०
दूत काव्य सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें, जैन सिद्धान्तभास्कर भा०३ कि०१अ०
जैन पादपूर्ति काव्य साहित्य ,, भाग ३ किरण २, ३ अ०
लौंका शाह और दिगम्बर साहित्य, ,, भाग ४ किरण १ अ०
जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ ,, वर्ष ४ कि० २, ३ अ०
क्या दिगम्बर सम्प्रदायमें खरतरगच्छ तपागच्छ थे ? ,, (प्रेषित)
राजस्थानी भाषा और जैन कवि धर्मवर्द्धन, राजस्थान वर्ष २ अंक २ अ०
कविवर लक्ष्मीवल्लभ ,, ,, अ०
अलवरके शिलालेखपर विशेष प्रकाश वीर सन्देश वर्ष १ अ०
जिनदत्तसूरि जयन्ती और हमारा कर्तव्य ,, वर्ष ,, अ०
तीर्थ गिरिराजोंके रास्ते ,, वर्ष २ अंक १ अ०
बुद्धि वर्द्धक प्रश्न शिक्षण सन्देश वर्ष ३ अंक २,३,४ अ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा श्वेताम्बर जैन भाग ४ अंक २१ अ०
कविवर विनयचन्द्र (कृत राजुल रहनेमि गीत) ,, भाग ४ अंक २५ भ०
भ्रमात्मक इतिहास (जैनमें भी) ,, ,, भाग ५ संख्या ३० भ०
जैन साहित्यकी वर्तमान दशा ,, ,, भाग ६ अंक १९ अ०
सिन्धी भाषामें जैन साहित्य (अपूर्ण प्र०) ,, भाग ६ अंक २१ अ०
फलौधी पार्श्व जिन स्तवन (विनयसोमकृत) ,, भाग ६ संख्या ३० अ०
श्वेताम्बरी मिथ्यात्वी और अपात्र हैं ? ,, ,, भाग ८ अंक ३१ अ०
साम्प्रदायिकताका उग्र विष ,, ,, भाग १० अंक ११ अ०
दादाजीकी वीनती (कविता) ,, ,, भ०
जैन साहित्यका महत्त्व (अपूर्ण प्र०) ,, ,, अ०

और भी कई लेख जैन, जैन ज्योति, वीर, जैन धर्म प्रकाश आदिके सम्पादकोंको भेजे हुए हैं पर वे अब तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

साकेतिक शब्दादु कोष
जैनेतरग्रन्थोपर जैन टीकाएं
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)
कविवर जयमल नाहर और उनके ग्रन्थ
ल कामत और उनकी मान्यताएँ
बीकानेर नरेश और जैनाचार्य
श्रीजिनहंससूरि चरित्र
बीकानेर जैन लेख संग्रह
प्राचीन तीर्थमाला संग्रह
अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह
खरतर विरुद प्राप्ति
खरतरगच्छ साहित्य सूची
खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची
ख त गच्छकी ८४ नन्दियें
भूतकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास
जैन पूजा साहित्य कल्पसूत्र साहित्य
सम्यक दर्शन मनुष्यभवकी दुर्लभता
कविवर लब्धोदय और उनका साहित्य
मस्तयोगी ज्ञानसारजी और उनका साहित्य
कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी
कविवर धर्मवद्धन (साहित्य)
कविवर जिनहर्ष (साहित्य)
कविवर रघुपति (साहित्य)
छत्तीसीय ४ स्तवन पद चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि सागरचन्द्रसूरि आदि शाखाओंका इतिहास, अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अनेकों ग्रन्थोंकी प्रेस कॉपियाँ इत्यादि।

और वकील मोहनलाल दलीचद देसाई बी० ए०, एलएल० बी० ने विद्व पूर्ण विस्तृत प्रस्तावना लिखी है। इसकी उपयोगिताके विषयमें इतना कहना पर्याप्त होगा कि अल्पकालमें ही १००० प्रतियामें कवल ६० प्रति रही हैं और इसका संस्कृत काव्य निर्माण इनके साथ साथ इसके अाथ बम्बईन ५००० गुजराती टूक्ट भी प्रकाशित हो गए हैं। अनेक विद्व और पत्र सम्पादकोंकी संख्याबद्ध सम्मतियामेंसे कथल जैन ज्याति विद्वान सम्पादक शतावधानी श्रीधीरजलाल टोकरसी शाहकी सम्म कुछ अंश उद्धृत करते हैं—

सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रमाण टकिने आधार ग्रन्थो ना अवतरणो थी छ। एतिहासिक ग्रन्थो केवी रीत रचावा जाइए तना आ एक छे। एम कही सकाय। अने आ नमूना जाना एतिहासिक केटलो परिश्रम मागे छ ते स्पष्ट तरी आवे छ × × आवा ग्र कीमत एक रुपिया अहुर सस्ती लेखाय।

८ ऐतिहासिक जैन काव्यसग्रह—आपके कर कमलामें विद्यमान है

९ सदयति सोमजी शाह—लखक तजमल बोथरा।

इसमें अहमदाबादके सेठ शिवा सामजीके आदर्श साहसीय धर्म कार्योका वर्णन बहुत ही रोचक और सुन्दर शैलीसे अंकित है।

निकट भविष्यमें ही खरतरगच्छ गुर्वावली अनुवाद एव ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे।